सर्वश्रेष्ठ रूसी और सोवियत पुस्तकमाला

ब्रूनो यासेन्स्की

कायाकल्प

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक – नरेश वेदी

डिज़ाइनर–ल० लाम्म

Б. ЯСЕНСКИЙ

ЧЕЛОВЕК МЕНЯЕТ КОЖУ

на языке хинди

अनुक्रम

भूमिका

"तीस के दशक में हमारे साहित्यकारों ने बहुत पहले से – मगर अधूरे – खोजे मध्य एशिया को पुनः खोजा। पुनः खोजने की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि क़िशलाक़ों, नख़लिस्तानों और रेगिस्तानों में सोवियत सत्ता का आगमन एक चित्ताकर्षक बात थी," प्रसिद्ध सोवियत लेखक कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्स्की ने लिखा है।

मध्य एशिया की "पुनः खोज करनेवालों" में प्रतिभाशाली पोलिश कवि, उपन्यासकार और नाट्यकार ब्रूनो यासेन्स्की (१६०१–१६३७) भी थे। १६३० के वसंत में पहली बार ताजिकिस्तान की यात्रा करने पर यासेन्स्की ने हर्षोल्लसित होकर कहा था, "कितना मनोहारी, कितना अनुपम है यह देश!" उन्हीं दिनों हमारा परिचय हुआ था। कुल सत्रह साल की कच्ची उम्र के बावजूद उन दिनों मैं ज़िला कोम्सोमोल (युवा कम्युनिस्ट संघ) समिति का सचिव था। मैंने और ब्रूनो यासेन्स्की ने घोड़ों पर साथ-साथ दुर्गम पहाड़ी रास्तों पर होकर तत्कालीन गर्म ज़िले का दौरा किया, उफनती तूफ़ानी नदियों को पार किया, नीची घाटियों में उतरे, सीमांत चौकियों में रातें गुज़ारीं। पामीर की गर्म की वादी की उस यात्रा के दौरान हम नज़दीक आये और दोस्त बन गये।

ब्रूनो यासेन्स्की ताजिकिस्तान के रहन-सहन, रीति-रिवाजों, मान्यताओं और प्राकृतिक सौंदर्य की भव्यता से अभिभूत हो गये थे।

१६३१ के वसंत में लेखकों के एक दल के साथ ब्रूनो यासेन्स्की फिर हमारे ताजिकिस्तान आये। हम मिले और मैंने यासेन्स्की को और क़रीब से जाना। वह न केवल प्रतिभाशाली साहित्यकार, बल्कि एक विलक्षण, सरल, निश्छल और विनम्र व्यक्ति भी थे।

तभी मैंने उनकी असाधारण जीवनगाथा जानी।

...ब्रूनो यासेन्स्की १६२६ में मास्को आये थे। जन्म से वह पोलिश थे। पेरिस में उन्होंने "सेन-देनी" नामक मजदूर थियेटर की स्थापना की थी। «L'Humanité» में छपे "मैं पेरिस जलाता हूं" नामक विख्यात पैंफ़लेट का यह लेखक बीसवीं सदी के हमउम्र उन युवा लेखकों की पीढ़ी का था, जिन्होंने किशोरावस्था में प्रथम विश्वयुद्ध की विभीषिका झेली थी और उसके बाद पूरे जोशोखरोश के साथ नये विश्व की स्थापना के संघर्ष में कूद पड़े थे।

अपनी सार्वजनिक सरगरमियों के कारण फ़्रांस से निकाले जाने पर ब्रूनो यासेन्स्की ने सोवियत संघ को ही अपना दूसरा वतन बना लिया। शीघ्र ही मास्को के साहित्य-जगत् में उनका स्थान बन गया। कुछ ही समय बाद उन्हें अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी लेखक संगठन का सचिव और "अंतर्राष्ट्रीय साहित्य" पत्रिका का संपादक नियुक्त किया गया। ब्रूनो यासेन्स्की ने विभिन्न देशों के प्रगतिशील लेखकों को एक दूसरे के निकट लाने में बहुत फलप्रद काम किया।

भाषाएं सीखने की ब्रूनो यासेन्स्की में अद्भुत योग्यता थी। उन्होंने अपनी मातृभाषा पोलिश में कई युवा विद्रोही कविताएं और "याकूब शेले के बारे में" शीर्षक कविता, फ़्रांसीसी में "मैं पेरिस जलाता हूं" शीर्षक औपन्यासिक पैंफ़लेट, रूसी में "कायाकल्प" तथा "अकर्मण्यता का षड्यंत्र" नामक उपन्यास लिखे।

सोवियत संघ में रहते हुए यासेन्स्की ने हमारे देश के तीस के दशक के महान समाजवादी निर्माण में सक्रिय भाग लिया। अपनी "आत्मकथा" (१६३१) में ब्रूनो यासेन्स्की ने लिखा था, "इस महान निर्माण-कार्य में मैं प्रत्यक्षतम भाग लेना चाहता हूं।"

सारे ही देश की भांति तीस का दशक ताजिकिस्तान में भी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं के तूफ़ानी विकास का काल था। जनतंत्र की राजधानी – दूशंबे – को देश की रेल-प्रणाली से जोड़ा गया। अब ताजिकिस्तान में सामान ऊंटों के काफ़िले लेकर नहीं आते थे, – जनतंत्र में इनकी जगह मोटर गाड़ियों की क़तारों, कृषि मशीनों, ट्रैक्टरों आदि से लदी रेलगाड़ियों ने ले ली... कृषि व्यवस्था के सामूहीकरण के महान लेनिनवादी विचार ने दहक़ानों की चेतना में गहरी जड़ें जमा लीं। एक नये ही जीवन का सौंदर्य – उत्पीड़न, निर्धनता और ज़मीन के "निजी" टुकड़े से रहित

जीवन का सौंदर्य — प्राचीन ताजिक घाटियों में सब कहीं प्रतिलक्षित होने लगा। उनकी सदियों पुरानी झुर्रियां मिट गईं, दहक़ानों के खेतों की पतली-पतली पट्टियां ग़ायब हो गईं, ज़मीन ने जैसे अपने आद्य यौवन और विस्तार को फिर प्राप्त कर लिया, हरी-भरी हो गई, आलिंगन में न समा सकनेवाला हरित सागर सर्वत्र आलोड़ित होने लगा।

लेकिन इस बात को हम सब समझते थे कि प्रश्न अलग-अलग निजी काश्तों को सामूहिक काश्त में शामिल करने का ही नहीं, बल्कि ताजिकों के पुराने खेतों में नवप्राण फूंकने का भी है।

वख़्श की घाटी में वही ज़मीन अब बंजर रेगिस्तान बनी धूप में झुलस रही थी, जिस पर सुदूर अतीत में सींचे जाने और उपजाऊ होने के निशान देखे जा सकते थे। प्रचंड वख़्श बाढ़ के दौरान खेतों को जलमग्न कर देती थी, मिट्टी को बहा ले जाती थी और सिंचाई की नहरों को रेत से पाट देती थी। नदी पर क़ाबू पाने की सभी कोशिशें नाकाम रहीं... ज़मीन बहरी और उजाड़ बनी रही, इनसान की मेहनत के निशान मिटाती रही...

तीस के दशक के प्रारंभ में वख़्श की घाटी का कायाकल्प करने का साहसपूर्ण विचार पैदा हुआ।

प्रथम पंचवर्षीय योजना की दस्तावेज़ों में साफ़ कहा गया था कि सिंचाई परियोजनाओं का — और सबसे पहले वख़्श घाटी में — निर्माण "न केवल मध्य एशिया और क़ज़ाख़स्तान, बल्कि समूचे सोवियत संघ के लिए प्राथमिक आर्थिक महत्व" का कार्यभार है।

यह सवाल था —

दस हज़ार बेज़मीन किसानों को ज़मीन देने का;

जनतंत्र की अर्थव्यवस्था को उन्नत करने का;

वख़्श की घाटी को पतले रेशे की कपास की खेती का केंद्र बनाने का, जो हमारे देश में पहले नहीं उगाई जाती थी;

सोवियत संघ को कपास की इस सबसे मूल्यवान क़िस्म के उत्पादन की दृष्टि से विश्व में एक प्रमुख स्थान दिलवाने और अंततः कपास के मामले में आत्मनिर्भर बनाने का।

निर्माण-कार्य में भाग लेने के लिए आमंत्रित विदेशी विशेषज्ञों ने हैरानी से कंधे उचका दिये।

उदाहरण के लिए, १९३१ में ताजिक जनतंत्र की जन-कमिसार परिषद् की बैठक में अमरीकी इंजीनियर ल्यूडवेल हॉर्टन ने तो कह दिया था, "आप लोग स्वप्नद्रष्टा हैं। आप प्रतिभाशाली कल्पनाविहारी हैं। मैंने कठिनतम सिंचाई प्रणालियों पर काम किया है। अमरीकी फ़र्में मुझे समझदार, व्यावहारिक आदमी मानती हैं। मैंने कैलिफ़ोर्निया के स्वर्ण-खोजियों को देखा है। मैं प्राइमस स्टोव के आविष्कर्ता से परिचित हूं। मैं एच० जी० वेल्स से बातचीत कर चुका हूं। मैं साहसपूर्ण विचारों और साहसपूर्ण योजनाओं की क़दर करना जानता हूं। मगर वख़्श के बारे में आपकी जो योजनाएं हैं, उस पर तो गंभीरता से बात भी नहीं की जा सकती। मैं दृढ़ विश्वास से कहता हूं कि मानवजाति की जानकारी में कोई ऐसा काम ऐसी परिस्थितियों में और इतने कम समय में कभी नहीं हुआ है।"

सचमुच, ऐसी परिस्थितियों में, जब लगभग सभी कुछ हाथों से ही करना पड़ता था, काम करना आसान नहीं था। १३५ लाख घन मीटर मिट्टी हटानी थी, २६.६ हज़ार घन मीटर कंक्रीट बिछाना था, १७.१ हज़ार घन मीटर लकड़ी के ढांचे खड़े करने थे, १,७०० किलोमीटर लंबी नहरें और उन पर २,६०० इंजीनियरी संरचनाएं बनानी थीं।

लेकिन ताजिक लोग अकेले नहीं थे। सोवियत संघ की ३४ से अधिक जातियों के लोग निर्माण-कार्य में हाथ बंटाने के लिए आ गये। "वख़्श-परियोजना पूरी करनी है!"—यह हर किसी का नारा बन गया। "वख़्शस्त्रोई" (वख़्श-परियोजना) शब्द उन दिनों "द्नेपरोगेस" (द्नेपर पनबिजलीघर), "मग्नीत्का" (मग्नीतोगोर्स्क इस्पात कारख़ाना), "कुज़्नेत्स्क" (कुज़्नेत्स्क कोयला क्षेत्र) आदि परियोजनाओं के नामों के साथ-साथ गुंजित होता था। वह सारे जनतंत्र, सारे देश की हर सांस में बस गया था।

वख़्श सिंचाई प्रणाली की नींव डालने के पहले विस्फोट ने सारे संसार को मध्य एशिया में विशालतम सिंचाई परियोजना के निर्माण के समारंभ की सूचना दी, जो हमारे देश की भावी विराट निर्माण-परियोजनाओं का पूर्वरूप था।

१९३२ के शुरू में मुझसे कहा गया:

"हम तुम्हें एक बहुत उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सौंप रहे हैं—आज से तुम वख़्श-परियोजना के अख़बार के संपादक होगे।"

"लेकिन मैं तो अभी युवा ही हूं," मैंने याद दिलाई।

मुझे जवाब मिला:

"हमारा जनतंत्र भी युवा है, सभी कार्यकर्ता युवा हैं, साथ-साथ बढ़ो..."

हम सभी नौजवानों के लिए वख़्श-परियोजना एक वास्तविक विश्वविद्यालय बन गई, जहां हमने नये जीवन के निर्माण में प्रचुर अनुभव प्राप्त किया और सबसे ख़ास बात यह रही कि जीवन को बदलने के साथ-साथ ख़ुद भी बदल गये।

निर्माणस्थली पर काम करनेवालों में अधिकांश लोग युवा थे। वख़्श-परियोजना के इतिहास के अविस्मरणीय पृष्ठ उनके श्रम के वीरतापूर्ण कारनामों से भरे पड़े हैं। आज भी जब हम – वख़्श-परियोजना का निर्माण करनेवाले पुराने कोम्सोमोली – कहीं इकट्ठा होते हैं, तो उन दिनों की यादों में खो जाते हैं।

...याद करता हूं और आंखों के आगे रेगिस्तान में रात के धुंधलके में जगमगाते अलावों की क़तार उभर आती है, नौजवानों की ख़ुशी और उल्लास से छलकती आवाज़ें सुनाई देने लगती हैं – ये कोम्सोमोली १२० किलोमीटर लंबी छोटी लाइन की पटरी बिछा रहे हैं।

...निर्माण में प्रयुक्त विदेशी एक्स्केवेटरों को निम्न पंज तक बजरों द्वारा असंयोजित अवस्था में लाया जाता था और फिर ट्रकों, ठेलों और ऊंटों से नहर-मुख पहुंचाया जाता था। पुरज़े अकसर रास्ते में खो जाया करते थे। तब कोम्सोमोली एक्स्केवेटर-चालकों ने मशीनों को निम्न पंज के घाट पर ही संयोजित करके निर्माणस्थली तक सौ किलोमीटर से अधिक ख़ुद ही चलाकर ले जाने का सुझाव रखा। फ़र्म के प्रतिनिधि ने इसका जोरदार विरोध किया और कहा कि एक्स्केवेटर इतना लंबा फ़ासला नहीं तय कर सकते। तब हमारे कोम्सोमोली मिस्तरियों ने विदेशी प्रतिनिधि से छिपकर मशीनों को संयोजित किया और ख़ुद ही चलाकर निर्माणस्थली पर पहुंचाया।

जब फ़र्म के प्रतिनिधि को इसका पता चला, तो वह बेहद ग़ुस्सा हुआ और धमकी दी कि उसकी फ़र्म भविष्य में हमें अपने एक्स्केवेटर नहीं बेचेगी।

इस पर इंजीनियर कालिजन्यूक ने उसे जवाब दिया:

"हमारी आगामी निर्माणस्थलियों पर आपके एक्स्केवेटर नहीं इस्तेमाल किये जायेंगे – वे इस क़ाबिल हैं भी नहीं। हमारे पास अपनी मशीनें होंगी।"

पिछले कुछ बरसों में मुझे अपने जनतंत्र में कई निर्माणस्थलियों पर जाने का मौक़ा मिला। वहां शक्तिशाली स्वदेशी मशीनों को देखकर मुझे कालिजन्यूक के शब्द याद हो आये।

...यह वख़्श-परियोजना के शौर्यपूर्ण इतिहास की अनेक में से केवल एक घटना है। अख़बार के संपादक और कोम्सोमोल समिति के सचिव के नाते मैं उनका साक्षी ही नहीं था, मैंने उनमें सक्रिय भाग भी लिया था।

निर्माण-कार्य जब पराकाष्ठा पर था, तब अंग्रेज़ साम्राज्यवादियों के भाड़े के टट्टू बासमचियों के सरदार इब्राहीम बेग ने ताजिकिस्तान के जीवन के शांत प्रवाह में बाधा डालना चाही। उसे आशा थी कि जनता उसका साथ देगी, उसके झांसे में आ जायेगी। लेकिन उपनिवेशवादियों की आशाओं और इच्छाओं के विपरीत, इस बार युवा जनतंत्र की पहली सफलताएं ही बासमचियों के छिन्न-भिन्न हो जाने का कारण बन गईं। जिन दहक़ानों को कभी बहकाकर बासमची दलों में इकट्ठा किया गया था और जो हारने के बाद कई साल से प्रवास में रह रहे थे, वे अब हथियार हाथ में लेकर वापस आये, लेकिन जब उन्होंने यहां हुए परिवर्तन देखे, तो बिना किसी लड़ाई के ही हथियार डाल दिये और सोवियत सत्ता के पक्ष में आने लगे।

१५ सितंबर, १९३३, के दिन वख़्श नहर का उद्घाटन हुआ। सारी ही जनता के लिए यह त्यौहार का दिन था और ख़ुशी मनानेवाले लोगों में एक ब्रूनो यासेन्स्की भी थे।

अपनी ताजिकिस्तान यात्रा के अनुभवों के आधार पर ब्रूनो यासेन्स्की द्वारा १९३२–१९३३ में लिखित उपन्यास "कायाकल्प" वख़्श सिंचाई-परियोजना के निर्माण का सर्वोत्तम स्मारक है।

इस उपन्यास में लेखक ने बड़ी सूझबूझ, तथ्यनिष्ठता और भावप्रवणता के साथ तीस के दशक के एक विशालतम निर्माण-कार्य – ताजिकिस्तान में वख़्श पर निर्मित बांध के निर्माण का वर्णन किया है।

सिंचाई-प्रणाली का निर्माण, ताजिक देहात का नवजीवन, मौलिक परिवर्तनों के हामियों और सदियों पुरानी परंपराओं के रक्षकों के बीच निर्मम संग्राम, विदेशी जासूसों की कार्रवाइयां – ये हैं इस रोचक उपन्यास के कथानक के कुछ पहलू।

उपन्यास का मुख्य भाव यह है कि समाजवादी निर्माण की प्रक्रिया में न केवल देश की प्रकृति और अर्थव्यवस्था ही, बल्कि इस महान सृजन-

कार्य में भाग लेनेवाले लोगों की दृष्टि और मनोवृत्ति भी बदल जाती है।

उपन्यास के मूल रूसी नाम – "इनसान चमड़ी बदलता है" – के पीछे छिपे अर्थ को समझाते हुए ब्रूनो यासेन्स्की ने लिखा था :

"हमारी ऐसी पीढ़ी है, जिसने पूंजीवादी समाज का विध्वंस किया है, ताकि समाजवादी समाज में प्रवेश किया जा सके। अभी हम अपनी चमड़ी ही बदल रहे हैं।

"...पूंजीवादी सामाजिक संबंधों की पुरानी चमड़ी फट गई थी।

"...नई संभावनाएं व्यक्ति से आमूल चूल अनुकूलन का तकाज़ा करती हैं... यह एक लंबी और कठिन प्रक्रिया है। पुरानी चमड़ी इतनी जम गई है कि कभी-कभी तो उसे मांस सहित ही उखाड़ लेना पड़ता है..."

लेखक ने दिखाया है कि निर्माणस्थली पर लोग किस तरह बढ़ते और मर्द बनते हैं, किस तरह उनकी चेतना में परिवर्तन आता है।

वख़्श के बांध से ताजिकों को न केवल पानी, बल्कि नवजीवन, अर्थात् प्रकाश, शिक्षा और संस्कृति की भी प्राप्ति हुई। ब्रूनो यासेन्स्की अपने उपन्यास में मध्य एशिया में हो रहे परिवर्तनों का सार दिखाने और ताजिक देहात के नये लोगों को चित्रित करने में सफल रहे हैं।

निर्माण-परियोजना के संचालकों – सिनीत्सिन, मोरोज़ोव और ताजिक इंजीनियर ऊर्तावायेव का चरित्र-चित्रण रोचक और विशद है। चरित्रों के वैशिष्ट्य और पृथक्-पृथक् व्यक्तित्व के बावजूद साझे ध्येय में निष्ठा, विजय में दृढ़ विश्वास और कठिनाइयों को जीत पाना उनके सामान्य गुण हैं।

क्लार्क के चरित्र के माध्यम से उपन्यास में व्यक्ति के पुनर्शिक्षण के विषय को बड़े दिलचस्प ढंग से उठाया गया है। जीविका कमाने के लिए सोवियत संघ आया हुआ अमरीकी इंजीनियर क्लार्क समाजवाद में आस्था नहीं रखता। वह पैसे को ही मानव की उद्योगशीलता और कर्मठता का एकमात्र प्रेरक मानता है।

किंतु धीरे-धीरे जीवन और समाजवादी निर्माण का दैनंदिन व्यवहार क्लार्क के आगे उसके पूंजीवादी-व्यक्तिवादी दृष्टिकोण की निराधारता को सिद्ध कर देता है। वह समाजवादी वास्तविकता को पूर्णतः अंगीकार कर लेता है, नये जीवन का सचेत निर्माता बन जाता है।

* * *

बीते वर्षों में जनतंत्र का मानचित्र अद्भुत रूप से बदल गया है—सूखे, निर्जन, बीहड़ रेगिस्तानों की जगह नई-नई निर्माणस्थलियां पैदा हो रही हैं, हरे-भरे खेत लहलहा रहे हैं, बाग़ सनसना रहे हैं। हमारे जीवन का रूप भी बदल रहा है। उसी के साथ-साथ नये जीवन का निर्माण करनेवाले लोग भी बदल रहे हैं।

उदाहरण के लिए, साठ के दशक के अंत में ताजिकिस्तान की यात्रा करनेवाले एक फ़्रांसीसी पत्रकार ने «Liberation» पत्रिका में लिखा था:

"यह देश, जो कुछ ही समय पहले तक भौगोलिक मानचित्र पर मात्र एक सफ़ेद धब्बा था, जिसके भाग्य में बाहरी दुनिया से कटा रहना और नैर्धन्य ही बदा प्रतीत होता था, आज अपने अतिथियों के आगे अकल्पनीय रूप से समृद्ध, जीवंत और विकासमान चित्र प्रस्तुत करता है।"

मीरसैयद मीरशक्कर,
ताजिकिस्तान के जनकवि,
राजकीय पुरस्कार-विजेता

मिस्टर क्लार्क का मास्को से पहला परिचय

गाड़ी धीरे से प्लेटफ़ार्म पर आई और खड़ी हो गई। उसके रंध्र-रंध्र से लोगों की बाढ़ फूट पड़ी—सभी एक दूसरे को पीछे छोड़ अंधाधुंध बाहर जाने के रास्ते की तरफ़ लपक पड़े। पहली लहर के ख़त्म हो जाने तक क्लार्क खड़ा रहा, फिर दोनों हाथों में एक-एक सूटकेस उठाकर वह आहिस्ता से प्लेटफ़ार्म पर उतर गया।

बड़ी घड़ी में सुबह के दस बज रहे थे।

स्टेशन के बाहर की सीढ़ियों पर पहुंचकर उसने सूटकेसों को नीचे धरा, सूटकेसों के चमड़े के चौंधियानेवाले पीलेपन से सम्मोहित पास ही मंडलाते फटे-पुराने कपड़े पहने एक छोकरे पर नाराज़ी भरी निगाह डाली (उसे गाड़ी पर ही आगाह किया गया था कि स्टेशनों पर भोले-भाले विदेशियों को बेरहमी के साथ लूटा जाता है) और ओवरकोट के बटन खोलकर एक बटुआ निकाला। काग़ज़ की एक परची पर रूसी अक्षरों में एक होटल का पता लिखा हुआ था। अपने सूटकेसों के पास से बालिश्त भर भी खिसके बिना क्लार्क ने इशारे से एक कुली को पास बुलाया, काग़ज़ की परची उसके हाथ में दी और वहां खड़ी अकेली टैक्सी की तरफ़ इशारा किया।

लेकिन इसके पहले कि कुली उसके आदेश की पूर्ति कर पाता, ज्यादा ख़ुशक़िस्मत लोगों ने टैक्सी पर क़ब्ज़ा कर लिया था और मिनट भर बाद ही कुली जब लौटकर आया, तो वह एक टमटम के पांवदान पर खड़ा हुआ था, जिसमें बिलकुल वायलिन जैसा दुबला-पतला भूरा घोड़ा जुता हुआ था। कोचवान ने सूटकेसों को ऊपर चढ़ाया और घोड़े को एक चाबुक लगाया। घोड़े ने एक अजीब-सा स्वर पैदा किया, अपनी पतली गरदन को हिलाया और दुगामा चाल से चौक के साथ-साथ चलने लगा।

इस बहुत ही संकरी सवारी में बैठे क्लार्क ने अपनी टोपी को उतार दिया, जिससे कुनकुनी हवा उसके अच्छी तरह से संवरे हुए लाल बालों को थपकने लगी। अभी कुछ देर पहले तक वह जिस चिढ़ का अनुभव कर रहा था, वह अब बिलकुल ग़ायब हो गई थी और प्रमोदपूर्ण कुतूहल के साथ वह अपने आसपास की चीज़ों पर निगाहें डालने लगा—अपनी अद्‌भुत सवारी पर, चौक पर, दूर नजर आते पुल पर और प्रस्तर-निर्मित विजय-तोरण की छाया पर, जो तेज़ी के साथ दूरी में विलीन होती सड़क के तीर से कटे एक विराट धनुष जैसी लग रही थी। लगता था, जैसे तोरण के ऊपर अपनी पिछली टांगों पर खड़े रथ में जुते छः घोड़े शहर से ताबड़तोड़ भागने को बेताब हैं और किसी भी क्षण सड़क की चिकनी सतह पर छलांगें लगाते हुए भागने लगेंगे।

सड़क के दोनों तरफ़ मकानों की क़तारें थीं। स्वभाव से ही कुबड़े और बौने ये मकान अपने को पाड़ की खुरदरी टांगों पर हठधर्मी से ऊपर उठाये हुए थे। यह संसार की सभी सड़कों की तरह मकानों की अचल घाटी नहीं थी। इसके विपरीत यह खिलाड़ियों की उल्लासमय परेड से ज़्यादा मिलती थी, क्योंकि सारे के सारे मकान गतिमान थे—उनके सपाट कंधों पर नई मंज़िलें नटों की तरह सवार हो रही थीं। पैदल चलने की पटरियां निर्माण सामग्रियों से अटी पड़ी थीं और पटरियों पर और पाड़ों पर मानो चूने की तरह धूप छिड़की मानव आकृतियां तेज़ी के साथ इधर-उधर भाग-दौड़ कर रही थीं।

सड़क के साथ-साथ जाती लाइनों पर घंटियों की टनटन के साथ ट्रामें आ-जा रही थीं और ट्रामों के प्लेटफ़ार्मों से मुसाफ़िरों के भारी-भारी झुंड इस तरह लटके हुए थे, मानो किसी फटी टोकरी से लटक रहे हों।

चौराहे पर, एक बूथ के आगे लोगों की एक लंबी क़तार लगी हुई थी—आदमी सफ़ेद कमीज़ें और स्त्रियां वासंतिक चितकबरी सूती पोशाकें पहने। स्त्रियों की सूती पोशाकें हवा में लहरा रही थीं; लगता था, जैसे सारी क़तार ही फड़फड़ा और कुलबुला रही हो और दूरी से देखने पर अपनी फड़फड़ाती दुमनुमा क़तार के साथ चौकोर बूथ हवा के पहले झोंके के साथ उड़ जाने को तैयार एक विराट काग़ज़ी सांप जैसा लग रहा था।

क्लार्क ने सिर घुमाया। एक मोटी-सी दमकती हुई बस बराबर से

गरजती हुई निकल गई और एक बड़े चौक के किनारे से सौ-एक क़दम के फ़ासले पर जाकर रुक गई।

चौक के बीचोंबीच एक काले और एक लाल दो बड़े-बड़े बोर्डों के आसपास, जो एकदम दुर्बोध इबारतों और आंकड़ों से भरे पड़े थे, लोगों की भीड़ लगी हुई थी। काले बोर्ड को देखकर शेयर बाज़ारों के आगे लगे बड़े-बड़े बोर्डों की याद आ जाती थी, जिन पर चॉक से शेयरों के ताज़ा भाव लिख दिये जाते हैं। लेकिन उनके इर्दगिर्द मज़दूरों के कपड़े पहने जो लोग भीड़ लगाये खड़े थे, उनकी गोल-मटोल और उत्तेजित दलालों के साथ ज़रा भी समानता नहीं थी।

न्यूयार्क से रवाना होने के भी पहले क्लार्क समाजवादी प्रतियोगिता के बारे में, लाल और काले बोर्डों के बारे में और उन कल-कारख़ानों के बारे में, जिन पर मज़दूरों का स्वामित्व है, काफ़ी कुछ सुन और पढ़ चुका था। लेकिन इस क्षण तक — जब वह टमटम में बैठा इन विशाल बोर्डों के सामने से गुज़र रहा था और उनके आसपास भीड़ लगाये लोगों को देख रहा था, — कभी यह ख़याल उसके दिमाग़ में नहीं आया था कि यह सारा विराट देश, जिसमें वह कल शाम से सफ़र कर रहा है, असल में इसमें रहनेवाले लोगों की एक विशाल संयुक्त पूंजी कंपनी ही है। और अगर ये काले बोर्ड पूरी तरह से भर गये, तो इसका मतलब होगा देश की मौत; इसके विपरीत, अगर लाल बोर्ड भर जाते हैं, तो इसका मतलब होगा जीत। इस महान प्रतियोगिता में सन्निहित जोखिमों के ख़याल से ही क्लार्क को अपने दिल की धड़कन तेज़ होती लगी। उसका मन किया कि वह टमटम को रुकवा ले, मगर कोचवान ने चाबुक सटकारकर घोड़े को तेज़ कर दिया था और वे लोग चौक से गुज़र गये।

अब टमटम फिर मुख्य सड़क पर चल रही थी। सिरों के ऊपर सड़क के आरपार एक चौड़ी लाल बंदनवार लगी हुई थी, जिसने सड़क को एक विजय-तोरण में परिवर्तित कर दिया था। सामने की तरफ़ से चटक हरी टोपियां पहने लाल सैनिकों का एक दस्ता क़दम मिलाये मार्च करता आ रहा था। सैनिकों के पास रायफ़लें नहीं थीं। लाल सैनिक एक जोशीला गाना गा रहे थे।

अभी तक अपनी जगह बिलकुल निर्विकार बैठे कोचवान ने अचानक सिर घुमाया, चाबुक से लाल सैनिकों की तरफ़ इशारा किया और क्लार्क की तरफ़ आंख मिचकाता हुआ अंतर्राष्ट्रीय भाषा में बोला :

"चेका !"*

क्लार्क ने कुतूहल के साथ दस्ते की तरफ़ देखा, जो अब उनके बराबर ही पहुंच गया था।

उससे क़दम भर के फ़ासले पर ही सिर पर हरी टोपियां पहने नीली आंखोंवाले नौजवानों की क़तारें मार्च करती हुई जा रही थीं। वे एक स्वर में और जोश के साथ गा रहे थे। गाते हुए "ओ" की आवाज़ निकालते समय उनके मुंह पूरे खुल जाते थे और फिर अचरज भरे लाल शून्यों की शृंखला में बदल जाते थे। दस्ते को देखकर मन में मैच से जीतकर लौटती खिलाड़ियों की मैत्रीपूर्ण टीम का ख़याल आता था।

पटरियों पर नागरिकों की भीड़ थी – हाथों में लाल-से पोर्टफ़ोलियो लिये बटन खुले कोट पहने आदमी, जिनकी मूंछों का रंग भी पोर्टफ़ोलियो जैसा ही था, और ऊंचे स्कर्ट और एक जैसे सफ़ेद ब्लाउज़ पहने लड़कियां। अनजाने ही उन्होंने अपने बदनों को सीधा कर लिया, सीने निकाल लिये और अपने पोर्टफ़ोलियों को उत्साह के साथ हिलाते हुए वे लाल सैनिकों के जोशीले गीत की तान पर क़दम धरने लगे।

क्लार्क ने सिर घुमाकर लाल तोरण के नीचे से गुज़रते दस्ते पर फिर नज़र डाली।

वे एक बुलवार से कटे चौक में पहुंच गये। बुलवार से मंद वासंतिक समीर बहकर आ रही थी, मानो खुली खिड़की से आ रही हो। कांसे के मंच पर पुराने फ़ैशन का कोट पहने एक घुंघराले बालोंवाला कांसे का आदमी खड़ा हुआ था और चौक के दूसरे सिरे पर बने एक ऊंचे स्ट्राबेरी युक्त क्रीम के रंग के गिरजे की तरफ़ हैरानी के साथ देख रहा था। गिरजे की कंगनी पर, ज़मीन से दो मंज़िल की ऊंचाई पर, एक छोटी-सी कार चल रही थी। ज़ाहिरा तौर पर यह किसी सोवियत मोटर कारख़ाने का विज्ञापन था। गिरजे के अगले भाग पर लटकी कार के पहिये लगातार घूमते जा रहे थे।

सड़कों के नुक्कड़ पर एक और गिरजा था – पहले गिरजे से छोटा, नीचे मोहरे का। वह कारों के मतलब का नहीं था। लगता था, जैसे बालों को सिर पर जूड़े में समेटे कोई बुढ़िया खड़ी हो।

---

* अखिल रूसी असाधारण आयोग – प्रतिक्रांति और भीतरी तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए स्थापित आयोग।

टमटम अब फिर मुख्य सड़क पर जा रही थी, जिसमें बीच-बीच में चौड़ी लाल बंदनवारें लटकी हुई थीं। सामने की तरफ़ से धीमे सुर में एक शोकपूर्ण धुन बजाते बैंड की आवाज़ आ रही थी। उसका न तो इस धूपभरे दिन की वासंतिक गति से कोई मेल था, न राहगीरों की कामकाजी हलचल से। सामने से दो घोड़े जुता एक शवयान आ रहा था। उस पर एक ताबूत था, मगर उसका रंग एकदम सुर्ख़ था।

ताबूत के पीछे पंद्रह वादकों का बैंड था, जो सूरत से ही मज़दूर लगते थे। वादकों के मुंह बड़े-बड़े सुनहरे बाजों पर थे और बाजों से गंभीर सुर में एक प्रयाण गीत की धुन निकल रही थी। वादकों की आंखें अपने से आगेवाले वादकों की पीठों पर पिन से नत्थी की स्वरलिपि के काग़ज़ों पर टिकी हुई थीं। लगता था कि अगर हवा का अचानक एक ज़ोरदार झोंका आ जाये और इन चलते-फिरते स्वरलिपि स्टैंडों पर लगी इन नन्ही-नन्ही परचियों को उड़ा ले जाये, तो वादक इस धुन से भटक जायेंगे और तुरंत कोई सजीव और ख़ुशीभरी धुन बजाने लगेंगे।

बैंड के पीछे कंधे से कंधा भिड़ाये मज़दूर चल रहे थे, मानो प्रदर्शन कर रहे हों। काफ़ी थे वे — जलूस ख़ासा लंबा हो गया था। अगली क़तार में चल रहे एक मज़दूर के हाथों में बिजली के बल्ब का एक बड़ा-सा मॉडल था। दूसरे के हाथ में एक छोटा-सा लाल बोर्ड था, जिस पर कुछ आंकड़े लिखे हुए थे। इन प्रतीकों को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता था कि यह जनाज़ा प्रकटतः बिजली का सामान बनाने के किसी कारख़ाने के मज़दूर का है — ऐसा कोई, जिन्हें तूफ़ानी टोलीवाले कहते हैं।

मज़दूरों का लंबा जलूस गुज़र गया। अचरज की बात थी कि एक मामूली मज़दूर को इतने सम्मान के साथ दफ़नाया जाये — किसी मशहूर जनरल की तरह, जिसकी अरथी के पीछे-पीछे उसके सहायक और सहयोगी गद्दी पर उसकी तलवार और युद्धभूमि में जीते उसके पदकों को लेकर चलते हैं। लेकिन क्लार्क ने तुरंत अपने मन में कहा: यह देश, जहां "न जीतना" शब्द "मर जाना" के ही समानार्थक हैं, एक असीम युद्धभूमि के अलावा और कुछ नहीं है। विजय के लाल बोर्ड पर जिस किसी का लेशमात्र भी योगदान है, उसे देश का वीर मानना उचित ही है।

समाजवाद में क्लार्क का विश्वास नहीं था। वह मानता था कि पैसा ही मनुष्य की सारी उद्योगशीलता और कर्मठता का एकमात्र प्रेरक है।

फिर भी उसमें खिलाड़ीसुलभ निष्पक्षता थी। वह इस देश को पसंद करता था, जो एक अभूतपूर्व प्रयोग को कर रहा था और उसके लिए जिसने सारी दुनिया से टक्कर ली थी। इसी लिए वह यहां आया था—एक ऐसे प्रयोग की क्रियान्विति में भाग लेने के लिए, जिसमें उसे विश्वास नहीं था। उसे सब के साथ एक की इस अभूतपूर्व प्रतियोगिता की महिमा ने आकर्षित किया था और इसमें वह "सब" के पक्ष में नहीं रह जाना चाहता था।

(क्लार्क यही सोचता था। अपने को स्वतंत्र, पूर्वाग्रह-मुक्त समझना उसे अच्छा लगता था। उसे लग रहा था कि वह कोई बहुत ही श्रेष्ठ और साहसपूर्ण काम कर रहा है और इससे उसके अहम् की तुष्टि हो रही थी। अपनी जीवनगाथा के कुछ विवरण उसने अनदेखे कर दिये थे और जितना-जितना वह अमरीका से दूर होता गया, वे उसे उतने-उतने ही गौण लगने लगे। इन विवरणों में से एक यह था कि उसे बेरोज़गार हुए अब चार महीने हो चुके थे। तब से वह कितनी ही फ़र्मों में नौकरी पाने की निष्फल कोशिशें कर चुका था, क्योंकि अमरीका में मंदी छाई हुई थी। मंदी—आर्थिक संकट—के बारे में अख़बारों में लिखा जाता था। उसके बारे में वैज्ञानिक और दार्शनिक लिखा करते थे। वे जिम क्लार्क के बारे में नहीं लिखते थे, जो काम नहीं पा सकता था,—वे बात को वैज्ञानिक भाषा में लिखते थे और विज्ञान की भाषा में इसे प्राविधिक बुद्धिजीवियों का अति-उत्पादन कहा जाता था। वे इस बारे में पूरे पोथे के पोथे लिख रहे थे कि इस तथा अन्य प्रकारों के अति-उत्पादन से किस प्रकार बचा जाये, क्योंकि अति-उत्पादन के अन्य रूप भी थे—मज़दूरों का अति-उत्पादन, माल का अति-उत्पादन। माल को जला या समुद्र में फेंक दिया जाता था,—यह बेशक, एक बहुत ही सरल हल था। लेकिन मज़दूरों को जलाया या समुद्र में फेंका नहीं जा सकता था—वे तादाद में बहुत थे। उन्हें तो निर्यात तक नहीं किया जा सकता था। कोई रास्ता वैज्ञानिकों को नज़र नहीं आ पा रहा था—न जिम क्लार्क को ही। वह जानता था कि अपने को डुबाया जा सकता है। यह, बेशक, बहुत ही सरल समाधान रहता। लेकिन जिम क्लार्क अपने को माल की बराबरी पर नहीं रखना चाहता था। इस विचार से ही उसके आत्मसम्मान के बोध को जुगुप्सा होती थी। और इसलिए, पहला मौक़ा मिलते ही उसने अपने को एक दूसरे गोलार्ध को, एक ऐसे देश

को निर्यात करना श्रेयस्कर समझा, जहां प्राविधिक बुद्धिजीवियों, मज़दूरों या माल का अति-उत्पादन नहीं होता था और जिससे इस कारण अमरीकी वैज्ञानिक, दार्शनिक और अख़बार बहुत नाराज़ थे।)

टमटम अब एक चिकने ढक्कन जैसे बिलकुल आयताकार चौक से गुज़र रही थी, जिससे एक अकेली कील की तरह एक प्रस्तर स्तंभ निकल रहा था।

एक छोटी-सी लाल इमारत पर, जिस पर बख़्तरबंद क्रूज़र की आगे निकलती हुई तोपों की काली नालों की तरह लाउडस्पीकर लगे हुए थे, एक बड़ा लाल झंडा लहरा रहा था। चौक के दूसरे छोर पर क्लार्क ने गहरे भूरे रंग की एक तिमंज़िली घनाकार इमारत देखी, जिसके अग्रभाग पर रूसी अक्षरों में एक शब्द लिखा हुआ था: "लेनिन"। यह अकेला रूसी शब्द था, जिसे क्लार्क पढ़ सकता था। पत्थर का यह ज्यामितीय अंबार, जिस पर बस एक शब्द खुदा हुआ था,—ऐसा शब्द, जो संसार की सभी भाषाओं में एक ही ध्वनि देता है (दोनों गोलार्द्धों में एक भी मानव ऐसा नहीं है, जिसने जीवन में कभी न कभी इस शब्द को उच्चारित न किया हो)—संगमरमर या धातु से निर्मित किसी भी मूर्ति या स्मारक से ज्यादा भव्य और श्रेष्ठ था।

सड़क में एक बड़ा उतार आ गया और टमटम अपने सींकिया घोड़े की सहायता के बिना ही आगे बढ़ने लगी। रास्ते से गुज़रते हुए एक भूरे मकान की छवि क्लार्क की स्मृति पर अंकित हो गई, जिसके प्रवेशद्वार पर एक बड़ा भू-गोलक बना हुआ था। अचानक उसके दिमाग़ में यह ख़याल कौंध गया कि संसार के अधिकांश निवासियों के लिए धरती की सतह का यह छटा भाग आज भी ऐसा ही अज्ञात प्रदेश बना हुआ है, जैसा कि चंद्रमा का अनदेखा भाग—चंद्रमा के दूसरे भाग के बारे में इतनी ऊटपटांग गप्पें कदाचित ही लिखी गई होंगी कि जितनी इस देश के बारे में। क्षण भर के लिए उसने मन में अपने को जूल वर्न के किसी कथा-नायक के रूप में देखा, जो किसी अज्ञात ग्रह पर जा उतरा है, और इस कल्पना ने उसके आत्मदर्प को बड़ा संतोष प्रदान किया।

टमटम अब एक चौड़ी सड़क पर जा रही थी। क्लार्क की आंखें क्रेमलिन की कंगूरेदार दीवारों पर और एक अंतहीन चौक की तरफ़ ले जानेवाली चढ़ाई पर जा टिकीं।

और, पता नहीं–यह यात्रा की थकान थी या कोई दृष्टिभ्रम कि स्कूल में अर्जित भूगोल के समस्त ज्ञान के बावजूद क्लार्क को अचानक लगा कि जैसे न्यूयार्क से लेकर यहां तक की उसकी सारी यात्रा उसे एक लगातार चढ़ते हुए वक्र पर ही चलाती हुई अंततः इस चरम बिंदु पर ले आई है। वहां, इस अंतहीन चौक के पार ही उतार शुरू हो जाता है। क्लार्क को लगा, जैसे वह दुनिया की छत पर पहुंच गया है। निमिष मात्र को उसके लिए सांस लेना भी दूभर हो गया और उसे लगा कि जैसे हवा भी विरल हो गई है।

एक कोने पर टमटम तेजी के साथ मुड़ी और खड़ी हो गई। वे होटल पहुंच गये थे।

क्लार्क मास्को में ज्यादा दिन नहीं ठहर पाया। होटल में उसकी बार्कर तथा एक और इंजीनियर से भेंट हुई। दोनों उसकी प्रतीक्षा में थे–उन्हें अगली सुबह ही हवाई जहाज से साथ-साथ जाना था।

बार्कर को क्लार्क अमरीका से ही जानता था। वे कैलिफ़ोर्निया में साथ-साथ काम कर चुके थे, जहां बार्कर डामर की सड़कों के निर्माण-कार्य की देखभाल करता था। बार्कर अपनी काहिली के लिए बदनाम था। अपनी इस काहिली के पक्ष में वह उसूली दलीलें तक दिया करता था। उसका मत था कि लोग घर पर आराम से बैठने के बजाय दुनिया भर में फालतू ही भटकते रहते हैं–उनके लिए सड़कें बनाना तो उनकी भटरगश्ती को बढ़ावा देने के ही बराबर है। उसे एक जगह से दूसरी जगह जाना पसंद नहीं था, और जिन सड़कों को बनाने का काम उसके सुपुर्द किया जाता था, उनके आगे हमेशा कुछ विशेष वस्तुगत अड़चनें आ जाया करती थीं–मिट्टी का विशेष अनुपयुक्त होना या ऐसी ही कोई और बात।

क्लार्क बार्कर को बिलकुल पसंद नहीं करता था। कैलिफ़ोर्निया में काम करते समय उनमें आपस में बड़ा सख़्त झगड़ा हो गया था। तब से बार्कर अपने अलाभकर पेशे को बदल चुका था और अब वह एक्स्केवेटरों का विशेषज्ञ बन गया था। वह "ब्यूसाइरस" फ़र्म का प्रतिनिधि बनकर सोवियत संघ आया था, जो मध्य एशिया की एक निर्माण परियोजना के लिए एक्स्केवेटरों का प्रदाय कर रही थी। उसे यहां देखकर क्लार्क को अचरज हुआ। मगर फिर उसे मंदी का ख़याल आ गया और उसका अचरज ख़त्म हो गया।

दूसरे इंजीनियर का नाम था मर्री। उसके बाल धूसर थे, मानो

उसके पाइप से धीरे-धीरे उठते धूएं की लच्छियां बालों पर बैठ गई हों। मर्री अल्पभाषी और व्यावहारिक आदमी लगता था और क्लार्क को वह तुरंत भा गया।

उन्हें जिस देश जाना था, उसका नाम था ताजिकिस्तान और वह मास्को से पांच हज़ार किलोमीटर था। क्लार्क ने ऐसे किसी देश का नाम कभी नहीं सुना था – उसे तो बस यही मालूम था कि वे लोग एशिया जा रहे हैं। मर्री ने उसे बताया कि ताजिकिस्तान भारत और अफ़ग़ानिस्तान के सीमांत पर – दुनिया की छत पर – स्थित है और सोवियत संघ के संरचक जातीय जनतंत्रों में एक है।

बार्कर ने उसकी बात में योग देते हुए बताया कि उस देश में सड़कों का नाम भी नहीं है – सफ़र या तो गधों पर सवार होकर करना पड़ता है या हवाई जहाजों द्वारा। वहां पहाड़ों और जंगलों के अलावा और कुछ नहीं है, जिनमें बाघों और डाकुओं की भरमार है। डाकुओं के नाम को निरालापन देने के लिए उन्हें बासमची* कहते हैं। बासमची यूरोपीयों को मारने में उस्ताद हैं और औसतन बीस को रोज़ मार देते हैं। औरतें बुरक़े ओढ़ती हैं और बुरक़े को हाथ लगाने की जुरअत आप तभी कर सकते हैं कि इस बात के लिए तैयार हों कि कोई दीनदार आपकी पसलियों में छुरा भौंक दे। ऐसा देश है वह कि आत्मसम्मानी अमरीकियों को प्याला भर अच्छी काफ़ी तो क्या, ८० डिगरी सेंटीग्रेड गरमी, जिसमें ह्विस्की भी उबलने लगती है और इतालवी डाक्टर पोपाताच्ची द्वारा आविष्कृत एक विशेष प्रकार के मलेरियाई मच्छर के अलावा और कोई चीज पेश नहीं कर सकता। और वहां उन्हें कपास उगाने की सनक भला क्यों सवार हुई है, जब उसे वे अमरीका से ख़रीद सकते हैं?

क्लार्क ने दिन मर्री के साथ शहर में घूमने में बिताया, वह एक जन-कमिसारियत में गया और शाम को बेतरह भूखा और थका हुआ होटल में वापस आया। वहां उसे बताया गया कि उन्हें लेने के लिए सुबह तीन बजे हवाई अड्डे से गाड़ी आ जायेगी।

---

*मध्य एशिया में गृहयुद्ध के समय ब्रिटिश जासूसी सेवा की सहायता से सोवियत सत्ता के विरुद्ध चलाये जानेवाले सामंती अमीरों के क्रांति विरोधी आंदोलन में भाग लेनेवाले।

कमरा बेग्रारामदेह और घुटनभरा था—उसमें एक ग्रजीब सी होटलजन्य महक थी और दुनिया भर के होटलों की तरह फ़र्नीचर पर ग्रस्वाभाविक चमक थी।

क्लार्क बालकनी पर ग्रा गया। होटल के सामने लाल ईंटों की एक भारी-भरकम तिमंज़िली इमारत थी। उसमें ग्रर्धवृत्ताकार खिड़कियां थीं। इमारत के मोहरे पर लगी सर्चलाइटें सामने के चौक को ग्रालोकित कर रही थीं। प्रवेशद्वार के ऊपर लिखा हुग्रा था: "क्रान्ति ऐसा बवंडर है, जो ग्रपने रास्ते में ग्रानेवाले हर विरोधी को उड़ा ले जाता है"। मर्री ने क्लार्क को इसके बारे में दिन में बताया था, जब वे शहर में घूमने के लिए गये हुए थे। उसके ग्रागे, हरे पेड़ों के ऊपर क्रेमलिन के कंगूरे नज़र ग्रा रहे थे।

नीचे, रेस्तरां में, बैंड पर टैंगो की ग्रवसादपूर्ण धुनें हवा में तैरती ग्रा रही थीं। क्लार्क ने बालकनी का दरवाज़ा बंद किया और जल्दी से कपड़े उतारकर कलफ़ लगी चादरों में घुस गया।

ग्रलौकिक दरज़ीखाना

जब उसे जगाया गया, तो बाहर पहले जैसा ही ग्रंधेरा छाया हुग्रा था। बार्कर और मर्री सफ़र के लिए तैयार हो चुके थे और ग्रपने सूटकेसों की पैकिंग ख़त्म कर रहे थे। क्लार्क का सिर दर्द के मारे फटा जा रहा था, उसने उसपर जग भर ठंडा पानी डाला, जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और नीचे चला गया।

हवाई ग्रड्डे से ग्राई बस दरवाज़े पर उनका इंतज़ार कर रही थी। वह उन्हें उसी रास्ते से ले जा रही थी, जिस पर होकर कल क्लार्क ग्राया था। निर्जन सड़कों के चौराहों पर हरे टोप पहने खड़े मिलीशियावाले ऐसे लगते थे, मानो ऊपर मंडराते तारामंडलों को रास्ता दिखाने के लिए रात में वहां तैनात कर दिये गये हों।

बस विजय-तोरण के सामने से गुज़री, जिसकी क्लार्क को ग्रच्छी तरह याद थी और ग्रागे के लंबे रास्ते को तेज़ी के साथ तय करके उसने उन्हें हवाई ग्रड्डे की इमारत के सामने जाकर उतार दिया।

कार्यालय में सामान के तोले जाते समय उन्हें पता चला कि हवाई जहाज़ द्वारा चार लोग ताशक़ंद जा रहे हैं – चौथा मुसाफ़िर रूसी था, भूरी मूंछोंवाला और बातूनी।

यह मालूम होने पर कि उसके सहयात्री विदेशी और इंजीनियर हैं, रूसी ने अपनी शक्ति भर हर साधन द्वारा उनके प्रति सद्भावना प्रदर्शित करने की कोशिश की। वह उन्हें तुरंत हवाई अड्डे के छोर पर ले गया, जहां एक अधूरी विशाल इमारत की दीवारें ज़मीन से उठ रही थीं और निर्माण सामग्री के ढेर चारों तरफ़ बिखरे पड़े थे। फिर वह उन्हें उस असीम मैदान के छोर पर क़तार में खड़े कुछ बड़े-बड़े तीन इंजनवाले हवाई जहाज़ों तक ले गया। वह उन्हें रूसी में कुछ समझा रहा था और हर वाक्य में एक जर्मन शब्द का इस्तेमाल कर रहा था, जिसे वह बार-बार बड़े आग्रह के साथ दुहरा रहा था।

बार्कर इस नतीजे पर पहुंचा कि वह किसी हवाई फ़र्म का एजेंट है, जिसने उन्हें विदेशी उद्योगपति समझ लिया है और उन्हें एक जहाज़ ख़रीदने के लिए राज़ी करने की कोशिश कर रहा है।

अपने मुंह में पाइप दाबे मर्री हलके से हंस रहा था और सिर हिलाते हुए धीरज के साथ रूसी के कथन से सहमति प्रकट करता जा रहा था।

क्लार्क को यह साफ़ हो गया था कि बार्कर बकवास कर रहा है, मगर बातचीत में शामिल होने को उसका मन नहीं कर रहा था। नेगोरेलोये से मास्को की अपनी यात्रा के दौरान इस बात को वह अपने अनुभव से जान चुका था कि किसी भी विदेशी को देखकर कोई भी रूसी – चाहे वह उसकी भाषा न बोल पाये, तब भी – अनिवार्यतः अपने देश की उपलब्धियों से उसे अवगत कराना चाहता है – उसे ऐसी चीज़ें दिखाना चाहता है, जो उसकी समझ में विदेशी को सबसे ज्यादा चकित करेंगी। निस्संदेह यह आदमी उन्हें यही समझाने की कोशिश कर रहा है कि उसका देश कैसे बढ़िया हवाई जहाज़ बनाने लगा है।

हाथ में झंडी लिये हुए एक आदमी आया और मुसाफ़िरों को उड़ने के लिए तैयार खड़े एक इंजनवाले हवाई जहाज़ के पास ले गया। यह हवाई जहाज़ भी सोवियत निर्मित ही था।

बार्कर ने बड़बड़ाते हुए सोवियत वायुयानों में अपना अविश्वास प्रकट किया और इस बात पर अफ़सोस ज़ाहिर किया कि वे लोग ट्रेन से क्यों नहीं

गये। जहाज़ के प्रोपेलर ने एक चक्कर काटा और एक गुंजते हुए धूसर चक्के में परिणत हो गया। हवा के आकस्मिक प्रवाह से यात्रियों की बरसातियां फड़फड़ाने लगीं।

जब सभी लोग केबिन में जा बैठे, तो नीचे खड़े आदमी ने अपनी झंडी हिलाई और जहाज़ ज़मीन पर हिचकोले खाता हुआ धीरे-धीरे प्रस्थान स्थल की तरफ़ चल पड़ा। वार्कर बुदबुदाया कि ईश्वर में विश्वास न करने पर भी अपने पर सलीब का निशान बनाने में क्या हरज है–आख़िर इन रूसी जहाज़ों का क्या भरोसा...

हवाई जहाज़ ने तेज़ी से मोड़ लिया, कर्णभेदी गुंजार करने लगा और मैदान के गड्ढों पर उछलता हुआ पूरी रफ़्तार से दौड़ने लगा। अचानक ज़मीन उसके पहियों से इस तरह से फिसलकर अलग हो गई, मानो नीचे धंस गई हो और क्लार्क को निचाई पर एक इमारत की टीन की छत नज़र आई।

जहाज़ दक्षिण-पूर्व की तरफ़ उड़ने लगा। रूसी यात्री ने अपनी उंगली से खिड़की की तरफ़ इशारा करते हुए क्लार्क के कान में चिल्लाकर कुछ कहा, मगर इंजन की गरज में उसके शब्द दबकर रह गये।

शहर धीरे-धीरे फिसलकर पीछे छूटने लगा। उसके निर्माणाधीन मकानों की पाड़ों का कांटानुमा जंगल साही के कांटों की तरह दीख रहा था।

नीचे, धरती के दिगंतव्यापी विस्तार पर मानव के हाथों द्वारा सहेजकर फैलाई खेतों की जोड़ के काम की दुलाई ऐसी लग रही थी, मानो दूकान में बिक्री की चीज़ों के नमूने सजाकर रखे हुए हों।

जैसे-जैसे वे मास्को से दूर होते गये, ये धारियां वैसे-वैसे बड़ी होती गईं। रूसी यात्री अपनी उंगली से खिड़की की तरफ़ इशारा करते हुए कुछ चिल्लाता रहा। क्लार्क को "कोलख़ोज़" (सामूहिक फ़ार्म) शब्द सुन पड़ा। उसने खिड़की से नीचे की तरफ़ बहुत ध्यानपूर्वक देखा, मगर दीखा कुछ नहीं। और इसलिए उसने सोच लिया कि ये बड़ी-बड़ी धारियां सामूहिक फ़ार्म ही होंगी।

नीचे का दृश्य बिलकुल एकरस हो गया था। मर्री ने अख़बार खोला और उसके पढ़ने में तल्लीन हो गया।

बहुत नीचे वोल्गा बहती जा रही थी–बेपरवाही से इधर-उधर पटके कपड़े के थानों के बीच पड़े मुड़े-तुड़े नापने के फ़ीते की तरह। गढ़ों में भरे

पानी के बेशुमार घेरे ऊपर से सीप के बड़े-बड़े बटनों जैसे दीख रहे थे। समारा तक यही अलौकिक दरज़ीख़ाना फैला चला गया था।

समारा पहुंचने पर उन्हें पता चला कि उनका जहाज़ शक्तिशाली सम्मुख हवा के कारण देर से पहुंचा है, इसलिए वे ओरेनबुर्ग रात के पहले नहीं पहुंच पायेंगे, जो उनके जहाज़ के उतरने का अगला ठिकाना था। ओरेनबुर्ग में छः बजे तक अंधेरा घिर आयेगा। इसलिए उन्हें रात समारा में ही बितानी पड़ेगी, क्योंकि वायुमार्ग को रात की उड़ान के साधनों से अभी तक लैस नहीं किया जा सका है। यह सब जानकारी उन्हें औसत क़द के भूरी आंखोंवाले एक पायलट से मिली थी, जो उन्हें अगले दिन दूसरे हवाई जहाज़ में आगे ले जानेवाला था। वह अंग्रेज़ी जानता था।

उन्होंने स्नान किया, कमीज़ों के कालर बदले और खाना खाने बैठ गये। वे खाना ख़त्म ही कर रहे थे कि पायलट वहां फिर आ गया।

क्लार्क और मर्री ने उस पर प्रश्नों की बौछार कर दी।

पायलट ने उन्हें बताया कि अपनी यात्रा का तिहाई से ज्यादा हिस्सा तो वे तय भी कर चुके हैं—मास्को से ताशक़ंद कुल साढ़े तीन हज़ार किलोमीटर है। इस वायुमार्ग को स्थापित करने का काम छः महीने में पूरा किया गया था। कुछ रुककर उसने मित्रतापूर्ण मुसकराहट के साथ यह और कहा कि अमरीका में इतना ही लंबा वायुमार्ग स्थापित करने में तीन वर्ष लगते हैं।

क्लार्क और मर्री मुसकरा दिये।

उनके मुसकराने को पायलट ने अविश्वास का लक्षण समझकर तुरंत पूरा विवरण देना शुरू कर दिया—संबद्ध अमरीकी वायुमार्ग का नाम, किलोमीटरों में उसकी सही लंबाई, हवाई कंपनी का नाम, उस इंजीनियर का नाम, जिसने वायुमार्ग को सज्जित किया था और काम के शुरू और ख़त्म होने की सही तारीख़ें... वह सारी बात बड़ी मधुर और जैसे कुछ संकोचभरी मुसकराहट के साथ कह रहा था, मानो अपनी सफ़ाई दे रहा हो: "मैं जानता हूं कि उसी काम को छः गुना तेज़ी से पूरा करके सोवियत इंजीनियरों और मज़दूरों ने बड़ी नादानी का काम किया है, मगर किया क्या जाये, क्योंकि बात तो सचमुच यही है!"

उसी संकोचभरी मुसकान के साथ उसने उन्हें बताया कि अगले वसंत से वायुमार्ग रात की उड़ानों के लिए भी सज्जित हो जायेगा। फिर रात के

पड़ाव के बिना उड़ान पूरी करना संभव हो जायेगा—मास्को से ताशक़ंद अठारह घंटे में पहुंचा जा सकेगा। उनका रास्ता बड़ा दिलचस्प है, क्योंकि उन्हें वोल्गा नदी के प्रवाह को बदलने के लिए किये जानेवाले महाप्रयास पर विहंगम दृष्टिपात करने का अवसर मिल जायेगा। और जिस रेगिस्तान के ऊपर होकर वे जायेंगे, उसकी सिंचाई की योजनाएं भी बन चुकी हैं, यद्यपि अभी उन्हें आख़िरी तौर पर मंजूर नहीं किया गया है। इन विराट परियोजनाओं के रचयिता के संबंध में भी अमरीकी भद्रजन कुछ जानते हैं या नहीं?

नहीं, इस बारे में उन्होंने कुछ भी नहीं सुना है।

द्वितीय पंचवार्षिकी का मानव

तो, बात यह है कि इन परियोजनाओं का रचयिता एक इंजीनियर था और बेशक, बड़ा ही प्रतिभावान इंजीनियर था वह। उसने अपनी कुछ परियोजनाओं की रूपरेखा क्रांति के भी पहले ही बना ली थी और १९१५ में उसने उन्हें ज़ारशाही सरकार के सामने पेश किया। उन्हें एक पागल की सनक मान लिया गया और जब इंजीनियर ने इस बात पर ज़ोर देने की कोशिश की कि उन्हें कार्यान्वित किया जाये, तो उसे पागलख़ाने में डाल दिया गया। मगर ख़ुशक़िस्मती से वह वहां ज़्यादा दिन नहीं रहा, क्योंकि उसे हानिरहित सनकी मानकर रिहा कर दिया गया।

इसके बाद क्रांति आई और क्रांति के बाद गृहयुद्ध, अकाल और विध्वंस। इंजीनियर अपनी परियोजनाओं को परिष्कृत करता चला गया: रेगिस्तानों की सिंचाई, नदियों का रुख़-परिवर्तन, समुद्र-शोषण और जलवायु-परिवर्तन। सोवियत सरकार तब नाकेबंदी की जकड़ में ग्रस्त थी, परिवहन ठप पड़ा था, फिर भी वह मुक्त हुए प्रदेश के अंश मात्र भाग को भी काश्त करने के लिए दुर्धर्ष प्रयत्न कर रही थी। और इंजीनियर कहता था कि लाखों हैक्टर निर्जल मरुभूमि को सींचा जाये। अपनी परियोजनाओं के मुख्य लक्षणों को समझाने के लिए वह ज्ञापिकाएं लिखता रहा। इन ज्ञापिकाओं से यह बात अद्भुत स्पष्टता के साथ प्रकट होती थी कि अमुक नदी के रुख़ को पलटना और उसके पानी को उलटा प्रवाहित करना केवल संभव ही नहीं, बल्कि

नितांत अपरिहार्य भी है। और यह समझना बहुत मुश्किल था कि यह पहले ही क्यों नहीं किया गया था। इंजीनियर ने अपनी ज्ञापिकाओं की प्रतिलिपियां तैयार कीं और उन्हें सभी सोवियत संस्थाओं में प्रसारित कर दिया।

अस्तु, पुनरुद्धार-काल ख़त्म हुआ और सोवियतों के देश ने पुनर्निर्माण के काल में प्रवेश किया। कम्युनिस्ट पार्टी की पंद्रहवीं कांग्रेस ने विराट परियोजनाओं का, समाजवाद का अविलंब निर्माण करने का प्रस्ताव स्वीकार किया। इंजीनियर की ख़ुशक़िस्मती थी कि वह पूंजीवाद से समाजवाद में युगांतक अभिगमन के समय में रह रहा था।

इंजीनियर को स्तालिन से मिलने के लिए बुलाया गया। उसने बड़ी उत्तेजना के साथ अपनी अत्यंत सरल, एकदम स्वयंसिद्ध परियोजनाओं की व्याख्या की। उसकी इन परियोजनाओं को दूसरी पंचवर्षीय योजना में समाविष्ट किया गया।

इंजीनियर क्रेमलिन से लौटा, तो उसके कान रेडियो रिसीवर की तरह गुंजित हो रहे थे। पहली बार यह बात उसकी समझ में आई कि उसकी अत्यंत सरल, एकदम स्वयंसिद्ध परियोजनाओं की क्रियान्विति को संभव बनाने के लिए उसकी रातों की मेहनत में ख़लल डालनेवाली मशीनगनों की उस कष्टकर तड़तड़ाहट का, कुरसियों से गरमाये एक छोटे-से कमरे में अधभूखे रहकर काटे उन लंबे वर्षों का, सारे देश द्वारा दुर्धर्ष और प्रखर श्रम के उन पंद्रह वर्षों का—वह श्रम, जिसमें उसने ज़रा भी भाग नहीं लिया था,—होना ज़रूरी था।

इंजीनियर को काम करने के लिए एक विशाल भवन दिया गया। उसे सहायक, प्रविधिज्ञ, नक़्शानवीस और सिंचाई विशेषज्ञ प्रदान किये गये। भवन के ख़ाली कमरों में नक़्शानवीसों की मेज़ों के मोर्चे लग गये और वे टाइपिस्टों की एक तूफ़ानी टोली की मशीनगनों की तड़तड़ाहट से गूंजने लगे। भवन से तार ऊपर योजना-निकायों तक और नीचे उन नदियों तक तान दिये गये, जो युगों-युगों से अपने पाटों के भीतर शांतिपूर्वक सोती चली आई थीं।

बड़े हाल में दीवार पर टंगे बड़े काले बोर्ड और ख़ाकों से लदी मेज़ के बीच आता-जाता भूरी कामकाजी पोशाक पहने इंजीनियर बोर्ड पर चॉक घुमाकर नदियों के रुख़ को बदल देता, निर्जल मरुभूमियों के बीच से नहरों को निकालकर ले जाता, हाथ के इशारे से तूफ़ानी बादलों को तितर-बितर कर देता, विपुल वायु पुंजों को सरका देता।

भूरी आंखोंवाले पायलट ने इसी तरह या क़रीब-क़रीब इसी ढंग से अपनी बात बताई। इसके बाद वह उस आदमी की तरह संकोच से फिर मुसकरा दिया, जो बातचीत करते-करते अचानक यह अनुभव करता है कि दूसरे आदमी से उसके स्वास्थ्य और परिवार के बारे में पूछ-ताछ किये बिना वह लगातार अपने स्वास्थ्य और परिवार के बारे में ही बात करता रहा है। और, ज़ाहिरा तौर पर, अपनी इस भूल को सुधारने की इच्छा से उसने पूछा:

"अच्छा, अपनी सुनाइये, अमरीका में क्या हालत है? मंदी कैसी है?"

यह बात ऐसे लहजे में कही गई थी कि लगता था, मानो पूछ रहा हो: "कहिये, अमरीका में आपके चाचा कैसे हैं?"

मिनट भर सब चुप रहे। फिर बार्कर ने जवाब दिया:

"यहां आप सभी लोगों का अमरीका की मंदी के बारे में जो विचार है, वह बहुत ही अतिशयोक्तिपूर्ण है। ठीक है, हमारा देश इस समय कुछ कठिनाइयों का अनुभव कर रहा है–कोई भी इससे इनकार नहीं करता। लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका एक ख़ासी ठोस और धनी संस्था है, और इस भय का कोई आधार नहीं है कि वह शीघ्र ही इन कठिनाइयों से नहीं निकल आयेगा। कुछ भी हो, इस बात में कोई तुक नहीं कि आप लोग इस 'मंदी' पर ख़ुशियां मनायें। जब आपका देश मुश्किलों में था और आबादी भूखों मर रही थी, तो संयुक्त राज्य अमरीका ने द्वेषपूर्ण भाव से ख़ुशियां मनाने के बजाय आपके अकाल से मरते लोगों को मदद भेजी। और आज, जब हमारी मदद की बदौलत आप अपनी मुश्किलों से निकल आये हैं, तो आपने इन सब बातों को तो भुला दिया है और हमारे दुर्भाग्य पर ख़ुशियां मना रहे हैं।"

पायलट अब भी मुसकरा रहा था।

"मुझे लगता है कि इस वक़्त तो आप ज़रा अतिशयोक्ति कर रहे हैं," आख़िर उसने कहा। "हम सब लोग मिस्टर हूवर और अमरीका के नागरिकों के इसलिए आभारी हैं कि उन्होंने हमारी क्षुधापीड़ित जनता की सहायता की थी, मगर इस सहायता की मात्रा बहुत ही मामूली थी और शायद आप तक इस बात पर गंभीरता के साथ विश्वास नहीं करते कि यह सिर्फ़ अमरीका की सहायता की बदौलत था कि हमने अकाल से मुक्ति पाई। जैसा कि आप भी जानते हैं, हमारे देश के नागरिकों ने ब्रिटेन के

भूखे खनिकों की उनकी हड़ताल के समय सहायता की थी। इसमें कोई शक नहीं कि अगर आपके देश के मज़दूर और किसान कभी किसी मुश्किल में पड़े, तो हमारे देश के मजदूर उनकी बहुत सहायता करेंगे। यह बताइये, अगर आपके विभिन्न राज्यों के कल-कारख़ाने लगभग पूरी तरह से हमारे आर्डरों की बिनाह पर ही न चलते होते, तो क्या अमरीका में बेरोज़गारी कहीं ज्यादा नहीं होती? आप जानते ही हैं कि इस समय हमारा देश ही आपके भारी उद्योग का एकमात्र बड़ा ग्राहक है और वह क़ीमत सोने में नक़द अदा करता है और इस तरह लाखों अमरीकी मज़दूरों को बेरोज़गारी से बचा रहा है। बोलिये, है या नहीं?"

क्लार्क को लगा कि पायलट यह और कहना चाह रहा था: "और उन बेरोज़गार इंजीनियरों के बारे में क्या कहा जाये, जो रोज़गार के लिए हमारे यहां आते हैं?" मगर उसने और कुछ नहीं कहा।

"मैं यहां अपनी विशेषज्ञता का काम करने आया हूं, राजनीति के बारे में बहस करने के लिए नहीं – उससे मेरा कोई सरोकार नहीं," बार्कर ने चिढ़कर कहा। "कुछ भी हो, मेरे ख़याल से अब सो जाना चाहिए। अच्छा, सज्जनो, शुभरात्रि।"

मर्री, जो पायलट की बातों को बड़ी दिलचस्पी के साथ सुन रहा था, दृढ़ विश्वास के साथ बोला:

"आपको इस काम पर लगाये रखकर पार्टी अपना बहुत नुक़सान कर रही है। आप बहुत बढ़िया क़िस्सा-गो और पैदाइशी प्रचारक हैं। यह बात युक्तिसंगत नहीं कि आपको अपनी सारी जिंदगी आसमान में ही गुज़ारनी पड़े, जहां आप चुप रहने के लिए मजबूर हैं।"

पायलट अचानक गंभीर हो गया।

"आप ग़लती पर हैं। पहली बात तो यह है कि मैं पार्टी सदस्य नहीं हूं..."

मर्री और क्लार्क ने अविश्वास के साथ एक दूसरे की तरफ़ देखा।

"आप इस पर विश्वास नहीं करते? लेकिन अगर मैं पार्टी सदस्य होता, तो मुझे इस बात को छिपाने की क्या ज़रूरत थी? मैं समझ सकता हूं कि आपके देश की बात दूसरी है... लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, यहां पार्टी वैध है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं ग़ैर-पार्टी व्यक्ति हूं। और शायद इस बात पर मैं अकसर अफ़सोस करता हूं। मैं गृहयुद्ध के समय

पार्टी में शामिल नहीं हुग्रा – मैं ख़ुद नहीं जानता कि क्यों। मेरा ख़याल था कि ग्रादमी पार्टी में शामिल हुए बिना भी सोवियत सत्ता के लिए लड़ सकता है। मैंने कोई ख़ास राजनीतिक शिक्षा नहीं पाई है... मैं ग्रभी दो-तीन साल ग्रौर उड़ने का काम करूंगा बाक़ी फिर देखेंगे। काफ़ी ख़ाली समय होने पर मैं ग्रध्ययन शुरू कर दूंगा।"

यूरोप से विदाई

क्लार्क को जब जगाया गया, तब क़रीब-क़रीब ग्रंधेरा ही था। ज़मीन से घनी वाष्प उठ रही थी। हवाई जहाज़ उड़ने की तैयारी में गड़गड़ा ग्रौर घुनघुना रहा था। लगता था कि जैसे धरती ख़ुद रोज़ की दौड़ लगा लेने के बाद मुंह से झाग निकालते थके घोड़े की तरह हिनहिना रही है।

मर्री, बार्कर ग्रौर रूसी यात्री पहले से ही जहाज़ के बराबर ग्रपनी बरसातियों के कालर उठाये ग्रस्तव्यस्त ग्रौर कांपते हुए खड़े थे। हवा की दिशा दर्शाने के लिए एक खंभे पर लगा धारीदार "सासेज" एक हाथवाले ग्रादमी की ख़ाली ग्रास्तीन की तरह ढीला-सा लटका हुग्रा था। ग्रपनी बरदी में पायलट ग़ोताख़ोर जैसा लग रहा था ग्रौर जहाज़ के इंजन के साथ उलझा हुग्रा था। सभी ने एक तनावपूर्ण ख़ामोशी साध रखी थी।

मिनट भर बाद ही हवाई जहाज़ सोते हुए शहर के ऊपर रात की ग्रकृष्ट धरती को ट्रैक्टर की तरह चीरता हुग्रा उड़ने लगा था। क्षितिज पर उषा के ग्रागमन की श्वेत रेखा स्पष्टत: ग्रंकित हो गई थी। इंजन की एकरस गुंजार ने सभी को नींद की गोद में पहुंचा दिया। क्लार्क को भी पता नहीं चला कि केबिन की दीवार पर ग्रपना सिर टिकाये-टिकाये कब उसे झपकी ग्रा गई।

जब उसकी ग्रांख खुली, तो दिन निकल चुका था। नीचे, कोई दस मीटर की दूरी पर, टीलों ग्रौर गढ़ों से परिपूर्ण ग्रंतहीन हिमक्षेत्र फैला हुग्रा था। जहां-तहां बर्फ़ की नुकीली चोटियां इतनी ऊपर उठ जाती थीं कि लगता था कि वे किसी भी क्षण जहाज़ के पंखों को छूने लग जायेंगी। क्लार्क को लगा कि जहाज़ उत्तरी ध्रुव पर उड़ रहा है।

क्लार्क ने ग्रपनी ग्रांखें मलीं, ग्रपने को यह विश्वास दिलाने की कोशिश

की कि वह अभी सो ही रहा है, मगर वह अद्भुत हिमाच्छादित छटा फिर भी लुप्त नहीं हुई – इसके विपरीत, जहाज कई मीटर और नीचे की तरफ़ आ गया, मानो इस बर्फ़ीले मैदान पर ही उतरने की तैयारी कर रहा हो।

क्लार्क ने अपने सहयात्रियों पर निगाह डाली। एक कोने में घुसकर बैठा हुआ मर्री बर्फ़ के अंतहीन विस्तार को निरपेक्ष भाव से देख रहा था। रूसी अपने सिर को छाती की तरफ़ झुकाये शांत मन से सो रहा था।

क्लार्क ने तुंगतामापी पर नज़र डाली और हैरानी के साथ पाया कि जहाज १८०० मीटर की ऊंचाई पर उड़ रहा है। उसने खिड़की के बाहर एक निगाह और डाली और दो टीलों के बीच की खुली जगह में से – मानो हिमनद में किसी गहरी दरार में से – उसे अचानक सीधे, बहुत-बहुत नीचे, धरती का एक हरा टुकड़ा नज़र आया। वे लोग एक लहराते मेघपुंज के ऊपर उड़ रहे थे।

टीलों के बीच ख़ाली जगहें अधिकाधिक जल्दी के साथ आने लगीं। इन सफ़ेद कुंओं के पेंदे में नज़र आनेवाली हरियाली अपनी लगभग अप्राकृत चटक के कारण आंखों में चुभ रही थी। बहुत निचाई पर क्लार्क झाड़-झंखाड़ के बीच अधछिपी एक पतली, सर्पवत टेढ़ी-मेढ़ी नदी को देख सकता था।

कुछ मिनट बाद यह सघन मेघमाला अचानक फट गई और उनके पीछे एक अपार हिमक्षेत्र की तरह से तैरने लगी। कुछ देर तक जहाज एकरस हरे मैदान के ऊपर उड़ता रहा। फिर वह धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। क्लार्क को लगा कि जैसे उसका कलेजा गले में आ रहा है। उसे मिचली आने लगी।

नीचे उसे एक शहर नज़र आया, मानो घूमती मेज पर पेशेंस के ताश क़रीने से लगे हुए हों। क्लार्क का सिर घूमने लगा। उसने तय कर लिया कि अब और खिड़की से नहीं झांकेगा और उसने अपनी आंखें फिर तभी खोलीं, जब जहाज ज़मीन पर उतर गया। पहियों के स्पर्श के साथ ज़मीन इस तरह तड़प उठी, जैसे घोड़े को घुड़मक्खी ने डंक मार दिया हो और फिर परवस उदासीनता से शांत हो गई।

केबिन का दरवाज़ा खुला और ताज़ा हवा का झोंका भीतर घुस आया। क्लार्क भारीपन से घास पर कूद आया। पैरों के नीचे ज़मीन उसे जहाज के डेक की तरह झूमती प्रतीत हुई। वह टांगों को फैलाये-फैलाये कुछ क़दम चला

ग्रौर फिर भदराकर ज़मीन पर ढह गया। घास के पौधों में हवा सनसना रही थी। क्लार्क ने धरती से कसकर चिपटकर ग्रपने को ढीला छोड़ दिया ग्रौर उसका सारा शरीर स्थायित्व की सुखानुभूति का पान करने लगा।

पायलट ग्राया ग्रौर उसने उन्हें पैराफ़िन में भीगे रूई के कुछ फाहे दिये, जिससे इंजन की गरज का कानों पर ग्रसर न पड़े। उसने यात्रियों से विनोदपूर्वक कहा कि वे यूरोप से विदा ले लें, क्योंकि ग्रोरेनबुर्ग यूरोप में उनका ग्राख़िरी पड़ाव है।

ग्रोरेनबुर्ग के बाद एशिया शुरू हो गया। लेकिन कितनी ही सावधानी से देखने के बावजूद क्लार्क दोनों महाद्वीपों को एक दूसरे से पृथक करनेवाली सीमारेखा या सीमांत-स्तंभ को नहीं देख पाया। ग्रोरेनबुर्ग के पहले ही जो ग्रंतहीन मैदान शुरू हो गया था, वह ग्रधिकाधिक पीला, ग्रधिकाधिक एकरस होता चला गया। ग्रब वह भूरे से मोमजामे से ढंकी एक ग्रसीम मेज़ जैसा लग रहा था। उस पर जहां-तहां काली रोटियों की तरह छितरे हुए युर्तो* के इक्के-दुक्के समूहों ग्रौर देखने में रूसी चायदानियों जैसे लगनेवाले पहले ऊंटों को ग्रपनी पतली-पतली टांगों पर मेज़ पर चहलक़दमी करते ग्रौर कोहानों को शान से झूमते देखने के बाद ही क्लार्क ग्राख़िर यह विश्वास कर सका कि यूरोप पीछे छूट गया है।

प्राकृतिक दृश्य ग्रौर यात्रा की पिछली मंज़िल का मिला-जुला ग्रसर निद्राजनक था। ग्रपने रूसी सहयात्री के उदाहरण का ग्रनुकरण करते हुए, जो ग्रोरेनबुर्ग से ही खर्राटे लेता ग्रा रहा था, इस बार क्लार्क भी लंबी तान गया। ग्रब की बार वह काफ़ी देर सोया होगा, क्योंकि ग्रांख खुलने पर वह बड़ी ताज़गी ग्रौर प्रफुल्लता का ग्रनुभव कर रहा था।

पीला मैदान ग्रब पहले से भी ज़्यादा निर्जन लग रहा था। उनके नीचे एक ग्रंतहीन घुमावदार तार की तरह रेलवे लाइन थी। रेगिस्तान पर रेंगती एक ट्रेन नज़र ग्राई। लगता था जैसे कई टुकड़ों में कटा हुग्रा केंचुग्रा ग्रपने क्षत-विक्षत शरीर को बड़ी मुश्किल के साथ घसीटकर मरहम-पट्टी के किसी केंद्र में ले जा रहा है। ग्राख़िर वह वहां पहुंच जायेगा ग्रौर वे उसकी मरहम-पट्टी करने से इनकार कर देंगे ग्रौर वह रेंगता हुग्रा ग्रागे

---

* ख़ेमा।

अगले केंद्र की तरफ़ चल देगा और इसी तरह स्टेशन स्टेशन करके सारे रेगिस्तान को पार करता चला जायेगा।

रेगिस्तान की खुरदरी खाल कटोरों जैसी फुंसियों से भरी हुई थी, जिन्हें देखकर उबलती लपसी की सतह पर फटते बुलबुलों की याद आती थी। कहीं कहीं उसमें पिघले लावा की तरह दीप्त रंगों की धारियां थीं। लगता था, जैसे हवाई जहाज़ चांद के ऊपर उड़ रहा है। खगोल की पाठ्य-पुस्तकों में उसकी सतह ऐसी ही दिखाई जाती है।

और वह रहा दीयासलाई की डिबियों का परिचित ढेर – शहर, और शहर के आगे था हवाई जहाज़ों को निदेशित करनेवाला विशाल सफ़ेद घेरा – हवाई अड्डा।

अक्त्यूबिंस्क में रूसी यात्री उतर गया। हवाई अड्डे पर एक कार उसका इंतज़ार कर रही थी। सभी को अलविदा कहने के बाद उसने पायलट के प्रति विशेष आभार प्रकट किया, प्रतीक्षा में खड़ी फ़ोर्ड कार में जा बैठा और अपनी टोपी हिलाते हुए चल दिया।

"उसका कहना है कि तीन महीनों में पहली बार उसे सचमुच अच्छी तरह से सोने को मिल पाया है," पायलट ने क्लार्क को बताया। "वह, वहां, स्तेपी में बन रहे विशाल कारख़ाने का निदेशक है।"

क्लार्क नहीं समझ पाया कि इस रेगिस्तान में कोई कारख़ाना बनाने का क्या फ़ायदा है और कारख़ाना यहां बनायेगा भी क्या। पायलट ने, जिससे उसने यह प्रश्न किया था, कहा कि रेगिस्तान तो अभी आगे है। अक्त्यूबिंस्क क़ज़ाख़स्तान के एक अन्नोत्पादक ज़िले का केंद्र है। धरती यहां सदियों तक अछूती पड़ी रही थी, और अब जो उन्होंने उसे खोदना शुरू किया, तो मिले फ़ास्फ़ोराइट, एस्बेस्टास, अबरक, तांबे के ज़ख़ीरे – जो चाहें...

हवाई अड्डे की छोटी-सी इमारत में प्रवेश करने पर यात्रियों ने पाया कि उनके लिए खाने की मेज़ लगी हुई है। पांच आदमी मेज़ पर खाना खाने बैठ गये। पांचवां आदमी मध्यवय था और उसकी कमीज़ का कालर खुला हुआ था। उसका चेहरा और गरदन धूप से संवलाये हुए थे और लगता था कि उसके बाल तक धूप खाये हुए हैं – उनमें चमकते रुपहले बाल अपनी सफ़ेदी का ख़याल नहीं पैदा करते थे, बल्कि लगता था कि उन्हें धूप ने राख जैसा कर दिया है।

सुख्यात अपरिचित

केबिन में अपनी सीटों पर फिर बैठने के बाद अमरीकियों ने देखा कि अक्त्यूबिंस्क में उतरनेवाले रूसी की जगह खुले कालर की कमीज़ पहने आदमी ने ले ली है।

पायलट ने उनसे पूछा कि क्या वे "हवाई कार" में सैर करना चाहेंगे, तो सभी ने "हां" कह दिया, यद्यपि उनमें से कोई भी "हवाई कार" का मतलब नहीं जानता था।

हवाई जहाज़ ऊपर उठा और कुछ देर सामान्य ऊंचाई पर उड़ता रहा। इसके बाद वह तेजी से नीचे उतरने लगा। क्लार्क ने सोचा कि उसका इंजन ख़राब हो गया है और वे स्तेपी पर फ़ोर्स्ड लैंडिंग करनेवाले हैं। जहाज़ ज़मीन को लगभग छू ही रहा था, मगर वह उस पर उतरा नहीं। नीचे जहाज़ के पहियों की सीध में तार के खंभों की क़तार चली गई थी, जो लकड़कोट के लट्ठों की तरह तेज़ी से निकलते चले जा रहे थे। अचानक रेलवे लाइन ने बाईं तरफ़ मोड़ लिया और आंखों से ओझल हो गई।

जहाज़ स्तेपी के ऊपर प्रबल वेग से उड़ता चला गया। बीच-बीच में उन्हें ऊंटों के जो झुंड दिखाई पड़ते, वे इंजन की कर्णभेदी गरज को सुनकर आतंकित हो अंधाधुंध इधर-उधर बिखर जाते। पोस्तीन की नुकीली टोपी पहने एक चरवाहा, जिसने जहाज़ को ज़मीन की सतह को छूते हुए उड़ते देखा, मारे डर के उसके आगे-आगे भागने लगा। आगे-आगे वह, और उसके पीछे-पीछे जहाज़ की विशाल छाया, और अचानक, उसकी मौजूदगी को अपने ऊपर ही अनुभव करके वह वहीं मुंह के बल ज़मीन पर पड़ गया।

उनके पीछे भागता स्तेपी भाटे के बाद समुद्र जैसा प्रतीत हो रहा था। क्लार्क को लगा कि जैसे वह दो सौ किलोमीटर प्रति घंटे की चाल से रेसिंग कार में चला जा रहा है। अब जाकर ही उसकी समझ में आया कि पायलट ने इस ज़मीन-छू उड़ान को "हवाई कार की सैर" क्यों कहा था।

अभी भी पूरी रफ़्तार से उड़ते हुए ही वे स्तेपी के बीचोंबीच बसे एक क़सबे के ऊपर से गुज़रे, जिसके नाटे-नाटे मकान क़रीने से सूखने के लिए रखी मिट्टी की ईंटों जैसे दीख रहे थे। वहां कोई सभा हो रही थी। क़सबे का चौक ऊंटगाड़ियों और नुकीली टोपियां पहने लोगों की हिलती हुई भीड़ से भरा पड़ा था। पास आते हवाई जहाज़ को देखते ही अपनी गाड़ियों

को अपने पीछे लिये-लिये ही ऊंट डर के मारे चौपाये शुतुरमुर्गों की तरह सिरों को अपनी टेढ़ी गरदनों पर पीछे फेंके स्तेपी की तरफ़ भाग खड़े हुए। भीड़ भी मारे डर के एक सांस में ही वहां से ग़ायब हो गई।

एक बार फिर स्तेपी आंखों के सामने आ गयी और उसके ज्वार में क़सबा हरियाली की लहरों द्वारा धुलते एक अचानक प्रकट होनेवाले लघु द्वीप की तरह अदृश्य हो गया। फिर हरी लहरें भी लुप्त हो गईं और ज़मीन एक अंतहीन वालुका-राशि में परिणत हो गई।

ढाई घंटे की इस सिरफिरी उड़ान के बाद वे एक हवाई अड्डे के सफ़ेद घेरे पर जा उतरे।

उन्हें रात यहीं बितानी थी। पायलट आया और क्लार्क तथा मर्री की उल्लासपूर्ण वाहवाही को सुनकर कहने लगा कि क़ायदे से तो उस पर उड़ान के सारे नियम भंग करने के लिए मुक़दमा चलाया जाना चाहिए। मगर उसके मुसाफ़िर उसके पक्ष में गवाही दे देंगे, क्योंकि इस ज़मीन-छू उड़ान की वजह से वे चक्करों और धक्कों से बच गये, जो यात्रा के इस हिस्से पर ख़ासकर अप्रिय होते हैं।

चेहलकर से क्लार्क अपने मन में प्लेट में रखी जेली की तरह सफ़ेद किनारोंवाली एक अटपटी और धुंधली-सी झील की छवि लेकर रवाना हुआ।

चेहलकर के आगे लहराती रेत का असीम रेगिस्तान था, जिसमें बालू के टीलों की भरमार थी। ये वही बरख़ान* थीं, जो पूरे-पूरे क़ाफ़िलों और सारी की सारी बस्तियों को निगल जाती हैं। आंधी आने पर रेत की ये घुंघराली लहरें अचानक चलने लगती हैं और स्तेपी पर पागल भेड़ों के रेवड़ की तरह सब कहीं घूमने लगती हैं। क्लार्क ने कल्पना की : भयग्रस्त ऊंट भाग रहे हैं, उनकी गरदनों में बंधी घंटियां घबराहट में टनटना रही हैं, रेत के लाल-लाल बादल जंगल की आग की सी तेज़ी से बढ़े आ रहे हैं, भागते क़ाफ़िले की शुष्क, भयावह सरसराहट सुन पड़ रही है, जल्दी-जल्दी में लपेटकर युर्तों को ऊंटों पर लाद दिया गया है और वे अपनी पतली-पतली टांगों पर उन्हें लिये बदहवासी से रेगिस्तान में भागे चले जा रहे हैं...

घंटे भर बाद जहाज़ मानो नीली मायोलिका के चमचमाते सुचित्रित

---

*खिसकती बालू-राशियां।

निष्प्राण फ़र्श के ऊपर उड़ रहा था। यह अराल सागर था। आसपास का रेगिस्तान पानी में अपनी लंबी-लंबी रेतीली जीभों को घुसाकर उसकी नीली नमी को सुढ़क रहा था। सागर की अचलता ने उसे एक अवास्तविकता-सी प्रदान कर दी थी। उसे देखकर क्लार्क को धातु की उन चमकती हुई प्लेटों की याद आ गई, जिन्हें देखकर लगता है कि जैसे स्याही बिखरी हुई हो।

दोपहर को, दो और पड़ावों के बाद जहाज़ अपनी मंज़िल पर पहुंच रहा था। रेत के पीले समुद्र में एक हरे टापू की तरह ताशक़ंद का नख़लिस्तान क्षितिज पर दिखाई देने लगा था। पीलिमा के एकरस विस्तार से थकी हुई आंखें अरीक़ों* की पतली-पतली झालरों से घिरे बाग़ों के हरे-हरे चौखटों पर जाकर टिक गईं, मानो बढ़िया कामदार चोग़े के बार-बार दुहराये जानेवाले नमूने हों। क्लार्क ने अपनी किताब को अलग रख दिया और राहत के साथ खिड़की के बाहर देखने लगा। बाग़ों की हरी चादर की पृष्ठभूमि पर शहर ऐसा लग रहा था, मानो डोमिनो की अधखेली बाज़ी बिछी हुई हो।

हवाई अड्डे के कार्यालय में एक ताजिक अधिकारी अमरीकियों से मिला, जो कुछ अंग्रेज़ी बोल सकता था। एक खुली हुई कार में बैठकर वे हलकी धूल बिछी और दोनों तरफ़ सरू जैसे पतले और ऊंचे पोपलरों की क़तारों से घिरी चौड़ी सड़कों पर से गुज़रे। पोपलरों के नीचे अरीक़ प्रसन्नतापूर्वक कलकला रही थीं। हर सड़क के साथ जाती हरियाली की अंतहीन जाली और दोनों तरफ़ कुत्तों की तरह हठपूर्वक दौड़ती अरीक़ें उन्हें इस बात की याद दिला रही थीं कि यह सारा शहर चप्पा-चप्पा करके कई पीढ़ियों के हाथों द्वारा रेगिस्तान से जीती रेत पर बसा हुआ है। तपती सड़क के आवरण को भेदकर ज़िद्दी धूल के बादलों की शक्ल में रेगिस्तान के झोंके आ रहे थे।

एक चौराहे पर आगे का रास्ता रुका हुआ था। सामान से लदे ऊंटों का एक काफ़िला टनटनाती घंटियों की विषादपूर्ण गूंज के साथ धीरे-धीरे रेगिस्तान की तरफ़ जा रहा था। हर घंटी की अपनी विशेष आवाज़ थी और सभी मिलकर एक विषादमय और विचित्र संगीत में एकीभूत हो गई सी लगती

---

* नहर।

थीं। क्लार्क की टांगें अभी भी कांप रही थीं और उसे लग रहा था, मानो सारा ही शहर रेगिस्तान पर ऊंट की पीठ पर एक विशाल बोझ की तरह डोल और झूल रहा है।

फिर, पोपलरों की दीवार के पीछे, वे कांच और कंक्रीट से बने पौधाघरों जैसे मकानों की क़तारों के सामने से गुज़रे। कांच के पीछे उन्हें पौधों की जगह छत से लटके शेडदार बल्बों की हरी चमक और मेज़ों पर बैठे लोगों की अलंकृत टोपियों की बहुरंगी छटा दीख पड़ी।

क्लार्क ने मन में सोचा कि यहां, संकेताक्षरों जैसे अबोधगम्य रूसी नामों — ओ० स० प० स०, क० प० (बो०) उज़०, चेका — वाले, ऊंटों के काफ़िलों, अरीक़ों और रेवड़ों के प्रवाह को नियंत्रित करते इन पौधाघरों जैसे दफ़्तरों में, नक़्शों से अटी पड़ी इन मेज़ों पर रेगिस्तान पर आम हमला करने की रणनीतिक योजनाएं तैयार की जा रही हैं। और यह सारा नख़लिस्तानी शहर लाखों सिपाहियों की एक ज़बरदस्त फ़ौज के सदर मुक़ाम के अलावा और कुछ नहीं है, जो इस असीम खिसकती बालू-राशि को घेरे हुए है और उसे क़दम-ब-क़दम पीछे धकेलती जा रही है उस नीली मायोलिका की निश्चल ताल जैसी सतह की तरफ़, ताकि आख़िर उसे सागर में धकेल दे।

मकानों की क़तार टूट जाती और फिर शुरू हो जाती। कई मकानों पर तो अभी भी पाड़बंदी का आवरण चढ़ा हुआ था। यह घेरा बहुत लंबा चलनेवाला था और फ़ौज के स्टाफ़ को घेराबंदी की लड़ाई के सभी नियमों के अनुसार जीती हुई जगहों पर तैनात और पुख़्ता किया जा रहा था।

शाम को, होटल में कुछ आराम कर लेने के बाद, अनुग्राही ताजिक अधिकारी अमरीकियों को पुराना शहर दिखाने के लिए ले गया। कार संकरी-संकरी सड़कों और मिट्टी के बिना खिड़कियोंवाले खोखे जैसे मकानों (खिड़कियां भीतरी आंगन की तरफ़ ही खुलती थीं) के बीच चक्कर खा रही थी।

यह असल में कोई शहर था ही नहीं, यह तो वास्तुकला के परिश्रमी पितामहों द्वारा मिट्टी से बनाया शहर का मॉडल था।

सवेरे ही उन्हें लेने के लिए हवाई अड्डे से एक कार आ गई। छोटे-से दफ़्तर में अमरीकियों की उसी रूसी से मुलाक़ात हुई, जो अक्त्यूबिंस्क से उन्हीं के साथ आया था।

एक नया पायलट आया, लॉग-बुक पर उसने एक नज़र डाली और हवाई अड्डे के प्रमुख से किसी बात पर बहस करने लगा। फिर वह मुसाफ़िरों की तरफ़ पलटा, रूसी यात्री, मर्री और क्लार्क की तरफ़ इशारा किया और उन्हें अपने पीछे आने का संकेत किया। चारों उठ खड़े हुए। पायलट ने बार्कर को इशारा करके एक कुरसी दिखाई और तीन उंगलियां उठाकर यह जताया कि एक मुसाफ़िर को रुकना पड़ेगा। क्लार्क समझ गया कि सिर्फ़ तीन लोग ही हवाई जहाज़ से जा सकते हैं।

ताजिक अधिकारी साथ आया नहीं था और वहां मौजूद रूसियों में से कोई अंग्रेज़ी नहीं बोलता था।

पायलट के आदेश को बार्कर भी समझ गया और ग़ुस्से से तमतमाते हुए उसने इशारा करके यह बताया कि वह वहां रुक जाने के लिए क़तई तैयार नहीं है।

मूक अभिनय के सारे भंडार को ख़त्म कर देने के बाद वह तेज़ी से क्लार्क और मर्री पर लपका और हठपूर्वक बोला कि वह वहां नहीं रुकेगा। अगर वे साथ-साथ नहीं जा सकते, तो उन तीनों को विरोधस्वरूप जाने से इनकार कर देना चाहिए और इस भीड़ को अपने जंगली तौर-तरीक़ों का, जो बस इस जंगली मुल्क में ही संभव हैं, सबक़ सिखाना चाहिए। असमंजस में पड़े हवाई अड्डे के प्रमुख की नाक के नीचे, जो विवश होकर मुसकरा और बेबसी से हाथ हिला रहा था, अपने यात्री टिकट को नचाते हुए और रूसी मुसाफ़िर की तरफ़ इशारा करते हुए बार्कर अंग्रेज़ी में चिल्लाकर बोला कि अगर उनमें से किसी का रुकना ज़रूरी ही है, तो यह मूर्ख रुक जाये, मगर किसी को भी उनकी—अमरीकी विशेषज्ञों की—टोली को तोड़ने का हक नहीं है।

पायलट प्रकट दिलचस्पी के साथ सीधे बार्कर के मुंह के भीतर देख रहा था, जहां से पटाखों की तरह ज़ोरदार शब्द तड़ातड़ निकलते चले आ रहे थे, जबकि पसीने में तर प्रमुख शिष्टता के साथ खेद प्रकट करते हुए अपने हाथ चलाये जा रहा था।

तभी वह रूसी, जो अभी तक ख़ामोश खड़ा था, अचानक सब को अचरज में डालता हुआ ख़ासी अच्छी अंग्रेज़ी में कहने लगा:

"कृपया उत्तेजित न होइये। मैं बड़ी ख़ुशी के साथ अपनी जगह आपको दे देता और मैं वहां जाने का ज़रा भी इच्छुक नहीं हूं। मगर

आदेश हुआ है कि मेरा वहां जाना आवश्यक है और सो भी सबसे पहले ही हवाई जहाज़ से। इस मामले में न आपकी और न मेरी इच्छा से कुछ तबदीली हो सकती है। यह हवाई जहाज़ तीन यात्रियों को ही ले जा सकता है। आप सज्जनों में से एक को रुकना होगा और परसों दूसरे हवाई जहाज़ से आना होगा।"

कुछ क्षणों के लिए अचरज के मारे बार्कर की बोलने की ताक़त जाती रही, मगर जब वह संभला, तो उसने पहले जैसी ही सख़्ती के साथ फिर कहा कि वह अकेला ठहरने के लिए तैयार नहीं है।

झगड़ा चलता रहा। पायलट ने, जो शांति के साथ परिणाम की प्रतीक्षा कर रहा था, घड़ी की तरफ़ देखा और हाथ हिलाया, हवाई अड्डे के प्रमुख से कुछ कहा और उन सब को अपने पीछे आने का इशारा किया।

"अगर अब अचानक मुमकिन हो गया है, तो पहले चार लोगों का जाना संभव क्यों नहीं था?" बार्कर ने विजयोल्लास के साथ रूसी यात्री से पूछा।

"उसका कहना है कि वह पेट्रोल कम लेगा और हमें किसी तरह पहुंचा ही देगा। आम तौर पर वह तीन से ज़्यादा को नहीं ले जाता है। यह पहाड़ों के ऊपर से काफ़ी मुश्किल उड़ान है," रूसी ने जवाब दिया।

बार्कर चलते-चलते दुविधा में ठहर गया।

"शायद यही अच्छा रहे कि हम आज जाने का इरादा छोड़ दें?" क्षण भर की ख़ामोशी के बाद उसने मर्री से कहा, "पेट्रोल कम पड़ गया, तो?"

"यही तो वे शुरू से कहते आ रहे थे।"

बार्कर चुप हो गया, मगर वह औरों के पीछे-पीछे चुपचाप प्रतीक्षा में खड़े हवाई जहाज़ की तरफ़ जाने लगा।

"यह रूसी कोई बड़ी हस्ती जान पड़ता है," क्लार्क ने दबी हुई आवाज़ में मर्री से कहा, "शायद कोई सरकारी आदमी ही हो।"

"कहीं चेका का तो नहीं?" मर्री ने आंख मिचकाते हुए कहा।

"नहीं तो। यह कोई लोकप्रिय व्यक्ति होना चाहिए। नहीं देखा आपने कि अक्त्यूबिंस्क से ही सभी पड़ावों पर सभी लोग किस तरह इसका अभिवादन कर रहे थे?"

मर्री ने सिर के इशारे से सहमति जता दी।

...जब अमरीकी यात्री तेरमीज़ में जहाज़ से उतरे, तो उन्हें लगा जैसे वे धातु की जलती हुई चादर पर कूद पड़े हैं। हवाई जहाज़ के पंख पर लगा थर्मामीटर ७० डिगरी सेंटीग्रेड गरमी दिखला रहा था। गरम हवा मुंह से इस तरह चिपक रही थी, जैसे उबलते पानी में भीगा तौलिया।

सभी जगहों की तरह यहां भी रूसी यात्री का सभी पुराने परिचित की तरह अभिवादन कर रहे थे। क्लार्क और मर्री ने अर्थपूर्ण दृष्टि-विनिमय किया।

जब वे लोग जहाज़ पर फिर सवार हुए, तो रूसी ने उन्हें बताया कि उसके कारण उन लोगों को थोड़ा घूमकर जाना होगा, जिससे उनकी यात्रा आधे घंटे ज़्यादा की हो जायेगी। हवाई जहाज़ को पहले उसे सराय-क़मर उतारना होगा, जिसके बाद वह उन्हें लेकर स्तालिनाबाद* चला जायेगा।

क्लार्क और मर्री ने शिष्टता के साथ कहा कि कोई बात नहीं, हम इसके लिए ख़ुशी के साथ तैयार हैं।

तेरमीज़ से हवाई जहाज़ बिना इधर-उधर मुड़े आमू दरिया की धारा के साथ-साथ उड़ रहा था। उनके नीचे जैसे बाल-कथाओं की भूमि फैली हुई थी। मिट्टी कत्थई और फूली हुई थी—केक की तरह। नदी में जैसे दूध मिली फेनिल कॉफ़ी बह रही थी। द्वीपिकाओं और पुलिनों की अंतहीन शृंखलाओं को देखकर लगता था कि कॉफ़ी भाप बनकर उड़ने भी लगी है।

यह सोवियत संघ का दक्षिणी सीमांत था। बायें किनारे पर अफ़ग़ानिस्तान था। क्लार्क ने मन ही मन नेगोरेलोये के खेतों की अनपिघली बर्फ़ से लेकर आमू दरिया की रेतीली द्वीपिकाओं तक गत कुछ दिनों में तय की दूरी पर दृष्टिपात किया। रूढ़ भूगोल के दावे के विपरीत, जो भूगोलक के पांच महाद्वीपों को ही मान्यता देता है, यह सचमुच छठा महाद्वीप था...

अधबीच फंसे

सराय-क़मर हवाई अड्डे पर कई लोगों ने उनकी अगवानी की, जिनमें से कई हरी फ़ौजी टोपियां पहने सैनिक—सीमांत टुकड़ियों के कमांडर—भी थे। रूसी यात्री को देखते ही वे ज़ोर से चिल्लाये—"हुर्रा!" और उसे घेरकर

---

*अब दूशंबे।

उससे हाथ मिलाने लगे। अमरीकियों की तरफ़ उन्होंने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। हवाई अड्डे के अलग-अलग कोनों से कई और लोग भागते हुए वहीं आ पहुंचे।

आख़िर रूसी सफ़ेद कमीज़ और ताजिक टोपी पहने सांवले रंग के एक ताजिक और हरी टोपी पहने एक फ़ौजी भीड़ से अलग हो गये। मिनट भर वे किसी चीज़ के बारे में पायलट से बातें करते रहे और फिर अमरीकियों के पास आये। फ़ौजी आदमी ने उन्हें सलाम किया और फिर कुछ उच्चारण-भ्रष्ट, मगर बहुत ही सही अंग्रेज़ी में उनसे कहने लगा कि उसे बड़ा खेद है कि अमरीकी सज्जन आज अपनी यात्रा पूरी नहीं कर पायेंगे—ज़िले में एक दुर्घटना हो गई है। मुख्य अरीक़ का पानी अपने किनारों को तोड़कर बह निकला है और उसने कपास के खेतों को जलमग्न कर दिया है। कुछ लोग बुरी तरह घायल हो गये हैं और हवाई जहाज़ को उन लोगों को स्तालिनाबाद पहुंचाने के लिए इस्तेमाल करना पड़ रहा है, जिन्हें तुरंत शल्यचिकित्सीय उपचार की ज़रूरत है। अमरीकी यात्री अपनी यात्रा एक-दो दिन बाद पूरी कर सकते हैं, और, अगर वे इंतज़ार न करना चाहें, तो उन्हें कार द्वारा स्तालिनाबाद पहुंचाया जा सकता है।

इसका न क्लार्क, न मर्री और न बार्कर ने ही कोई जवाब दिया। वे अपने सिरों पर ग़ज़ब की तेज़ी से प्रहार करती असहनीय धूप में आंखें मिचकाते अनिश्चय में खड़े हुए थे। फ़ौजी और टोपी पहने ताजिक ने उनसे अपने पीछे आने का अनुरोध किया। वे हवाई अड्डे की जलती चादर पर चल पड़े। लगता था, जैसे उनके पैरों के नीचे ज़मीन से ललछौंह धूल के बादलों की शक्ल में धूआं निकल रहा है।

सफ़ेद चूना पुता छोटा-सा मकान मक्खियों की भिनभिनाहट से गूंज रहा था। बाहर के मैदान के मुक़ाबले यहां ठंडक थी। फ़ौजी और ताजिक अमरीकियों को वहां अकेले छोड़कर बाहर चले गये। कुछ मिनट बाद एक लाल सैनिक कमरे में आया, तीन गिलास और कत्थई-से तरल से भरा एक जग मेज़ पर रखा और वहां से चला गया। उन्होंने व्यग्रता से एक-एक गिलास खट्टा-मीठा, ठंडा तरल पिया और बैठकर खिड़की के बाहर ताकने लगे। मर्री मेज़ को थपकते हुए एक अनिश्चित-सी धुन निकालने लगा।

हवाई अड्डे पर लोग इधर-उधर दौड़-भाग रहे थे। मैदान के छोर पर दो लाल सैनिक एक स्ट्रेचर को लेकर आते दीखे। एक पट्टियां बंधी आकृति

को ग्राहिस्ता से स्ट्रेचर पर से उठाकर हवाई जहाज़ के केबिन में पहुंचाया गया। फिर एक ग्रौर स्ट्रेचर लाया गया।

उस मकान की तरफ़, जिसमें तीनों ग्रमरीकी बैठे हुए थे, लोगों का एक दल ग्राया: ग्रक्त्यूबिंस्क से ग्रानेवाला रूसी, ग्रंग्रेज़ी बोलनेवाला फ़ौजी, सांवले रंग के तीन ताजिक ग्रौर दो ग्रौर रूसी। वे मकान से कुछ दूर ही रुक गये ग्रौर ग्रपने हाथों को हिलाते हुए गरमागरम बहस करने लगे। झुलसानेवाली धूप प्रकटत: उन पर कोई ग्रसर नहीं डाल रही थी।

परिचित फ़ौजी ने ग्राकर ग्रमरीकियों से कहा कि वे ग्रगर हाथ-मुंह धोना या नहाना चाहें, तो एक सैनिक उन्हें गुसलख़ाने तक पहुंचा देगा – वह पास ही है।

मर्री ने कहा कि हम जल्दी से जल्दी काम की जगह पर पहुंचना चाहते हैं। क्या हमें कोई कार मिल सकती है, जिससे तुरंत रवाना हो सकें?

फ़ौजी ने बहुत ग्रफ़सोस ज़ाहिर करते हुए बताया कि बड़े खेद की बात है कि सभी उपलब्ध कारों को संकट का सामना करने के काम में लगा दिया गया है।

क्लार्क को यह ग्रप्रत्याशित परिस्थिति मज़ेदार लगने लगी। उसने फ़ौजी को दिलासा दिया: कोई बात नहीं – हमें ग्रासपास की जगहों से परिचित होकर भी ख़ुशी ही होगी।

फ़ौजी ने उन्हें विश्वास दिलाया कि इस सिलसिले में वह बड़ी प्रसन्नता के साथ उनकी सहायता करेगा। हां, यह सही है न कि ग्राप तीनों सिंचाई इंजीनियर हैं? यह बड़ी ख़ुशक़िस्मती की बात है, क्योंकि कुशल प्रविधिज्ञों की बहुत कमी है ग्रौर जो दुर्घटना हुई है, उसे कुछ ही दिनों के भीतर दुरुस्त कर दिया जाना चाहिए, नहीं तो फ़सल के बरबाद होने का ख़तरा पैदा हो जायेगा। निस्संदेह ग्रमरीकी सज्जन क्षतिग्रस्त सिंचाई प्रणाली की मरम्मत के लिए किये जानेवाले काम से ग्रवगत होना चाहेंगे ग्रौर ग्रपने बहुमूल्य ग्रनुभव से सहायता प्रदान करेंगे।

क्लार्क ग्रौर मर्री ने ग्रस्पष्टतापूर्वक बुदबुदाते हुए कुछ कहा, जो कुछ-कुछ "बेशक, बेशक" जैसा ही सुनाई दिया।

बाहर से ग्रक्त्यूबिंस्क से ग्रानेवाले रूसी की ग्रावाज़ सुनाई दी, जो सफ़ेद कोटवाले रूसी से कुछ कह रहा था।

"क्या आप बता सकते हैं कि यह कौन हैं?" अक्त्यूबिंस्क से अपने सहयात्री की तरफ़ इशारा करते हुए क्लार्क ने फ़ौजी से पूछा।

"यह? यह हमारे यहां के मुख्य सिंचाई इंजीनियर हैं। बहुत शानदार कारकुन हैं यह। क़िस्मत ने इनके साथ बहुत बढ़िया मज़ाक किया है। पिछले दो साल से वह यहीं काम में लगे रहे हैं। इनका परिवार मास्को में है। यह सचमुच घोड़े की तरह काम करते रहे और मलेरिया के भी शिकार हो गये। पिछले साल कुछ फ़ौरी काम आ पड़ा था, इसलिए इन्होंने छुट्टी नहीं ली। आख़िर इस साल, छः ही दिन पहले, इन्होंने अपना सारा काम ख़त्म किया, दो महीने की छुट्टी ली और हवाई जहाज़ से मास्को रवाना हो गये। लेकिन इनके जाने के अगले ही दिन मुख्य अरीक़ के साथ यह दुर्घटना हो गई। और कोई इंजीनियर क्षति को कुछ ही दिनों के भीतर ठीक करने का ज़िम्मा नहीं ले सका, और ठीक न करने का मतलब होगा कपास की बुआई की पूरी योजना को ख़राब करना। बात यह है कि हमारा ज़िला पूरे सोवियत संघ को मिस्री कपास के बीज के प्रदाय का केंद्र है। ज़रा भी समय नष्ट नहीं किया जा सकता। इस अरीक़ को इन्होंने ही बनाया था और यही इस संकट का सामना भी कर सकते थे। और हमने इनके पीछे-पीछे एक्सप्रेस तार भेज दिया। इनका कहना है कि तार इन्हें तीसरे दिन मास्को के आधे रास्ते पर अक्त्यूबिंस्क में मिला। ख़ैर, इन्होंने तार को पढ़ा, छंटे हुए शब्दों में अपने दिल की भड़ास निकाली, जहाज़ से अपना सूटकेस उतारा और घंटे भर के भीतर ही लौटते हवाई जहाज़ से वापस सराय-क़मर रवाना हो गये। एक बार फिर इनकी छुट्टी मारी गई है। बेशक, बेहद नाराज़ हैं यह, और भला, क्यों नहीं! दो बरस से यह अपने परिवार से नहीं मिले हैं। ख़ुद भी यह शहरी आदमी हैं। जेब में छुट्टी के काग़ज़ रखे-रखे घर के आधे रास्ते से लौट आना कोई मज़ाक़ तो नहीं है।"

क्लार्क हंस पड़ा।

फ़ौजी ने उस पर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली।

"और हम यही सोच-सोचकर परेशान हो रहे थे कि यह हैं कौन! हर पड़ाव पर लोग इनकी पुराने परिचित की तरह अभ्यर्थना करते थे। अचरज की क्या बात थी, कुछ ही घंटे पहले तो यह उलटी दिशा में जा रहे थे..."

एक सैनिक आया और उसने उनके परिचित फ़ौजी को कोई सूचना दी।

"आप लोगों के लिए एक कमरा ठीक कर दिया गया है। आप हाथ-मुंह धो और कपड़े बदल सकते हैं। आइये, चलिये, मैं आपको पहुंचा देता हूं।"

रास्ते में रूसी इंजीनियर भी उनसे आ मिला।

"क्यों, क्या यह सही है कि आप घर से आधी ही दूर रह गये थे और छुट्टी के काग़ज़ आपकी जेब में थे?" बार्कर ने, जो सबसे पीछे चल रहा था, उससे तंज़भरी आवाज़ में पूछा। "आप बड़ी आसानी से तार को जेब में खोंसकर रख सकते थे और कोई यह नहीं कह सकता था कि वह आपको मिला या नहीं। अगर मैं आपकी जगह होता, तो..."

रूसी ने बार्कर की तरफ़ देखा, मगर जवाब कुछ नहीं दिया।

हवाई अड्डे के बीचोंबीच दौड़ने से बेदम हुए दो आदमी उनके पास पहुंचे। दोनों एक दूसरे की बात को काटते हुए बड़े जोश के साथ कुछ कह रहे थे और बीच-बीच में अपनी धूल-भरी हथेलियों से अपने माथों पर धार बांधकर बहते पसीने को पोंछते जाते थे। अपने चेहरों पर पुती धूल और पसीने के कारण वे आंसुओं से पुते चेहरेवाले बच्चों जैसे लग रहे थे।

"मैं कार आपको अभी दे दूंगा," फ़ौजी ने रूसी इंजीनियर की तरफ़ रुख़ करते हुए अंग्रेज़ी में कहा, "अमरीकी सज्जन भी संकट का सामना करने में हाथ बटाना चाहते हैं। है, न?"

"मैं बहुत आभारी हूं, मगर फ़िलहाल मैं मदद के बिना ही काम चला लूंगा," रूसी ने बात काटते हुए कहा। "मुझे दसेक सैनिक दे दें, तो बहुत अच्छा रहेगा।"

वह मुड़ा और तेज़ी से मैदान को पार कर गया। फ़ौजी और दोनों हांफते हुए ताजिक उसी के पीछे लपकने लगे।

क्लार्क, मर्री और बार्कर अपने सूटकेसों के साथ ख़ाली मैदान के बीच में अकेले रह गये। प्रकटतः उनको भुला दिया गया था। वे वहां अपनी टोपियों को आंखों पर खींचे और धूप की असहनीय चमक में आंखों को मिचकाते हुए खोये से और असमंजस में खड़े हुए थे। हवाई जहाज़ गुर्राता और आगे की तरफ़ उछलता हुआ ख़ाली स्ट्रेचरों को पीछे छोड़कर

मैदान को पार कर गया। मिनट भर बाद ही वह हवा में जा चढ़ा था और उसके इंजन की तेज़ घनघनाहट कर्णभेदी लहरों के रूप में नीचे आ रही थी।

वह तेज़ी के साथ छोटा होने लगा और आख़िर एक मंडराता हुआ धूसर ज़र्रा बन गया और अमरीकियों को लगा कि सुदूर बाहरी दुनिया—न्यूयार्क, नेगोरेलोये, मास्को—के साथ जोड़नेवाला अंतिम धागा अचानक तनकर टूट गया है। मैदान में हारे हुए गोल्फ़ चैंपियनों की तरह वे भदराकर अपने सूटकेसों के ऊपर बैठ गये। उनके चेहरों पर पसीने की मोटी-मोटी धारें बह रही थीं।

कहीं दूर से एकत्र होने की पुकार करते बिगुल की तेज़ आवाज़ सुन पड़ी। भूरे मैदान पर अपने कंधों पर कुदाल लटकाये लाल सैनिकों की एक टुकड़ी लपकती हुई आ रही थी।

नदियों का रुख़ बदला

घरघराती और धड़धड़ाती हुई मैली फ़ोर्ड कार सूखी और धूप से चटचटाती सड़क पर दूरी को लगातार लीलती चली जा रही थी। टेलीग्राफ़ के तारों पर चटक हरे पक्षी समरूपता के साथ बैठे हुए थे। सामने समान पहाड़ी श्रेणियों से घिरा एक असीम वृक्षहीन मैदान था।

गरम सूरज सिर पर तपे हुए टोप की तरह बोझिल लग रहा था। कार में बैठे लोगों के झुलसे हुए चेहरों पर धूल धूसर पाउडर की तरह बैठती जा रही थी।

अपने भभूतिया चेहरों के कारण बार्कर और मर्री अभी-अभी खोदकर निकाली मोमियों जैसे लग रहे थे, जो लापरवाही से हाथ लगते ही चूर-चूर होकर मिट्टी में बदल जाती हैं।

हजामत बने चेहरे की तरह सपाट वृक्षहीन मैदान पर पतली टांगोंवाले सुकुमार जैरानों के छोटे-छोटे झुंड कार के साथ दौड़ लगा रहे थे। जैरानों और कार के बीच ये दौड़ें तभी तक चलतीं कि कार से आगे निकल जाने के बाद जैरान यात्रियों को अपने पुच्छहीन पृष्ठभागों की झलक दिखाते कार की बिलकुल नाक को ही छूते हुए छलांगें लगाते सड़क को पार

कर जाते। इसके बाद अपने पृष्ठभागों को तिरस्कारपूर्वक उठाये हुए वे भागते हुए चले जाते।

नगर के प्रवेश द्वार पर उनका रास्ता अरीक़ में फंसे एक ट्रक ने रोक रखा था। ज़ोर के मारे मुंहों से हूं-हूं की आवाज़ निकालते छः लोग उसे सड़क पर धकेलकर निकाल लाने की निष्फल कोशिशें कर रहे थे। ट्रक कर्णभेदी घरघराहट के साथ झटका मारकर आगे झपटता, पीछे हटता, पर उसके पहिये अरीक़ के घने कीचड़ को असहायतापूर्वक मथकर रह जाते।

दो घंटे बाद मिट्टी की दीवारों की भूलभुलैयों में होकर भटकने के बाद ही कहीं जाकर लगन की पक्की फ़ोर्ड ने अपने हॉर्न को विजयोल्लास के साथ बजाते हुए शहर में प्रवेश किया और सरसराते हुए पेड़ों ने छाया के घने छींटों से थके हुए यात्रियों को तर कर दिया।

सड़क के दोनों तरफ़ मूक भिखारियों की तरह मिट्टी के नेत्रहीन झोंपड़े क़तार में खड़े हुए थे।

हरियाली में बिखरे हुए यूरोपीय नमूने के सफ़ेद एक-मंज़िले मकान एक नये नगर के उदित होने के प्रमाण थे, जो अब क़िशलाक़* के मिट्टी के आवरण को भेदकर निकल रहा था।

यूरोपीय ढंग के मकानों के कमरों में, जहां क्लार्क, बार्कर और मर्री को ठहराया गया था, फ़र्नीचर के नाम को बस, एक-एक फ़ोल्डिंग पलंग, एक-एक मेज़ और दो-दो स्टूल ही थे।

अपने सादे फ़र्शवाले कमरे में आने पर क्लार्क को ऐसा लगा, मानों जंगल के शीतल वातावरण में आ गया हो। यह सुदूर उत्तर से यहां लाई सदाबहार वृक्षों की मंजूषा जैसा प्रतीत होता था।

दरवाज़े पर दस्तक हुई। एक सलोने ताजिक ने कमरे में प्रवेश किया, उसका चमकता हुआ चेहरा शांत और संयत था। उसके पीछे-पीछे सफ़ेद पोशाक पहने एक रूसी लड़की आई। लड़की नुकीली ताजिक टोपी पहने हुए थी। लाल सैनिकों की टोपियों के कनपल्लों की तरह उसके चेहरे को घेरे सुनहरे बालों ने उसे एक अजीब-सी सख़्ती और सतर्कता प्रदान कर दी थी।

लड़की ने अंग्रेज़ी में बातचीत शुरू की :

---

* गांव।

"यह साथी ऊर्तावायेव हैं, हमारी निर्माण-परियोजना के उप-मुख्य इंजीनियर और पहले ताजिक सोवियत इंजीनियर। मेरा नाम पोलोज़ोवा है—मैं एक टेकनिकल कालेज की छात्रा हूं और साल भर के व्यावहारिक प्रशिक्षण-कार्य के लिए यहां आई हुई हूं। फ़िलहाल मुझे आप लोगों के साथ अनुवादिका का काम करना है। अगर अपनी यात्रा के बाद आप बहुत थकान का अनुभव न कर रहे हों, तो साथी ऊर्तावायेव आपको हमारी निर्माणस्थली की स्थिति और उसकी मुख्य रूपरेखा से अवगत करा सकते हैं।"

"बेशक, बेशक," क्लार्क ने अपने अतिथियों के लिए स्टूलों को खींचकर और ख़ुद पलंग पर बैठते हुए शिष्टतापूर्वक कहा, "यहां के काम के बारे में कुछ भी जानकर मुझे बड़ी ख़ुशी होगी। अभाग्यवश, यहां आने के पहले मुझे उसके बारे में बहुत मामूली रिपोर्टें ही मिल पाई थीं।"

"असल बात यह है कि साथी ऊर्तावायेव आपको, मिस्टर..."

"क्लार्क।"

"...मिस्टर क्लार्क, इंजीनियरों के कामकाजी सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित करने आये हैं। सम्मेलन दो घंटे में शुरू होनेवाला है। निर्माण-कार्य की सबसे आवश्यक समस्याओं पर उसमें विस्तार के साथ विचार किया जायेगा। साथी ऊर्तावायेव आपको यह आगाही देना चाहते हैं कि आप यह जानकर घबरा न जाइयेगा कि इस वक़्त यहां क्या हालत है। अपने देश में आपको शायद इतनी मुश्किल हालतों में कभी काम नहीं करना पड़ा होगा। निकटतम रेलवे स्टेशन से यह जगह एक सौ बीस किलोमीटर है और निकटतम घाट से सवा सौ किलोमीटर। और सड़कों की हालत बहुत ही ख़राब है। अब कहीं इस साल जाकर हम घाट तक छोटी लाइन बिछाना शुरू करनेवाले हैं। फ़िलहाल परिवहन के एकमात्र साधन हैं घोड़े, ऊंट और ट्रक, जो यहां की सड़कों पर बहुत जल्दी ही ख़राब हो जाते हैं।"

वह बड़ी जल्दी-जल्दी और सुमधुर रूसी उच्चारण के साथ बात कर रही थी। उसकी बिलकुल कामकाजी लहजे में कही बात को सुनते हुए क्लार्क एक बिलकुल ही असंगत बात मन में सोचने लगा कि उसकी छोटी-सी उठी हुई नाक पर झांइयां सुनहरी रेत के कणों की तरह लग रही हैं—अगर कहीं रूमाल को गीला करके उसे इस नन्ही-सी नाक पर फिरा दिया जाये, तो शायद रूमाल पर सुनहरा पराग जम जायेगा।

"अगर आप इस बात पर ग़ौर करें कि हमें इन परिस्थितियों में छब्बीस एक्स्केवेटर यहां पहुंचाने हैं–पनामा नहर पर आप जितने इस्तेमाल कर रहे थे, उससे ज़्यादा,–तो आप कल्पना कर सकते हैं कि मुश्किलें किस तरह की हैं।"

"आपके दूसरे निर्माण-कार्यों की जानकारी से मैं जान गया हूं कि रूसी लोग असंभव को भी कर सकते हैं," क्लार्क ने शिष्टतापूर्वक कहा।

"यह रूस नहीं, ताजिकिस्तान है और यहां निर्माता रूसी नहीं, ताजिक हैं। रूसी ताजिकों को बस सहायता ही कर रहे हैं।"

क्लार्क ने मन में सोचा कि झांइयों से असल में उसके चेहरे की शोभा बढ़ नहीं रही है और साफ़ जिल्दवाली लड़कियां ही हमेशा ज़्यादा अच्छी रहती हैं।

"अमरीका में सभी सोवियत नागरिकों को रूसी ही कहा जाता है, इसलिए मेरी ग़लती को कृपया माफ़ कीजिये," उसने दिखावटी शिष्टता के साथ कहा, "सोवियत संघ में कुछ समय रह लेने के बाद मैं निस्संदेह आपकी समस्याओं को ज़्यादा अच्छी तरह समझना सीख लूंगा। कृपया ताजिक इंजीनियर से कहिये कि अमरीका से रवाना होते समय मुझे यह मालूम था कि आपके लिए यहां अकेले–विदेशी पूंजी की सहायता के बिना निर्माण-कार्य करना शायद मुश्किल है और मैं आपके काम में पूरी सहायता देने का यत्न करूंगा।"

लड़की ने क्षण भर को क्लार्क की तरफ़ ग़ौर से देखा और मुड़कर उसकी बात का ऊर्ताबायेव को अनुवाद कर दिया। ऊर्ताबायेव ने उठकर अमरीकी के साथ बड़ी गरमजोशी के साथ हाथ मिलाया। फिर दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े। लड़की भी हंसने लगी।

"चलिये, यह अच्छी बात है। हम लोग साथ-साथ काम करेंगे। मुझे आशा है कि मुझे आपसे कुछ सीखने को मिलेगा।"

"उसे विश्वास है कि उसे सभी बातों की मुझसे बेहतर जानकारी है," क्लार्क ने खीजते हुए सोचा। "और जिस अनुग्रह भरे लहजे में वह मुझपर लेक्चर झाड़ रही है, वह तो बिलकुल बेजा है।"

वह इस निश्चय पर पहुंचा कि झांइयों से तो उसका चेहरा निश्चित रूप से बिगड़ गया है।

ऊर्ताबायेव से बात कहने के लिए एकदम उसी की तरफ़ घूमकर क्लार्क

ने उससे निर्माण-कार्य के बारे में ज्यादा विस्तार से बतलाने के लिए कहा— यह सूचना उसके अमरीकी सहकर्मियों के लिए समान दिलचस्पी की साबित होगी—और, जवाब के लिए ठहरे बिना वह बार्कर और मर्री को बुलाने के लिए चला गया।

मिनट भर बाद वह मर्री के साथ लौट आया। बार्कर ने शेव किये बिना आने से इनकार कर दिया था।

ऊर्ताबायेव ने इस अंदाज के साथ एक नीले नक़्शे को खोलकर मेज पर रख दिया, मानो मेहमानों के आगे दस्तरख़ान बिछा रहा हो।

"कार द्वारा यहां आते समय आपको हमारी घाटी का अंदाज़ा लग गया होगा," पोलोज़ोवा अनुवाद कर रही थी, "जैसा कि आपने देखा होगा, यह दो पर्वत श्रेणियों के बीच फैला कोई दो लाख हैक्टर क्षेत्रफल का एक विशाल रेगिस्तानी मैदान है। आपका ध्यान इस बात की तरफ़ गया होगा कि मैदान में प्राचीन सिचाई-प्रणाली के निशान विद्यमान हैं। जनश्रुति के अनुसार, सिकंदर महान के समय यह सारी घाटी सिंचित थी और ख़ूब घनी बसी हुई थी। वख़्श नदी यहां से कोई चार किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ों से घाटी में उतरती है और पचीस किलोमीटर तक बिलकुल सीधी बहती चली जाती है। इसके बाद वह दक्षिण की ओर घूम जाती है और पंज के साथ मिलकर आमू दरिया का निर्माण करती है...

"हिमानी पहाड़ी नदी की पूरी प्रखरता के साथ बहती वख़्श वर्ष-प्रतिवर्ष अपने बायें किनारे की कुछ जमीन को बहा ले जाती थी और यहां के रहनेवालों की अरीक़-प्रणाली के मुख्य भाग को काट देती थी। आबादी को मजबूरन धीरे-धीरे नीचे की तरफ़ हटते जाना पड़ा और मूल सिंचाई-प्रणाली के मुख्य भाग के लिए लगातार नई जगहें चुननी पड़ीं। इस समय घाटी की कुल दो लाख हैक्टर जमीन में से स्थानीय सिंचाई-प्रणाली के अंतर्गत सोलह प्रतिशत से ज्यादा जमीन नहीं आती है। सदियों के दौरान बाक़ी सारी घाटी धूप से जलती निर्जल मरुभूमि में परिणत हो गई है।

"पहाड़ों से घिरी यह घाटी जलवायु और ताप (७० से ८० डिग्री सेंटीग्रेट तक) के लिहाज से उत्तरी अफ़्रीका और मेसोपोटामिया से मिलती-जुलती है। सस्यविज्ञानी अर्तेमोव द्वारा किये प्रयोगों ने साबित कर दिया है कि मिस्री कपास की खेती के लिए यह इलाक़ा बहुत अच्छा है। एक

चौथाई हैक्टर से शुरू करके दक्षिणी ताजिकिस्तान में मिस्री कपास की खेती का रक़बा अब सोलह हज़ार हैक्टर से ज्यादा हो गया है। पूरी घाटी की दो लाख हैक्टर ज़मीन में से एक लाख दस हज़ार हैक्टर ज़मीन सींची जा रही है। इसमें से अस्सी प्रतिशत ज़मीन मिस्री कपास की खेती के उपयुक्त होगी, जो हमें हर साल ५६० हज़ार टन से ज्यादा बढ़िया क़िस्म का रेशा देगी..."

क्लार्क ने एकाग्रतापूर्वक अपनी आंखें ऊर्ताबायेव के जामुनी होंठों पर टिका दी थीं, जिनसे मृदु अबोधगम्य शब्दों की एक धारा प्रवाहित हो रही थी। उसके चेहरे की बनावट का अध्ययन करने पर क्लार्क को वे उभरी हुई एशियाई कपोलास्थियां नज़र नहीं आईं, जिन्हें पाने की उसे आशा थी। एक बार फिर उसने इस असामान्य चेहरे पर बारीक़ी से नज़र डाली।

यह तो कुछ गोलाई पाया हुआ और पारदर्शक सांवली वार्निश चढ़ा एक यूरोपीय चेहरा था।

"इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि इस समस्या का हल सोवियत संघ को विदेशों से कपास का आयात करने की आवश्यकता से पूर्णतः मुक्त कर देगा, जिसके फलस्वरूप अब तक इस तरह ख़र्च होनेवाले सोने को पूरी तरह से हमारे भारी उद्योग में लगाया जा सकेगा। यही कारण है कि सोवियत संघ की सरकार ने हमारी समस्या को अपनी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्यों की योजना में शामिल किया है। इस विशाल प्रदेश को सींचने के लिए मैदान पर एक पैंतालीस किलोमीटर लंबी मुख्य नहर खोदना और सारे मैदान पर नहरों का एक जाल बिछा देना ज़रूरी है। इन नहरों की कुल लंबाई डेढ़ सौ किलोमीटर से ज्यादा होगी। मुख्य नहर का सिरा उस जगह से चार किलोमीटर की दूरी पर होगा, जहां नदी पहाड़ों से उतरकर आती है। नहर चालीस मीटर चौड़ी होगी। उसके तल के अनुसार उसकी गहराई छः से अठारह मीटर तक होगी।"

...सड़क पर एक ट्रक धड़धड़ाता और अपने पीछे मोरपंख की तरह धूल उड़ाता हुआ निकल गया।

उड़ती हुई धूल चक्कर खाते हुए बरामदे भर में फैल गई और उसने खिड़की को धूएं जैसे बादल में आवेष्टित कर लिया...

"...तो, संक्षेप में यह कि संसार का सबसे बड़ा कपास उत्पादन केंद्र हमारे यहां स्थापित होगा। काम के परिमाण का अंदाज़ देने के लिए

आपको यही बतलाना काफ़ी होगा कि इसमें एक करोड़ घन मीटर मिट्टी खोदने का काम, तीन लाख साठ हज़ार घन मीटर सिविल इंजीनियरी निर्माण-कार्य, पचीस हज़ार घन मीटर कंक्रीट और पंज नदी पर स्थित घाट तक एक सौ पचीस किलोमीटर लंबी छोटी लाइन की पटरी का बिछाना सन्निहित है।"

ऊर्ताबायेव ने नक़्शा समेट लिया।

इंजीनियर हॉर्टन का भूत

टेकनिकल स्टाफ़ के खाने के कमरे के बाहर दो लंबी मेज़ें समकोण मिलाकर रख दी गई थीं। कोई बीस आदमी इन मेज़ों के पास बैठे थे। उनकी खुली हुई सफ़ेद कमीज़ों में से धूप में संवलाई छातियां नज़र आ रही थीं। उनकी लाल बांहें कुहनियों तक उघड़ी हुई थीं, मानो जल्दी में अपनी आस्तीनों के साथ वे खाल भी उतार आये थे। मेज़ें फूली हुई फ़ाइलों और मुड़ी-तुड़ी नोटबुकों से अटी पड़ी थीं। इन्हीं के बीच एक लटके होंठवाला जग भी रखा हुआ था, जिसमें एक पीला तरल भरा हुआ था। उसके आसपास दसेक प्याले रखे थे। मच्छरों की हलकी भिनभिनाहट संध्या के आगमन की सूचना दे रही थी।

एक दुबला-पतला लंबा आदमी बोलने के लिए खड़ा हुआ। अपनी लंबी और पतली गरदन के कारण वह चौंके हुए पक्षी जैसा लग रहा था।

"यह हमारे मुख्य इंजीनियर, साथी चेत्वेर्याकोव हैं," पोलोज़ोवा ने उन्हें बताया।

चेत्वेर्याकोव काला रेशमी फ़ीता लगा पुराने फ़ैशन का चश्मा लगाये हुए था।

"साथियो, जब हमारे निर्माण-कार्य का विचार पहले-पहल पैदा हुआ, तो विख्यात अमरीकी इंजीनियर हॉर्टन को परामर्श के लिए बुलाया गया। स्थानीय हालतों को देख लेने के बाद वह इस निश्चय पर पहुंचे कि काम को इतने कम समय के भीतर पूरा करना असंभव है। उन्होंने व्यंग्यपूर्वक कहा कि वह ग़लत इसी हालत में साबित हो सकते हैं कि हमारा स्थानीय हस्त श्रम मशीनी श्रम से ज़्यादा उत्पादक निकले। साथियो, हमें ऐसे

एकाधिक मामलों की जानकारी है, जिनमें विदेशी परामर्शी इंजीनियरों ने यह घोषित करते हुए ग़लती की है कि हमारे निर्माण-कार्यों में फ़लां-फ़लां कार्य निर्दिष्ट समय के भीतर पूरे नहीं किये जा सकते। इसलिए, जब मुझे यहां का मुख्य इंजीनियर नियुक्त किया गया, तो मैं इंजीनियर हॉर्टन की राय से सहमत नहीं हुआ। मैंने कहा कि असाधारण कठिनाइयों के बावजूद दो हालतों में इस निर्माण-कार्य को समय पर पूरा किया जा सकता है: बशर्ते कि काम शत प्रतिशत यंत्रीकृत हो और बशर्ते कि हमें आवश्यक परिवहन सुविधाएं प्रदान की जायें..."

अंधेरा घिरने लगा था। एक एकाकी बादल स्पंज की तरह छायाओं को सोखता हुआ आसमान पर तेज़ी से सरक रहा था।

"...अभाग्यवश, इस योजना का व्यवहार में कार्यान्वयन सुनिश्चित नहीं किया जा सका है। हमारे अख़बारों ने छब्बीस एक्स्केवेटरों के बारे में, रेगिस्तान को वशीभूत करने के मिशन को लेकर आनेवाली इस्पाती फ़ौज के बारे में लंबे-लंबे और अर्थपूर्ण लेख प्रकाशित किये, मगर उन्होंने इसके लिए बहुत-कम ही किया कि ये एक्स्केवेटर रेलवे जंकशनों पर पड़े रहने के बजाय यथासंभव कम से कम समय के भीतर हमारी निर्माणस्थली पर पहुंचें और हमारे लिए यह मुमकिन किया जाये कि हम उन्हें ज़रूरतमन्द जगहों पर पहुंचा सकें।"

क्लार्क ने सब कुछ सावधानी के साथ अपनी नोटबुक में दर्ज कर लिया।

खिसकते हुए कोहरे जैसी कोमल छायाएं आंगन पर सरकती हुई आ रही थीं और लोगों के कड़े चेहरों पर, उनके गालों की दरारों जैसी रेखाओं पर, चेत्वेर्याकोव के चश्मे के कांचों पर, ख़ाली प्यालों के पेंदों पर बैठने लगी थीं।

चेत्वेर्याकोव ने खंखारकर गले को साफ़ किया और अपने माथे को पोंछा। उसके शब्दों के बीच के अवकाश में ख़ामोशी आ गई – मच्छर के संगीत की तीखी थरथराहट जैसी गूंजती ख़ामोशी।

"...ट्रकों और ट्रैक्टरों के अभाव की लद्दू पशुओं से क्षतिपूर्त्ति की जा सकती है। इसके लिए ८,७०० घोड़े और ५,००० ऊंट होने चाहिए। बेशक, हम इस स्थिति में नहीं हैं कि इतने सारे घोड़े और ऊंट प्राप्त कर सकें, और किसी भी सूरत में हम यहां उन्हें खिला भी नहीं सकते। इस तरह, हमारे यहां न कोई परिवहन सुविधाएं हैं और न यंत्रीकरण, क्योंकि

कल्पनातीत विलंब के बाद हमें जो मशीनें प्राप्त हुई हैं, उन्हें समय पर नियत जगहों पर नहीं पहुंचाया जा सकता..."

"लगता है कि हॉर्टन का कहना ठीक ही था!" बार्कर ने ज़ोर से अंग्रेजी में कहा।

यह वाक्य पत्थर की तरह से आकर पड़ा। चेत्वेर्याकोव ने अपने कान उठाये।

"अमरीकी इंजीनियर क्या कह रहे थे? कृपया अनुवाद कीजिये!"

"इंजीनियर–मुझे उनका नाम तो नहीं मालूम–शायद बार्कर–कह रहे हैं कि आपके कहे से तो यही लगता है कि हॉर्टन का कहना ठीक था।"

क्षण भर दुविधा की स्थिति रही।

"मेरे सहकर्मी अमरीकी इंजीनियर ने मेरे आशय को गलत समझा है," बार्कर की दिशा में अपने चश्मे के कांचों को घुमाते हुए चेत्वेर्याकोव ने कहा। "यह भौतिक असंभाव्यता का सवाल नहीं है, जैसा कि इंजीनियर हॉर्टन ने कहा था–हमने इससे इनकार किया था और अब भी करते हैं। यह मात्र वस्तुगत कारणों के एक विशेष संयोग का प्रश्न है, जिसने इस तथ्य के बावजूद कि सिद्धांततः कार्यभार पूरा किया जा सकता है, हमें उसे पूरा नहीं करने दिया है। कृपया अनुवाद कर दीजिए... जी हां... लेकिन शायद मशीनों के अभाव की पूर्त्ति शारीरिक श्रम से की जा सकती है? योजना के अनुसार, शत प्रतिशत यंत्रीकरण की हालत में हमें विभिन्न महीनों में चार से ग्यारह हज़ार मज़दूरों की ज़रूरत है। यह न्यूनतम संख्या है। तुर्कसीब रेलवे* के निर्माण में इतने ही खुदाई कार्य के लिए चालीस हज़ार मज़दूर थे। और हमारे पास इस समय कितने मज़दूर हैं? चार सौ अठारह! सबसे कम दबाव के महीनों में हमें जितनी श्रम शक्ति की ज़रूरत है, उसका केवल दस प्रतिशत! मैं यहां इस श्रम शक्ति की क़िस्म के बारे में कुछ नहीं कहूंगा। मेरे ख़याल से यह एक अकेला आंकड़ा इस बात को स्पष्टतः दिखाने के लिए काफ़ी है कि इस तरह की श्रम शक्ति से हमारे सामने जो समस्या है, उससे जूझना असंभव है। और ख़ामोश रहकर यह दिखावा करना भी असंभव है कि हम इस समस्या को हल कर सकते हैं।

---

* तुर्किस्तान-साइबेरियाई रेलवे।

इसका मतलब होगा पार्टी को धोखा देना, ग्रार्थिक निकायों को धोखा देना, सारी जनता को धोखा देना। हमें इस बात को साफ़-साफ़ कह देना चाहिए–बिना यंत्रीकरण के, बिना परिवहन साधनों के, बिना श्रम शक्ति के हम यहां सिंचाई-प्रणाली का निर्माण नहीं कर सकते।"

उसने गले को साफ़ किया ग्रौर ग्रावाज़ को उठाते हुए ग्रागे कहा:

"साथियो, मैं इंजीनियर हूं, जादूगर नहीं। मैं इस निर्माण-कार्य के लिए उत्तरदायी हूं ग्रौर मैंने यह बता दिया है कि इसे किन शर्तों पर पूरा किया जा सकता है। इन शर्तों में से एक भी पूरी नहीं हुई है। मौजूदा हालतों में हम जो ग्रधिक से ग्रधिक कर सकते हैं, वह ग्रगले वसंत तक बीस हज़ार हैक्टर ज़मीन को सींचना है ग्रौर सो भी केवल तब, जब संबद्ध ग्रार्थिक संगठन हमारे प्रति ग्रपने उत्तरदायित्वों को पूरा करें।"

विभिन्न विभागों के इंजीनियरों ने ग्रापस में एक दूसरे को बार-बार टोकते हुए संक्षेप में ग्रपनी-ग्रपनी बात कही। काफ़ी गरमागरमी हुई, दूसरों की नाकों के नीचे कागज़ों को नचाया गया। पोलोज़ोवा के लिए इस सब का ग्रनुवाद करना मुश्किल हो गया।

क्लार्क ध्यानपूर्वक सुन रहा था, प्रश्न कर रहा था ग्रौर ग्रांकड़ों को नोटबुक में लिखता जा रहा था।

मिट्टी के तेल के दो लैंप लाकर मेज़ों के किनारों पर रख दिये गये। उनके ऊपर मच्छरों की एक लंबी कुंडली मंडराने लगी। लोग उन्हें यंत्रवत ग्रलग हटाते रहे, चेहरों ग्रौर गरदनों पर बैठ जाने पर धीरज के साथ मारते रहे। मच्छरों पर चोट करते उनके हाथों की लम्बी-लम्बी छायाएं मेज़ों पर चमगादड़ों की तरह उड़तीं, ग़ायब होतीं, फिर उड़तीं ग्रौर छलांगें लगातीं।

एक इंजीनियर ने, जिसका नाम पोलोज़ोवा ने नेमिरोव्स्की बताया, एक कागज़ को देखते हुए ग्रांकड़ों की एक लंबी तालिका पढ़कर सुना दी। उसके बाद ग्रौर लोग बोले। बात सभी ने एक ही कही: मशीनें नहीं हैं, फ़ालतू पुरज़े नहीं है; मशीनें ग्रकल्पनीय धूल से ख़राब हो जाती हैं ग्रौर उन्हें कुछ ही दिन काम करने के बाद मरम्मत के लिए भेजना पड़ता है; मजदूरों के पास रहने को ढंग के क्वार्टर तक नहीं हैं ग्रौर वे काम पर टिकते नहीं; खाने की सप्लाई किसी काम की नहीं; कल एक पूरी की पूरी शिफ़्ट ने काम पर जाने से इनकार कर दिया था; निर्माणस्थलियों पर पीने के पानी

का अभाव है; मलेरिया के मामले ज्यादा आम होते जा रहे हैं; निर्माण-सामग्रियां नहीं हैं; पेट्रोल नहीं पहुंचा है; आठ प्रतिशत योजना की पूर्ति कर दी गई है...

"ठहरिये ज़रा, मुझे बोलने दीजिये!" एक भारी-भरकम आदमी ने उठते हुए कहा।

"यह हमारे निर्माण-प्रमुख येरेमिन हैं," पोलोज़ोवा ने अमरीकियों को बताया।

"साथियो, आप जो कह रहे हैं, उसे सुनकर तो मुझे यही अचरज हो रहा है कि आप में से किसी ने अभी तक यह प्रस्ताव क्यों नहीं पेश किया कि इस सारे निर्माण-कार्य को ही बंद कर दिया जाना चाहिए। किसी को धूल पसंद नहीं है, किसी को गरमी पसंद नहीं है, तो किसी को पीने को पानी नहीं मिल पाता। मेरी समझ में नहीं आता कि मैनेजमेंट को पहले यहां एक्स्केवेटरों के बजाय वैक्युअम क्लीनर भेजने और निर्माणस्थली पर लेमोनेड बेचने की स्टालें लगाने का विचार क्यों नहीं सूझा! शरम आती है आप लोगों की बातों को सुनकर! चेत्वेर्याकोव ने कम से कम खुलकर तो कहा और जो वह सोचते हैं, वह तो बताया: 'मुझे वे परिवहन सुविधाएं नहीं दी गई हैं, जिनकी मैंने मांग की थी और उनके बिना मैं काम नहीं करूंगा।' ख़ैर, आपको शायद यह जानने में दिलचस्पी हो कि हमें जो डेढ़ टनी पचास ट्रक दिये गये थे, उनमें से कितने सचमुच इस्तेमाल में लाये जा रहे हैं? साथी चेत्वेर्याकोव ने उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा। उनमें से आधे वर्कशॉप में टूटे पड़े हुए हैं। हर तीसरे दिन एक ट्रक ख़राब हो जाता है। लगता है, जैसे ड्राइवरों ने आपस में यह प्रतियोगिता शुरू कर रखी है कि कौन अपने ट्रक को सबसे पहले तोड़ सकता है। अगर हमारे पास यहां ढाई सौ ट्रक हों, तो हम काफ़ी जल्दी ट्रकों का क़ब्रिस्तान खोल सकते..."

"यह मैकेनिकल डिपार्टमेंट का सरदर्द है!"

"यह हम में से हर किसी का सरदर्द है! चेत्वेर्याकोव कहते हैं कि हमारे पास काफ़ी मजदूर नहीं हैं—आवश्यक श्रम शक्ति का बस दस प्रतिशत है। और, भला, इस बीच कितने मजदूर हमें छोड़कर चले गये हैं? आपने हिसाब नहीं रखा? अगर अपने मजदूरों की देखभाल करने का आपका यही तरीक़ा है, तो आप चार नहीं, चालीस हज़ार मज़दूर

मंगवा लीजिये, मगर फिर भी हफ़्ते भर के भीतर एक भी यहां नहीं रहेगा।"

"उन्हें ढंग का सामान दीजिये, फिर वे काम छोड़कर नहीं जायेंगे!"

"क्या आपने उनके लिए ढंग की रिहाइशी जगहें बनाने की बात को कभी सोचा भी है? आप में से हर किसी को यहां आने के पहले इस बात का तो पूरा ध्यान था कि तीन-तीन बार यह क़सम खिलवा ले कि उसे यहां क्वार्टर मिलेगा।"

"तिरपाल दीजिये हमें! तिरपाल नहीं है, ख़ेमों को किस चीज़ से ढांका जाये!"

"अगर तिरपाल नहीं है, तो सरपत तो है। इसका क्या कारण है कि दूसरे सेक्शन ने तो मिट्टी और सरपत से बारकें बना डालीं, मगर पहले सेक्शन के इंजीनियर साथी अभी तिरपाल का ही इंतज़ार कर रहे हैं?"

"रूसी मज़दूर मिट्टी के झोंपड़ों में नहीं रहना चाहते। वे ख़ेमे मांगते हैं।"

"जब तक हमें ख़ेमे नहीं मिलते, उन्हें झोंपड़ों में ही रहना पड़ेगा। आदमी को आराम करने के लिए ज़रा-सी छाया चाहिए, पर आप उन्हें धूप में भूनते हैं। और ताजिक मज़दूर? बहुत-से ग़ैर-रूसी मज़दूर भी यहां भेजे गये हैं।"

"ऐसे मज़दूरों से अरीक़ की खुदवाई की जा सकती है, नहर नहीं। और वे भी यहां नहीं टिके।"

"नहीं टिके?" अपनी जगह से ऊर्ताबायेव ने टोका, "मुझे मालूम है कि उन्हें क्या-क्या भुगतना पड़ा था। आपके पास ताजिक कोम्सोमोली* भेजे गये थे और आपने उनसे गधे हंकवाये और पानी खिंचवाया।"

"तो क्या हुआ! वे और किसी काम के लायक़ थे ही नहीं, और क्या। और पानी भी तो ज़रूरी है ही। हमने तो उन्हें आसान काम दिया था और वे इसे भी छोड़कर भाग गये।"

"कोम्सोमोलियों को यहां कुछ सीखने के लिए भेजा गया था। अगर कहीं आपका यह ख़याल है कि आप ताजिकों के बिना नई सिंचाई-प्रणाली

---

* युवा कम्युनिस्ट संघ (कोम्सोमोल) के सदस्य।

का निर्माण कर सकते हैं, तो आप जहां अब हैं, उससे ज्यादा प्रगति नहीं कर सकते।"

"सुनो, ऊर्ताबायेव, अपना यह जातिवाद यहां मत घुसाओ," येरेमिन ने टोका, "यह निर्माणस्थली है, स्कूल नहीं।"

"हम में से कौन जातिवादी है, यह अलग सवाल है। आप ताजिकिस्तान में निर्माण-कार्य कर रहे हैं और इसमें कुल अठहत्तर ताजिक मजदूर काम कर रहे हैं! यह बात मास्को में बताइयेगा, तो कोई इस पर यक़ीन तक नहीं करेगा।"

"अच्छा, क्या मैंने सभी ज़िलों से मजदूर नहीं मंगवाये थे? मैंने एक लाख रूबल सभी ज़िलों को भेजे थे और उसका नतीजा क्या निकला? पैसा सब ख़र्च कर दिया गया, पर बदले में मजदूर कोई नहीं भेजे गये।"

"तो क्या तुम्हारे ख़याल में मज़दूरों को भेड़ों की तरह एक रूबल फ़ी अदद के हिसाब से जमा किया जा सकता है? क्या जो लोग स्वयं आये थे, आपने उन्हें सब कुछ समझाने के लिए उनमें किसी भी तरह का कोई काम किया? क्या आपने उन्हें यह समझाया कि यह उन्हीं का काम है, कि यहां की अठहत्तर फ़ी सदी ज़मीन सामूहिक फ़ार्मों के लिए होगी? किस दहक़ान को यह बात मालूम है? वे सब यही समझते हैं कि ज़मीन को राजकीय फ़ार्म ले लेंगे, कि यह सरकारी ज़मीन बन जायेगी। और क्या आपने उनके लिए कोई सरोकार दिखाया है? आपके फ़ोरमैनों के पास बस चिल्लाने और गालियां देने को ही वक़्त है – जहां तक समझाने और सिखाने का सवाल है, उसके लिए उनके पास बिलकुल भी फ़ुरसत नहीं। है, तो बस एक ही नारा है – रफ़्तार! तो देख लो अपनी रफ़्तार को अब! अगर तुम दहक़ानों पर चीख़ो-चिल्लाओगे, तो वे नहीं टिकेंगे। ये बातें उन्हें अमीर के ज़माने में सहन करनी पड़ती थीं, लेकिन अब, जब सत्ता उन्हीं की है, वे इन बातों को नहीं पसंद करते और उनका न पसंद करना ठीक भी है।"

"तो तुम क्या चाहते हो कि हम उनसे फ़्रेंच में बातें करें? अरे, छोड़ो भी, ऊर्ताबायेव! मजदूर को वह सब मिलना चाहिए, जिसका वह हक़दार है और हमें उससे वह सब मांगना चाहिए, जिसके हम हक़दार हैं। अगर तुम अपना काम नहीं जानते, तो अपनी आंखों से देखो और सीखो।"

"लेकिन क्या तुमने स्थानीय मजदूरों के लिए एक भी प्रशिक्षण-क्रम शुरू किया है? अगर तुमने किया होता, तो आज तुम्हारे पास प्रशिक्षित कर्मी होते। यह तुम अपने नहीं, उनके शब्दों को अपने मुंह से निकाल रहे हो: 'ऐसे मज़दूरों से तो अरीक़ भी बनवाई नहीं जा सकती!' और प्राचीन सिंचाई-प्रणाली, जिसका हम आजकल उपयोग कर रहे हैं, उसे किसने बनाया था? मास्को के इंजीनियरों ने? यह सब बकवास है! और ये सम्मेलन भी किसी काम के नहीं हैं। शुरू से ही काम को ठीक से संगठित करो, स्थानीय मजदूरों के कर्मीदल बनाओ, फिर तुम्हारी योजनाएं अधूरी नहीं रहेंगी। लेकिन अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते, तो चेत्वेर्याकोव के प्रस्ताव के हक़ में ही मत दे दो और रफ़्तार को कम कर दो। कुछ भी हो, तुम वसंत तक बीस हज़ार हैक्टर ज़मीन को भी नहीं सींच पाओगे!"

ऊर्तावायेव उठा, टोपी को आगे माथे पर खींच लिया और प्रकाश के घेरे के बाहर निकल गया।

"बहुत हो ली तुम्हारी लेक्चरबाज़ी!" उसके पीछे येरेमिन ने चिल्लाकर कहा, "औरों को सिखाना शुरू करने के पहले ख़ुद कुछ और सीखो... लेकिन निर्माणस्थली की हालत है शरमनाक – इससे इनकार करने में कोई तुक नहीं। और इसका दोष सबसे पहले इंजीनियरी और टेकनिकल स्टाफ़ पर है।"

"वाह, क्या बात कही है!"

"मशीनें नहीं भेजी गईं – यह क्या हमारा दोष है?"

"पटरियां नहीं हैं – यह क्या हमारा दोष है?"

"हमें पैट्रोल नहीं मिल रहा है – यह भी क्या हमारा दोष है?"

"अगर आपको हमारे काम से संतोष नहीं, तो हमें निकाल दीजिये और बेहतर इंजीनियरों को रख लीजिये!"

"मैं आपको निकाल दूंगा, साथियो, बस, पहले मैं आप में से कुछ पर मुक़दमा चलाना चाहता हूं।"

"इस तरह हमें डराओ मत!"

"तो जो बात भी ग़लत हो जाये, उसका दोष इंजीनियरों के ही मत्थे पड़ेगा! फिर मैनेजमेंट का क्या दायित्व है?"

"मैनेजमेंट का दायित्व यह देखना है कि आप अपने काम को ठीक

तरह से करें। क्या आपका यह ख़याल है कि मैनेजमेंट यह नहीं देखता कि आप किस तरह काम करते हैं? वह सब कुछ देखता है। श्रम ब्रिगेडों को रोज़ क्यों ख़ाली बैठे रहना पड़ता है? क्योंकि टेकनीशियन लोग काम पर मज़दूरों के बाद पहुंचते हैं, जब कि उनका वहां शिफ़्ट के शुरू होने के बीस मिनट पहले पहुंचना अनिवार्य है। आप में से कौन प्रतियोगिताओं के परिणामों की जांच करता है? आप लोगों में क्या एक भी ऐसा है, जिसके पास काम के सही सूचक हों? और जिस अनुचित तरीक़े से पगार दी जाती है, उसकी ज़िम्मेदारी किस पर है?"

"ख़ैर, कुछ भी हो, यह हमारा नहीं, एकाउंट्सवालों का काम है!"

"इसकी क्या वजह है कि मज़दूरों को दो महीने की पगार नहीं मिली है? कौन ऐसी हालतों में काम करने को तैयार होगा? एकाउंट्सवालों का दोष है, न? और आप उन्हें अपने बिल कब बनाकर देना शुरू करते हैं? मज़दूरों को अपनी पगार हर महीने के पहले पांच दिनों में मिल जानी चाहिए, लेकिन आप तो आधा महीना बीत जाने तक रेट तय करना भी शुरू नहीं करते। यह तो अनुचित ढंग से भी गई-गुज़री बात है—यह तो सीधा विध्वंस है! और साथी नेमिरोव्स्की, आपसे तो मैकेनिकल डिपार्टमेंट के बारे में मुझे विशेष बात करनी है।"

येरेमिन ने अपना हाथ मेज़ पर ज़ोर से पटका। प्याले खनखना उठे और चौंके हुए मच्छर लैंपों के ऊपर काजल के कणों के बादल की तरह चक्कर काटने लगे।

सौजन्यपूर्ण चेतावनी

इस तूफ़ानी सभा के बाद घर लौटते समय क्लार्क का पैर अचानक चिनार के एक बड़े पेड़ के नीचे पड़ी किसी लंबी-सी चीज़ पर जा पड़ा और वह मुश्किल से ही गिरते-गिरते बचा। बारीक़ी से देखने पर पता चला कि वह चीज़ असल में पेट के बल ज़मीन पर पड़े एक आदमी का शरीर है। उसकी पीठ पर कमर के पास एक कटार की चमकती हुई मूठ निकली हुई थी।

क्लार्क सिर से पैर तक कांप गया। कहीं बासमची तो नहीं आ गये? शहर में ही? या यह कबायली प्रतिशोध का कोई स्थानीय रूप है?

वह समझ नहीं पाया कि क्या करे। किसी को बुलाये? आसपास न आदमी था, न आदमज़ाद। आसमान की काली छत में मख़मल की काली पोशाक में लगे सलमे की तरह दीर्घकेशी उष्णकटिबंधीय तारे झिलमिला रहे थे।

ज़मीन पर पड़ी आकृति के ऊपर झुककर उसने उसकी कमर को छुआ। चमकती हुई मूठ खड़खड़ाती हुई ज़मीन पर लुढ़क गई। आश्चर्यचकित क्लार्क ने उसे हाथ लगाकर देखा और अचानक हंस पड़ा। जिस चीज़ को उसने कटार की मूठ समझा था, वह पतलून की जेब से बाहर निकली हुई वोद्का की बोतल थी।

क्लार्क आगे चल दिया। इस सारी घटना से उसे सचमुच मज़ा आ रहा था—किसी अद्भुत-अनूठा रहस्यपूर्ण उत्तेजना की खोज में पहली भूल और तत्क्षण भ्रांति भंग। उसे फ़ुर्तीले अफ़ग़ान घोड़ों पर पहाड़ों को पार करते बासमचियों के बारे में सुने क़िस्सों की याद हो आई और वह मन ही मन मुसकरा उठा। सारी बात किसी सांगीतिक सुखांतिकी जैसी अतिरंजित प्रतीत होती थी।

वह बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ा, कुंजी लगाकर अपने कमरे का दरवाज़ा खोला और बिजली जलाई। अपने कमरे के भीतर आने के बाद ही उसने अपनी यात्रा की सारी संचित थकान को अनुभव किया। वह जल्दी-जल्दी कपड़े उतारने लगा। उसने अपना कालर उतारा और उसे मेज़ पर फेंक दिया। मेज़ पर, बिलकुल बीच में एक काग़ज़ रखा हुआ था, जिस पर कोई चित्र बना हुआ था। क्लार्क ने झुककर उसे ध्यान से देखा।

काग़ज़ पर चित्र मामूली पेंसिल से बनाया गया था—भोंडा, मगर एकदम साफ़। उसमें एक ट्रेन दिखाई गई थी। ट्रेन के बराबर एक जहाज़ था और दाईं तरफ़ कई ऊंचे-ऊंचे मकान थे। मकानों के ऊपर लैटिन अक्षरों में एक शब्द लिखा हुआ था: "अमरीका"। चित्र के ऊपर एक लंबा तीर बना हुआ था, जो ट्रेन और जहाज़ की दिशा दिखा रहा था और "अमरीका" शब्द पर जाकर ख़त्म हो गया था। नीचे की तरफ़ एक बड़ी खोपड़ी और एक दूसरी को काटती दो हड्डियां बनी हुई थीं।

क्लार्क ने चित्र का देर तक और ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। प्रत्यक्षतः, जिस हाथ ने यह चित्र बनाया था, उसने अपनी उंगलियों से पेंसिल बहुत कम ही पकड़ी थी। फिर भी, चित्रलिपि का मतलब काफ़ी साफ़ था।

मतलब था: "फ़ौरन वापस चले जाओ, और अगर तुम नहीं गये, तो हम तुम्हारा काम तमाम कर देंगे।"

एक बार फिर क्लार्क सिर से पैर तक कांप गया। उसने कमरे में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। जब वह गया था, तब मेज़ पर कोई पत्र नहीं पड़ा हुआ था। दरवाज़े का ताला बंद कर दिया गया था। उसने खिड़की पर जाकर उसे हाथ से धकेला। उसमें भीतर से सिटकिनी लगी हुई थी। क्लार्क ने कमरे पर एक नज़र और दौड़ाई। फिर उसने झुककर पलंग के नीचे निगाह डाली और उसके बाद मेज़ के नीचे।

उसने चित्र को फिर उठाया और किसी कारण उसे रोशनी के पास ले जाकर देखा। फिर उसने जेब से एक रिवाल्वर निकाला, उसके सेफ़्टी कैच को जांचा और उसे स्टूल पर रख लिया। इसके बाद उसने खिड़की की एक बार फिर बारीक़ी से जांच की। इस बात की तरफ़ से आश्वस्त हो जाने के बाद कि वह अच्छी तरह से बंद है, वह पलंग पर लेट गया और एक सिगरेट जलाकर पीने लगा। उसकी अनुपस्थिति में कोई आदमी खिड़की या दरवाज़े में होकर कमरे में नहीं आ सकता था। एक ही संभावना और हो सकती थी: काग़ज़ उनमें से किसी व्यक्ति ने मेज़ पर रखा हो, जो उसकी मौजूदगी में कमरे में आये थे और उसका इसकी तरफ़ ध्यान न गया हो। कमरे में सिर्फ़ तीन लोग आये थे। मर्री? असंभव। पोलोज़ोवा? असंभव। ऊर्तावायेव?..

क्लार्क ने सिगरेट को ख़त्म किया, रिवाल्वर को तकिये के नीचे रखा, जल्दी-जल्दी कपड़े उतारे, बत्ती बुझाई और सिर पर चादर खींचते हुए पलंग पर पड़ गया। मगर उसे नींद ख़राब आई—मच्छर बहुत तंग कर रहे थे।

अमरीकी ने भाषण दिया

नफ़ीरियों के विषादमय संगीत और डफलियों की बंधी हुई थापों से उसकी आंख खुल गई। बाहर बाजा बज रहा था। क्लार्क उछलकर पलंग पर से उतर गया और खिड़की को धड़ाक से खोल दिया। चश्मे के पानी की तरह ताज़ा हवा उसके चेहरे पर से नींद के पतले जालों को बहाकर ले गई।

एक अजीब-सा जलूस सड़क पर चला आ रहा था। सबसे आगे दो छोटे-छोटे गधों पर धारीदार चोग़े पहने दो दहक़ान थे। दोनों ने एक लाल पताका के एक-एक डंडे को थाम रखा था। उनके पीछे उन्हीं की तरह गधों पर सवार रंग-बिरंगे कपड़े पहने दहक़ानों का एक लंबा जलूस था। गधे अपनी चूहों जैसी दुमों को झटकते बड़े नख़रे के साथ चले जा रहे थे। उन पर बैठे लोगों के पैर ज़मीन को क़रीब-क़रीब छू ही रहे थे। अपने फूले हुए बहुरंगी चोग़ों, विवर्ण पगड़ियों और मैली टोपियों में वे बड़े शानदार और बोझिल लगते हुए मानो ज़मीन पर तैरते हुए चले जा रहे थे।

पताका थामे दोनों सवारों के पीछे जलूस के आगे-आगे चार बाजेवाले थे। वे लंबी और पतली नफ़ीरियां बजा रहे थे और नफ़ीरियों से एक थरथराती हुई अनुनासिक-सी आवाज़ निकल रही थी। किनारेवाला आदमी हंडिया जैसी डफली पर तालबद्ध थापें लगा रहा था।

बाजेवालों के आगे-आगे जलूस की तरफ़ मुंह किये और अपने पैरों से नाच की जटिल गतियों को गढ़ता हुआ बेल-बूटेदार रूमाल से फटे-पुराने चोग़े को कमर पर बांधे एक नर्तक चल रहा था। चोग़े की ढीली आस्तीनों में नर्तक की आड़ी फैली चंचल बांहों की हथेलियां नीचे की तरफ़ थीं। एक हाथ कुहनी पर मुड़ा हुआ था और दूसरा हलके से हवा में थिरक रहा था और नफ़ीरियों के स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ-साथ मुड़ और झूम रहे थे। नर्तक का कसैला चेहरा हवा में शांत और निश्चल तैर रहा था, मानो उसके सिर के ऊपर कोई मामूली-सी टोपी नहीं, बल्कि पानी भरा अदृश्य पात्र टिका हुआ है।

क्लार्क कुछ देर खिड़की के पास ही खड़ा दूरी के साथ-साथ हलके होते जाते इस विचित्र संगीत को सुनता रहा।

जब संगीत की आवाज़ का सुन पड़ना बिलकुल बंद हो गया, तब ही जाकर उसने अपनी घड़ी पर निगाह डाली और यह देख कि साढ़े पांच बज चुके हैं, जल्दी-जल्दी कपड़े पहनना शुरू किया। उसने मेज़ पर से चित्रवाले काग़ज़ को उठाया, उसे मोड़कर अपने बटुए में रखा और नाश्ता करने के लिए खाने के कमरे में चला गया।

जब वह लौटकर आया, तो बरामदे के बाहर एक कार खड़ी हुई थी। सीढ़ियों पर पोलोज़ोवा उसका इंतज़ार कर रही थी।

"मैं तो समझी थी कि आप अभी सो ही रहे होंगे, लेकिन लगता है कि आपने तो नाश्ता भी कर लिया है। चलिये, आपको लेने के लिए कार आ गई है।"

"एक मिनट के लिए माफ़ कीजिये, – मैं जरा लपककर अपने कमरे से एक नोटबुक और अपनी जरूरत की और चीजें ले आऊं।"

उसने अपना सूटकेस खोला, एक नोटबुक और एक सफ़ेद टोप निकाला और सूटकेस को बंद करके टोप को पहन लिया।

"सुनिये," उसे पोलोज़ोवा की आवाज सुनाई दी – वह खिड़की पर टिकी हुई खड़ी थी, "अगर आप एक साथी की सलाह मानें, तो इसे मत पहनिये। इसे यहीं रहने दीजिये और इसकी जगह मामूली टोपी पहन लीजिये।"

"लेकिन भला क्यों?" क्लार्क ने हैरानी से पूछा।

"बेशक, है तो यह मामूली-सी बात, मगर ये टोप एक विशेष राजनीतिक अर्थ रखते हैं। सीमांत के उस पार, भारत में ये 'साहबों' को 'देसी आदमियों' से अलग करते हैं। हमारे देश में ये आंख के कांटे की तरह खटकते हैं। यहां हम सभी ताजिक टोपियां ही पहनते हैं। वे कहीं ज्यादा स्वाभाविक और हलकी होती हैं और ज्यादा व्यावहारिक भी हैं। आप चाहें, तो कल ही मैं आपको एक मंगवा दूंगी।"

क्लार्क की उलझन को देखकर उसने जल्दी से जोड़ा:

"कृपया बुरा मत मानिये। आप चाहें, तो अपना टोप पहन सकते हैं। मैं तो एक मित्र के नाते आपको बस यह आगाह करना चाहती थी कि मजदूर इसकी तरफ़ संदेह से देखेंगे – उन्हें हमारे इंजीनियरों और अधिकारियों को क़रीब-क़रीब अपने जैसे ही कपड़ों में देखने की आदत है।"

क्लार्क ने मामूली टोपी पहन ली, खिड़की को बंद किया, कमरे के दरवाजे का ताला लगाया और कार में बैठने के लिए आ गया।

"खेद की बात है कि आपने आज सामूहिक कृषकों को राजकीय फ़ार्म पर हशर* से नाच और गाने के साथ लौटते हुए नहीं देखा। सचमुच देखने लायक़ नज़ारा था वह।"

"जी, देखा था उन्हें मैंने। सचमुच, बहुत सुंदर लगा था। संगीत

---

*सामूहिक श्रमदान।

बहुत निराला था – भारतीय संपेरों के गानों से काफ़ी मिलता-जुलता। नाच भी एकदम अपूर्व था।"

"अरे, गोली मारिये संगीत को... जी, माफ़ कीजिये... मेरा मतलब यह नहीं था... मैं सिर्फ़ यह कहना चाह रही थी कि यह तो उसका बाहरी रूप ही था, तत्त्व नहीं। यह उसका मोहक अंश है, जो सभी यूरोपीयों के ध्यान को आकर्षित करता है। क्या आप जानते हैं कि हशर क्या होता है? दूर-दूर के क़िशलाक़ों के किसान राजकीय फ़ार्म पर काम में हाथ बंटाने आये थे। उन्हें अपनी मेहनत की उजरत दी जा रही थी, मगर उन्होंने इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि बदले में जिला अधिकारी उनके यहां स्कूल बना दें। और उन्होंने गोड़ाई और फ़सल की कटाई – दोनों में मदद देने के लिए आने का वादा किया है। समझते हैं आप कि एक ऐसे देश में, जहां १९२६ तक दहक़ानों का अधिकांश अमीरों और मुल्लाओं के ही साथ था, यह सचमुच एक क्रांति है।"

"बेशक, यह बहुत दिलचस्प बात है..."

पोलोज़ोवा चुप हो गई। कार मैदान को तेज़ी से चीरती हुई उस पहाड़ी श्रेणी की तरफ़ जा रही थी, जो जैसे उनकी अगवानी करने के लिए उठ रही थी। हलके नीले, कुछ-कुछ बेरंग आसमान की पृष्ठभूमि में, जिस पर बादल का एक भी क़तरा नहीं था, पहाड़ ऐसे लग रहे थे, मानो गत्ते की बनी सजावटें हों। पहाड़ों की तलहटी में प्लाइवुड का बना छोटा-सा शहर था – लकड़ी की कुछ बारकें, टेढ़ी-मेढ़ी खिड़कियों वाले तिरपाल के कुछ टीलेनुमा ख़ेमे और टूटे हुए बॉडी वाला एक ट्रक।

केंद्रीय बारक की तरफ़ आते-जाते और उसके चारों ओर घूमते लोगों की एक खिसकती हुई भीड़ थी, जो बाहर से देखने में बड़ी अनूठी लग रही थी: कमर पर सुतली के कमरबंदों से बंधे चिक्कट कमीज़ें पहने कुछ, तो कुछ मिरजइयां और लाल-से ऊंचे बूट पहने लंबी-चौड़ी दाढ़ियों वाले रूसी किसान; हलकी नीली, लाल और हरी बनियाइनें पहने धूप से संवलाये आदमी, जिनमें से कुछ रूसी, तो कुछ ताजिक टोपियां पहने हुए थे और कुछ ने मेक्सिकाई टोपों जैसे बड़े-बड़े टोप लगाये हुए थे; टोपियां और चोग़े पहने रंग-बिरंगे ताजिक; छोटे-छोटे जांघिये पहने अनिश्चित जातियों के लाल खाल वाले आदमी, जिनके शरीर ऐसे लग रहे थे, मानो उबलते पानी से झुलस गये हों। तिरपाल के ऊंचे बूट और मुड़ी हुई

ग्रास्तीनोंवाली सफ़ेद कमीज़ें पहने कुछ लोग इस पंचमेल भीड़ में बड़ी व्यस्तता के साथ ग्रा-जा रहे थे।

यह सब ग्रद्भुत रूप से रेगिस्तान में सोने के साहसी खोजियों के बारे में बनी किसी ग्रमरीकी फ़िल्म के शॉट जैसा लग रहा था। बारकों में हड़बड़ाहट के साथ ग्राते-जाते तिरपाल के बूट पहने लोगों को देखकर सेट पर ग्राख़िरी चीज़ों को ठीक से लगाते सिने-कर्मियों का ख़याल ग्राता था। क्लार्क की निगाह स्वतः ही सिने कैमरे की तलाश में चारों तरफ़ दौड़ गई।

कार एक बारक के बाहर जाकर खड़ी हो गई। पोलोज़ोवा क्लार्क को जिस कमरे में ले गई, वह मेज़ों से लगभग पूरी तरह से भरा पड़ा था। एक संकरे, टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर किसी तरह भिंचे-भिंचे चलकर ही उसमें कहीं जाया जा सकता था। मेज़ों के सामने खड़े लोग मेज़ों के ग्रागे बैठे हुए लोगों पर चीख़ रहे थे। किसी ग्रादमी ने एक मेज़ पर इतनी ज़ोर से घूंसा मारा कि दावातें खड़खड़ा उठीं। उस मेज़ पर ग्रपनी कुरसी पर कमर टिकाये चश्मा लगाये जो ग्रादमी बैठा था, वह धीरज के साथ यह प्रतीक्षा करते हुए कि उसके मुलाक़ाती का हाथ कब दुखने लगेगा, बीच-बीच में बस एक ही वाक्य कहता जाता था: "मैं इस बारे में कुछ नहीं कर सकता।"

हाथों में काग़ज़ लिये हुए लोग मेज़ों के बीच जैसे फिसलते हुए ग्रा-जा रहे थे।

पोलोज़ोवा के पीछे-पीछे चलता हुग्रा क्लार्क ग्राख़िर वहां पहुंच गया, जहां परदे के पीछे बैठा चेत्वेर्याकोव लाल पेंसिल के टेढ़े-मेढ़े निशानों से चिह्नित काग़ज़ों के ढेर की छंटाई कर रहा था।

पोलोज़ोवा ने चेत्वेर्याकोव से बात करना शुरू की, लेकिन तभी बुनी हुई बनियाइन ग्रौर बिलकुल पायजामानुमा सफ़ेद पतलून पहने एक भारी बदन का मूंछोंवाला ग्रादमी परदे के पीछे से धड़धड़ाता हुग्रा ग्राया, क्लार्क ग्रौर पोलोज़ोवा को उसने एक तरफ़ धकेल दिया ग्रौर ग्रपने सिर पर से टोपी को उतारकर चेत्वेर्याकोव के सामने फ़र्श पर पटक दिया।

"मैं इन हरामज़ादों के साथ काम नहीं कर सकता। मेरे साथ चाहे जो कर लीजिये, पर मैं नहीं कर सकता।"

"चीख़िये मत, तेप्लीख़," चेत्वेर्याकोव ने शांति से कहा। "मैं बहरा नहीं हूं। ग्रौर फ़र्श पर चीज़ें मत पटकिये..." उसने मुड़ी हुई टोपी की तरफ़ सिर से इशारा किया, "क्या मामला है?"

"तरेलकिन और कुज़्नेत्सोव की टोलियां काम पर नहीं गईं।"

"क्यों?"

"वे कहते हैं कि तंबाकू का राशन उन्हें तीन दिन से नहीं मिला है। तंबाकू नहीं होगा, तो काम भी नहीं होगा!"

"उनसे कहिये कि हमें तंबाकू कल या परसों मिलेगा। उन्हें बताइये कि स्तालिनाबाद से सामान अभी पहुंचा नहीं है। अरे, आपको ख़ुद मालूम होना चाहिए कि क्या कहा जाये। मेरे पास इस तरह की छोटी-छोटी बातों को लेकर क्यों आते हैं?"

"मैं उनसे बात कर चुका हूं, उन्हें समझा चुका हूं, पर यह सब ईंट की दीवार से बात करने के बराबर है। उन्होंने कल ही पैर पटकना शुरू कर दिये थे, काम पर नहीं जाना चाहते थे, मगर मैंने उन्हें समझाया, वादा किया कि आज तंबाकू मिल जायेगा। और अब तो वे मेरी बात भी सुनने को तैयार नहीं हैं। कहते हैं: 'हमें वादे नहीं चाहिए! हमें तंबाकू दो, वादे नहीं!' वे टस से मस नहीं होंगे। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूं।"

"अच्छा, आप मुझसे क्या चाहते हैं? मैं तंबाकू कहां से ला सकता हूं? येरेमिन से जाकर मांगिये।"

"तंबाकू है ही नहीं – एक पैकेट भी नहीं। मैं पहले ही सब कहीं ढूंढ चुका हूं।"

"लेकिन इसमें मैं क्या कर सकता हूं?"

"जी, उन्हें काम पर तो भेजना होगा ही! साथी इंजीनियर, आप उनसे बात कीजिये। शायद वे आपकी बात मान लें।"

"ठीक है, चलिये। मेरे साथ आइये," चेत्वेर्याकोव ने पोलोज़ोवा और क्लार्क की तरफ़ मुड़ते हुए कहा, "अभी किसी को देखते हैं, जो आपको आपके विभाग में पहुंचा देगा।"

चारों उस भीड़ भरे कमरे से किसी तरह निकल आये और किनारेवाली बारकों की तरफ़ चल दिये।

तेप्लीख़ उन्हें जिस बारक में ले गया, वह टांगों पर लपेटने के पट्टों की दुर्गंध से भरी हुई थी। कोई साठ मजदूर दीवारों के साथ लगे तख़्तों की खाटों पर बैठे या लेटे हुए थे। बारक के कोने में एक खाट पर से अकार्डियन के बजने की भारी आवाज आ रही थी।

जब चेत्वेर्याकोव वहां पहुंचा, तो अकार्डियन का बजना बंद हो गया और कुछ मज़दूर खड़े हो गये। बाक़ी आगंतुकों को न देखने का दिखावा करते हुए लेटे रहे।

"साथियो," अपने चश्मे को ठीक से लगाते हुए चेत्वेर्याकोव ने कहना शुरू किया। "इस सब का क्या मतलब है? क्या आप काम को ठप्प करना चाहते हैं? हर वर्ग-चेतन मज़दूर को यह समझना चाहिए कि निर्माणस्थली पर काम से सामूहिक अनुपस्थितियां अंतर्ध्वंस के बराबर हैं। इस समय, जब पार्टी और सोवियत सरकार ने हमारे निर्माण-कार्य की पूर्ति के लिए समय-सीमा निर्धारित कर दी है और काम की प्रगति बारीकी से देख रही हैं, जब शब्दशः हर मिनट बहुमूल्य है, उस समय किसी मामूली-सी बात के पीछे काम को रोकना एक अपराध है, वर्ग-चेतन मज़दूर के लिए अनुचित है। मुझे विश्वास है कि आपकी तरफ़ से यह एक प्रदर्शन मात्र था, जिसका लक्ष्य सप्लाई के मामले में ख़ामियों की तरफ़ मैनेजमेंट का ध्यान खींचना ही था। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैनेजमेंट सप्लाइयों को तेज़ करने के लिए अपने बस भर प्रयास करेगा। किसी भी सूरत में इस प्रदर्शन को लंबा करने का कोई फ़ायदा नहीं। पूरे एक घंटे का काम आप वैसे ही बरबाद कर चुके हैं। मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं कि आप सब एकसाथ तुरंत काम पर चले जायेंगे। मैं आपके जाने का इंतज़ार कर रहा हूं, साथियो!"

"तंबाकू पीने के लिए दो और हम चले जायेंगे। अगर नहीं दे सकते, तो हमारे पास आओ भी मत!" नीली बनियाइन पहने एक आदमी ने उदासी से कहा।

"वादों का आज चौथा दिन है।"

"हमें चेतना की सीख मत दो। अपने लिए सिगरेट मंगाना तो तुम कभी नहीं भूलते!"

"मैं धूम्रपान नहीं करता," चेत्वेर्याकोव ने नाराज़ी के साथ कहा, "किसी भी सूरत में, सबसे ज़रूरी चीज़ों की सप्लाई में बाधा डालकर मैनेजमेंट आपको तंबाकू देने के लिए बाध्य भी नहीं है। धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए ज़रा भी आवश्यक नहीं है, बल्कि उसे हानि ही पहुंचाता है। वोद्का की तरह यह भी काम करने की क्षमता को कम करता है। सामूहिक समझौते में ऐसी कोई धारा नहीं

है, जो यह कहती हो कि मैनेजमेंट तंबाकू की सप्लाई करने के लिए वाध्य है।"

"तो वह ठीक से तैयार नहीं किया गया था, और क्या! यह धारा होनी चाहिए थी," एक लाल दाढ़ीवाला आदमी बोला।

"देखा, हमारी सेहत का इन्हें कितना ख़याल है! पिछले हफ़्ते हमें चाय नहीं दी गई थी – वह भी नुक़सानदेह ही है। थोड़े ही दिनों के भीतर ये सयाने कहने लगेंगे कि मज़दूर के लिए खाना खाना भी नुक़सानदेह है।"

कोने में बैठे अकार्डियनवादक ने एक ललकार भरी धुन छेड़ दी।

"सूअर हैं ये, मज़दूर नहीं!" तेप्लीख़ ने कुछ अपने को और कुछ चेत्वेर्याकोव को सुनाते हुए कहा।

"मैनेजमेंट आपको खाने की सप्लाई के लिए वाध्य है और यह वह करता है। आज तक ऐसा एक वार भी नहीं हुआ कि जब आप विना खाने के रहे हों। अगर मैनेजमेंट ने आपकी सनकों पर चलना शुरू कर दिया होता और आपके लिए खाने की जगह तंबाकू लाना शुरू कर दिया होता, तो आपको आज खाने के लिए कुछ न मिला होता। मेरे ख़याल में इस मामले पर वहस करना उचित नहीं है। आम सभाओं में आपको सप्लाई प्रणाली के सभी दोषों के बारे में अपनी राय देने का मौक़ा मिलेगा। यह काम का वक़्त है और आप सब को फ़ौरन काम पर चले जाना चाहिए।"

"हमसे वात मत करो!" नीली वनियाइन पहने आदमी विषादपूर्ण स्वर में वुदवुदाया। "दो हमें तंबाकू, और हम जाते हैं काम पर!"

"और जव तुम तंबाकू पीते ही नहीं, तो यह कैसे कह सकते हो कि मज़दूर को उसकी ज़रूरत है भी या नहीं?"

सारी वारक ठहाकों से गूंज उठी।

अकार्डियनवादक ने विजयोल्लास के साथ अपने वाजे पर संगीत की एक पूरी धुन ही वजा दी।

"क्या हो रहा है यहां?" दरवाज़े से एक गरजती हुई आवाज़ आयी।

येरेमिन दरवाज़े में खड़ा हुआ था।

चेत्वेर्याकोव सीधा उसके पास चला गया।

"मज़दूर वड़वड़ा रहे हैं। उन्हें तंबाकू नहीं मिला है, इसलिए वे काम पर नहीं जा रहे हैं। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की, मगर वे

बात सुनते ही नहीं। शायद आप इनके दिमाग़ को ठिकाने ला सकें, निकोलाई वसील्येविच? आप इन लोगों से बात करना जानते हैं। और मेरी दफ़्तर में ज़रूरत है..."

जवाब का इंतज़ार किये बिना चेत्वेर्याकोव बारक से चला गया।

"तो, क्या हो रहा है यहां?" येरेमिन ने गरजती आवाज़ में फिर पूछा।

अकार्डियन ख़ामोश हो गया।

"यह तुमने क्या शरारत शुरू कर रखी है? काम पर नहीं जाओगे? कामचोरी करोगे? कुलकों के पिछलग्गू उकसावा दे रहे हैं, है न? और तुम भेड़ों की रेवड़ की तरह निर्माण-कार्य के ख़िलाफ़ जा रहे हो, सोवियत सत्ता के ख़िलाफ़ जा रहे हो? अगर तुम्हें तंबाकू नहीं मिलेगा, तो तुम काम नहीं करोगे, क्यों?"

"हां, नहीं करेंगे। अगर तुम तंबाकू नहीं दोगे, तो हम काम नहीं करेंगे।"

"तो, कहा न, अभी तंबाकू नहीं है। सभी तो फूंक दिया है सबने। मैं तुम्हें कहां से लाकर दूं?"

"देखो आसपास—कहीं मिल ही जायेगा!"

"और मुझे कहां देखने का तुम हुक्म दे रहे हो?"

"अपने ही फ़्लैट में देखो—शायद एकाध बक्सा सिगरेट मिल जाये।"

"हम कोई ऐसे बिगड़ैल नहीं हैं, सिगरेट से भी हमारा काम चल जायेगा!"

येरेमिन का चेहरा ग़ुस्से के मारे लाल हो गया।

"ओफ़, तुम... तुम सब को तो धक्के देकर निकाल देना भी नाक़ाफ़ी ही रहेगा!"

"ऐसी जल्दी मत करो, हम अपने आप चले जायेंगे।"

"हम काफ़ी काम कर चुके। अब औरों को भी कर लेने दो!"

"तुम एक पैकट तंबाकू के पीछे सोवियत सत्ता के साथ विश्वासघात कर सकते हो!" येरेमिन चिल्लाया, "हम मोर्चे पर, श्वेत गार्डियों से लड़ते समय तंबाकू न होने पर शाह बलूत की पत्तियां पिया करते थे!"

"तो पहले शाह बलूत के कुछ पेड़ लगा दो यहां और हम अपना काम चला लेंगे। मगर अभी तो दिन में चिराग़ लेकर ढूंढ़ने पर भी उसकी

पत्ती भी नहीं मिलेगी। तुम क्या चाहते हो कि हम ऊंट की लीद की सिगरेटें बनाकर पियें ?"

आया एक कृषि-विशारद
ऊंट की लीद ले जाने,
मिला न उसको ढेला-पत्थर
फूंक गये थे सब सिगरेट-दीवाने...

अकार्डियनवादक ने हर्षोल्लास के साथ नया गीत शुरू कर दिया।

पूरी बारक ने ज़ोर-ज़ोर से ठहाका मारकर उसे शाबाशी दी। उत्साहित होकर अकार्डियनवादक ने और भी ऊंची आवाज़ में अगली कड़ी को शुरू कर दिया।

क्लार्क, जो दरवाज़े पर ही खड़ा था, इस सारे कांड का एक मूक साक्षी था।

"आप शायद यह अचरज कर रहे हैं कि यहां क्या हो रहा है?" पोलोज़ोवा ने उसकी ओर मुड़ते हुए कहा। "आपके सैक्शन के मजदूरों को तंबाकू नहीं मिला है, इसलिए वे काम पर नहीं जा रहे हैं।"

"क्या ये उसी सैक्शन के मज़दूर हैं, जिसमें मुझे काम करना है?"

"जी हां। पहली ही मुलाक़ात के समय ऐसा होना कितनी अप्रिय बात है।"

क्लार्क ने अन्यमनस्कता से बालों में उंगलियां घुमाईं। यहां आते समय ही उसने इस बारे में काफ़ी सोचा था कि अपने नीचे काम करनेवाले मजदूरों से आवश्यक प्रतिष्ठा प्राप्त करने का सबसे विश्वस्त तरीक़ा क्या हो सकता है, उनके साथ साथियों जैसे वे संबंध कैसे स्थापित किये जायें, जो इस देश में व्याप्त प्रतीत होते हैं। इस अप्रत्याशित दुर्घटना ने उसकी सारी सुविचारित योजनाओं को गड़बड़ा दिया था और, इसके विपरीत, कोई उपयक्त प्रयास करके एकदम मज़दूरों का समर्थन प्राप्त करने का एक अनपेक्षित अवसर पैदा कर दिया था। अगर वह इस समय निश्चय करके कोई ग़ैरमामूली बात नहीं करता है, तो ऐसा दूसरा अवसर जल्दी मुश्किल से ही मिल पायेगा।

उसने झुककर पोलोज़ोवा से पूछा:

"सुनिये, अगर मैं इनसे बात करने की कोशिश करूं, तो कैसा रहेगा? यह देखते हुए कि ये मेरे सैक्शन के ही मजदूर हैं..."

"आप? हां, विचार तो यह बुरा नहीं है... साथी येरेमिन, मिस्टर क्लार्क अपने सैक्शन के मज़दूरों से ख़ुद बात करना चाहते हैं। शायद इससे असर पैदा हो। आपका क्या ख़याल है?"

"कौन, अमरीकी? हां-हां, ठीक है। कोशिश करने दो उन्हें।"

"हां, मिस्टर क्लार्क, बोलिये आप। यह बड़ा अच्छा विचार है।"

पोलोज़ोवा आगे आकर कहने लगी:

"साथियो, इंजीनियर क्लार्क अमरीका से हमारी निर्माणस्थली पर आये हैं और वह यहां पहले सैक्शन में काम करेंगे। वह कुछ कहना चाहते हैं और आपसे अपनी बात सुनने का अनुरोध कर रहे हैं।"

अकार्डियन बजना बंद हो गया।

मज़दूर उठ-उठकर खाटों पर बैठ गये, जो लोग कमरे के दूसरे छोर पर थे, वे पास आ गये और नीकर पहने इस आगंतुक को ध्यान से देखने लगे। बारक में ख़ामोशी छा गई।

"बोलिये," पोलोज़ोवा ने क्लार्क को इशारा किया।

क्लार्क ने घबराहट में खंखारकर गला साफ़ किया और आवाज़ को उठाये बिना अंग्रेज़ी में कहा:

"मज़दूरो, मैं जानता हूं कि धूम्रपान करनेवाले का जीवन तंबाकू के बिना बड़ा मुश्किल हो जाता है। लेकिन आपके काम न करने से भी मामला कोई सुलझेगा नहीं। इससे तंबाकू मिलेगा नहीं और काम भी रुक जायेगा। समझदारी की बात कीजिये और मैनेजमेंट के लिए परेशानियां मत पैदा कीजिये। कल मैंने एक सम्मेलन में भाग लिया था, जिसमें परिवहन के प्रश्नों पर विचार किया गया था, और मैं जानता हूं कि चीज़ें प्राप्त करने में जो अस्थायी कठिनाइयां हैं, वे किसी भूल के कारण नहीं हैं, बल्कि परिवहन साधनों की कमी के कारण हैं, जिसके कारण निर्माणस्थली के सभी सैक्शनों की ज़रूरतों की एकसाथ पूर्ति करना सचमुच असंभव है। और ज़्यादा कठिनाइयां मत पैदा कीजिये, बल्कि काम पर चले जाइये..."

उसने अपनी बात वहीं छोड़ दी। वह कुछ और कहना चाहता था, मगर भूल गया कि वह क्या बात थी। उसने असमंजस में अपना गला साफ़ किया और बोला कुछ नहीं।

"साथियो!" पोलोज़ोवा ने क्षण भर की झिझक के बाद अनुवाद शुरू किया। "इंजीनियर क्लार्क कह रहे हैं कि अपने देश, अमरीका में

उन्होंने रूसी मज़दूरों के बारे में बहुत कुछ सुना था, जिन्हें अमरीकी सर्वहारा वर्ग अपना शिक्षक मानता है, जिन्होंने संसार भर के मज़दूरों को दिखा दिया है कि क्रांति कैसे की जाती है और क्रान्ति में उपलब्ध जीतों की किस तरह रक्षा की जाती है। इसलिए, वह कह रहे हैं कि रूसी मज़दूरों के साथ अपनी पहली मुलाक़ात से उन्हें बहुत निराशा हुई है। इंजीनियर क्लार्क कह रहे हैं कि अगर सारे रूसी मज़दूर क्रांति के प्रति अपने कर्तव्य को इसी तरह से समझते हैं, तो ऐसे मज़दूरों से समाजवाद का निर्माण नहीं किया जा सकता। उन्होंने यहां जो देखा और सुना है, वह अमरीकी मज़दूरों को बताते हुए उन्हें शर्म आयेगी।"

जब पोलोज़ोवा अनुवाद कर रही थी, तब क्लार्क दर्जनों आदमियों की आंखों की निगाहों को अपने ऊपर गिरते अनुभव करता एक तरफ़ सकुचाया हुआ खड़ा था। वह जानता था कि उसने कोई अच्छा भाषण नहीं दिया है और यह नहीं समझ पा रहा था कि उसके शब्दों का अनुवाद करते समय पोलोज़ोवा इतने जोश में क्यों आ रही है, जो अब उसे इतने मूर्खतापूर्ण और निरर्थक लग रहे थे। उसे लगा कि चाहे कुछ भी हो, इस कमबख़्त भाषण से पैदा हुई छाप को ख़त्म करने के लिए कुछ न कुछ अवश्य किया जाना चाहिए। जब पोलोज़ोवा ने अनुवाद पूरा किया, तो वह अचानक एक-दो क़दम आगे बढ़कर सीधे पहली खाट के पास तक चला गया, अपनी जेब से सिगरेट का पैकट निकाला और उसे मज़दूरों की तरफ़ बढ़ा दिया।

एक अजीब-सी ख़ामोशी छा गई थी।

एक-दो हाथ सिगरेट लेने के लिए पसर गये।

"इंजीनियर क्लार्क यह भी कह रहे हैं," पोलोज़ोवा ने जल्दी से जोड़ा, "कि वह यहां खाने या तंबाकू के लिए काम करने नहीं आये हैं और वह अपना हिस्सा ख़ुशी के साथ उन लोगों को दे देने के लिए तैयार हैं, जो एक पैकट तंबाकू के बिना समाजवाद के निर्माण में भाग लेने के लिए तैयार नहीं हैं।"

क्लार्क अब भी अपने आगे बढ़े हाथ में सिगरेट का पैकट लिये हुए खड़ा था। और किसी आदमी ने उससे सिगरेटें नहीं निकालीं। जो लोग सिगरेटें ले भी चुके थे, उन्होंने उन्हें सुलगाया नहीं, बल्कि तने हुए चेहरों के साथ बैठे-बैठे अपनी उंगलियों में घुमाते रहे।

"मैं दावे के साथ कहता हूं कि अमरीका में मजदूर सिगार पीते हैं, तंबाकू नहीं," लंबी ख़ामोशी के बाद लाल दाढ़ीवाला आदमी बोला।

किसी ने उसका समर्थन नहीं किया।

"बेशक, यह सच है कि तंबाकू के बिना काम काम नहीं रहता," अपनी खाट पर से उठते हुए मूछोंवाले एक लंबे आदमी ने कहा। "तंबाकू पीनेवाले को अगर वह मिले नहीं, तो उसकी आफ़त आ जाती है। मगर, यारो, एक अमरीकी के सामने तो हम काम में अपनी नाक कटवा नहीं सकते! हमने क्या वादा किया था? उन्हें पकड़ लेने और पीछे छोड़ देने का – और हो यह रहा है कि हम जरा भी पकड़ नहीं पा रहे और बस, बैठे हुए हैं। और अमरीकी ने हमारे मुंह पर जिस तरह से थूका है, वह ठीक ही है। इसका सीधा-सादा मतलब यह ही है कि अगर तुम काम नहीं कर सकते, तो बकवास भी मत करो। हमने शोर तो इतना मचाया कि सारी दुनिया को थर्रा दिया, और जब आजमाइश का वक़्त आया, तो हम में दम ही नहीं है! बस इसने एक ही बात ग़लत कही है – मानो मजदूर कभी-कभार शोर मचा ही नहीं सकता। यह मजदूर को जानता ही नहीं। इसका ख़याल है कि हम जरा से तंबाकू के लिए ही काम कर रहे हैं। ये अमरीकी भी क्या ख़ूब होते हैं! तो, चलो, यारो! चलो, चलें – ठीक है, न? हम अमरीका को दिखा देंगे कि रूसी मजदूर काम की किस तरह से धुनाई करता है!"

कोई तीसेक लोग धीरे-धीरे अपनी खाटों पर से उठ खड़े हुए।

"हां-हां, जाओ, जाओ! तीन लोग तुम्हें नहीं बहका सके, इसलिए तुम चौथे के कहने में आ गये," लाल दाढ़ीवाले ने विद्वेषपूर्वक फब्ती कसी। "उसने अपनी जबान चलाई और तुम अपने कान फटकारने लगे! कौन जाने कि यह सचमुच का अमरीकी हो ही नहीं!"

"ठीक है, तो तुम जरा कोशिश करके इसे जांच लो, न! अमरीकी जबान में उसे कुछ चुटकुले सुनाकर देखो कि यह समझता है कि नहीं। इससे पूछो कि अमरीका में क्या हाल है और वहां कुलाकों का सफ़ाया कब किया जानेवाला है!" अकार्डियनवादक ने उसे चिढ़ाया।

"चलो, यारो, चलो! बहुत ठट्ठा हो लिया," मूछोंवाले आदमी ने उन्हें धकेलते हुए कहा। "चलो, अब चलें! हम अमरीका को चिढ़ाने के लिए ही काम करेंगे!"

सभी जाने को उठ खड़े हुए।

"अब करो मजदूर वर्ग की एकता की बात!" अपनी कमीज़ चढ़ाते-चढ़ाते लाल दाढ़ीवाला बुदबुदाया।

"अच्छा, यारो, एक बात बताओ – ज़रा सी बात के पीछे इतनी आफ़त मचाने की क्या ज़रूरत थी?" येरेमिन ने हंसते हुए कहा। "अब ज़रा फुरती दिखाना – तुम्हें कमर पूरी करनी है।"

"हम तो फुरती दिखायेंगे ही, निकोलाई वसील्येविच, मगर तंबाकू के बारे में फुरती दिखाना तुम भी मत भूल जाना। क़सम से, तंबाकू के बिना आदमी ऐसा ही है, जैसा जोरू के बिना – दिल में दर्द और चारा कुछ नहीं!"

वे भीड़ बनाकर इमारत के बाहर निकल गये।

क्लार्क, पोलोजोवा और येरेमिन सब के बाद बाहर आये। बारक से कुछ ही दूर जाने पर सफ़ेद कमीज़ पहने एक ठिंगना-सा आदमी उनके दल में आ मिला।

"लगता तो हमारा अमरीकी बढ़िया आदमी है," येरेमिन ने आंख मिचकाते हुए उससे कहा, "क्या शानदार भाषण दिया!"

"लेकिन क्या तुम अंग्रेजी समझते हो?" कमीज़ पहने आदमी बात येरेमिन से कर रहा था, मगर उसकी आंखें क्लार्क पर टिकी हुई थीं।

"पोलोज़ोवा अनुवाद करती जा रही थी।"

"उन्होंने जो कहा था, मैंने उसका बिलकुल भी अनुवाद नहीं किया," पोलोज़ोवा ने शरमाते हुए कहा। "मैं जानती हूं कि यह अच्छी बात नहीं है, लेकिन मैं सारे मामले को जल्दी से जल्दी ख़त्म करना चाहती थी। मैंने वही कहा, जो क्लार्क की जगह 'हमारा' अमरीकी कहता।"

क्लार्क ग़ौर से पोलोज़ोवा की तरफ़ देख रहा था। उसने अपने नाम का उल्लेख सुना और क़मीज़ पहने आदमी के सामने पोलोज़ोवा के संकोच को भी देखा।

"यह तो अनुचित है। इंजीनियर क्लार्क को इसके बारे में फ़ौरन बताओ।"

"बेशक। वैसे भी मैं उन्हें बतानेवाली ही थी।"

कमीज़ पहने आदमी येरेमिन के साथ बीच की बारक की तरफ़ चला गया।

"मुझे आपसे माफ़ी मांगनी है," अपने और क्लार्क के अकेले रह जाने पर पोलोज़ोवा ने कहना शुरू किया। "मैंने आपके भाषण को बिलकुल तोड़-मरोड़ दिया था। बात यह है कि भाषण तो आपने बहुत बढ़िया दिया था, मगर इन तर्कों का उन पर कोई असर नहीं होता। चेल्येर्याकोव या येरेमिन की बात वे क्यों नहीं सुन रहे थे? दोनों ने उनके विवेक को जगाने की कोशिश की थी, और, आदमी जब जिद पर चढ़ जाता है, तब उससे समझदारी की बात करना बेकार है—तब उसके दिल को छूने की, उसकी भावनाओं को जगाने की, उसे शर्मिंदा करने की ज़रूरत होती है। आख़िर उनमें से ज्यादातर दिल के अच्छे हैं। बस, कुछ भूतपूर्व कुलाक हैं और वे ही हमेशा मुश्किलें पैदा करते रहते हैं।"

"मेरा भाषण बहुत ही बुरा था। आपने बात को अपने तरीक़े से पेश करके बिलकुल ठीक किया। सच मानिये, मैंने पहले कभी भाषण नहीं दिया था, ख़ासकर रूसी मज़दूरों के एक एकदम अपरिचित समूह के सामने बोलना तो मेरे लिए बहुत ही मुश्किल काम है।"

"नहीं, नहीं। आपने बहुत अच्छी तरह से बात की थी। मिसाल के लिए, आपका सिगरेट पेश करना बहुत शानदार था। मुझे इसका कभी ख़याल भी नहीं आता। बस, आगे कभी ऐसा मत कीजियेगा, नहीं तो आपकी सारी सिगरेटें बंट जायेंगी और फिर, हो सकता है कि एक दिन ख़ुद आपको ही हड़ताल करनी पड़े," उसने हंसते हुए कहा।

वे उसी तरफ़ चल दिये, जिधर मज़दूरों की भीड़ गई थी।

कगार पर खड़ा युर्त

येरेमिन अपने युर्त में लौट आया, जो पहले सैक्शन के निर्माण-प्रमुख का अस्थायी कार्यालय था। उसे यह जगह दफ़्तर की बारक में बने छोटे-छोटे घुटनभरे दरबे से ज्यादा पसंद थी। उसने युर्त को बिलकुल नदी के किनारे पर ही, कगार से कुछ ही क़दम की दूरी पर नदी की ओर खड़ा करवाया था। नदी से दिन-रात ठंडी हवा की बहुमूल्य धाराएं उठकर आती रहती थीं। युर्त के नमदे के मोटे-मोटे परदे बस्ती से आनेवाले नागवार शोर-शराबे को भीतर नहीं आने देते थे और इसी तरह बिच्छू

ग्रादि को भी बाहर ही रखते थे। यहां काम करते हुए येरेमिन को लगता कि जैसे वह मोटे नमदे के टोप से बाहरी दुनिया से बिलकुल ग्रलग हो गया है। उसे लगता कि यही एक ऐसी जगह है, जहां वह सचमुच एकाग्रतापूर्वक काम कर सकता है।

लोग उससे मिलने के लिए युर्त में नहीं ग्राते थे। वे जानते थे कि वहां उससे गालियों की बौछार के ग्रलावा ग्रौर कुछ नहीं मिल सकता है। "युर्त चला गया" का मतलब ही यही था कि वह ग़ुस्से के मारे ग्रापे में नहीं है, हर चीज़ पर चीख़-चिल्ला रहा है; इसका मतलब था इंतज़ार करो—छेड़ो मत। यही एक ग्रकेली ऐसी जगह थी, जहां येरेमिन को बिलकुल ग्रकेला छोड़ दिया जाता था ग्रौर जहां कोई उससे काम के बारे में बातें करने के लिए नहीं ग्राता था। ग्रकसर वह सोने के लिए बस्ती में ग्रपने घर भी नहीं वापस जाता था, बल्कि सारी-सारी रात युर्त में ही रिपोर्टों, तालिकाग्रों ग्रौर रेखाचित्रों का ग्रध्ययन करने में ग्रौर उन्हें एक ही योजना में फ़िट करने की कोशिश में, ग़लतियों की तलाश में ग्रौर उन्हीं कार्यभारों को उपलब्ध सुविधाग्रों से पूरा करने की योजनाएं तैयार करने में ही बिता देता था।

सुबह वह युर्त से बिना शेव किये हुए, थकान से पीला पड़ा ग्रौर एकदम शांत बाहर निकलता। वह निर्माणस्थली जाता ग्रौर चेत्वेर्याकोव को बुलवाता। वह फ़ोरमैनों को विस्तार से बताता कि ग्रधिकतम परिणामों की प्राप्ति के लिए श्रम शक्ति ग्रौर मशीनों का किस तरह पुनर्वितरण किया जाना चाहिए। चेत्वेर्याकोव मुंह फुलाते हुए सहमत हो जाता। शाम को रिपोर्ट ग्राती। ग्रगर रिपोर्ट उत्पादकता में कुछ घन मीटर की भी वृद्धि दर्शाती, तो येरेमिन बच्चों की तरह ख़ुशियां मनाता। वह इंजीनियरों को बुलवाता, ग्रपनी प्रणाली के लाभों को सिद्ध करता ग्रौर भविष्य के बारे में ग्रपनी योजना सामने रखता। योजना से पता चलता कि सामान्य समांतर श्रेढ़ी के ग्रनुसार बढ़ते हुए सारे ग्रंतर को एक महीने के भीतर पूरी तरह से पाटा जा सकता है।

लेकिन ग्रगले दिन की रिपोर्ट फिर गिरावट दर्शाती—कई मशीनें ख़राब हो जातीं, ग्रौर फ़ालतू पुरजों के ग्रभाव में मैकेनिकल डिपार्टमेंट उनकी मरम्मत की ग्रनुमानित तिथि तक निश्चित करने से इनकार कर देता। तब एक ग्रसहनीय निराशा येरेमिन को ग्रस लेती।

...उसने बड़ी कटुता के साथ यह सोचते हुए अपने युर्त में प्रवेश किया कि अब वह मजदूरों से पहले की तरह से बात नहीं कर पाता है, जब उसके किसी भाषण को सुनने के बाद पूरा का पूरा कारखाना स्वेच्छा से रात की शिफ़्ट में काम करने के लिए रुक जाता था।

मेज़ पर जाकर उसने अपने हाथ में आनेवाली पहली रिपोर्ट को उठा लिया।

"क्या मैं अंदर आ सकता हूं? मैं आपके काम में विघ्न तो नहीं डाल रहा?"

येरेमिन चौंक गया, यहां कौन आ सकता है?

युर्त के दरवाज़े में नेमिरोव्स्की खड़ा हुआ था।

"क्या मैं आ सकता हूं?" नेमिरोव्स्की ने फिर पूछा।

येरेमिन ने जवाब दिये बिना उसकी तरफ़ देखा।

"इसके ईसा जैसी दाढ़ी है," उसके मन में अप्रासंगिक ख़याल उठा। "और यह यहां इस तरह से आया है, जैसे पानी पर चल रहा हो—क़दमों की आवाज़ तक नहीं सुनाई दी।"

अचानक उसे इस आदमी की नाक पर एक करारा घूंसा मारने की अदमनीय इच्छा ने अभिभूत कर लिया: "सिर के बल नदी में जाकर गिर जायेगा और बस, क़िस्सा ख़त्म!"

"आ सकता हूं क्या?" नेमिरोव्स्की ने फिर पूछा—इस बार कुछ अधीरता के साथ।

"मुझे मालूम था कि आज आप मुझसे मिलने के लिए आयेंगे," येरेमिन ने कहा।

"प्रकट है। कल आपने सारी सभा के सामने ऐलान किया था कि आप मेरे साथ विशेष बात करेंगे। तो, कहिये, मैं सुन रहा हूं..."

"मैंने कल शाम कहा था कि मैं किसी पर मुक़दमा चलाऊंगा। मेरा मतलब आपसे ही था।"

"बड़ी कृपा है आपकी।"

"कुछ समय से मैं मैकेनिकल डिपार्टमेंट के मामलों की छानबीन कर रहा हूं, जो न जाने कब से हमारी सभी असफलताओं और आफ़तों की जड़ रहा है और मुझे विश्वास हो गया है कि मैकेनिकल डिपार्टमेंट का सारा काम हमारे निर्माण-कार्य की सहायता करने के इरादे से नहीं, बल्कि इसके

विपरीत, हमारे द्वारा उठाये जानेवाले हर क़दम को ध्वंस करने के इरादे से किया जा रहा है।"

"विश्वास हो गया है? तो क्या आपके ख़याल में इस विश्वास को बदला नहीं जा सकता है?"

"नहीं, मेरे ख़याल में नहीं। पहले मैं सोचा करता था कि यह कुछ इक्की-दुक्की त्रुटियों की ही बात है, लेकिन अब मुझे विश्वास हो गया है कि यह कोई त्रुटियों का मामला नहीं है, बल्कि एक नियमित व्यवस्था है, जिसकी शुरूआत पगार की व्यवस्था से ही होती है। आपने औसत निपुण मज़दूर को इतनी ऊंची वेतन-दरें बांध रखी हैं कि किसी भी तरह काम के हिसाब से अदायगी में उसकी दिलचस्पी हो ही नहीं सकती और प्रतियोगिता के विचार का तो सवाल भी नहीं उठ सकता। आपके यहां वेतन-मान इस तरह निर्धारित किया गया है कि मज़दूर की अपने श्रम की उत्पादकता में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं होती। और यह बात व्यवहार द्वारा प्रमाणित होती है। आपके विभाग में उत्पादकता उपहासजनक है और श्रम अनुशासन तो बयान के बाहर है। आपके मज़दूर बेतरह पैसा बटोरते हैं, जब कि निर्माण-कार्य को योगदान नहीं के बराबर करते हैं। इसके अलावा, अपने काम के संगठन के तरीक़े से ही आपने मैकेनिकल वर्कशॉप को निर्माण-कार्य की सारी व्यवस्था से अलग कर दिया है, जिससे वह एक तरह से अपनी निराली दुनिया बन गई है। आपके डिपार्टमेंट के मज़दूरों का निर्माण-कार्य की आम रफ़्तार से ज़रा-सा भी नाता नहीं है। हर चीज़ इस तरीक़े से संगठित की गई है कि जिससे सारे काम के लिए ज़िम्मेदारी की सारी भावना ही ख़त्म हो जाये।"

"बस, यही सब कहना है आपको?"

"नहीं, यह तो सब का ज़रा-सा अंश भी नहीं है।"

"अगर यही सब होता, तो मैं आपसे कहता कि आपने जिन बड़ी-बड़ी चीज़ों की चर्चा की है—'ज़िम्मेदारी की भावना', 'समाजवादी प्रतियोगिता' आदि-आदि,—वे सब कार्यभारी इंजीनियर नहीं, ट्रेड-यूनियन के देखने की बातें हैं। मेरा काम यह देखना है कि मशीनें जल्दी से जल्दी ठीक हों।"

"जहां तक मरम्मत की रफ़्तार का सवाल है, सो अगर आपकी जगह मैं होता, तो इसकी बात ही नहीं करता। आपके पास मशीनें लगातार हफ़्तों और महीनों तक पड़ी रहती हैं।"

"अगर फ़ालतू पुरज़ों की कमी है, तो मैं मरम्मत की जिम्मेदारी बिल्कुल नहीं ले सकता।"

"मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि अगर आपका बस चलता, तो आप तब भी मरम्मत करने से इनकार कर देते, जब फ़ालतू पुरज़े मौजूद भी होते। यह फ़ालतू पुरज़ों की कमी की दलील तो आप न जाने कब से देते चले आये हैं। अब तक तो आपने सैकड़ों बार फ़ालतू पुरज़े मंगवा लिये होते। और इसका तो ज़िक्र ही क्या करना कि काफ़ी फ़ालतू पुरज़े आप यहीं, वर्कशॉप में ही बना सकते थे। क्या आपका काम निर्माण-कार्य की आवश्यकताओं को तुष्ट करने की इच्छा पर आधारित किसी योजना के अनुसार किया जाता है? आप मशीनों की मरम्मत बस तभी करते हैं, जब कोई फ़ोरमैन आपके किसी मैकेनिक के साथ शराब पीने के दौरान उसकी व्यवस्था कर लेता है। अभी परसों ही पहले सैक्शन में एक ट्रैक्टर ख़राब हो गया था और दो बोतल वोद्का के बदले वह चौबीस घंटे के भीतर ठीक कर दिया गया। दूसरे ट्रैक्टर हफ़्तों से मरम्मत का इंतज़ार कर रहे हैं।"

"इस तरह की कमियों का सभी एशियाई निर्माणस्थलियों पर होना अनिवार्य है। अगर मैं इसके कारण मजदूरों को निकालना शुरू कर दूं, तो थोड़े ही दिनों में हमारे पास कोई भी नहीं बच रहेगा। आपको जैसी श्रम शक्ति अपने पास है, उसी पर संतोष करना होगा। यहां जैसी हालतों में एक भी अच्छा मजदूर काम करने को तैयार नहीं होगा।"

"मुझे वे मामले भी मालूम हैं, जब आपने मजदूरों को निकाला है, और उन्हें ही, जो सबसे ज़्यादा सक्रिय थे। अपने मैकेनिकल डिपार्टमेंट के लिए लोगों को लेते समय आपने सोवियत संघ भर के सबसे निकम्मे – सबसे स्वार्थपर और सबसे काहिल – लोगों को छांटकर रखने में बड़ी कुशलता का प्रदर्शन किया है। आपकी सारी कोशिशों के बावजूद इन तत्वों में भी कुछ ईमानदार मजदूर निकल आये हैं, जो काम के प्रति चिंतित हैं। आपके डिपार्टमेंट में स्वतः तूफ़ानी टोलियां पैदा हो गईं, प्रतियोगिता अपने-आप शुरू हो गई। आपने तरह-तरह के दिखावटी बहानों पर सरग़नाओं को झट से बरख़ास्त कर दिया और पगार की दरें बढ़ा दीं, जिससे मजदूरों में प्रतियोगिता को प्रोत्साहन न मिले। उपहास के रवैये से, व्यंग्य और छींटाकशी से आपने तूफ़ानी टोलीवालों के जोश को ठंडा करने की कोशिश

की। आप श्रम शक्ति की कोटि के बारे में तो बात करने की जुरअत करते हैं, लेकिन दो महीने हुए, जब आपके पास दो सौ मैकेनिक भेजे गये, – पार्टी-सदस्य, सेवामुक्त लाल सैनिक, – तो आपने उनमें से एक को भी इस आधार पर लेने से साफ़ इनकार कर दिया कि वे इतने कुशल नहीं हैं।"

"मेरा ख़याल है कि मैकेनिकल डिपार्टमेंट का प्रमुख होने के नाते मुझे अपने मज़दूरों की योग्यता को आंकने का अधिकार और सामर्थ्य है। मशीनें हाथों से ठीक की जाती हैं, ज़बानों से नहीं। मैकेनिकल डिपार्टमेंट को कुशल मज़दूरों की ज़रूरत है, कुशल आंदोलनकर्ताओं की नहीं।"

"आपने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया है कि मज़दूर-कम्युनिस्ट थोड़े ही समय के भीतर आपकी 'प्रणाली' का परदाफ़ाश कर देंगे और मज़दूरों को संगठित कर लेंगे। इसलिए आपने यही बेहतर समझा कि वे आपके अधिक्षेत्र में प्रवेश न करने पायें। अपनी सफ़ाई देने की आपकी कोशिशें फूटी कौड़ी के बराबर भी नहीं हैं..."

एक दूसरी ही क़िस्म का आदमी

पत्थरों से परिपूर्ण मैदान में पहाड़ों की तरफ़ तेज़ी से चढ़ाव आ गया था। मैदान के ऊपर उठते जाने के साथ-साथ उसमें खोदी गई नाली एक गहरे दर्रे का रूप लेती जा रही थी।

मिट्टी की दीवार पर अपने थूथन को नीचे की तरफ़ घुसेड़ता हुआ एक अकेला एक्स्केवेटर खड़ा था। घड़घड़ और धड़धड़ करता हुआ वह धीरज के साथ मिट्टी में अपने दांत गड़ाये हुए था। अपना मुंह पत्थरों से भर लेने के बाद वह अपनी जिराफ़नुमा गरदन उठाता, आसपास निगाह डालते हुए अपने गले में अटके मलबे को मैदान में उगल देता और एक लंबी जंभाई लेकर निर्विकार भाव से फिर काम में जुट जाता। लगता था कि एक्स्केवेटर ऐसे जीवन से बेहद ऊब गया है, वहां अकेला आवारागर्दी करता थक गया है और वह भी उस कुमुक के आने का इंतज़ार कर रहा है, जिसके भेजने का वादा किया गया था और अपनी गरदन उठाकर आसपास निगाह डालते समय वह यह देख लेता है कि कहीं वे पचीस और

एक्स्केवेटर तो नहीं ग्रा रहे, उनके पंजों के नीचे कुचले कंकर के कराहने की ग्रावाज तो नहीं सुनाई दे रही, कहीं हंसों की तरह शान के साथ पत्थर के तख्त की तरफ़ जाते लंबी गरदनवाले दैत्यों की क़तार क्षितिज पर नज़र तो नहीं ग्राने लगी।

नहर से चलकर क्लार्क ने ग्रपने को एक गहरे खड्ड के किनारे पर खड़े पाया ग्रौर यहीं पहाड़ के पैर को एक प्रचंड प्रहार से विदीर्ण करती हुई तलवार की तरह नदी पर उसकी पहली बार निगाह पड़ी। नदी तेज़ी के साथ नीचे लपकती जा रही थी। उसकी सतह से ठंडी हवा के झोंके उठकर ग्रा रहे थे। इस ऊंची जगह से वह स्थल नज़र ग्रा रहा था, जहां नदी पहाड़ों को फोड़कर मैदान में ग्रा उतरती थी।

कैलिफ़ोर्निया के पहाड़ों में क्लार्क ने एक बार मुसाफ़िरों से भरी ग्रौर ब्रेक टूटी कार को एक गर्त के ऊपर टेढ़े-मेढ़े ढालू रास्ते पर हवा की चाल से भागते देखा था। कार जैसे-जैसे ग्रागे जाती जा रही थी, उसकी चाल ग्रौर तेज होती जा रही थी ग्रौर फिर पूरी रफ़्तार पर जाते हुए वह एक मोड़ से निकलकर सीधे गर्त में जा गिरी थी। पहाड़ों को प्रबल वेग से भेदकर ग्राती ग्रपने को वस में रखने में ग्रसमर्थ नदी हवा को ग्रपनी दहाड़ से गुंजाती हुई नीचे की विश्वासघाती चट्टानों से टकराकर चूर-चूर हो जाने या फुहार में परिणत हो जाने के लिए मैदान की तरफ़ भागी चली जा रही थी।

क्लार्क जानता था कि इस नदी को समकोण मोड़कर मैदान के हृद-प्रदेश की तरफ़ पलटा जाना है। नदी के कगार पर खड़ा वह मन ही मन उसके संघात की संभव शक्ति का ग्रनुमान लगा रहा था।

"तो, ग्राखिर हम पहुंच ही गये," चारों ग्रोर देखते हुए पोलोज़ोवा ने कहा, "ग्रभाग्यवश मैं ग्रापको सभी बातें ठीक तरह से नहीं बता सकती ग्रौर इंजीनियरों में से कोई यहां है नहीं। इसलिये हमें ऊर्तावायेव को बुलवाना पड़ेगा।"

वे पत्थरों के ढेर पर बैठ गये ग्रौर इंतजार करने लगे कि ऊर्तावायेव को लाने के लिए भेजा गया काली दाढ़ीवाला उज़्बेक उसे तलाश करके ले ग्राये।

"कमीज़ पहने हुए घुटे सिरवाला वह ग्रादमी कौन था, जो हमारे बारक से निकलते समय ग्राया था?" क्लार्क ने ग्रचानक पूछा।

उसने यह सवाल जैसे अनिच्छापूर्वक किया था, मगर पोलोज़ोवा ने बरौनियों के नीचे से अपने पर टिकी उसकी प्रखर नज़र को देख लिया था।

"वह हमारी निर्माणस्थली की पार्टी समिति के सचिव, साथी सिनीत्सिन थे।"

"उनकी आंखें बड़ी भली और बुद्धिमत्तापूर्ण हैं।"

"वह बड़े शानदार कार्यकर्ता हैं। काश, उन जैसे कुछ लोग और होते! स्थानीय परिस्थितियों को वह बिलकुल जन्मजात ताजिकों की तरह से जानते हैं। उन्होंने ताजिक भाषा बोलना तक सीख लिया है।"

"वह मध्य एशिया में कितने समय से हैं?"

"मेरे ख़याल में चार साल से ज़्यादा से। वह मास्को जाने और अध्ययन करने के लिए बेताब हैं, मगर उन्हें जाने नहीं दिया जा रहा है।"

"यही आपके देश में एक ऐसी चीज़ है, जिस पर मुझे अचंभा होता है। क़दम-क़दम पर यही देखने को मिलता है। उम्र में ख़ासे बड़े-बड़े, अच्छे परिपक्व आदमी, जिन्हें काफ़ी व्यावहारिक अनुभव प्राप्त है, तीस-तीस, चालीस-चालीस साल की उम्र में अपनी शिक्षा पूरी करने या अपने ज्ञान का नवीकरण करने के डेस्क पर बैठ जाते हैं। किसी भी अन्य देश में यह बात अकल्पनीय होगी। हमारे देश में, तीस का होते-होते आदमी अपनी लीक से लग जाता है। अगर तब तक वह चिर संचित रास्ते पर नहीं लग पाता, तो वह उसी से संतोष कर लेता है और फिर अपनी चमड़ी से निकलने की कोशिश नहीं करता। आपके यहां शिक्षा की सारी प्रणाली का उद्देश्य ही इस आयु-सीमा को तोड़ना है।"

"आपके ख़याल में क्या यह अच्छी बात नहीं है?"

"सच कहूं, तो नहीं। बेशक, मैं साथी सिनीत्सिन की बात नहीं कर रहा हूं, जो शायद अपने ज्ञान की वृद्धि करना चाहते हैं, ताकि कालांतर में उन्हें आपके पार्टी संगठन में नेतृत्व का विस्तृत क्षेत्र प्रदान किया जा सके। यह बिलकुल समझ में आनेवाली बात है। मैं एक पेशे से दूसरे पेशे में, शारीरिक श्रम से मानसिक कार्य की उन अचानक छलांगों की बात कर रहा हूं, जो आपके यहां लोग क़दम-क़दम पर लगाते लगते हैं। मान लीजिये, एक आदमी किसी लोहे के कारख़ाने में अच्छा ख़रादिया है और पैंतीस साल की उम्र में अचानक रसायन के रहस्य उसे आकर्षित करने लगते

हैं और वह इस विषय का अध्ययन करने के लिए डेस्क पर बैठ जाता है, ताकि चालीस साल का होते-होते वह रासायनिक इंजीनियर बन जाये। दूसरे आदमी ने, कहिये कि अपनी आधी ज़िंदगी घड़ियों के पुरज़े बनाने में लगा दी और बड़ी तादाद में उन्हें बनाने लगा है कि अचानक उसकी दिलचस्पी सौर ऊर्जा के उपयोग की समस्या में पैदा हो जाती है और वह अपना काम छोड़ देता है और पोथों में डूबना शुरू कर देता है, जिससे कुछ वर्षों में ऊष्मा इंजीनियर बन जाये। आप अपने परिचितों में से ही इस तरह की सैकड़ों और मिसालें देख सकती हैं।"

"लेकिन आप इसे बुरा क्यों समझते हैं?"

"देखिये, मेरा ख़याल है कि यह अभिव्यक्ति का मार्ग ढूंढ़ती अनप्रयुक्त मानव ऊर्जा का सवाल है। लेकिन मैं यह समझता हूं कि इस ऊर्जा को इतने आयुक्तिक तरीक़े से किसी और रास्ते पर प्रवाहित कर देने से न समाज को कोई लाभ होता है और न संबद्ध व्यक्तियों को ही। आपका देश इतने-इतने वर्षों के अनुभव से युक्त अपने सर्वोत्तम कुशल मजदूरों की सेवाओं से वंचित होता है और बदले में उसे कुछ साधारण और अनुभवहीन इंजीनियर ही मिलते हैं, जो नये कार्य-क्षेत्र में इतना ही अनुभव प्राप्त करने के पहले ही बूढ़े हो चुके होंगे। आपके निर्माण-कार्य पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता होगा। अगर आप सचमुच उन्नत पूंजीवादी देशों को पकड़ना और पीछे छोड़ना चाहते हैं, तो आपको उनसे संकीर्ण विशिष्टीकरण के सिद्धांत को अपना लेना चाहिए और शारीरिक श्रम और मानसिक कार्य के सदियों पुराने विभेद की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। किसी भी सूरत में, इस अंतर को कम से कम दस बरस और – जब तक आप उन्नत देशों को पकड़ और पीछे न छोड़ ले, तब तक – क़ायम रखना चाहिए और आपको अपने कुशल मजदूरों का अधिकतम सावधानी और मितव्ययिता के साथ वितरण करना चाहिए। मैंने कई बार यह बात सुनी है कि समाजवाद का अर्थ है आयोजन। लेकिन तब तक आप अपनी आर्थिक व्यवस्था को आयोजित करने की, वस्तुओं का योजना के अनुसार उत्पादन और वितरण करने की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं, जब तक आप उत्पादकों का योजनाबद्ध तरीक़े से पहले वितरण नहीं करते?"

पोलोज़ोवा अपने साथ बैठे आदमी की तरफ़ उसी सहज जिज्ञासा के साथ देख रही थी, जिससे एक क़िस्म का प्राणी किसी दूसरी क़िस्म के

प्राणी को देखता है, जिसके बारे में वह अभी तक सुनी-सुनाई बातों से ही जानता था। उसके मुंह के कोनों पर एक हलकी सी मुसकान थिरक रही थी। क्लार्क को यह मुसकान बड़ी अनुग्रहपूर्ण लगी और इससे उसे इतनी खीज हुई, जितनी अत्यंत चुभते हुए प्रत्युत्तर से भी नहीं होती और उसने अपनी बात को अचानक इस सवाल से अधूरा ही छोड़ दिया:

"क्यों, आप मुझसे सहमत नहीं हैं क्या?"

"आप जो कह रहे हैं, वह बिलकुल सही होता, बशर्ते कि हम एक उन्नत पूंजीवादी राज्य का निर्माण करते होते और हमें आपकी तरह ही आदि से अंत तक का रास्ता तय करना होता। मगर बात ऐसी किसी भी तरह से नहीं है। इसके अलावा, लोगों के योजनाबद्ध वितरण का आपका विचार बड़ा ही यांत्रिक, पुराना और हेनरी फ़ोर्ड की याद ताज़ा करनेवाला है–इतने सौ आदमी जीवन भर बस बोल्ट बना रहे हैं, इतने सौ सिर्फ़ पेंच, आदि-आदि–पूर्णतम विशिष्टीकरण। यह सब पुराना पड़ गया है–पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली तक के लिए। हम आपसे आपकी अत्यधिक विकसित प्रविधि को उसकी नूतनतम पद्धतियों के स्तर पर ग्रहण करते हैं। आपकी प्रविधि महंगी है और हम उसके बीते हुए कल के उत्पादनों को नहीं ख़रीदना चाहते, जो आनेवाले कल तक पुराने भी पड़ चुके होंगे। उत्पादन का अविराम प्रवाह, जो आपकी राय में हमें आपके देश से सीखना चाहिए, अमरीका तक के लिए कल की चीज़ बन चुका है।"

"सचमुच! यह तो मेरे लिए भी एक अनजानी बात थी।"

"यह बताइये कि मज़दूर एक यंत्र भर क्यों बनकर रह जाये और दिन प्रति दिन उसी क्रिया को क्यों दुहराता रहे, जबकि इन क्रियाओं के दुहराने में एक मशीन आसानी से उसकी जगह ले सकती है और मज़दूर ख़ुद एक यंत्र से यंत्रों के नियंत्रक में परिणत हो सकता है? आपके देश में इस प्रत्यक्ष क़दम का मतलब होगा लाखों और मज़दूरों की बरख़ास्तगी, जिससे बेकारों की पहले से ही इतनी बड़ी फ़ौज में और बाढ़ आ जायेगी। मौजूदा हालतों में आप यह करने की जुरअत नहीं कर सकते। अकेले हम ही इस क़दम को उठाने की हिम्मत कर सकते हैं। माफ़ कीजियेगा–मेरे मुंह से यह बात एक विरोधाभास जैसी लग सकती है–मगर आप पुरानी प्राविधिक धारणाओं के अर्थों में सोच रहे हैं और आप बेकार ही यह समझते हैं कि हमारे प्राविधिक दृष्टि से पिछड़े हुए देश के लिए ये अभी भी नई

हैं और काम आ सकती हैं। विशिष्टीकरण की, पेशों की आपकी जो धारणा है, उसके दिन बीत चुके हैं। हमें ज़िंदा यंत्रों को प्रशिक्षित करने की कोई ज़रूरत नहीं है, जो कल हमारे लिए बेकार हो चुके होंगे।"

"अगर हम यह भी मान लें कि बात यही है, तो भी आज आप उनकी सख़्त आवश्यकता का अनुभव कर रहे हैं। अगर आपके पास संकीर्ण विशिष्टताप्राप्त लोग नहीं होंगे, तो आप अति विकसित उद्योग की नींव नहीं डाल पायेंगे, जिसके बिना समाजवाद हो ही नहीं सकता। पहले उसे स्थापित कीजिये, फिर आप मानसिक कार्य और शारीरिक श्रम के बीच अंतर का ख़ात्मा कर सकते हैं।"

"हमारी भाषा में कहें, तो आप जो कह रहे हैं, उसका मतलब यह निकलता है: पहले श्रम के पूंजीवादी तरीक़ों से समाजवाद का निर्माण करो और फिर उद्घाटन समारोह कर डालो – आज से समाजवादी समाज को खुला घोषित किया जाता है – प्रवेश निःशुल्क है।"

क्लार्क कुछ जवाब देने ही वाला था कि तभी उसकी निगाह एक लंबी छाया पर पड़ी, जो अचानक उसके पैरों पर आ गिरी थी। उसने आंखें उठाईं, तो उसे मख़मली ताजिक टोपी और कोम्सोमोली ख़ाकी क़मीज़ पहने और उस पर तरुण कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का बिल्ला लगाये एक छोटा-सा ज़ैतूनी रंग का लड़का दीख पड़ा, जो अपने चेहरे से कोई पंद्रह साल का लगता था। उसके दांत मोतियों की तरह चमकते हुए और एक बराबर थे: वह मुसकराया, तो लगा कि जैसे उसके श्यामल चेहरे की छायाओं में बिजली की बत्ती दमक रही है।

"आइये, मुलाक़ात कीजिये," पोलोज़ोवा ने उठते हुए कहा। "यह मेरे प्रमुख हैं, साथी नासिरुद्दीनोव, कोम्सोमोल समिति के सचिव।"

"अमरीका के इंजीनियर?" अपने दांतों की झलक देता हुआ लड़का मुसकराया। "मैं अमरीका से परिचित हूं, उसे देख चुका हूं।"

"भला तुमने अमरीका कहां देख लिया, करीम?" पोलोज़ोवा ने अचरज से पूछा, "किसी किताब में शायद?"

"नहीं, किसी किताब में नहीं। स्तालिनाबाद में। बाज़ार में।"

"बाज़ार में?"

"हां, बाज़ार में एक सैरबीन थी – बहुत ही बढ़िया सैरबीन। खिड़की में देखो और सामने आ गया अमरीका। बहुत बढ़िया जगह है, अमरीका!"

"बात यह है कि इन्हें आपका देश पसंद है," पोलोज़ोवा ने अनुवाद किया, "इन्होंने स्तालिनाबाद में सैरबीन में उसे देखा है।"

"और इन्हें सबसे ज्यादा क्या अच्छा लगा?"

"बढ़िया मकान हैं—ऊंचे, बिलकुल पहाड़ों की तरह! ऐसे मकानों में रहने का बहुत मज़ा है। एकदम ऊंचे! भरपूर हवा! नीचे कोई मज़ा नहीं—बस, धूल ही धूल! अमरीकी से कहो—वहां!" और उसने सुदूर, बर्फ़ ढंकी चोटियों की तरफ़ इशारा किया।

"यह ख़ुद पामीर पहाड़ों के रहनेवाले हैं," पोलोज़ोवा ने क्लार्क को बताया, "पहाड़ों से इन्हें बेहद प्यार है। सैरबीन में इन्होंने अमरीका के गगनचुंबी मकान देखे हैं। यह कह रहे हैं कि उनमें रहना बड़ा मज़ेदार होगा। बिलकुल पहाड़ों की तरह ऊंचे। आप न्यूयार्क में कौनसी मंज़िल पर रहते थे?"

"सैंतालीसवीं।"

"देखा, करीम, लगता है कि तुम दोनों ही पहाड़ी हो!" पोलोज़ोवा हंस पड़ी।

"अमरीकी से कहो, हम अपने देश में भी ऐसे ही मकान बनायेंगे। हम ख़ूब कपास पैदा करेंगे—और फिर मकान बनायेंगे।"

"यह बात सही नहीं है, करीम। हम ऐसे मकान नहीं बनायेंगे। ये पूंजीवादी शहरों की बात है। समाजवादी शहर बाग़ों से भरे हुए होंगे।"

"नहीं, पहाड़ तो पूंजीवादी नहीं हैं। पहाड़ सर्वहारा हैं। मज़दूरों को बढ़िया तरीक़े से रहना चाहिए—ऊंचे रहना चाहिए। नीचे रहना बुरा है," वह मुसकरा दिया और उसके सफ़ेद दांत फिर चमक उठे। "अमरीकी से मेरी तरफ़ से माफ़ी मांग लो—मुझे जाना है। अमरीकी से कहो—अमरीका बहुत दिलचस्प है। इनसे अनुरोध करो कि यह कभी कोम्सोमोलियों को अमरीका के बारे में बतायें। अब मैं चला। कोम्सोमोली प्रतियोगिता में मात खा रहे हैं—बहुत बुरी बात है!"

अपने दांतों को एक बार फिर दमकाकर और हाथ हिलाकर वह एक्स्केवेटर के बराबर से होता हुआ तटबंध के पथरीले किनारे के साथ-साथ चला गया।

"कितना प्यारा लड़का है!" पत्थरों के बीच सफ़ाई से निकलकर जाती उसकी सुघड़ आकृति पर अपनी आंखें टिकाये-टिकाये क्लार्क बोल उठा।

"सचमुच! और कैसा शानदार साथी है! चतुर, बुद्धिमान और गम्भीर। एक दिन उससे उसकी जीवन गाथा सुनिये। कैसे वह पामीर से पैदल चलकर स्तालिनाबाद अध्ययन करने के लिए आया, कैसे वह बासमचियों से बचकर भागा। बिलकुल उपन्यास जैसी है। मगर यह कोरी रोमांच कथा नहीं है—यह हमारे तरुण कोम्सोमोलियों के श्रेष्ठतम अंश का इतिहास है।"

अनिच्छित जासूसी

अपने सैक्शन के दौरे से लौटते समय अर्धसंयोजित एक्स्केवेटरों के पास से गुज़रते हुए क्लार्क की निगाह हाथों को पीठ के पीछे बांधे सिर पर सफ़ेद टोप पहने उनके आसपास घूमते बार्कर पर पड़ी।

एक एक्स्केवेटर का गरदनहीन ढांचा ज़मीन पर ढेर हुआ पड़ा था।

क्लार्क को दूर से ही देखकर बार्कर उसकी तरफ़ बढ़ गया।

"मेरे एक्स्केवेटर तो अभी तक पहुंचे नहीं हैं और कोई निश्चय के साथ कह नहीं सकता है कि वे कब आयेंगे," उसने बड़े हर्ष के साथ ऐलान किया।

"और यह?" क्लार्क ने सामनेवाले एक्स्केवेटर की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा।

"यह जर्मन मेंक एक्स्केवेटर है—एकदम बेकार की मशीन," बार्कर ने मुंह बनाया। "मुझे तो यही अचरज है कि मुझे बिना काम के पैसे देते-देते ये लोग कब अघा जायेंगे!"

पोलोज़ोवा की भृकुटि तन गई। क्लार्क को बड़ा बुरा-सा लगा।

"तो कहिये कि ऐश कर रहे हैं, है न?" उसने लगभग विद्वेषपूर्वक कहा, "फिर भी, आप इन एक्स्केवेटरों के संयोजन में तो सहायता कर ही सकते हैं।"

"मेंक एक्स्केवेटरों के संयोजन में? नहीं। इनसे मेरा क्या सरोकार? करें जर्मन अपने खटराग को पूरा... हां, मैं आपसे एक बात कहना चाह रहा था," उसने अचानक क्लार्क से गम्भीरतापूर्वक कहा।

वह क्लार्क को अलग ले गया और फुसफुसाकर बोला:

"आपको अपनी मेज़ पर तो कल कोई चीज़ नहीं मिली, क्यों?"

"मेज़ पर?" क्लार्क ने प्रकट उदासीनता से कहा, "नहीं तो, कुछ भी तो नहीं।"

"ज़रा इसे देखिये।"

बार्कर ने ख़ामोशी के साथ अपना बटुआ निकाला, उसमें से काग़ज़ का एक पुरजा खींचा और उसे क्लार्क की तरफ़ बढ़ा दिया।

क्लार्क को उसपर अपना पूर्वपरिचित चित्र नज़र आया।

"यह क्या है? कोई काम न होने की वजह से आपने चित्रकारी तो नहीं शुरू कर दी?" उसने शरारत से आंख मिचकाते हुए कहा।

"मज़ाक छोड़िये। यह मुझे कल अपनी मेज़ पर मिला था।"

"तो क्या हुआ?"

"क्या आप यह कहना चाहते हैं कि बात आपकी समझ में नहीं आ रही है? मतलब एकदम साफ़ है! तीर अमरीका की तरफ़ इशारा कर रहा है और नीचे खोपड़ी बनी हुई है। दूसरे शब्दों में: जहां से आये हो, वहीं वापस चले जाओ, नहीं तो हम तुम्हें ख़त्म कर डालेंगे! मैं सोच रहा हूं कि अधिकारियों को इसकी सूचना दे दूं।"

"अरे, छोड़िये भी," क्लार्क ने शांतिपूर्वक कहा। "यह सब आपका वहम है। आपकी हिम्मत की आज़माइश करने के लिए कोई आपसे मज़ाक कर रहा है। अगर यह कोई रहस्यमय धमकी होती, तो क्या वजह है कि उन्होंने यह काग़ज़ आपकी मेज़ पर तो रखा, मगर मेरी या मर्री की मेज़ पर नहीं रखा?"

"हां, बात तो है। मुझे भी इसका ख़याल आया था और इसी कारण मैंने आपसे पूछा भी है। फिर भी, कुछ भी कहिये, बात है अजीब। कमरे का ताला बंद था, चाबी मेरी जेब में थी और खिड़की भी भीतर से बंद थी। फिर यह काग़ज़ अंदर पहुंचा कैसे होगा?"

"और आपकी मौजूदगी में तो कोई कमरे में नहीं आया था?"

"नहीं, कोई भी तो नहीं। आप मुझे बुलाने के लिए आये थे और फिर जब आप सभा में जा रहे थे, तब मर्री आये थे।"

"कोई स्थानीय कर्मचारी तो नहीं आया था?"

"बस, वही सांवले चेहरेवाला इंजीनियर—और तो कोई नहीं।"

"कोई इसे तब तो नहीं रख गया, जब कमरे की सफ़ाई हो रही थी? ख़ैर, कुछ भी हो, यह जाहिरा तौर पर किसी बच्चे के हाथ का बना चित्र है। और आप फ़ौरन इस निष्कर्ष पर पहुंच गये कि कुछ हत्यारे आपको क़त्ल करने की साजिश कर रहे हैं–बिलकुल जासूसी कहानियों की तरह। अपनी हंसी न उड़वानी हो, तो किसी से भी इसका ज़िक्र तक न कीजियेगा।"

क्लार्क ने मानो यों ही काग़ज़ को मोड़ लिया और बातचीत का विषय बदलते हुए उसे चुपके से अपनी जेब में रख लिया...

खाने का कमरा लोगों और मक्खियों से भरा हुआ था। क्लार्क ने ऊर्तावायेव, पोलोज़ोवा, मर्री और कई अन्य लोगों को दीवार के पास की एक लंबी सी मेज़ पर बैठे देखा। वह ख़ामोशी से पोलोज़ोवा के बराबर जाकर बैठ गया और चुपचाप सूप पीने लगा।

जब उसने सिर उठाया, तो उसकी आंखें सफ़ेद रूसी कमीज़ पहने एक सिर घुटे आदमी की आंखों से जा टकराईं।

"माफ़ कीजियेगा, रूसी नाम याद रखने में मुझे बड़ी मुश्किल होती है–सभी एक जैसे ही लगते हैं," क्लार्क ने पोलोज़ोवा की तरफ़ रुख़ करते हुए कहा, "क्या यह मिस्टर येरेमिन हैं?"

"नहीं, यह पार्टी समिति के सचिव, साथी सिनीत्सिन हैं। येरेमिन निर्माण-प्रमुख हैं। देखिये, वह जा रहे हैं।"

क्लार्क ने खाना खाना शुरू कर दिया।

"मैं अपनी बातचीत को जारी करना चाहूंगी," पोलोज़ोवा ने उसे टोकते हुए कहा।

"मैं सिर्फ़ यह कहना चाहता हूं कि यहां जो कुछ किया जा रहा है, उसमें काफ़ी अन्तर्विरोध हैं।"

"हमारी ऐसी पीढ़ी है, जिसने पूंजीवादी समाज का विध्वंस किया है, ताकि समाजवादी समाज में प्रवेश किया जा सके। अभी हम अपनी चमड़ी ही बदल रहे हैं। यह एक लंबी और कष्टदायी प्रक्रिया है। लोगों के आपसी सम्बन्ध, लोगों और वस्तुओं तथा लोगों और राज्य के बीच सम्बन्ध बदल गये हैं। व्यक्तित्व के कण-कण का प्रसारण हो गया है–पूंजीवादी सामाजिक संबंधों की पुरानी चमड़ी फट गई थी।

हम इसकी जगह एक नई और अधिक विस्तृत चमड़ी धारण कर रहे हैं, जिसमें सांस लेना सुगमतर हो। यह कम्युनिस्ट समाज की दिशा में मात्र पहला क़दम है, जिसमें व्यक्ति पहली बार अपने मृतप्राय व्यक्तित्व को फिर से पाकर परिस्थितिवशवर्त्तीता की सारी चमड़ी को आख़िर धान की भूसी की तरह से तज देता है।"

"यह सब स्वप्नदर्शन है। इसे कर पाने के लिए मनुष्य के स्वभाव को ही बदलना होगा।"

"और क्या हम उसे बदल नहीं रहे हैं?" पोलोज़ोवा ने जोश में आते हुए कहा, जिससे उसके गालों पर सुर्ख़ी आ गई। "क्या हमारी क्रांति का सर्वाधिक महत्त्व इसी में सन्निहित नहीं है? आपने यह सही ही कहा है कि नये कर्तव्य और नई संभावनाएं व्यक्ति से आमूल चूल अनुकूलन का तकाज़ा करती हैं—उसे अपने को नई आवश्यकताओं और संभावनाओं के अनुरूप का अभ्यस्त बनाना होता है। यह एक लंबी और कठिन प्रक्रिया है। पुरानी चमड़ी इतनी जम गई है कि कभी-कभी तो उसे मांस सहित ही उखाड़ लेना पड़ता है। उनमें से कई लोग, जो सन सत्रह, बीस और तेईस में अपनी नई चमड़ी में आसानी से मटरगश्ती किया करते थे, आज, हमारा देश समाजवाद में जितना गहरा प्रवेश करता जा रहा, उतना ही झुकते और पिछड़ते जा रहे हैं। इसका कारण थकान नहीं है। यह पुरानी चमड़ी की उखड़ने से बच रही धज्जियों के क्षय का परिणाम है, जिससे सारे शरीर को ही छूत लग जाती है। अगर आप इस दृष्टिकोण से यहां के लोगों को देखेंगे—और ऐसा लगता है कि आप और मिस्टर मर्री जानना चाहते हैं और देख भी सकते हैं,—तो वे कई चीज़ें, जो पहली नज़र में अबोधगम्य होती हैं, इस एक शर्त पर ज़्यादा बोधगम्य हो जायेंगी कि हमारे देश में रहते समय आप बाहरी दर्शक बनकर ही न रहें।"

हाथ में प्लेट लिए हुए येरेमिन मेज़ के पास आया।

"आप लोगों के साथ बैठ सकता हूं क्या?"

"बैठो, बैठो," अपने बराबर की जगह की तरफ़ इशारा करते हुए सिनीत्सिन ने कहा। "सुनाओ, क्या ख़बर है? सुना है कि आज तुमने कृषि जन-कमिसारियत को इस आशय का तार भेजा है कि तुम वसंत तक बीस हज़ार हैक्टर से ज़्यादा सिंचित ज़मीन नहीं दे सकते?"

पोलोज़ोवा और ऊर्तावायेव ने हैरानी के साथ येरेमिन की तरफ़ देखा।

"बेशक, भेजा है मैंने, तो उसका ज़िम्मेदार कौन है—तुम या मैं?"

"तार के लिए तुम ही ज़िम्मेदार हो। इसके लिए तुम्हें केंद्र के और आज पार्टी समिति के ब्यूरो के सामने भी जवाबदेही करनी पड़ेगी। दस बजे हमारी असाधारण बैठक हो रही है। मेहरबानी करके यह बताओ कि मामला क्या है। आख़िर पार्टी समिति का ब्यूरो भी इसकी जानकारी चाहता ही है, न।"

"जिसको जवाब चाहिए, मैं दे दूंगा। लेकिन तुम मुझ पर रोब डालने की कोशिश मत करो, मैं आसानी से डर जानेवाले लोगों में नहीं हूं।"

"कल सभा में इंजीनियरों पर दहाड़ रहे थे और आज चेत्वेर्यांकोव का ही फ़ैसला कर डाला," ऊर्तावायेव ने अपनी बात जोड़ी, "फिर इतना तूफ़ान खड़ा करने की क्या ज़रूरत थी! मैंने तुम्हें कल ही कह दिया था।"

"तुम, ऊर्तावायेव, चुप रहो, सो ही ठीक है। निर्माण-कार्य का कबाड़ करके रख दिया है, मज़दूरों को भगा दिया है और सारी मशीनों को तोड़ डाला है! इन सब बातों का जवाब कौन देगा? मैं ही, न!"

"तार के लिए—मैं तुम्हें पहले ही कह चुका हूं—तुम जवाब दोगे," सिनीत्सिन ने उसे टोकते हुए कहा। "लेकिन निर्माण-कार्य के जवाबदार तुम अकेले ही नहीं हो। आख़िर हमारे यहां मैनेजमेंट, पार्टी संगठन और ट्रेड-यूनियन भी है।"

"ख़ाक मदद करते हो तुम हमारी! मैं आज ही स्तालिनाबाद जा रहा हूं। मैं वहां अपनी रिपोर्ट दूंगा।"

"तुम स्तालिनाबाद कल जाओगे। ऐसी जल्दी मत करो। मुझे डर है कि अपने इस तार के बाद तुम वापस नहीं आ पाओगे। अगर तुम्हारा यह ख़याल हो कि तुम वहां पार्टी समिति के ब्यूरो के फ़ैसले से पहले पहुंच जाओगे, तो तुम ग़लती पर हो। तुम अभी तारघर को टेलीफ़ोन कर सकते हो—हो सकता है कि तार अभी तक न गया हो। ज़्यादा से ज़्यादा उसे स्तालिनाबाद की लाइन पर ही रोका जा सकता है।"

"तार पर मैंने दस्तख़त किये हैं और सिर्फ़ मैं ही उसे रद्द कर सकता हूं।"

"और कौन कर सकता है? बेशक, तुम ही कर सकते हो। तुम ही तारघर को टेलीफ़ोन करोगे।"

"मैं बिना बात के तार नहीं भेजा करता हूं। अगर मैंने तार भेजा

है, तो इसका मतलब है कि मैं जानता हूं कि मैं क्या कर रहा हूं। मैं स्तालिनाबाद में केंद्रीय समिति के सामने अपनी बात कहूंगा। मैं आज ही जा रहा हूं—आधे घंटे के भीतर। अगर तुम चाहो, तो मुझे जबरदस्ती रोक सकते हो।"

"जहां तक तुम्हें जबरदस्ती रोकने की बात है—सो मैं मिलीशिया तो हूं नहीं। लेकिन तुम्हारे पार्टी विरोधी आचरण पर हमें अवश्य विचार करना होगा। हम देखेंगे कि तुम्हारे साथ क्या किया जाना चाहिए..."

"होश-हवास दुरुस्त रखना चाहिए, भाई!"

"ख़ासकर पीछे की तरफ़ मोड़ पर, साथी येरेमिन! सारे निर्माण-कार्य को तो पीछे पलटा नहीं जा सकता, मगर कहीं तुम ख़ुद छिटककर बाहर न जा गिरो।"

"और तुम्हारा इरादा क्या है? अंत तक काम को चुपचाप चलते चले जाने दो और फिर अचानक भंडाफोड़ होगा—यह क्या, अस्सी की जगह सिर्फ़ बीस? क्या यही तरीक़ा है? मेरा कर्तव्य है कि अगर योजना की समय पर पूर्ति नहीं की जा सकती, तो समय रहते चेतावनी दे दूं और भाग्य पर भरोसा करते हुए चुपचाप न बैठा रहूं।"

"भाग्य पर निर्भर करके नहीं, लेकिन काम के ठीक संगठन द्वारा उसे अब भी किया जा सकता है।"

"और मैं पूछ सकता हूं कि काम को ठीक से संगठित करने के लिए ख़ुद तुमने क्या किया है? मजदूरों में कितने पार्टी सदस्य हैं? जरा यह तो बताओ!"

"अगर तुम पार्टी समिति की बैठकों में कुछ ज्यादा आया करो, तो तुम्हें खाने के कमरे में इन सवालों को पूछने की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

"मैं ठोस काम से देखता हूं, बैठकों और सभाओं से नहीं।"

"तो तुम ठीक से नहीं देखते। तुम्हें आगे की तरफ़ देखना चाहिए। तुम्हारे साथ दिक़्क़त यह है कि तुमने सर तक अपने को योजना की चिंता में डुबा रखा है और नतीजे के तौर पर तुम आगे नहीं देख सकते, क्षितिज को नहीं देख सकते।"

"मैं क्षितिज पर नहीं मंडराता, मैं कोई कवि नहीं, एक निर्माण-प्रमुख हूं। मैं यह देखता हूं कि मेरे हाथ में क्या कुछ है और यह हिसाब लगाता हूं कि उससे मैं क्या कर सकता हूं।"

"तुम जो किया जा सकता है, वह नहीं देखते। वैसे, तुम्हारी जानकारी के लिए कुछ बता दूं – दो महीने से – यहां अपनी नियुक्ति के समय से ही – मैं इस बात की कोशिश कर रहा हूं कि पार्टी और कोम्सोमोल के सदस्यों को जुटाया जाये और इस निर्माणस्थली पर भेजा जाये। कल ही केंद्रीय समिति ने एक निर्णय लिया है। अगले एक सप्ताह या दस दिन के भीतर हमें दो सौ पार्टी सदस्य और तीन सौ कोम्सोमोली मिलनेवाले हैं। सत्तर प्रतिशत पार्टी सदस्य और शत प्रतिशत कोम्सोमोल सदस्य ताजिक हैं। बोलो, अब करते हो अपने तार को रद्द?"

"हमें मशीनें चाहिए, कोम्सोमोली नहीं। क्या ख़ज़ाना मिल रहा है! तीन सौ ताजिक कोम्सोमोली! बहुत देखे हैं हमने तुम्हारे ये कोम्सोमोली! हफ़्ते भर के भीतर वे सब भाग खड़े होंगे और अपने-अपने घर चले जायेंगे।"

"ठीक है, तो उनके काम की परिस्थितियों का इस तरह संगठन करो कि वे भागें नहीं। तार कुछ कम भेजो और दक्षता ज़रा ज्यादा दिखाओ।"

"तो तुम्हारे कहने का मतलब क्या है – मैं कुदाल से मिट्टी उठाऊं या ऐसा ही कुछ और करूं? उसे अपने कंधों पर ढोता फिरूं? वैसे भी इस सारे धंधे को मैं अपने कंधों पर ही लिये ढो रहा हूं। हमें परिवहन की कोई सुविधाएं नहीं दी गई हैं – ढाई सौ की जगह सिर्फ़ पचास ट्रक दिये गये हैं। और इनमें से भी आधे टूटे पड़े हैं। एक सौ पचास ट्रैक्टरों में से एक भी नहीं पहुंचा है। छब्बीस एक्स्केवेटरों के बजाय तीन मिले हैं। यह है क्या? मज़ाक? क्या इसे ही शत प्रतिशत यंत्रीकरण कहा जाता है? क्या इससे कंकर-पत्थर में चालीस किलोमीटर लंबी नहर खोदी जा सकती है? मेरी जगह बैठो आकर और करो इसे करने की कोशिश।"

"अगर मुझे बैठा दिया जाये, तो बैठ जाऊंगा। जब तक तुम्हें अलग नहीं किया जाता, यह तुम्हारा काम है।"

"येरेमिन, तुमने चेल्वेर्याकोव की दलीलों को ही रट लिया है," ऊर्ताबायेव बोला।

येरेमिन ने अपनी प्लेट को इतनी जोर से धकेला कि सूप मेज़ पर छलक गया।

"तुम सब भाड़ में जाओ! तुमने मुझे समझ क्या रखा है – अदालत के कठघरे में खड़ा मुजरिम?"

वह उठ खड़ा हुआ और दरवाज़े की तरफ़ चल दिया। दरवाज़े पर रुककर उसने अपनी बात में यह और जोड़ा:

"अच्छा हो कि अपने ट्रेड-यूनियन समितिवालों से कह दो कि वे एक असाधारण अदालत बैठा दें। आज नशे में चूर एक ड्राइवर अपना ट्रक लेकर स्तालिनाबाद रवाना हुआ और उसका ट्रक वख़्श नदी में जा गिरा। उस हरामज़ादे को तो लोगों ने अधमरी हालत में निकाल लिया, मगर ट्रक जाता रहा। इस तरीक़े से तो मेरे वापस आने तक एक ट्रक भी नहीं बच रहेगा..."

"मुझे मालूम था कि क़िस्सा इसी तरह ख़त्म होगा," जब येरेमिन की विशाल आकृति आंखों से ओझल हो गई, तो मिनट भर की ख़ामोशी के बाद ऊर्ताबायेव ने कहा। "यह दुर्बल-चरित्र व्यक्ति है। चिल्लाकर अपना गला बैठा लेगा, चिढ़ेगा, सब कहीं दौड़ेगा-भागेगा, हर चीज़ को एकदम करने की कोशिश करेगा, सुबह से शाम तक काम करेगा, मगर नतीजा उसका कोई ख़ास नहीं है। चेल्वेर्याकोव तो चालाक लोमड़ी है। वह दिमाग़ को ठंडा रखकर अपना काम निकाल लेता है। उसने येरेमिन की फ़ौरन थाह ले ली। पहले वह इसे मन भर चीख़ लेने देता है और फिर करता सब कुछ अपने ही तरीक़े से है। मुझे यही अचरज है कि पार्टी ने येरेमिन को इस जैसे काम पर कैसे नियुक्त कर दिया।"

"इस बात को रहने दो," सिनोत्सिन ने भृकुटी तानकर कहा। "मैं पोलिश मोर्चे पर था एक बार इसके साथ, गृहयुद्ध के समय। इसकी टुकड़ी में मैं राजनीतिक कमिसार था। पूरी फ़ौज में इस जैसा और कोई कमांडर नहीं था। बड़ा धीरजवाला, बड़ा ही हिम्मतवर। घिर जाने पर एकदम निराशाजनक स्थिति से भी निकल आया और ऊपर से युद्धबंदी बनाकर लाया, सो अलग। मेरी समझ में नहीं आता कि उसे क्या हो गया है। कई लोग ऐसे हैं, जो गृहयुद्ध के बाद संतुलन खो बैठे – शांतिकालीन कार्य के लिए अपने को ढाल ही नहीं सके। लेकिन आख़िर इसको भी कितने बरस हो गये, और यह ज़िम्मेदार पदों पर काम करता रहा है, और सो भी ख़ूब अच्छी तरह से काम करता रहा है!"

"हो सकता है कि कम मुश्किल परिस्थितियों में, सशक्त पार्टी संगठन और ट्रेड-यूनियन समिति की सहायता से उसने अपना काम ठीक से चला लिया। ऐसे मामलों में मज़दूर ख़ुद आपको पार लगा सकते हैं। लेकिन

हमारी परिस्थितियों में और हमारी कठिनाइयों के दृष्टिगत नेतृत्व के लिए असाधारणतः मज़बूत आदमियों की ज़रूरत है।"

"मुझे उसे उसके पद से अलग करने और मामले को नियंत्रण आयोग के सुपुर्द करने के सवाल को उठाना होगा," सिनीत्सिन ने शान्त होकर सोचा।

यद्यपि क्लार्क की समझ में यह नहीं आ रहा था कि क्या कहा जा रहा है, फिर भी वह मेज़ से उठा नहीं और धैर्यपूर्वक बातचीत के ख़त्म होने का इंतजार करता रहा। उसे लगा कि स्थानीय पार्टी सचिव, सिनीत्सिन ही वह आदमी है, जिसकी उसे ज़रूरत है। और जब सिनीत्सिन और ऊर्ताबायेव उठे, तो उसने पोलोज़ोवा से अनुवाद करके यह कहने का अनुरोध किया कि वह एक मामूली-सी बात की सिनीत्सिन से चर्चा करना चाहता है।

"कल रात मुझे अपनी मेज़ पर यह छोटा-सा परचा रखा मिला था," उसने उस चित्रवाले काग़ज़ को मेज़ पर फैला दिया। "और यह एक और रहा, बिलकुल इसी तरह का, जो इंजीनियर बार्कर को अपने कमरे में मिला था।"

"और यह रहा तीसरा," मेज़ पर एक और चित्र को फैलाते हुए मर्री ने कहा।

"बेशक, मैं इस तरह की धमकियों को कोई ख़ास गंभीर नहीं समझता," क्लार्क ने जल्दी से कहा, "मगर मैंने सोचा कि शायद आपको यह जानने में दिलचस्पी हो कि यहां इस तरह के मज़ाक़ करने का किसे शौक़ है।"

निमिष मात्र को भी ऊर्ताबायेव के चेहरे पर से अपनी आंखों को हटाये बिना उसने एक चित्र सिनीत्सिन की तरफ़ बढ़ा दिया और एक ऊर्ताबायेव की तरफ़।

ऊर्ताबायेव ने बड़े ध्यान से काग़ज़ पर निगाह डाली।

"बहुत दिलचस्प है," उसने अपना हाथ बढ़ाकर दूसरे चित्र को उठा लिया और उसकी पहले चित्र के साथ तुलना करने लगा, "तुम्हारा क्या ख़याल है इनके बारे में, सिनीत्सिन?"

"बड़ा अर्थपूर्ण है और सो भी बड़े सरल साधनों से बनाया गया है," सिनीत्सिन ने सराहना के साथ कहा। "ज़ाहिर है कि जिसने भी इसे

बनाया है, वह गधा नहीं है। और वह ताजिक भी नहीं हो सकता। ताजिक कटा हुआ सिर बनाता, पर खोपड़ी नहीं। खोपड़ी यूरोपीय प्रतीक है। इसे जिसने बनाया है, वह रूसी होना चाहिए।"

"यह तो सही है," ऊर्तावायेव ने उसकी पुष्टि की, "कोई ताजिक खोपड़ी नहीं बनाता।"

"और अगर इसे बनानेवाला रूसी था, तो यह प्रकट है कि वह बिना पढ़ा-लिखा नहीं था," सिनीत्सिन ने अपनी बात जारी रखी।

"यह कैसे?"

"वह अंग्रेज़ी वर्णमाला जानता है। और यह स्कूलों में पहले दरजे में तो सिखाई नहीं जाती।"

"एकदम ठीक! तुम तो पक्के जासूस हो।"

सिनीत्सिन ने तीनों काग़ज़ों को समेट लिया।

"मैं इस मामले को साफ़ करने की कोशिश करूंगा। कृपया घबराइये मत और न इसे ज़्यादा महत्त्व ही दीजिये। आप लोगों का बाल भी बांका नहीं होगा। अगर कहीं आपको इस तरह की और कलाकृतियां मिलें, तो कृपया उन्हें सीधे मुझे दे दीजिये।"

उसने क्लार्क और मर्री के साथ हाथ मिलाये और ऊर्तावायेव के साथ चला गया।

क्लार्क, मर्री और पोलोज़ोवा भी जाने के लिए उठ खड़े हुए।

"बार्कर से न कहियेगा कि आपको ऐसा ही ख़त मिला था," पोलोज़ोवा के वहां से चले जाने के बाद क्लार्क ने मर्री से कहा, "मैंने उसे विश्वास दिला दिया है कि कोई उससे मज़ाक कर रहा है। नहीं तो वह आतंक फैला देगा और हथियारबंद पहरेदारों और मशीनगन की मांग करने लगेगा।"

मर्री ने सिर हिलाकर सहमति जता दी।

"हां, कल ऊर्तावायेव तो आपके कमरे में नहीं आया था?" क्लार्क ने पूछा।

"आया तो था।"

वे मर्री के दरवाज़े के बाहर खड़े थे।

"मुझे एक हलका-सा शक है, जो कल मेरे दिमाग़ में आया था।"

"यह दिलचस्प बात है। आइये, अंदर आइये।"

"बात यह है कि हम सब के कमरे बंद थे और चाबी के बिना कोई उनमें दाख़िल नहीं हो सकता था..."

क्लार्क ने मर्री को अपने संदेह से अवगत कराया।

"हां, मगर ऊर्तावायेव क्यों हमें काम से भगाना चाहेगा?" मर्री ने कहा, "लेकिन फिर यह कोई ऐसी असंभव बात भी नहीं है। ऊर्तावायेव, मुख्य इंजीनियर और निर्माण-प्रमुख में काफ़ी तनातनी जान पड़ती है। हो सकता है कि ऊर्तावायेव बाक़ी दोनों को बदनाम करना चाहता हो और यह साबित करना चाहता हो कि वे काम को समय पर नहीं ख़त्म कर पायेंगे। ऐसी सूरत में हमारा आना उसकी मरज़ी के ख़िलाफ़ होगा।"

"हां, संभव तो है।"

"एक संभावना और भी है। ऊर्तावायेव ताजिक है। मुख्य इंजीनियर और निर्माण-प्रमुख रूसी हैं। उनमें जातीय विद्वेष भी हो सकता है।"

"हां, मगर ऊर्तावायेव कम्युनिस्ट है, है कि नहीं?"

"तो क्या हुआ?" मर्री मुसकराया, "जातिवाद कम्युनिज़्म से ज़्यादा पुराना है।"

मिस्टर बार्कर को न्यूयार्क में मरना श्रेयस्कर लगता है

पार्टी समिति का कार्यालय एक विषण्ण भिनभिनाहट से गूंज रहा था। भिनभिनाहट मक्खियों की थी, जो हवा में बड़े-बड़े घेरे बनाती उड़ रही थीं। यह भिनभिनाहट चिपचिपे मक्खीमार काग़ज़ के उस लंबे ख़र्रे से आ रही थी, जो छत के लैंप के साथ लटका हुआ था और अपने पर चिपकी मक्खियों के शरीरों से काला हो रहा था। यह मेज़ पर बिछे मक्खीमार काग़ज़ों से आ रही थी, जो सैकड़ों नन्हे-नन्हे पंखों की पारदर्शी थरथराहट से अजीब तरह से अपनी तोंदें फुला रहे थे। मक्खीमार काग़ज़ लोगों को चिपक जाता, वे कोसते हुए इस चिपचिपी गंदगी को छुड़ाते, जाली की बनियाइनों से ढंके अपने कंधों और धड़ों पर ज़ोरों से हथेलियां मार-मारकर इन भिनकते काले नुक़्तों को कुचलते, जिससे सूजी हुई खाल पर लाल दाग़ रह जाते।

खुली हुई खिड़की से, जिसपर एक गीली चादर लटकी हुई थी, लसलसी गरमी कमरे में रिस-रिसकर आ रही थी। चादर से भाप उठ रही थी, मानो उस पर बाहर की तरफ़ से गरम लोहा फेरा जा रहा हो।

सड़क से एक गधे के रेंकने की लंबी कातर आवाज़ आ रही थी। पसीने में नहाये लोग आ-जा रहे थे, जिनके बदन ऐसे लग रहे थे, मानो प्रखर गरमी ने उन पर लेप कर दिया हो। कर्कश टेलीफ़ोन अपनी कर्णकटु विह्वल चीत्कार से बातचीत को लगातार भंग करता जाता था।

सिनीत्सिन जिस मेज़ के पीछे बैठा था, उस पर साफ़े में लिपटी एक तोंदल चायदानी रखी थी। रिपोर्टों के बीच-बीच सिनीत्सिन उससे प्याले में हलके पीले रंग के तरल को ढालता जाता और घूंट-घूंट करके पीता जाता था।

एक बार फिर टेलीफ़ोन की कर्णकटु घनघनाहट सुन पड़ी।

"हां, हां, सिनीत्सिन। पत्र? कैसा पत्र? कौन? पोलोज़ोवा? आह, नमस्ते! क्या? उन्हें एक पत्र और मिला है? तीनों को? पहली मई तक? हूं, मगर यह तो कोई बहुत सख़्त मांग नहीं है। उन्हें आज शाम को पार्टी समिति के कार्यालय में मेरे पास ले आओ। हां, तीनों को। ठीक है।"

सिनीत्सिन ने रिसीवर को रख दिया।

एक नौजवान ताजिक एक तार को हिलाता हुआ कमरे में दौड़ता हुआ आया। तार को सिनीत्सिन के सामने रखकर उसने प्याले को खंगाला, उसमें ढालकर घूंट भर चाय पी और मेज़ के पास खड़ा होकर इंतज़ार करने लगा।

"तो, क्या लिखा है उन्होंने? क्या ख़बर है?"

सिनीत्सिन ने तार को सावधानी से पढ़ा।

"हमारा प्रस्ताव मंज़ूर कर लिया गया है—येरेमिन और चेल्येर्याकोव को उनके पदों से अलग कर दिया गया है। एक सप्ताह के भीतर हमारे पास एक नये निर्माण-प्रमुख और नये मुख्य इंजीनियर को भेजा जा रहा है। लो, पढ़ लो!"

ताजिक ने बड़ी उत्सुकता के साथ तार को पढ़ा।

"और तुम इस मोरोज़ोव को जानते हो?" उसे पढ़ लेने के बाद उसने पूछा।

"नहीं, ग़फ़ूर, मैं नहीं जानता। मोरोज़ोव नाम के लोगों की तादाद

काफ़ी बड़ी है—तुम्हारे देश में जितने ख़्वाजायेव नाम के लोग हैं, उससे ज़्यादा। अगर उसे हमें मुश्किल से निकालने के लिए भेजा जा रहा है, तो इसका यही मतलब है कि वह योग्य आदमी होना चाहिए। मुख्य बात यह है कि काम को इस तरह संगठित किया जाये, जिससे नौजवान मुश्किलों के आगे रुक न जायें। समझते हो, न? तुम्हारे यहां प्रतियोगिता का क्या हाल है? ढीली है अभी, है न?"

"हाल इतना बुरा तो नहीं है! कल पहले सैक्शन पर श्रम उत्पादकता पंद्रह प्रतिशत बढ़ी।"

"यह तो कुछ भी नहीं है! पंद्रह प्रतिशत का क्या फ़ायदा? पचास प्रतिशत होती, तो कोई बात होती! और एक्स्केवेटरों की क्या ख़बर है? दोनों ब्यूसाइरस पहुंच गये? उनका संयोजन शुरू हो गया?"

"हां, संयोजन का काम शुरू हो गया है। मेत्योलकिन की टोली ने अमरीकी को प्रतियोगिता की चुनौती दी। अमरीकी ने संयोजन के लिए पंद्रह दिन का समय रखा—हमारे छोकरे इस काम को नौ दिन में ख़त्म करना चाहते हैं। अमरीकी बहुत बुरा मान रहा है—वह प्रतियोगिता नहीं करना चाहता। वह कहता है: 'मैं यहां काम करने के लिए आया हूं, सिर के बल खड़ा होने के लिए नहीं'।"

"क्या उसका पारा बहुत ऊपर चढ़ा हुआ है?"

"हां!"

"कोई बात नहीं, वह फिर ठंडा हो जायेगा। अच्छा, सुनो, ज़रा नासिरुद्दीनोव को मेरे पास भेज दो। कोम्सोमोली आ गये हैं। उन्हें फ़ौरन काम में लगा देना चाहिए, कई आदर्श टोलियां बना देनी चाहिए। अगर कोम्सोमोली प्रतियोगिता आंदोलन में सबसे आगे नहीं रहते, तो उनका सारा काम फूटी कौड़ी बराबर भी नहीं होगा।"

तार में दी तारीख़ कभी की बीत चुकी थी, मगर निर्माणस्थली अपने नये नेताओं के आगमन की प्रतीक्षा ही कर रही थी। रोज़ उनके पहुंचने की आशा की जाती, नौघाट पर नज़र रखने के लिए रोज़ विशेष हरकारे भेजे जाते, मगर वे ख़ाली हाथ ही लौटकर आते। स्तालिनाबाद ताबड़तोड़ तार भेजे जाते। दूसरे हफ़्ते के अंत में बजरा ही बह गया और स्तालिनाबाद के साथ संचार टूट गया।

सिनोतिसिन प्रबन्ध कार्यालय को क़सबे से निर्माणस्थली की बारकों में, जो अभी बन ही रही थीं, मगर लकड़ी की कमी के कारण जिन पर छतें नहीं डाली जा सकी थीं, स्थानांतरित करने की जल्दी में था। एक काम अलबत्ता उसने करवा लिया — पार्टी समिति का दफ़्तर निर्माणस्थली पर ही तिरपाल की एक नई बारक में, "जनसाधारण के निकट" ले आया गया और क़सबे के मकान को छोड़कर वह भी निर्माणस्थली पर ही इंजीनियरों और टेकनिशियनों के लिए बने एक नये मकान में आकर रहने लगा।

जिस कुमुक को भेजने का आश्वासन दिया गया था, वह धीरे-धीरे, छोटे-छोटे दलों में आई। पहले सैक्शन की बस्ती सभी को समाने में नाकाफ़ी रहने के कारण फैलने लगी। नहर की तरफ़ उसका प्रसार अपने ही ढंग का था। नवागंतुक आये, तो उनके रहने के लिए बारकें नहीं थीं। इसलिए शुरू-शुरू में वे खुले में ही सोते थे, फिर उनके सोने की जगहों के आसपास धीरे-धीरे दीवारें उठने लगतीं और अंत में उनके सिरों पर छतें भी पड़ जातीं।

इस आधिकारिक बस्ती के ही साथ-साथ इसके बाहरी अंचल में अनाधिकारिक "उपबस्तियां" भी आप ही आप पैदा हो रही थीं। परिवारवाले मज़दूर सामूहिक बारकों को "सामूहिक फ़ार्म निवास" कहते थे और उसे बहुत पसंद नहीं करते थे, इसलिए उन्होंने चोरी के तख़्तों, प्लाइवुड और डामर लगे काग़ज से रात के समय, अपने-अपने अलग झोंपड़े बना लिये थे, यद्यपि यह नियमविरुद्ध था। कीलों और तारों से टुकड़े-टुकड़े को जोड़कर बनाये ये खोखे, जो देखने में ऐसे लगते थे कि हवा के पहले झोंके में उड़ जायेंगे, चायदानियों, मिट्टी के तेल के स्टोवों, खटमलों, मानव आवास की महक और चूल्हों के घने धूएं से भरे हुए थे। शामों को उनकी टेढ़ी-मेढ़ी छतों के नीचे से निकली कोहनीनुमा चिमनियों से धूएं के लच्छे उठते और दांतों में पाइप को दबाये झुग्गियों और खोखों की यह सारी बस्ती शाम के खाने के बाद गांव के सिरे पर तंबाकू पीने और गपशप करने के लिए जमा हुए बूढ़ों की भीड़ जैसी दिखने लगती थी।

निर्माणस्थली पर इस स्वतःस्फूर्त महल्ले का नाम रख दिया गया था — "स्वनिर्माण"।

लोग आते रहे, बस्ती बढ़ती रही — बस निर्माण-कार्य ही नहीं बढ़ा।

एक दोपहर को क्लार्क नदी के तट पर खड़ा उसकी सतह से उठती कोमल शीतलता को अपनी सांसों में भर रहा था। नीचे एक चौड़े खड़ी दीवारोंवाले खड्ड में नदी अपनी तूफ़ानी चाल से भागती जा रही थी।

खड्ड के खड़े ढाल पर एक दहक़ान किसी तरह अपने पैर जमाये खड़ा हुआ था। गैंती के बंधे हुए प्रहारों से वह चट्टान पर उगे एक गांठदार पौधे को जड़ सहित उखाड़ रहा था। कारागाच का वह नाटा, पर चुने पक्षी की तरह कड़े रोयेंवाला और हड़ीला पेड़ चट्टानी दीवार से चिपटा हुआ सा था। जब यह ख़बर फैली कि किनारे को इस जगह पर उड़ाया जानेवाला है, तो एक दहक़ान क्लार्क के पास आया और उसने उस पेड़ को अपने क़िशलाक़ ले जाने की आज्ञा मांगी। दो दिन खाने की छुट्टी में, जब गरमी विशेषकर असहनीय हो जाती थी, वह ढाल पर उतर जाता था और धीरज के साथ अपनी गैंती से पत्थर को इस तरह काटता जाता था कि कहीं पेड़ की जड़ों को नुक़सान न पहुंचने पाये।

क्लार्क उसे आज दूसरे दिन कुतूहल भरी नज़र से देख रहा था। लगता था कि अभी-अभी अचानक पत्थरों के गिरने का शोर सुन पड़ेगा और पेड़ के साथ-साथ वह दहक़ान भी नीचे के उस गंदले प्रवाह में गिरता नज़र आयेगा।

क्लार्क ने सोचा कि इन धूप से झुलसे मैदानों में, बादामी खाल के लोगों में, जो एक कुरूप से पेड़ के लिए भी अपनी ज़िंदगियों को ख़तरे में डाल सकते हैं, हरियाली का कितना सख़्त अभाव है और अचानक उसके दिमाग़ में यह बात आई कि इसमें अचरज की क्या बात है कि दहक़ानों के धारीदार चोग़ों पर चटकीले हरे रंग की इतनी सारी धारियां रहती हैं।

उसने अपने चारों तरफ़ पीले मैदान पर, पथरीले नाले में सुस्ती से पत्थर चरते दोनों एकाकी एक्स्केवेटरों पर, ख़ेमों की नाटी-नाटी सफ़ेद छतों पर नज़र डाली। अब से कोई डेढ़ साल बाद एक पर्वतमाला से लेकर दूसरी पर्वतमाला तक कपास के सफ़ेद लच्छों, अरीक़ों की पीली धारियों और बाग़ों की मरकती चकतियों की कसीदाकारी से अलंकृत हरे खेतों की एक सोज़नी बिछ जायेगी, जिस पर, नमूने के ऊपर बने नमूने की तरह – भावी राजकीय फ़ार्मों के मकान सफ़ेद पंखड़ियों जैसे लगते होंगे।

इसके लिए बस इतना ही आवश्यक है कि नये चरागाहों की तरफ़ आकर्षित हुई एक प्रचंड और हठीली नदी अपने लिए तैयार किये जानेवाले

चौड़े जलमार्ग पर बहने लगे, ढाल से उत्प्लव मार्ग पर ग्रा फिसले, टरबाइनों के विराट चक्कों को घुमाने लगे ग्रौर मानो इस्पाती खरहरों द्वारा ग्रपने ग्रयाल से निकाली चिनगारियों की चटचट से डरकर हड़बड़ी में नहरों में जा घुसे ग्रौर मैदान को एक उथली सरकती बाढ़ से ग्राप्लावित कर दे।

इसके लिए ज़रूरी है कि यह नया चौड़ा जलमार्ग बढ़े, कि वह मैदान के कठोर ग्रावरण को तोड़ता हुग्रा दिन प्रति दिन मीटर-मीटर करके ग्रागे बढ़ता जाये।

लेकिन जलमार्ग ग्रागे नहीं बढ़ रहा था—कम से कम क्लार्क को तो ऐसा ही लगता था। दोनों ग्रनाथ एक्स्केवेटर बेकार ही ग्रलस सवेरे से लेकर देर गये रात तक कड़े पत्थर को हठधर्मी के साथ कुतरते रहते थे, यहां तक कि लगता था कि उनके जबड़े ही टूटनेवाले हैं। उनके दांत ग्रगर दस-दस हाथ लंबे भी होते, तो भी वे धरती पर पचीस किलोमीटर लंबी नाली नहीं खोद सकते थे। इस काम को कर पाने के लिए कम से कम सत्रह एक्स्केवेटरों की दरकार थी।

काम के सातवें दिन क्लार्क ने मन में सोचा कि हो सकता है कि चेत्वेर्याकोव का यह कहना ग्राख़िर ठीक ही रहा हो कि योजना में जितनी मशीनों की व्यवस्था की गई है, उनके बिना काम को समय पर पूरा नहीं किया जा सकता।

चेत्वेर्याकोव ग्रौर येरेमिन की बरख़ास्तगी की ख़बर को सुनकर क्लार्क को बहुत ग्राश्चर्य हुग्रा था। वह इस बात को समझ ही नहीं पाया कि चेत्वेर्याकोव का ग्रपराध क्या है। पोलोज़ोवा ने उसे "दक्षिणपंथी ग्रवसरवाद" बताया था ग्रौर क्लार्क को यह पूछना ठीक नहीं लगा कि इसका मतलब क्या है। उसे यह इसलिए ठीक नहीं लगा था कि मन में उसे यही लगता था कि वह चेत्वेर्याकोव के पक्ष में है। उसे लगता था कि पोलोज़ोवा तथा ग्रन्य लोगों को इसका शक हो गया है ग्रौर इसलिए चेत्वेर्याकोव की बरख़ास्तगी के बारे में उससे बात करते समय वे उसकी तरफ़ बहुत एकाग्रता से, एक ख़ास तरह की सख़्ती के साथ देखते हैं, मानो कहना चाह रहे हों: "ध्यान रहे, ऐसे कर्मी हमारे किसी काम के नहीं!"

उसने ग्रपने मन में प्रश्न किया कि इस ग्रबोधगम्य देश में एक इंजीनियर से क्या ग्रपेक्षा की जाती है। चेत्वेर्याकोव ने इसे बाज़ीगरी कहा था,

लेकिन इस बाज़ीगरी का मतलब है क्या? क्लार्क बढ़िया काम करना चाहता था। हर कोई उससे कुछ असाधारण बात की अपेक्षा करता था और यह ख़याल बड़ा नाख़ुशगवार लगता था कि वह शायद उन सब की आशाओं को पूरा न कर पाये। वह देखता था कि यहां के लोगों की आंखों में "अमरीकी इंजीनियर" शब्द उस पर एक विशेष दायित्व डाल देते हैं। और एक और बात भी वह समझता था – अगर वह चेत्वेर्याकोव की जगह होता, तो बहुत करके वह भी वही करता, जो चेत्वेर्याकोव ने किया था और अब तक उसे भी अपने पद से अलग कर दिया गया होता। इस तथ्य की अनुभूति विशेषकर अप्रिय थी।

यह प्रत्यक्ष था कि इस देश में एक विशेष ढंग से काम करना ज़रूरी है, फिर चाहे मशीनें हों या न हों, वास्तविक संभावनाएं चाहे कुछ ही क्यों न हों। लेकिन कैसे? शामों को उन्हें कामकाजी सभाओं में भाग लेने के लिए बुलाया जाता। सभाओं में योजना की अपूर्ति पर चर्चा की जाती। अगले दिन श्रम उत्पादकता पांच, दस या हद से हद पंद्रह प्रतिशत बढ़ जाती। लेकिन अछूती धरती के महासागर में यह बूंद बराबर ही था।

सबसे ज़्यादा लगनवाले मज़दूर वे थे, जो एक्स्केवेटरों को चलाते थे। उनकी दो टोलियां थीं। एक्स्केवेटरों के बेकार न पड़े रहने के लिए वे बारी-बारी से काम करती थीं – आठ घंटे के काम के बाद वे आठ घंटे सोने के लिए चली जातीं और उसके बाद फिर काम पर लौट आतीं। उन्हीं की बदौलत यह बड़ा खांचा लगातार बढ़ता चला जा रहा था – बहुत धीरे-धीरे ही सही, मगर फिर भी बढ़ अवश्य रहा था। यह समाचार बड़े हर्ष के साथ ग्रहण किया गया कि तीन एक्स्केवेटर और आ गये हैं।

यह उस शाम के तीन दिन बाद की बात है, जब क्लार्क को अपनी मेज़ पर एक और रुक्क़ा मिला था। दूसरा रुक्क़ा पहले से भी ज़्यादा अर्थपूर्ण था। स्थानीय समाचारपत्र में छपे चित्र से काटा हुआ क्लार्क का सिर उस काग़ज़ पर चिपका हुआ था। यह चित्र तंबाकू कांड के सिलसिले में क्लार्क के भाषण का वर्णन करनेवाले एक लेख के साथ छपा था। सिर को कैंची से बड़ी सफ़ाई के साथ काटा गया था, उसके कान काट दिये गये थे और आंखों को पिन से छेद दिया गया था। लाल पेंसिल से दिखाई गई ख़ून की बूंदें बराबरी से कटी गरदन से टपक रही थीं। नीचे उसी लाल पेंसिल से लैटिन अक्षरों में लिखी «1 Mai» तारीख़ थी।

अत्यन्त उद्विग्न क्लार्क ने रुक्का पोलोज़ोवा को दे दिया और उससे पूछा कि चित्रकार का अभी तक पता चला या नहीं। पोलोज़ोवा ने कहा कि उसे नहीं मालूम। क्लार्क ने उससे और सवाल नहीं पूछे—वह नहीं चाहता था कि उसे डरपोक समझ लिया जाये।

अब नदी के किनारे खड़े होकर चारों ओर पीले मैदान पर दृष्टि डालते समय उसे अकस्मात उसका ख़याल आ गया—दस ही दिन तो बाक़ी रहे हैं पहली मई के आने में। जोखिम उठाने का क्या फ़ायदा? उसने अपने तिरपाल के नये बूटों पर से धूल झाड़ी और हाल ही में पहुंचे एक्स्केवेटरों के संयोजन की जगह चला गया।

पसीने से चिकने नंगे बदन मज़दूर हथौड़ों की टनटन और रेतियों की किरकिराहट के शोर में अधसंयोजित एक्स्केवेटरों के ढांचों पर जुटे हुए थे। अपने रेशमी कोट और सफ़ेद टोप में बार्कर ऐसा लग रहा था, मानो ब्रिटिश म्यूज़ियम का डायरेक्टर अभी-अभी खोदकर निकाले गये इक्थियो-सौरस की सफ़ाई के काम की देखरेख कर रहा हो। वह अपने हाथ हिलाता और गालियां बरसाता हुआ इधर-उधर झपट रहा था—मानो डायरेक्टर इस ख़याल से ही दहशत में आया हुआ है कि यह भंगुर और मूल्यवान पशु कहीं टूट न जाये।

"यह तो बरदाश्त के बाहर बात है!" वह पोलोज़ोवा पर बरस पड़ा। "उनसे कह दीजिये कि ऐसे मज़दूरों के साथ मैं अब और काम नहीं कर सकता। कुछ भी हो, मैं कोई ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता।"

"लेकिन इन मज़दूरों की क्या बात आपको नापसंद है? ये लोग तो खाने की छुट्टी में भी इस तरह काम करते हैं, मानो इनके सिर पर भूत सवार हो..."

"काम करते हैं? ये काम नहीं करते, दीवाने हो जाते हैं। इन्होंने किसी और टोली के साथ एक्स्केवेटर को नौ दिन में संयोजित कर लेने की बाज़ी बद रखी है और अब ये ऐसी आपमधाप मचा रहे हैं कि शैतान की पनाह। ये सब उलटा-पलटा कर रहे हैं और एक दूसरे के हाथ से छीना-झपटी कर रहे हैं। रात इन्होंने मुझे तीन बजे जगा दिया और यहां घसीट लाये। मैं इन्हें काम रोककर आराम करने का आदेश देता हूं, तो ये मेरी बात नहीं सुनते। ये मुझे यहां गरमी में रुकने के लिए मजबूर करते हैं। मैंने यहां कोई बीस घंटे रोज़ काम करने का ठेका थोड़े ही ले रखा है!"

"तो आप जाइये और जाकर ख़ेमे में आराम कीजिये, न।"

"ये मशीनों को तोड़ देंगे, ठीक से संयोजन नहीं करेंगे और मुझे फ़र्म को जवाबदेही करनी होगी। यह कोई समोवार नहीं है—यह एक नाज़ुक और जटिल मशीन है।"

"इन्होंने कोई चीज़ बिगाड़ी तो नहीं?"

"मैं यह कैसे कह सकता हूं?"

"देखिये, बहुत करके इन्होंने कुछ भी नहीं बिगाड़ा है और जल्दी इसलिए करनी पड़ रही है कि वैसे ही काम बुरी तरह से रुका पड़ा हुआ है।"

"तो रोक कौन रहा है? आख़िरी वक़्त पर इस तरह से जल्दी मचाने के बजाय पुरज़ों को समय पर पहुंचाना चाहिए था। दो हफ़्ते मैं यहां बिना काम के बैठा रहा..."

"तब आपने आराम कर लिया था। अब आपको सख़्त काम करके इन दो हफ़्तों की कसर को पूरा करना होगा।"

बार्कर ने पोलोज़ोवा पर एक अर्थपूर्ण दृष्टि डाली।

"आपको अच्छा लगता हो, तो आप अड़तालीस घंटे रोज़ काम कीजिये, मगर मेरी तरफ़ से ये सब भाड़ में जायें। मेरा बंधा हुआ कार्यक्रम है। फ़र्म समझती है कि एक एक्स्केवेटर के संयोजन के लिए पंद्रह दिन चाहिए और मैं बस, इस एक ही कार्यक्रम का पालन करने को बाध्य हूं।"

क्लार्क को यह झगड़ा और बार्कर का अभद्र व्यवहार बहुत बुरा लगा। उसने बार्कर को अलग हटाते हुए कहा:

"देखते नहीं, यह क्या बाज़ार जैसा हल्ला मचा रखा है आपने! देखकर शरम आती है!"

"कोई परवाह नहीं—अब ज्यादा शरम करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मैं तो वैसे भी इस काम पर हफ़्ता भर और ठहरने को भी तैयार नहीं हूं। मुझे अपनी ज़िंदगी प्यारी है। यह एक्स्केवेटर पूरा हो जाये, तो कर दें ये मेरा हिसाब साफ़।"

"मगर, मेरे दोस्त, मंदी के बारे में मत भूल जाइये। फ़र्म इस बात को पसंद नहीं करेगी कि आप काम छोड़कर आ गये और इसकी ज्यादा संभावना नहीं है कि वह आपको कोई और काम दे दे।"

"आपके कहे के मुताबिक़, अगर मेरे हाथ में दूसरा काम न हो, तो क्या मैं अपने को भेड़ की तरह से कटवा दूं, क्यों? जी, बहुत शुक्रिया। मुझे न्यूयार्क में ही मरना श्रेयस्कर लगता है।"

"आप उन मज़ाक़िया चित्रों की बात तो नहीं कर रहे, जो आपको अपने कमरे में मिले हैं?"

"आप चाहें, तो तब तक यहीं जमे रहिये, जब तक वे इन मज़ाकों को अमल में लाना शुरू नहीं करते। मैं विनोदप्रिय आदमी नहीं हूं। मुझे नहीं मालूम कि आप मुझे क्यों मूर्ख बनाना चाहते हैं। आपने मुझे यह क्यों नहीं बताया था कि आपको और मर्री को भी वैसे ही रुक़्क़े मिले थे?"

"तो फिर आपको किसने बताया?"

"मर्री ने।"

"हो सकता है कि वह आपसे मज़ाक कर रहे थे।"

"यह आपकी ही विशेषता है।"

"तो आप कब जाने की सोच रहे हैं?"

"ज़्यादा से ज़्यादा एक हफ़्ते में। और मेरी राय है कि आप भी इस पर एक बार विचार कर लें। इस तरह से अपनी जान को जोखिम में डालने का क्या फ़ायदा?"

"सलाह के लिए शुक्रिया। अगर आप मेरी सलाह सुनें, तो आपको ईमानदारी से यहीं रुकने की राय देता हूं। मैनेजमेंट हमारी पूर्ण सुरक्षा की गारंटी दे रहा है।"

"अफ़ग़ानिस्तान की सीमा पर एक उजाड़ रेगिस्तान में इस तरह की गारंटियां कोई सुरक्षा प्रदान नहीं करतीं। जहां तक मेरी बात है, मैं उन पर विश्वास नहीं करता। यहां के लोगों से पूछिये, पिछले साल बासमचियों ने कितने लोगों को मारा था,—तब आप भी मान जायेंगे कि इस तरह के मज़ाक हमेशा ही मज़ेदार नहीं होते।"

"तो संक्षेप में, आपने जाने का पक्का निश्चय कर लिया है? ठीक है, तो न्यूयार्क को मेरा सलाम!"

"क्या यह संभव है कि कुछ गुमनाम परचों से एक अमरीकी इंजीनियर की हिम्मत जाती रहे और वह निर्माणस्थली से भाग खड़ा हो?" अचानक पास से ही पोलोज़ोवा की तंज़भरी आवाज़ सुन पड़ी।

क्लार्क का चेहरा बिगड़ गया।

"मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप अपने शब्दों का ज्यादा सावधानी के साथ चयन करें," उसने तेज़ी से कहा, "और कृपया मुझे यह कहने की आज्ञा दीजिये कि आगे से आप यह याद रखें कि अपने सहयोगी से बात करते समय मुझे अनुवादिका की आवश्यकता नहीं होती है।"

पोलोज़ोवा ने होंठ भींच लिये।

"मिस्टर बार्कर अपनी बात इतनी ज़ोर से कह रहे थे कि चाहूं या न चाहूं, आप लोगों की बातचीत कान में पड़े बिना नहीं रह सकती थी। वैसे मुझे इस बात का ज़रा भी अनुमान न था कि यह गोपनीय है।"

"खेद की बात है।"

"आपके आदेश का पालन करने में मैं कभी चूक नहीं करूंगी, यद्यपि यह बात अधिक शिष्टता के साथ भी कही जा सकती थी।"

"बात यह है कि मेरा लालन-पालन बहुत बुरी तरह से हुआ है।"

"मैंने यह कभी भी नहीं कहा।"

"आपका आशय यही था। आप चाहे मुझे बिलकुल नादान समझें, मगर मैं बात को काफ़ी जल्दी समझ जाता हूं।" क्लार्क और भी खीज हो गया। "बेशक, मैं बहुत-सी बातों को नहीं जानता, जिन्हें आपके देश में बिलकुल सामान्य माना जाता है। मिसाल के लिए, मुझे अभी तक यह नहीं मालूम था कि अनुवादक के काम में विदेशियों को हिदायतें देना भी शामिल है। दुर्भाग्यवश, मेरी उम्र में आकर किसी चीज को एकदम नये सिरे से सीखना बहुत मुश्किल है..."

"नये सिरे से सीखा कभी भी जा सकता है।"

"कृपया मुझे कम से कम अपने शिक्षकों का चुनाव अपने-आप करने दीजिये। जबरदस्ती लादी विद्या कदाचित ही फलवती होती है।"

पोलोज़ोवा के गाल लाल हो गये, उसकी आंखों में आंसू छलछला आये।

"आशा है कि आप अपने लिए अनवादक का इंतज़ाम भी ख़ुद ही कर लेंगे। आप पर अपनी सेवाएं जबरदस्ती लादने का मेरा कोई इरादा नहीं है," वह एकदम पलटकर चल दी।

क्लार्क को पहले अपने तीखे शब्दों पर खेद हुआ, मगर अब पीछे हटना मुश्किल था। कुछ भी हो, क्या इस ढीठ और अक्खड़ लड़की को एक नसीहत देना ठीक नहीं है?

पीछे देखे बिना वह नहर-तल की तरफ़ चल दिया।

अनुचित अपमान की गहरी चोट को लेकर पोलोज़ोवा बस्ती की तरफ़ रवाना हो गई। "क्या मैं इस स्वार्थी और अशिष्ट आदमी के साथ काम करूंगी? कभी नहीं!" उसकी बरौनियों पर लटके बड़े आंसुओं के कारण देखना भी असंभव हो गया था। बच्चों की तरह ज़ोर से नाक को साफ़ करते हुए वह आंसुओं को हाथ से पोंछती जा रही थी। उसे फ़ौरन सिनीत्सिन के पास जाना चाहिए और उससे अनुरोध करना चाहिए कि उसे इस मूर्खतापूर्ण काम से छुट्टी दें। आख़िर वह यहां टेकनिशियन का काम करने, व्यावहारिक काम के लिए निर्माण-कार्य में भाग लेने के लिए आई है, न कि इंटूरिस्ट की लड़कियों के काम को करने के लिए...

खेल प्रकाश में आया

अगले दिन एक ट्रक पंज नदी की तरफ़ से पैट्रोल लेकर आया। ट्रक का तुमुल हर्षध्वनि के साथ स्वागत किया गया और उसमें से लोहे के पीपे उतारने के लिए सभी बड़े उत्साह के साथ दौड़ आये। दोनों एक्स्केवेटर रात को ही पैट्रोल की आख़िरी बूंद भी हज़म कर चुके थे और सुबह से ही बेकार खड़े हुए थे।

इस हल्ले-गुल्ले में किसी का भी ध्यान ड्राइवरों जैसा चमड़े का कोट पहने एक मामूली से आदमी की तरफ़ नहीं गया, जो ड्राइवर के बाद ट्रक की अगली सीट से उतरा था। उसने पार्टी समिति के कार्यालय का रास्ता पूछा और जिधर बताया गया था, उसी तरफ़ चला गया।

सफ़ेद किरमिच के परदे से दो भागों में बंटे पार्टी समिति के तिरपाल के ख़ेमे में उसे बताया गया कि सचिव व्यस्त हैं और उसे इंतज़ार करना होगा। वह एक स्टूल पर बैठ गया, मेज़ पर से स्थानीय अख़बार उठा लिया और पढ़ने में तल्लीन हो गया।

आख़िर सिनीत्सिन किरमिच के परदे के पीछे से नासिरुद्दीनोव के साथ-साथ आता दिखाई दिया।

"आप मुझसे मिलना चाहते थे?" अपरिचित के सामने रुकते हुए उसने पूछा।

"क्या आप ही साथी सिनीत्सिन हैं? जी हां, मैं आपसे मिलना चाहता हूं। मेरा नाम मोरोज़ोव है।"

"आप साथी मोरोज़ोव हैं?" सिनीत्सिन हर्ष से पुलक उठा। "आप यहां पहुंच कैसे गये? वक्श पर तो आजकल बजरे के बह जाने के कारण पार करने की सुविधा नहीं है। हमने यही सोच लिया था कि आपको इसी कारण स्तालिनाबाद में ही रुक जाना पड़ा होगा।"

"मैं तेरमीज़ से आ रहा हूं। मैं यह देखने के लिए तेरमीज़ गया था कि हमारा सप्लाई केंद्र किस तरह काम कर रहा है और देखा कि वह बहुत ही बुरी तरह काम कर रहा है। इसलिए वहां मुझे कुछ दिन रुकना पड़ा। मैं यहां बजरे से आया हूं। साथ में मैं दो एक्स्केवेटर और रेलवे पटरियों की पहली क़िस्त भी ले आया हूं।"

"बहुत अच्छे! हमारे यहां तो आजकल मध्यांतर आया हुआ है। आपने अभी कहीं ठहरने का तो इंतज़ाम नहीं किया? आपका सामान कहां है?"

"मैं सीधा आपके ही पास आ रहा हूं। सामान मैंने घाट पर ही छोड़ दिया है—बाद में मंगवाया जा सकता है। उसके लिए ट्रक में गुंजाइश नहीं थी। ड्राइवर ने बताया था कि आपके पास बूंद भर भी पैट्रोल नहीं बचा है।"

"हम आपको बस्ती पहुंचाने के लिए कार का इंतज़ाम करते हैं। आपके लिए मकान ठीक कर दिया गया है। क्या आप अकेले हैं? आपकी पत्नी आपके साथ हैं?"

"मैं अकेला हूं। बस्ती मैं शाम को जा सकता हूं। अभी मैं कहीं हाथ-मुंह धोना और आपसे कुछ बातचीत करना चाहूंगा।"

"तो चलिये। यहां लोग हमें चैन से बातें नहीं करने देंगे। हम येरेमिन के युर्त में चलते हैं—मैं आपको रास्ता दिखा दूंगा। आप वहां हाथ-मुंह भी धो सकते हैं और हम आज़ादी से बातें भी कर सकते हैं। कोई ख़लल नहीं डालेगा और अगर आप चाहें, तो मुख्य सैक्शन भी देख सकते हैं, वह बहुत ही पास है।"

"चलिये, चलें।"

...मोरोज़ोव उस शाम को बस्ती गया ही नहीं, बल्कि येरेमिन के युर्त में ही रहा और वहीं उसने अपना पड़ाव डाल दिया।

निर्माणस्थली पर उसका आगमन लगभग अलक्षित ही रहा। अपने नये प्रमुख की नज़रों में आने के लिए जो इंजीनियर लपके-लपके आते,

उन्हें उसका दफ़्तर ख़ाली ही मिलता। मोरोज़ोव दिन-दिन भर निर्माणस्थली पर मशीनों की तरफ़ ऐसे कि जैसे कोई अपरिचित आदमियों को देखता है और आदमियों को ऐसे कि जैसे वह मशीनों का अध्ययन कर रहा हो—देखता हुआ घूमता रहता। वह कहीं भी कुछ नहीं कहता—उन मामलों तक में, जहां काम प्रकटतः ग़लत ढंग से किया जा रहा था और न ही उसने कोई नये आदेश या निर्देश जारी किये। कुछ फ़ोरमैन बोले कि नये प्रमुख को निर्माण-कार्य का ककहरा भी नहीं आता और इसी लिए वह कोई भी चीज़ शुरू करने के झमेले में पड़ने से डरता है। दूसरों ने आगाह किया कि "नवागंतुक" अभी सूंघासूंघी कर रहा है और हालत का जायजा ले रहा है, वह हर चीज़ को बारीकी से देख रहा है और सभी बातों की जड़ में पैठ रहा है—इस तरह के लोग जब तक मामलों को पूरी तरह से समझ नहीं लेते, जान-बूझकर मूर्ख होने का दिखावा करते हैं—और इसके बाद असली तमाशा शुरू होता है। निर्माणस्थली पर काम पहले की तरह ही चलता रहा और नये प्रमुख के आगमन की सूचक कोई बात नहीं हुई।

उसके आगमन के अलक्षित रहने का एक और कारण यह था कि दो दिन बाद निर्माणस्थली पर हवा के अचानक आये तेज़ झोंके की तरह एक नई सनसनी फैल गई, जिसके कारण सारे इंजीनियरों और टैकनिशियनों में फुसफुसाहट शुरू हो गई। यह सनसनी थी नये मुख्य इंजीनियर, कीर्श का आगमन। कई इंजीनियरों को याद आया कि उन्होंने पांच साल पहले अख़बारों में पढ़ा था कि उसे उस समय मध्य एशिया में एक प्रमुख निर्माणस्थली पर, जहां वह उप-मुख्य इंजीनियर था, हुए एक बड़े धांधले के सिलसिले में जालसाज़ी करने के जुर्म में सज़ा दी गई थी। लग रहा था कि जैसे निर्माण-कार्य एक तरह का "सफ़ेद हाथी" है, जिसका असफल होना पूर्वनिर्धारित है और वह अपने पर किये गये विशाल ख़र्च के औचित्य को कभी सिद्ध नहीं कर पायेगा। कीर्श को आठ साल की सज़ा दी गई थी, ज़ाहिर था कि उसने अपनी घटाई हुई सज़ा को कुछ ही पहले पूरा किया होगा। यही बात कि अभी हाल ही में रिहा हुए एक भूतपूर्व विध्वंसकर्त्ता को देश के सबसे बड़े निर्माण-कार्यों में से एक का मुख्य इंजीनियर नियुक्त कर दिया गया है, इतनी सनसनीख़ेज़ थी कि कोई भी और कोई बात करता ही नहीं था।

जब कीर्श पहली बार निर्माणस्थली पर आया, तो हर बारक, ख़ेमे

ग्रौर युर्त से दर्जनों दूरबीनों जैसी कुतूहलभरी ग्रांखें उसकी तरफ़ देखने लगीं। वह बिलकुल सीधा ग्रौर संयत चलता चला गया। उसका सिर नंगा था ग्रौर उसके पके बालों को देखकर लगता था, जैसे उन्हें जमाकर रखने के लिए सुबह सिर पर एक धूसर जाली डाल दी गई थी। उसका चेहरा निर्विकार ग्रौर धुंधला था ग्रौर न कालर, न टाई लगे ऐसे चेहरे हमेशा बिन हजामत बने हुए ही लगते हैं।

दिन भर कीर्श मोरोज़ोव ग्रौर सिनीत्सिन के साथ निर्माणस्थली पर घूमता रहा ग्रौर शाम को तीनों मोरोज़ोव के युर्त में जाकर बैठ गये। ट्रेड-यूनियन समिति के सचिव, गालत्सेव को भी वहीं बुलवा लिया गया। देर गये रात तक घोड़ागाड़ियों के चालकों को, जो स्तालिनाबाद से लकड़ी लेकर ग्रा रहे थे ग्रौर नदी पार करने की जगह पर रात साथ-साथ बिता रहे थे, नदी के उस पार से इस एकाकी युर्त में रोशनी नजर ग्राती रही। दूसरे तट से वह ऐसी लगती थी, मानो बांबी पर फेंका सिगरेट का टोंटा दमक रहा हो।

ग्रगले दिन निर्माणस्थली पर यह ख़बर फैल गई कि मैकेनिकल डिपार्टमेंट के काम की जांच करने के लिए कीर्श की ग्रध्यक्षता में एक विशेष ग्रायोग की नियुक्ति की गई है।

सुबह से मैकेनिकल डिपार्टमेंट के कार्यालय में ग्रायोग की बैठक चल रही थी ग्रौर दिन भर पसीने में तर दफ़्तरी कर्मचारी लिखित दस्तावेज़ों के पुलिंदे के पुलिंदे वहां ले-लेकर ग्राते-जाते रहे। नेमिरोव्स्की के दरवाज़े के सामने से गुज़रते समय वे किसी न किसी कारण पैर दबाकर निकलते थे, जैसा लोग तब करते हैं कि जब वे किसी सख़्त बीमार रिश्तेदार के कमरे के पास से गुज़रते हैं।

ग्रायोग तीन दिन काम करता रहा ग्रौर जिस ग्रप्रत्याशित तरीक़े से उसने मैकेनिकल डिपार्टमेंट में प्रवेश किया था, उसी तरह से वह मेज़ पर ग्रव्यवस्थित काग़ज़ों के ग्रंबार ग्रौर खिड़की की सिल पर सिगरेट के बुझे हुए टोंटों का चट्टा छोड़कर चला गया। ग्रायोग ग्रपने साथ जो कुछ भी ले गया, वह कीर्श के भारी-भरकम पोर्टफ़ोलियो में समा गया था। जांच का नतीजा क्या रहा, यह कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता था।

उस शाम को बस्ती में कीर्श ग्रपने बरामदे में बैठा मास्को से लाये ग्रपने रेडियो को सुनता हुग्रा चाय पी रहा था। ग्रपनी ग्रारामकुरसी पर

कमर टिकाये-टिकाये उसने अपनी आंखें आसमानी चंदोवे पर जमा रखी थीं, जो तारों से इस तरह लदा हुआ था, जैसे सेब का पेड़ फलों से लदा होता है। जब-तब एक सेब टूट जाता और अंतरिक्ष को चीरता हुआ दूर जाकर गिर जाता। अचानक बरामदे में नेमिरोव्स्की नज़र आया।

"क्या मैं आ सकता हूं? मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूं..."

"आइये, तशरीफ़ लाइये," कीर्श ने रेडियो बंद कर दिया, "कहां बैठियेगा, यहां, या कमरे में?"

"अगर आपको असुविधा न हो, तो मैं कमरे में ही बैठना पसंद करूंगा। यहां ख़लल पड़ सकता है।"

"आइये, पधारिये।"

वह उठ खड़ा हुआ और उसने कमरे में पहले नेमिरोव्स्की को प्रवेश करने दिया।

"मैं किसी प्रस्तावना के बिना सीधे मुद्दे की बात पर आ जाता हूं। यद्यपि हम लोगों को ज्यादा अच्छी तरह से परिचित होने का अवसर नहीं मिल पाया है, मगर मैं आपको एक प्रतिष्ठित विज्ञानकर्मी और हमारे सबसे प्रमुख विशेषज्ञों में से एक के नाते जानता हूं और इसलिए कोई कारण नहीं कि मैं आप पर पूरी तरह से विश्वास न करूं।"

कीर्श ने कुछ अनिश्चित सा इशारा किया।

"इसी लिए मैंने आपको मिनट भर कष्ट देने का निश्चय किया। मैं आपसे बिलकुल खुलकर बातें करना चाहूंगा।"

"बोलिये। मैं सुन रहा हूं।"

"आपको अभी यह देखने का मौक़ा नहीं मिल पाया है कि हमारी निर्माणस्थली पर कैसा वातावरण छाया हुआ है। मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि यह नारा यहां अभी तक नहीं प्रवेश कर पाया है कि पुराने विशेषज्ञों का अच्छी तरह से ख़याल रखा जाना चाहिए। यहां पुराने इंजीनियरों को अभी गुप्त शत्रु और प्रच्छन्न विध्वंसकर्ता ही माना जाता है। मज़दूरों की निगाहों में हमारी प्रतिष्ठा को गिराने के लिए पार्टी संगठन सभी कुछ करता है। लगभग यहां पहुंचने के समय से ही मैं जिस व्यवस्थित संतापन का शिकार रहा हूं, उसने कुछ समय से ऐसा रूप ले लिया है कि मेरे लिए यहां काम तक करना असंभव हो गया है। मैकेनिकल डिपार्टमेंट की 'जांच' के लिए स्थापित किया गया आयोग – जिसकी अध्यक्षता के

लिए आपको मजबूर किया गया है और जिसे किसी भी क़ीमत पर मैकेनिकल डिपार्टमेंट के काम में दोष और त्रुटियां निकालने के लिए ही नियुक्त किया गया है—अनवरत संतापन की इस शृंखला की केवल एक कड़ी है। आपको ख़ुद मानना पड़ेगा कि इन हालतों में काम करना असंभव है और मैं जो सबसे अच्छी बात कर सकता हूं—और अगर आप मेरी जगह होते, तो निस्संदेह आप स्वयं भी करते—वह यही है कि मैं अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त किये जाने का अनुरोध करूं। मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ अपना पद अपने किसी भी ऐसे सहयोगी को सौंपने के लिए तैयार हूं, जिसके साथ पार्टी समिति अधिक विश्वास और अधिक सहानुभूति से पेश आये। मेरा ख़याल है कि मैं मध्य रूस में ज्यादा उपयोगी साबित हो सकता हूं, जहां विशेषज्ञों के प्रति नया दृष्टिकोण मज़बूती के साथ जड़ पकड़ चुका है।"

"जी..." कोर्श ने आहिस्ता से जवाब दिया, "दर असल बात यह है कि आपकी इच्छा पूरी भी की जा चुकी है। साथी मोरोज़ोव ने आपकी बरख़ास्तगी के आदेश पर आज ही हस्ताक्षर किये हैं। बस, जहां तक आपकी रूस जाने की इच्छा का सवाल है, मुझे भय है कि आपको अपने रवाना होने की तारीख़ को स्थगित करना होगा। आपका मामला अब अभियोक्ता के हाथों में है।"

"दूसरे शब्दों में, अगर मैंने आपकी बात को ठीक समझा है, तो आपकी अध्यक्षता में काम करनेवाले आयोग ने साथी सिनोत्सिन की राय का अनुमोदन किया है?"

"आयोग ने किसी की भी राय का अनुमोदन नहीं किया है। उसने परीक्षित सामग्री के आधार पर अपना मत प्रकट किया है।"

"और व्यक्तिगत रूप से आपको भी इस बात पर विश्वास है कि मेरे काम ने निर्माण-कार्य का विध्वंस किया है?"

"जी हां। मुझे इस बात का विश्वास हो गया है कि आपने जो क़दम उठाये थे, उनका लक्ष्य मैकेनिकल डिपार्टमेंट के काम को ठीक से संगठित करना नहीं था।"

"मैं समझता हूं," नेमिरोव्स्की ने कटु मुसकान के साथ कहा, "आपकी स्थिति की कठिनाई को मैं समझता हूं। उन्होंने एक और

इंजीनियर के ख़िलाफ़ लगाये गये विध्वंस के आरोप की जांच के लिए नियुक्त किये गये आयोग का अध्यक्ष आपको जान-बूझकर आपकी निष्ठा की जांच करने के लिए बनाया है।"

"आप मेरे मुक़दमे का तो हवाला ही दे रहे?" कीर्श ने शांति के साथ पूछा। "आप ग़लती पर हैं। अगर मुझे क्षण भर को भी यह विश्वास होता कि आप सही हैं, तो मैं यह कहते हिचकता नहीं। अगर मैंने आपके विरुद्ध आरोप का समर्थन करना सही समझा, तो महज़ इसलिए कि मुझे इस क्षेत्र का कुछ अनुभव प्राप्त हो चुका है और मैं ठोस तथ्यों के आधार पर अपने को इस बात का आश्वस्त कर सका कि यह आरोप निस्संदिग्ध रूप से सही है।"

"सीधे-सीधे कहिये – स्वयं संदेह के भागी होने के बजाय आप एक और इंजीनियर को जेल भेजना श्रेयस्कर समझते हैं। अगर आप यह सोचते हों कि वे आपके उत्साह को सराहेंगे, तो आप ग़लती पर हैं। प्रत्यक्ष है कि आपने अपने कटु अनुभव से कुछ भी नहीं सीखा है। जिस कारण उन्होंने आपको रिहा किया है और इस पद पर नियुक्त किया है, वह यह है कि उन्हें औरों से, जो आपकी ही तरह पुराने बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, बदला लेने के लिए फ़िलहाल आपकी ज़रूरत है। जब आपकी उपयोगिता ख़त्म हो जायेगी, तो वे आपको वापस वहीं भेज देंगे, जहां से आप अभी-अभी आये हैं। वे कभी आप पर विश्वास नहीं करेंगे, न आपको अपना समझेंगे। चारेक साल के भीतर उनके पास अपने काफ़ी इंजीनियर पैदा हो चुके होंगे और तब आपका, मेरा और शेष सारे पुराने बुद्धिजीवी वर्ग का काम ख़त्म हो जायेगा। मंज़िल विशेष में वे हमारे बिना काम नहीं चला सकते और यही वजह है कि हम पर क्षण भर के लिए भी विश्वास न करते हुए भी वे हमारा उपयोग करते हैं और जितना ही हम उनके लिए आवश्यक हैं, उतना ही वे हमसे ज्यादा घृणा करते हैं। जब हम आवश्यक नहीं रहेंगे, तो कोई यह याद तक नहीं करेगा कि अमुक-अमुक परियोजना का निर्माण आपके हाथों ने, या यह कहिये कि आपके दिमाग़ और अनुभव ने किया था। आपको और मुझे – दोनों को सीधे-सीधे अलग फेंक दिया जायेगा – उनकी भाषा में कहें, तो 'एक वर्ग के रूप में निर्मूल' कर दिया जायेगा। ज्यादा से ज्यादा यह होगा कि आप किसी सीदोरोव या पेत्रोव के चपरासी बन जायेंगे, जो आज आपके नीचे एक

मामूली मिस्तरी है, मगर कल जिसकी जेब में सोवियत इंजीनियर की उपाधि होगी। मुझे ऐसा लगता है कि एक ऐसे देश में, जहां एकता का इतना राग अलापा जाता है, हम–पुराने टेकनिकल बुद्धिजीवी वर्ग को भी ज़रा-सी एकता दिखाने से कोई नुक़सान तो नहीं ही होगा। कुछ भी हो, तब वे हमें खटमलों की तरह एक-एक करके नहीं कुचल पायेंगे, जैसे किसी वक़्त उन्होंने आपको कुचला था और फिर ज़रा-सा दम लेने भर की मुहलत देने का निश्चय कर लिया,–और जैसे अब वे आपकी सहायता से मुझे कुचलना चाह रहे हैं।"

"आपका इरादा–अगर आप इस तरह कहने की छूट दें, तो–शायद मेरी 'बिरादराना भावना' से अपील करने का है? यह कोरा पूर्वजानुराग है, और कुछ नहीं। जी नहीं, मेरा आपसे न कोई ऐसा अनुराग है और न हो सकता है। अगर कुछ है, तो बस दया..."

"और इसलिए आप मुझे जेल में डालने की भरसक कोशिश करना चाहते हैं?"

"आप मुझे ग़लत समझ रहे हैं। मेरा आशय मानविक दया की उस भावना से नहीं है, जिसके वशीभूत होकर उदार हृदय न्यायाधीश सज़ा को घटा देता है, या जो इस मामले में मुझे आपकी तरफ़ से अनुनय करने के लिए प्रेरित कर सकती है। उसका तो सवाल ही नहीं उठता। मुझे आप पर इसलिए दया आती है कि मैं देख रहा हूं कि आपका सुधारना कितना मुश्किल है। मैं जानता हूं कि इस वक़्त आपके साथ जो कुछ किया जा रहा है और जो आपके सुधार का एकमात्र रास्ता साबित हो सकता है, उसे आप कोई अंधा प्रतिशोध, कोई भयानक वैयक्तिक दुर्भाग्य मानेंगे, बिलकुल उसी रोगी की तरह, जो अपनी बीमारी को नहीं जानता और अस्थायी पृथक्करण को अपनी वैयक्तिक स्वतंत्रता का अतिक्रमण समझता है।

"पुरानी–हमारी नहीं–धारणा के अनुसार क़ैद एक ऐसा कलंक है, जिसे कभी नहीं मिटाया जा सकता या जिससे केवल धन से ही मुक्ति पाई जा सकती है। क़ैद का मतलब है रोज़गार का जाना और भविष्य में कोई भी काम पाने की संभावना का पूरी तरह से ख़त्म हो जाना। क़ैद का मतलब है समाज से बहिष्कृत होकर रहना। हमारे समाज में कारावास का इनमें से कोई भी अर्थ नहीं है। बस, नाम बदल दीजिये, 'क़ैद' शब्द

को 'पृथक्करण' कहिये और आप जिस धारणा से डर गये थे, वह ख़त्म हो जायेगी।"

"क्या आपने मेरा मज़ाक उड़ाने की ठान रखी है?"

"ज़रा भी नहीं। आप जानते हैं कि ख़ुद मुझे भी रिहा हुए ज्यादा समय नहीं बीता है। जो रास्ता आपके सामने है, मैं उसे पहले ही पार कर चुका हूं। मुझे इस तुलना के लिए क्षमा कीजिये, मगर आपको देखकर मुझे एक व्यापारी की याद आती है, जो पूर्व की यात्रा पर गया हुआ था। एक रात को उसकी आंख खुली, तो उसने पाया कि जहाज़ डूब रहा है। सौभाग्यवश, एक और जहाज़ पास से ही गुज़र रहा था और उसने इस जहाज़ के यात्रियों को ले लिया। जब व्यापारी की बारी आई, तो उसने पहले पूछा, 'आपका जहाज़ किस तरफ़ जा रहा है?'–'पश्चिम की तरफ़!' उन्होंने बेसब्री के साथ चिल्लाकर कहा, 'डूबना न चाहो, तो फ़ौरन सवार हो जाओ!'–'जी, शुक्रिया, मगर मेरा यह रास्ता नहीं है। मैं दूसरी तरफ़ जा रहा हूं,' व्यापारी ने कहा और वह डूबते हुए जहाज़ पर से नहीं उतरा।

"आप भी हमारे रास्ते नहीं जा रहे हैं, साथी नेमिरोव्स्की, और ज़ाहिर है कि अपना यात्रा मार्ग बदलने के बजाय आप डूबना पसंद करेंगे। आपकी कही हर बात एकदम ग़लत है। पांच साल हुए, मैं लगभग आपकी तरह ही सोचता था, और तब ऐसा करना क्षम्य था। मैं चारों तरफ़ नारे और भाषण सुना करता था, पर ऐसे कोई तथ्य नज़र नहीं आते थे, जो मुझे क़ायल कर पाते। क्रांति के असंयमित अपव्यय को देखकर मैं चकित था: मैं देख रहा था कि किस तरह आज उन चीज़ों को निरर्थक नष्ट किया जा रहा है, कल जिनको फिर बनाना होगा। मैं देखता था कि किस तरह अच्छे और सही विचारों को व्यवहार में विकृत कर दिया जाता है, क्योंकि जो हाथ इन विचारों को कार्यरूप में परिणत करने का यत्न कर रहे हैं, वे अकुशल हैं। एशियाई रूप का यह समाजवाद मुझे खलता था। मैं मन में कहा करता था कि इस देश को पेश्तर इसके कि कोई इसके साथ समाजवाद की बात करना शुरू करे, किसी सामान्य पश्चिमी देश की संस्कृति प्रदान करना आवश्यक है।

"इस बात को मैंने बहुत बाद में जाकर अनुभव किया कि मैं ग़लती पर हूं। मैं उस सब को उलट देना चाहता था, जिसको उन्होंने पलटकर

ठीक से रख दिया था। जिस चीज़ को मैं सांस्कृतिक स्तर कहता था और जिसे मैं भावी, उन्नतर सामाजिक व्यवस्था की आवश्यक पूर्वापेक्षा समझता था, वह, इसके विपरीत, अपनी आवश्यक पूर्वापेक्षा के रूप में इस उन्नतर सामाजिक व्यवस्था का तक़ाज़ा करती थी और स्वयं इसका तात्कालिक परिणाम थी। और, अपनी बारी में इस सामाजिक व्यवस्था का निर्माण उन अकुशल हाथों से ही हो सकता था, जिनके फूहड़पन के कारण मैं उनके सभी कामों को तिरस्कार की दृष्टि से देखा करता था। अब मुझे इस बात पर विश्वास हो गया है कि उस समय जिस चीज़ को मैं क्रांति का अपव्यय और निष्फल बरबादी कहा करता था, वह असल में उसके बंधे हुए ख़र्च के अलावा और कुछ नहीं था, जो ऐसे विराट उपक्रम में अनिवार्य था। क्रांति की आलोचना मैं उस छोटे कारख़ानेदार के नज़रिये से किया करता था, जो किसी बड़े उद्योगपति के उद्यम के 'अपव्ययी पैमाने' को अपने टुटपुंजिया कारबार की दृष्टि से मापने की कोशिश करता है।

"इस सब को समझने के लिए मेरे लिए कई साल के लिए नये जीवन के प्रचंड प्रवाह के आगे से हट जाना और कृत्रिम शांति और एकांत के वातावरण में उससे अलग रहते हुए इस नये जीवन को समझना आवश्यक था। निस्संदेह, पृथक्करण स्वयं व्यक्ति के विश्वासों को नहीं बदल सकता। इसके लिए मनुष्य की सहायता भी आवश्यक है। मुझे यह सहायता वहां मिली,—और आपको भी वहीं मिलेगी—जहां आप इसकी सबसे कम अपेक्षा करते हैं—उन लोगों में, जिनका नाम ही इस समय आपको इतना घृणित और भयानक लगता है। मेरा आशय चेका से है। वहां मुझे ऐसे लोग मिले, जो मेरे साथ ऐसे पेश नहीं आये, जैसे दुश्मन दुश्मन के साथ पेश आता है, बल्कि ऐसे, जैसे डाक्टर किसी मानसिक रोगी के साथ पेश आता है—बड़े धीरज और बड़े ध्यान के साथ। वे मुझ पर इतना समय नष्ट करने से इनकार कर सकते थे और मुझे एक लाइलाज मरीज़ मानकर मेरी सुबह की कॉफ़ी के प्याले में बस ज़हर मिलाकर मुझसे निजात पा सकते थे। इसकी जगह उन्होंने मेरे साथ बहस करने में घंटों लगाये और मेरे लड़खड़ाते हुए तर्कों को एक-एक करके बाक़ायदा ध्वस्त किया। इस तरह की बहसों के बाद मैं एकदम परास्त होकर लौटता, अपने तर्कों की विछिन्न सेना को एकत्र करता, हताहत संख्या का अनुमान लगाता, अब भी अक्षत और रण-सक्षम प्रतीत होनेवाले तर्कों की नई वाहिनियां खड़ी करता, सारे

मोर्चे की फिर से व्यूह-रचना करता और अगली बहस के लिए उसी तरह जाता, मानो रणक्षेत्र की तरफ़ कूच कर रहा होऊं और फिर एक करारी मात खाता। 'उन्हें' कोई चालाकी भरी बाज़ीगरी करने की ज़रूरत नहीं थी—पूरा विशाल देश ही 'उनके' पक्ष में काम करता हुआ प्रचुर संख्या में तर्क प्रदान कर रहा था। काम शुरू करनेवाली हर नई धमन भट्ठी, हर नई परियोजना मेरी पस्तहिम्मत फ़ौज पर लंबी मार करनेवाली अचूक तोपों की तरह गोलाबारी शुरू कर देती।

"'उन्होंने' एक सुसज्जित ड्राफ़्ट्समैन कक्ष में मेरे लिए अपने अनुसंधान-कार्य को जारी रखना संभव बनाया, जहां मैंने भावी निर्माण-कार्यों की रूपरेखाओं को परिष्कृत किया। मैं जीवन से निर्वासित नहीं था। मैं अनुभव करता था कि मैं सारे देश के साथ जुड़ा हुआ हूं, उसके प्रचंड श्रम में भाग लेता हूं। जब एक सुबह मुझसे कहा गया कि मैं उन लाल बिंदुओं में से किसी एक पर जा सकता हूं, जो मेरी अनुपस्थिति में हमारे देश के नक़्शे पर बिजली के प्रकाश द्वारा दमक उठे थे, तो मुझे इन पांच वर्षों के बाद अपने को ज़बरदस्ती किसी नई लीक पर नहीं ढालना पड़ा—मैं मात्र प्रयोगशाला से सीधे निर्माणस्थली की पाड़बंदी पर चला गया। मैं नहीं मानता कि अपने इस पृथक्करण से मुझे कोई हानि हुई। मैंने कोई दो वर्ष अपनी गंवाई हुई स्थितियों की निरर्थक रक्षा करने में खो दिये, मगर एक पूरा का पूरा युग प्राप्त कर लिया..."

"और मुख्य इंजीनियर का पद भी," नेमिरोव्स्की ने विषाक्त फबती कसी।

"जी हां, और हमारे सबसे महत्त्वपूर्ण और दायित्त्वपूर्ण निर्माण-कार्यों में से एक में भाग लेने का अवसर भी।"

"मैंने आपको टोके बिना धीरज के साथ आपकी बात को सुना है। अगर आपने यह भावोच्छ्वास प्रदर्शन मात्र मेरे आगे मुझे जेल भेजने का नैतिक औचित्य सिद्ध करने के लक्ष्य से किया है, तो आपने अपनी मेहनत और वक्तृत्व शक्ति को बेकार ही नष्ट किया। मैं बात को पूरी तरह से समझता हूं—आपके लिए मेरा मामला आपकी भावी उन्नति का प्रश्न है। मगर, ऐसा लगता है कि एक बात को आप अनुभव नहीं कर रहे—वह यह कि हमारी यह निर्माण परियोजना एक अंधकूप है और उन्होंने आपको यहां जान-बूझकर इसी लिए रखा है कि आप अपनी गरदन अपने-आप

तोड़ लें। तीन-चार महीने के भीतर यह बात हर किसी के आगे साफ़ हो जायेगी कि योजना की पचास प्रतिशत भी पूर्ति नहीं होगी – आपको अपने पूर्वगामियों से जो विरासत मिली है, उसके दृष्टिगत यह व्यावहारिक दृष्टि से असंभव है। तब वे आपको निकाल बाहर करेंगे – जैसा उन्होंने चेत्वेर्याकोव के साथ किया, या – जो और भी ज्यादा संभव है – वे आप पर कुछ नये इलजाम लगा देंगे। याद रखिये – निर्माण-कार्य के सभी विभागों में हर चीज की इतनी उपेक्षा की गई है, हिसाब-किताब इतना गड़बड़ है, ख़र्च इतना ज्यादा है कि अगर वे स्थिति को साफ़ करने की सोच ही लें, तो कितना भी भावोच्छ्वास प्रदर्शन आपको इस झंझट से निकाल नहीं पायेगा। और मेरा ख़याल है कि इस बात को आप ख़ुद भी अच्छी तरह समझते होंगे कि आपके अतीत के दृष्टिगत, अब, आपके पहले ही काम में मुसीबत में पड़ने का, किसी फ़ौजदारी मामले में पड़ने का मतलब, बात को नरमी से भी कहें, तो भी – होगा आपके सारे भविष्य का अंत। तो आपके आगे यहां से बेदाग़ निकल पाने का बस एक ही रास्ता है – पतझड़ तक – सच तो यह है कि जितनी जल्दी, उतना अच्छा – किसी भी क़ीमत पर अपना किसी और जगह तबादला करवा लें। फिर सारा झंझट आपके उत्तरवर्ती को भुगतना होगा। मैं जानता हूं कि आपकी स्थिति में पड़े आदमी के लिए अपना यहां से तबादला करवा पाना लगभग असंभव है। इस काम में मैं आपकी सहायता कर सकता हूं। कृषि की जन-कमिसारियत में मेरे अच्छे संबंध हैं। यहां से निकल पाने के बाद मैं मास्को में आसानी से काम पा सकता हूं और आप इस बारे में निश्चिंत हो सकते हैं कि मैं आपका भी वहां तबादला करवा लूंगा। मास्को में अकेली परेशानी रहने की जगह पाने की ही है। मेरे पास शहर के बिलकुल केंद्र में चार कमरे का सुसज्जित फ़्लैट है। यह रहा उसका परमिट," उसने मेज पर एक काग़ज़ रखा, "यह फ़्लैट आपकी सेवा में प्रस्तुत है। मेरी राय में आप इस पर ग़ौर कर लें – मास्को में निर्विघ्न काम या यहां फ़ौजदारी मुक़दमा। मेरे ख़याल में चुनाव कोई बहुत मुश्किल तो नहीं होना चाहिए। क्या सोच रहे हैं कि मैं शायद अतिशयोक्ति कर रहा हूं? मेरे मामले में आयोग का फ़ैसला कुछ दिनों के लिए स्थगित कर दीजिये और इस बीच यहां के हिसाब-किताब की हालत को जरा अच्छी तरह से देखिये। अगर आपको यह लगे कि मेरा कहना ग़लत था, तो आप मुझे 'पृथक्करण' के लिए

भेज सकते हैं – उसके लिए काफ़ी वक़्त है। लेकिन, यहां की हालतों से अधिक परिचित होने पर अगर आपको अपने रोंगटे खड़े होते लगें, तो याद कर लीजिये – मास्को में काम और सुसज्जित फ़्लैट... ख़ैर, मैं चला। क्षमा कीजिये कि मैंने आपको कष्ट दिया। आवश्यकता पड़ते ही मुझे बुला भेजियेगा – मैं आपके पड़ोस में ही रहता हूं।"

"देखता हूं कि आपसे बातें करते हुए सचमुच मैं अपना समय नष्ट करता रहा हूं। मैंने आपको रास्ते से भटका हुआ आदमी समझा था, लेकिन देखता हूं कि आप तो एकदम कमीने हैं। निकल जाइये एकदम यहां से और अपने इस काग़ज़ को भी साथ ले जाइये, नहीं तो मैं आपको फ़ौरन गिरफ़्तार करवा दूंगा!"

मई दिवस का चमत्कार

उस रात पड़ोसी के दरवाज़े पर खटखटाहट और बरामदे में दबी हुई आवाज़ों से क्लार्क की नींद खुल गई। नेमिरोव्स्की दंपति ने दरवाज़ा खोलने में काफ़ी देर लगाई। खटखटाहट और भी ज़ोरदार हो गई। आख़िर ताले की झनझनाहट सुन पड़ी।

क्लार्क करवट बदलकर सोने की कोशिश करने लगा। नेमिरोव्स्की के फ़्लैट से क़दमों की, बातचीत की अस्पष्ट आवाज़ें आ रही थीं, फिर चीज़ों के सरकाये जाने का शोर आने लगा। लगता था, जैसे नशे में चूर लोग कमरे में लड़खड़ाते घूम रहे हैं और फ़र्नीचर से टकरा रहे हैं।

क्लार्क ने सोने के निष्फल प्रयास में अपने सिर को तकिये में गाड़ दिया, लेकिन नींद एक बार जो टूटी, तो ऐसी कि लौटने का नाम ही न ले। उजाला होने लगा था, मगर पड़ोस के फ़्लैट में हंगामा जारी रहा। आख़िर दरवाज़ा धड़ाक से बंद हो गया और रात्रिचर अतिथि चले गये। क्लार्क ने करवट बदलकर दीवार की तरफ़ मुंह कर लिया। नींद के झोंके की तरह थकान उसके सिर में व्याप्त होने लगी, जिससे सामान्यतः स्थिर वस्तुएं हिलती-डुलती हुई अपने रूप गंवाने लगीं। सिर के ऊपर मक्खियों की एकरस भिनभिन सिने कैमरा के लगातार घूमते हैंडल की तरह थी और नींद ने अपने आपको सैकड़ों टुकड़ों से जुड़कर बनी एक टिमटिमाती असंबद्ध फ़िल्म में गूंथ लिया। उसने दिमाग़ को थका दिया था, जैसे आंखें मिचकाने

से निगाह थक जाती है। आखिर जब निरर्थकता के आच्छादक जाल से एक धुंधला सा प्लॉट झांकने लगा, तभी दरवाज़े पर खटखट हुई।

क्लार्क बिस्तर में उठकर बैठ गया।

"अभी सो ही रहे हैं?" बाहर से मर्री की आवाज़ आई, "नौ बज चुके हैं।"

क्लार्क ने दरवाज़ा खोला।

"क्या सचमुच इतनी देर हो गई?"

"चलिये, कोई बात नहीं, आज तो छुट्टी ही है। मैं तो आपको मई दिवस की बधाई देने के लिए आया था।"

"क्या कह रहे हैं आप—क्या आज पहली मई है?"

"कोई सुने आपकी बातें! देखता हूं कि आप अज्ञात चित्रकार की धमकियों की तरफ़ ज्यादा ध्यान नहीं दे रहे। कुछ भी हो, आपकी नींद पर तो उनका कोई असर नहीं ही पड़ा।"

"मैं रात बहुत देर से सो पाया। मेरे पड़ोसी के यहां मेहमान आये हुए थे और रात भर शोर मचाकर उन्होंने तूफ़ान खड़ा कर रखा था।"

"इस बात में मुझे शक है कि रातवाले मेहमान निमंत्रित मेहमान थे। आपके पड़ोसियों को कल रात गिरफ़्तार कर लिया गया।"

"क्या मतलब—गिरफ़्तार कर लिया गया? मगर किसलिए?"

"कहा जाता है कि तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों के लिए, मगर मैं आपको ठीक नहीं बता सकता।"

"लेकिन आपको कैसे मालूम?"

"अरे, क्लार्क साहब, आप निर्माणस्थली पर रहते हैं और यह नहीं देखते कि आपके आसपास क्या हो रहा है। क्या आप अपने काम में सचमुच इतने तल्लीन हैं?"

"मेरी गपशप में बिलकुल भी दिलचस्पी नहीं, बस, यही बात है," क्लार्क ने रूखे स्वर में कहा।

"और कैसी बढ़िया गपशप! आपकी नाक के नीचे से ही उस इंजीनियर को गिरफ़्तार किया जाता है, जो यहां के पूरे मैकेनिकल डिपार्टमेंट का अधिकारी था और इस बात से आपमें ज़रा भी दिलचस्पी नहीं पैदा होती?"

मर्री ने माचिस निकाली और अपने पाइप को सुलगा लिया।

"ख़ैर, यह बताइये कि पहली मई आप किस तरह बिताने की सोच रहे हैं? मैं आपको यह राय नहीं देता कि आप इन धमकियों की बिलकुल ही उपेक्षा कर दें।"

"क्या आप सचमुच यह समझते हैं कि हम पर हमला किया जा सकता है?"

"भला, यह मैं आपको कैसे बता सकता हूं कि वे क्या करेंगे? चाहे कुछ भी बात हो, मैं आपसे यह कहने के लिए आया था कि आज का दिन हमें साथ-साथ बिताना चाहिए। हमें मैनेजमेंट के वादों पर जरूरत से ज्यादा निर्भर नहीं करना चाहिए। उनकी लापरवाही के कारण बार्कर कोई ख़तरा मोल लेना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने कल अपना बोरिया-बिस्तर समेटा और यहां से चले गये।"

"क्या वह सचमुच चले गये?"

"बेशक चले गये।"

"आपने बार्कर को यह क्यों बताया कि हम सब को वही ख़त मिले थे?"

"वह मेरे कमरे में आये और उन्होंने दूसरे ख़त को मेरी मेज पर पड़े देख लिया। लेकिन यह मानना होगा कि मैंने उन्हें रोक रखने की हिम्मत नहीं कर पाया। वैसे भी उनका फ़ैसला बिलकुल अटल था। उनका कहना था, 'निर्माणस्थली पर पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित हो जाये, फिर ये लोग विदेशी विशेषज्ञों को बुलायें।'"

"ख़ैर, कुल मिलाकर उनका इस तरह सोचना ग़लत नहीं है।"

मर्री क्लार्क के पास गया और उसके कंधे पर अपना हाथ रखकर बोला:

"आइये, बिल्कुल खुलकर बातें करते हैं। आपको यह दिखाना पसंद नहीं कि अमरीकी डर गये हैं। लेकिन इसके लिए अगर हम में से एक भी रुक जाये, तो वही काफ़ी होगा। जहां तक मेरी बात है, मुझे यह देश अच्छा लगता है। यह मुझे किसी हद तक मेक्सिको की याद दिलाता है, जहां मैंने कई साल बिताये हैं—अपनी जिंदगी के सबसे अच्छे साल, जब मैं जवान था। मैं स्वभाव से ही आवारा हूं—और जोखिमबाज भी। ख़तरा हिम्मत को बढ़ाता है और बोरियत का अच्छा इलाज है। लेकिन आप

जोखिम क्यों मोल लेते हैं? मास्को में आपको किसी और काम पर लगा दिया जायेगा।"

क्लार्क ने मर्री को कसकर चिपटा लिया और उसकी कमर को हलके से थपथपाया।

"अरे, छोड़ो भी, यार! मैं समझ गया था कि तुम अच्छे आदमी हो, और, इस क्षण को मैं कभी नहीं भूलूंगा। लेकिन, हां, मैं वापस नहीं जा रहा और हम यहां साथ जमे रहेंगे। आओ, हाथ मिलायें—आज से हम दोस्त हैं।"

"जैसी आपकी मर्जी," क्लार्क के हाथ को भींचते हुए मर्री ने कहा। "बहरहाल, मैं आपको दिन अपने साथ गुज़ारने का सुझाव देने आया था। दो पिस्तौलों के साथ दो आदमी और एक पिस्तौलवाले एक आदमी में बहुत फ़र्क़ है... हाथ-मुंह धोकर और कपड़े बदलकर मेरे कमरे में आ जाइये। मैं जाकर इस बीच शेव कर लेता हूं—एक तो इसलिए कि आज त्योहार है और दूसरे, इसलिए कि हमारे सैनिकों को भी मोर्चे पर जाने के पहले शेव करने की अच्छी आदत थी... तो, ठीक है, मैं चला। तैयार होकर आ जाइये।"

क्लार्क मुंह से सीटी बजाता हुआ कपड़े बदलने लगा। वह बहुत विचलित हो गया था और अपनी भावुकता को दिखाना नहीं चाहता था। उसे इस दिन से कोई शिकायत नहीं थी, जो उसकी जान को लेने के ख़तरे का पैग़ाम लेकर आया था, मगर इसके स्थान पर जिसने उसे आज मित्रलाभ करवाया था।

दरवाजे पर खटखट हुई। दस्तक पोलोज़ोवा ने दी थी।

उस झगड़े के बाद से वह विशेष अवसरों पर ही उसके पास आती थी। अनुवादिका के काम से पोलोज़ोवा मुक्त न हो सकी। कोम्सोमोल समिति ने, नासिरुद्दीनोव के सुझाव पर, बिना आज्ञा अपना काम छोड़ देने के लिए उसकी सख़्त भर्त्सना की थी और उसे तुरंत अपने काम पर वापस जाने का आदेश दिया था। न आंसुओं से काम चला, न मुंह फुलाने से। बैठक के बाद उसे घर पहुंचाते समय और रोनी बच्ची जैसे उसके आचरण के लिए उसे मजाक में चिढ़ाते हुए नासिरुद्दीनोव ने उससे कहा:

"मरियम, सुनो, हर कोम्सोमोली की आन यही है कि वह अपने सभी कर्तव्यों को पूरा करे। यह कहीं नहीं कहा गया है कि काम पूर्णतः सुखद

ही होगा। किसी पराये वर्ग के व्यक्ति पर नाराज़ होना भी हास्यास्पद है।"

पोलोज़ोवा सिनीत्सिन के पास जाकर अपील करने की हिम्मत नहीं कर पाई। वह अपने काम पर अगले दिन ही इस तरह से लौट आई, मानो कुछ हुआ ही नहीं था—अलबत्ता क्लार्क के साथ उसके संबंध अत्यंत औपचारिक हो गये।

यही कारण था कि आज उसके इतनी जल्दी आने से क्लार्क अचंभे में आ गया।

पोलोज़ोवा ने नेमिरोव्स्की के बारे में बातें करना शुरू किया और संक्षेप में बताया कि उसे क्यों गिरफ़्तार किया गया है। क्लार्क ने बेचैनी का अनुभव करते हुए स्टूल पर से एक सिगरेट उठाया और मेज़ पर पड़ी माचिस को उठाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

बाद में क्या हुआ, क्लार्क फिर उसे पूरी तरह से याद नहीं कर सका। बहुत करके वह इस तरह हुआ होगा: तीली निकालने के लिए उसने माचिस की डिबिया को खोला—जो एक ऐसी क्रिया है, जिसे हम उसके अलग-अलग हिस्सों का विश्लेषण करने के झंझट में पड़े बिना बिलकुल यंत्रवत् करते हैं।

लेकिन बाद में जो हुआ, उसने यांत्रिक हरकतों की इस शृंखला को तोड़ दिया। डिबिया से तीली की जगह पीले रोयेंदार टांगोंवाली एक लंबी-सी मकड़ी उछली और छलांग मारकर क्लार्क के कोट पर जा चढ़ी। क्लार्क ने माचिस को गिरा दिया, एक क़दम पीछे हटा और इस घिनौने कीड़े को झाड़ फेंकने के लिए अपना हाथ उठाया। लेकिन तभी पोलोज़ोवा ने तेज़ आवाज़ में चिल्लाकर कहा: "उसे हाथ मत लगाइये!" और क्लार्क का हाथ अधर ही उठा रह गया। मकड़ी दो-तीन छलांगों में क्लार्क की टांग से फ़र्श पर कूद गई और क्षण भर को मानो सोच में खड़ी हो गई। यह क्षण ही उसके लिए घातक था। पोलोज़ोवा ने मेज़ पर से एक मोटा शब्दकोश उठाया और अपनी पूरी ताक़त से उसे मकड़ी पर दे मारा। जब उसने नीचे झुककर शब्दकोश को उठाया, तो कुचली हुई मकड़ी अपनी रोयेंदार टांगों को हवा में असहायतापूर्वक झटक रही थी।

पोलोज़ोवा स्टूल पर ढह गई।

क्लार्क को इस बात का अस्पष्ट सा अहसास था कि कोई बहुत गंभीर

घटना घट गई है, मगर वह निश्चय के साथ नहीं कह सकता था कि वह क्या है। उसने प्रश्नभरी आंखों से पोलोज़ोवा के पीले चेहरे की तरफ़ देखा।

"क्या बात है? आप इस तरह पीली क्यों पड़ गई हैं? क्या यह ज़हरीली है?"

"जी हां। यह फ़लांगा है। कहते हैं कि इसका विष सांघातिक होता है।"

"अच्छा, यह बात!"

"यह आई कहां से—इस डिबिया में से?"

क्लार्क ने झुककर फ़र्श पर से माचिस को उठाया।

"जी हां, इसी माचिस में से। मैं इसमें से तीली निकाल रहा था... भई, वाह!"

"आप हंस क्यों रहे हैं?"

"मैं फ़ौरन समझ नहीं पाया था। बात यह है कि आज पहली मई है—उन गुमनाम पत्रों के लेखक की दी हुई तारीख़। हम अभी-अभी यही बात कर रहे थे कि वह अपने वादे को पूरा करेगा या नहीं। तो, वादा तो उसने पूरा कर दिया और सो भी इतनी चालाकी के साथ—असली एशियाई तरीक़े से। साला कहीं का! मगर उसने यह माचिस यहां मेरे पास कैसे रखी? यह है सचमुच चकरानेवाली बात!"

वह उत्तेजना के साथ कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

"मैं भी नहीं समझ पा रही हूं। मैं जानती हूं कि आपके मकान पर एक विशेष पहरेदार लगा दिया गया है। यह बिलकुल समझ में न आनेवाली बात है। अगर आप अब काम छोड़ दें और यहां से..."

"इसकी चिंता छोड़िये—मैं नहीं जा रहा। देखता हूं कि किसीने मन में मुझे यहां से भगाने की ठान ली है। मुझे तब लोगों की बात मानने की आदत नहीं, जब वे जबरदस्ती मेरी रजामंदी हासिल करने की कोशिश करते हैं। मैं यहीं रहूंगा। मैं जानता हूं कि ये सज्जन कौनसा खेल खेलने की कोशिश कर रहे हैं। ये लोग ऐसे मूर्ख नहीं हैं—एक अमरीकी इंजीनियर को जान से मार दिया और, फिर विदेशों में अफ़वाह उड़ा दी कि सोवियत संघ में विदेशी विशेषज्ञों का जीवन सुरक्षित नहीं है। वास्तव में यह बहुत ही सुविचारित योजना है। बस, अकेली दिक़्क़त की बात यह है कि इन

सज्जनों ने इसके लिए मुझे ही चुना है। अभाग्यवश, अपनी सारी कोशिशों के बावजूद, मैं वार्कर का जाना नहीं रोक पाया, मगर आप मेरी तरफ़ से साथी सिनीत्सिन से यह कह सकती हैं कि अगर मेरा सहकर्मी अपने मन में यह ठान ले कि खुले आम उन कारणों को बताये, जिनकी वजह से उसे यहां से जाना पड़ा था, तो मैं किसी भी समय अख़बारों में यह कहने के लिए तैयार हूं कि यह सब झूठ और बकवास है।"

क्लार्क ने देखा कि पोलोज़ोवा की बड़ी-बड़ी आंखें उस पर टिकी हुई हैं – इस बार सख़्ती से नहीं, बल्कि एक सहानुभूतिपूर्ण अचरज के साथ। उसे लगा कि यह वह अवसर है कि जब वह एकबारगी अपने दोषानुभूति के उस भाव का अंत कर सकता है, जिसका वह पोलोज़ोवा के साथ अपने झगड़े के समय से अनुभव करता आ रहा है। इस बात की अनुभूति से उसे एक अस्पष्ट सा हर्ष हुआ। उसे लगा कि वह बड़ी उदारता दिखा रहा है – उसकी स्थिति में हर कोई व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता – और इस ख़याल से उसका मन और भी ख़ुश हो गया। उसने मेज़ पर से अनजले सिगरेट को उठाया, मेज़ की दराज़ से माचिस को निकाला, उसे सहज सावधानी की मुद्रा से धीरे से खोलते हुए और इस बात की तसल्ली करते हुए कि उसके भीतर बस तीलियां ही हैं, उस में से एक तीली निकाली। उसने देखा कि पोलोज़ोवा की घबराहटभरी निगाहें उसकी हर हरकत का अनुसरण कर रही हैं और उसने बड़ी लापरवाही दिखाते हुए सिगरेट को सुलगा लिया।

"साथी क्लार्क..." पहली बार उसने क्लार्क को साथी कहा था और कानों को यह संबोधन सुअर्जित सम्मान जैसा लगा था, "अगर आपका कोई विशेष कार्यक्रम न हो, तो आज का दिन मुझे अपने साथ बिताने दीजिये। आपको यह बात उपहासजनक लग सकती है, मगर आज आप पर कहीं कोई और आपदा आ पड़े, तो स्थानीय परिस्थितियों से आपकी अपेक्षा अधिक परिचित होने के कारण मैं शायद उपयोगी साबित हो सकूं।"

"आप यह क्यों समझती हैं कि यह मुझे उपहासप्रद लगेगा? आपने तो आज एक तरह से मेरी जान ही बचाई है, अगर आप चिल्लाई न होतीं, तो मैंने अवश्य ही इसे अपने हाथ से झटक दिया होता और इस तरह मैं मारा जाता। आज का दिन आपके साथ बिताना मेरे लिए बड़ा सुखद होगा,

मुझे बस यही हिचक है कि मेरी मौजूदगी से आप पर भी ख़तरा आ सकता है।"

"चिंता मत कीजिये। कुछ भी हो, मुझे दिन भर शांति नहीं मिल पायेगी।"

"अगर आप इतना आग्रह कर रही हैं, तो..."

"आप राज़ी हैं? आइये, इसी बात पर हाथ मिलायें," उसने अपना हाथ बढ़ा दिया। "जानते हैं, आप बहुत ही अच्छे आदमी हैं, इसीलिए मैं आपसे हाथ मिलाना चाहती हूं। मुझे लगता है कि हम दोस्त रहेंगे।"

"मुझे तो यह लग रहा है कि हम पुराने मित्र हैं। जानती हैं, आज के दिन को मैं एक ज़माने तक नहीं भूल सकूंगा। सिर्फ़ इस मनहूस कीड़े के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि आज मुझे दो मित्र मिले। मर्री ने भी आकर यह सुझाव दिया था कि मैं आज का दिन उनके साथ बिताऊं।"

अचानक वह पीला पड़ गया।

"अरे, मर्री! कहीं उन्हें भी अपनी मेज़ पर माचिस न रखी मिली हो!"

क्लार्क दरवाज़े से तेज़ी से निकला और सड़क को दो छलांगों में पार करके मर्री के फ़्लैट की ओर भागा। पोलोज़ोवा उसके पीछे-पीछे भागी।

मर्री का कमरा भीतर से बंद नहीं था। क्लार्क ने दरवाज़े को धकेलकर खोला और देहली पर ही खड़ा हो गया। मर्री झुका हुआ खड़ा फ़र्श पर किसी चीज़ की तरफ़ देख रहा था। वह एक बड़ी-सी मकड़ी थी।

"देखिये, मैंने अभी-अभी क्या मारा है," मर्री ने अपना सिर उठाते हुए कहा, "अचरज की बात यह है कि यह माचिस में से कूदी थी।"

क्लार्क सहारे के लिए दरवाज़े पर टिक गया।

"मैं इसी की चेतावनी देने के लिए लपका था। यह फ़लांगा है।"

"वाह! क्या यह ज़हरीली है?"

मर्री अपने बायें हाथ को आंखें टिकाकर देखने लगा।

"इसने आपको डंक तो नहीं मारा?"

"पता नहीं... मैंने इसे हाथ से नीचे झटक दिया और फिर पैरों से कुचल दिया।"

क्लार्क ने मर्री के हाथ को कसकर पकड़ा और उसे खिड़की के पास ले गया। हाथ के घुमाव पर एक लाल उभार नज़र आ रहा था।

तभी दरवाज़े पर पोलोज़ोवा पहुंच गई।

"इन्होंने उसे मार दिया!" क्लार्क ने फ़र्श की तरफ़ इशारा करते हुए पोलोज़ोवा से चिल्लाकर कहा। "आइये, ज़रा इनका हाथ देखिये—उस पर डंक जैसा कुछ निशान है।"

पोलोज़ोवा ने क्लार्क को अलग धकेल दिया और झुककर हाथ का मुआयना करने लगी।

"मुझे ज़रा भी तकलीफ़ नहीं हो रही है..."

मर्री शांत नज़र आने की भरसक कोशिश कर रहा था, अपने मुंह के कोनों में उसने मुसकराने तक की कोशिश की, लेकिन उसके होंठ कांप रहे थे।

एक कष्टदायी ख़ामोशी छा गई। पोलोज़ोवा ने सारे हाथ पर बड़ी सावधानी से अपना हाथ फेरा। एकदम ज़र्द हुए क्लार्क ने यांत्रिक रूप से अपने माथे पर रूमाल फेरा, जिस पर अचानक पसीने की बूंदें फूट पड़ी थीं।

"नहीं, यह फ़लांगा का डंक नहीं है," पोलोज़ोवा की हर्षपूर्ण आवाज़ अचानक गूंज उठी—तनावपूर्ण सन्नाटे में यह सुनने में ऐसी लगी, मानो अदालत ने अभियुक्त को बरी करने का हुक्म सुना दिया हो। "अगर यह फ़लांगा का डंक होता, तो सारा हाथ सूज जाता और आपको बेहद दर्द होता। आपको शायद मच्छर ने या किसी और हानिरहित कीड़े ने काटा होगा। घबराने की कोई बात नहीं है। और कृपया भविष्य में हर किसी जानी-अनजानी चीज़ को हाथ से मत झाड़ियेगा।"

ख़ूब हंसते और बातें करते हुए उसने उन्हें बिच्छुओं के बारे में दो-तीन मज़ेदार क़िस्से सुनाये। क्लार्क ने मन में सोचा कि वह असल में मज़ाक करने के मूड में नहीं है, बल्कि सिर्फ़ वातावरण को हलका करने के लिए ही ऐसा कर रही है। इसमें उसकी सहायता करने के इरादे से वह ख़ूब ज़ोर-ज़ोर से और दिल खोलकर हंसा। मर्री ने भी ख़ूब ठहाके लगाये।

मज़ाक करते-करते ही पोलोज़ोवा ने मेज़ पर से एक काग़ज़ उठाया और कुचली हुई फ़लांगा को उस पर उठाकर उसे पास ही पड़ी एक माचिस में डाल दिया।

जब पोलोज़ोवा क्लार्क के कमरे में दूसरी फ़लांगावाली माचिस को लाने और इस घटना के बारे में सिनीत्सिन को ख़बर देने के लिए चली गई, तब क्लार्क ने मर्री से कहा:

"इसी ने मेरी ज़िंदगी बचाई।"

"बहुत तेज़ लड़की है," मर्री ने सराहना भरी आवाज़ में कहा। वह कमरे के बीच में ठहर गया था। "तो, यह था हमारा मई दिवस का प्रतिश्रुत चमत्कार! बहुत सफ़ाई का काम था, भई! फिर भी, यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि ये माचिसें वे हमारे कमरों में कब और क्योंकर रख पाये। यह तो असली उस्ताद का काम है।"

"हां, यह सचमुच हमारे साथ काफ़ी गंभीर मज़ाक किया गया है। सच पूछो, तो मुझे सचमुच ख़ुशी है कि वार्कर चला गया है। मैं लगातार उसे यहां रुकने के लिए राज़ी करने की कोशिश कर रहा था, और आज कहीं उसे इनमें से किसी कीड़े ने काट लिया होता, तो मेरी हालत देखने लायक़ होती! ज़ाहिर है कि यह चित्रकार हमें यहां से भगाने के बारे में काफ़ी गंभीर है। ख़ैर, सुबह आपने जो फ़ैसला किया था, उसे तो आप नहीं बदल रहे?"

"क्या आप बदल रहे हैं?"

"मैं तो यहीं रुकूंगा!"

"ठीक है! रुकना ही चाहिए! बस, यह मत समझ लीजियेगा कि आज सुबह की घटना के बाद मैं वार्कर की तरह खिसक जाऊंगा और आपको यहां अकेला छोड़ जाऊंगा। सच तो यह है कि यह सारा धंधा मेरे कुतूहल को जगाने लगा है। जासूसी कहानियों को मैं हमेशा से पसंद करता आया हूं। मैं ख़ुद ही इस रहस्य की जड़ में जाने की कोशिश करूंगा–अपने मैनेजमेंट की सहायता के बिना, जो ज़ाहिर है कि जासूसी के मामले में कोई बहुत उस्ताद नहीं है।"

"ठीक है, चलिये, इस रहस्य को साथ-साथ सुलझाने की कोशिश करते हैं।"

फ़लांगों के शिकारी

इस बीच पोलोज़ोवा मई दिवस की सजावटों से अलंकृत सड़क पर अपने हाथ में दोनों माचिसें लिये चली जा रही थी। सिनौत्सिन उसे अपने घर पर नहीं मिला था, और इस बात को महसूस करते हुए कि इस मामले में तनिक भी विलंब नहीं किया जा सकता, उसने तय किया कि चेका

के स्थानीय प्रमुख से उसके घर जाकर मिले। वह बड़े अरीक़ के किनारे एक सफ़ेद मकान में रहता था, जिसके पास चिनार के दो पेड़ थे।

मई दिवस का जलूस अभी-अभी ही सड़क से गुज़रकर गया था, और ख़ाली मंच के आगे धूल का एक बादल ऊपर उठ रहा था, मानो ट्रैक्टरों की खड़खड़ाहट से रेगिस्तान भी जागृत हो गया था और आसपास के गांवों के सामूहिक कृषकों के पीछे-पीछे वह भी जलूस में भाग लेने के लिए आ गया था। सड़क के दूसरे छोर से घंटियों की हलकी टनटनाहट आ रही थी। पीपों से लदा ऊंटों का एक काफ़िला मंथर चाल से चला आ रहा था। ज़ाहिर था कि वह रास्ते में ही कहीं अटक गया था और अब वह क़सबे में उस अप्रत्याशित और बेमेल अतिथि की तरह प्रवेश कर रहा था, जो तब पहुंचता है, जब दूसरे अतिथि जा रहे होते हैं।

पोलोज़ोवा चढ़ाई पर से अरीक़ की तरफ़ उतरने लगी। पुलिया पर लाल टाइयां बांधे बच्चों की एक भीड़ उससे आगे निकल गई। बच्चे जलूस से वापस आ रहे थे और परेड के बाद जोश से भरे हुए अभी भी किसी चीज़ के बारे में ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। बच्चों की इस भीड़ में उन्हें पहचान पाना बहुत आसान था, जिन्होंने आज ही पायनियर-प्रतिज्ञा ग्रहण की थी और जिन्हें आज ही लाल टाइयां प्रदान की गई थीं। अनभ्यस्त लाल कपड़े से घिरे बड़ी-बड़ी आंखोंवाले अपने सांवले सिरों को वे जिस शान के साथ ऊपर उठा रहे थे, उससे उन्हें दूर से ही चीन्हा जा सकता था।

चेका-प्रमुख अपनी पत्नी और दो सहकारियों के साथ बरामदे में चाय पी रहा था। मेज़ पर एक बृहदाकार ठेठ रूसी समोवार – क्रांतिपूर्व रूस की एकमात्र धमन भट्ठी – काली-काली चिनगारियां उगल रहा था।

समोवार के आकार को देखते ही कहा जा सकता था कि प्रमुख चाय पीने का शौक़ीन है और उसे पीना जानता भी है। वह तश्तरी से छोटी-छोटी चुस्कियां लगाकर चाय पी रहा था। उसके सहकर्मी प्यालों से चाय सुढ़क रहे थे। तीनों ने ही ताज़ा इस्तरी की साफ़ सफ़ेद वरदियां पहन रखी थीं।

तीनों अभी-अभी ही जलूस से वापस आये थे – उनकी वरदियों की समारोही सफ़ेदी इसकी गवाही दे रही थी – और चायपान करके वे गरमी से अपनी डटकर रक्षा कर रहे थे, जिसने जैसे बरामदे पर सीधा धावा बोल रखा था।

पोलोज़ोवा ने प्रमुख से मिनट भर के लिए अपने अध्ययन कक्ष में चलने का अनुरोध किया और उसे संक्षेप में बताया कि सुबह क्या हुआ था। प्रमुख ने बीच-बीच में सवाल पूछते हुए उसकी बात को ध्यानपूर्वक सुना। उसके प्रश्नों से यह स्पष्ट था कि वह पिछले पत्रों के इतिहास से पूरी तरह से परिचित है। उसने पोलोज़ोवा के हाथों से दोनों माचिसें ले लीं, मेज पर दो काग़ज़ फैलाये और हर काग़ज़ पर एक-एक फ़लांगा को रख दिया। फिर उसने अपनी दराज़ में से एक आतशी शीशा निकाला और फ़लांगों का बारीकी से परीक्षण करना शुरू किया। पोलोज़ोवा ने इस बात को ख़ासकर देखा कि उसकी भौंहें किस तरह सिकुड़ गई हैं।

"दिलचस्प बात है! आपने कौनसी फ़लांगा को मारा था?"

पोलोज़ोवा असमंजस में पड़ गई।

"मैं दोनों माचिसों को एक ही हाथ में लाई थी और अब मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकती। मैंने यह नहीं सोचा था कि इससे कोई फ़र्क़ पड़ जायेगा।"

प्रमुख ने टेलीफ़ोन का रिसीवर उठाया और राजकीय फ़ार्म को फ़ोन किया।

"ज़रा मैनेजर से मिलाइये। हां, नमस्ते! मैं कोमारेंको बोल रहा हूं। आपके यहां एक लड़की है – प्रयोगशाला की प्रमुख। वह प्रकृतिविद भी है, है न? अहा, मेरा यही ख़याल था! हमें बस, यही चाहिए था। सुनिये, उसे एक कार में बैठाइये और डेढ़ घंटे के भीतर मेरे पास भेज दीजिये... ख़ैर, ख़ुदा हाफ़िज़!" उसने रिसीवर रख दिया।

"तो आपके अमरीकियों का क्या हाल है? डर के मारे मरे जा रहे हैं, है न?"

"जी नहीं, इसके विपरीत बड़ी अच्छी तरह से पेश आ रहे हैं।"

"मेरे ख़याल में आपने उन्हें यह तो बता दिया होगा कि फ़लांगा का डंक ज़हरीला नहीं होता?"

पोलोज़ोवा संकोच में पड़ गई।

"लोग कहते हैं कि इसका विष सांघातिक होता..."

"लोग तो यह भी कहते हैं कि चूज़े का दूध दुहा जा सकता है। और, बिटियाजी, आपको इस तरह की बकवास को दुहराते शरम आनी चाहिए। यह कोई बहुत पेचीदा मामला नहीं है – इसका बस, एक उद्देश्य है और

वह है अमरीकियों को 'एशियाई विभीषिकाओं' से डराना। श्रम साधारण और परिणाम असाधारण। हमारे यहां फ़लांगों की भला क्या कोई कमी है! मैदान में चले जाओ और चाहे जितनी पकड़ लो। तरीक़ा सस्ता भी है और असरदार भी। आनेवाले लोग इनसे ऐसे डरते हैं, जैसे प्लेग से—क़राक़ुर्तों के बारे में क़िस्से ही उन्होंने सुने होते हैं... ख़ैर, अगर ऐसी कोई और बात हो, तो कृपया मुझे बताना न भूलियेगा।"

"साथी कोमारेंको, ऐसी कोई बात फिर नहीं होनी चाहिए। अगर अमरीकी अपना बोरिया-बिस्तर बांधकर चले जाते हैं, तो आप ख़ुद समझ सकते हैं कि कैसी बदनामी होगी। एक तो जा भी चुका है। सिनीत्सिन ने उन्हें पूर्ण सुरक्षा का आश्वासन दिया था। ऐसे क़दम उठाने चाहिए कि इस तरह की बात फिर कभी न होने पाये..."

"देखिये, उत्तेजित मत होइये—उत्तेजना से चेहरे का रंग ख़राब हो जाता है," प्रमुख ने फ़लांगों को माचिसों में रखते और उन पर पेंसिल से निशान बनाते हुए उसकी बात को काट दिया।

"मैं उत्तेजित नहीं हो रही हूं। मैं तो सिर्फ़ यह जानना चाह रही हूं कि क्या इन गुमनाम ख़तों के लेखक का पता चलाने के लिए कुछ किया गया है। अमरीकी लोग यह जानने के बहुत उत्सुक हैं। अगर हम उन्हें यह बता पाते कि हमें कुछ सुराग़ मिल गया है, तो बड़ा अच्छा रहता।"

प्रमुख ने अपनी सौजन्यपूर्ण आंखें उठाईं और पोलोज़ोवा की तरफ़ देखा:

"आप अमरीकियों से कुछ भी नहीं कहेंगी। उनसे मत कहिये कि आप यहां आई थीं और उन्हें मत बताइये कि हमने क्या बातें की हैं।"

"मुझे यह सिखाने की ज़रूरत नहीं है," पोलोज़ोवा ने बुरा मानते हुए कहा, "मैं आपके काम में हस्तक्षेप करना नहीं चाहती, साथी कोमारेंको, लेकिन मेरा ख़याल है कि चूंकि अपने अनुवाद-कार्य के कारण मुझे पूरे-पूरे दिन क्लार्क के साथ बिताने पड़ते हैं, और चूंकि यह संभव है कि उसकी जान लेने की कोशिश मेरी मौजूदगी में भी की जाये, इसलिए शायद यह उचित ही रहे कि आप मुझे कुछ निर्देश दे दें। कम से कम आप मुझे यह तो बता ही सकते हैं कि किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए।"

प्रमुख ने अपना सिर हिलाया।

"साथी पोलोज़ोवा, आप हमारे किसी काम की नहीं। आप ख़ुद ही देख लीजिये – मेरे पास आने के भी पहले आप दोनों माचिसों को गड़बड़ा चुकी थीं। आप भी भला कैसी चेका अधिकारी बनेंगी? जनतंत्र के भले के लिए अपना काम किये जाइये, मगर मेहरबानी करके इस मामले में दख़ल मत दीजिये। हम ख़ुद इससे निपट लेंगे। न-न, बुरा मत मानिये। घर बने जासूस हमेशा मुसीबत में ही डालते हैं। अगर आप अपने अमरीकी पर एकाध मकड़ी और कुचल दें या एकाध कीड़ा और मार दें, तो यह हमारी बड़ी भारी सेवा होगी। ख़ैर, ख़ुदा हाफ़िज़!"

अकेले रह जाने पर प्रमुख ने दोनों माचिसों को दराज़ में रखकर ताला लगा दिया और दरवाज़े पर जाकर आवाज़ दी:

"साथी गाल्किन! साथी गाल्किन!"

एक गठीले बदन के आदमी ने कमरे में प्रवेश किया।

"हसन को मैदान में जाकर मेरे लिए दो फ़लांगा लाने के लिए कहिये। बस, ज़रा जल्दी। समझे?"

"ठीक है।"

कोमारेंको बरामदे में वापस आ गया।

"क्यों, त्रोश्किन, क्या ख़याल है – एक बाज़ी पिंग-पौंग की हो जाये? बहुत दिन हो गये तुम्हें हराये हुए।"

त्रोश्किन उसका सहकारी और मित्र था। बासमचियों के और जंगली सूअर के शिकार पर भी दोनों साथ-साथ ही जाया करते थे।

"ठीक है, हो जाये।"

उसी समय बरामदे में भारी भूरा पग्गड़ बांधे एक सांवले व्यक्ति ने प्रवेश किया, बल्कि यह कहना ज़्यादा सही होगा कि एक महाकाय कुम्हड़े ने प्रवेश किया, क्योंकि एकदम कृश और झुर्रीभरा वह आदमी तो पग्गड़ का बस, पुछल्ला जैसा लगता था – उसके चारों हाथ-पैर चार अंकुरों जैसे ही लगते थे।

"शाबाश, हसन, सलाम अलैकुम!" प्रमुख ने कुम्हड़े के दायें अंकुर को पकड़कर हिलाते हुए कहा, "शाबाश, आओ, अंदर आओ। नहीं, जूती उतारने की ज़रूरत नहीं – अरे, यह कोई मसजिद नहीं है।"

...आध घंटे बाद जब एक कार मकान के बाहर चिनार के पेड़ों के नीचे आकर खड़ी हुई और एक लड़की बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ने लगी,

तो उसकी घर से निकलते एक झुर्रियोंदार आदमी से भेंट हुई, जिसने एक बड़ा पग्गड़ बांध रखा था।

दरवाज़े पर ही कोमारेंको उसे मिल गया।

"आप राजकीय फ़ार्म से आई हैं, है न? हम आपका ही इंतज़ार कर रहे थे। आइये, अंदर आइये," उसने अपने अध्ययन कक्ष के दरवाज़े को कसकर बंद कर लिया, "आप प्रकृतिविद हैं, ठीक है न? अच्छा, बताइये, अगर मैं आपको एक-दो कीड़े दिखाऊं, तो क्या आप उनमें भेदाभेद कर सकती हैं? बहरहाल, ठीक यही होगा कि आप ख़ुद ही देखकर बतायें..."

उसने उसके आगे एक काग़ज़ पर चार मरी हुई फ़लांगा रख दीं।

राजनीति और सिंचाई

कोमारेंको के घर से लौटने पर पोलोज़ोवा ने देखा कि दोनों अमरीकी इस बात पर विचार कर रहे हैं कि छुट्टी के दिन को किस तरह बिताया जाये। समस्या इतनी आसान नहीं थी – न कुछ किया जा सकता था और न कहीं जाया ही जा सकता था। मर्री ने सलाह दी कि जैरानों का शिकार करने चला जाये – आज इस बात का ख़तरा नहीं था कि पंज से आनेवाले ट्रक शिकार को डराकर भगा देंगे। क्लार्क ने राय दी कि चलकर शहर में घूमा जाये और मई दिवस की सजावट को देखा जाये। पोलोज़ोवा ने क्लार्क की राय का समर्थन किया।

तीनों धूलभरी ख़ाली सड़कों पर निकल पड़े। उन्होंने एक दूकान पर दो-दो गिलास ठंडा क्वास* पिया और फिर मुख्य अरीक़ के ढाल पर उतरकर एक बड़े चिनार के नीचे एक चायख़ाने में जाकर दरी पर बैठ गये। क़सबे में इसके अलावा मनोरंजन की और कोई जगह नहीं थी।

क्लार्क उत्सवी उमंग में था। उसे लग रहा था, जैसे आज उसकी सालगिरह हो और आसपास की सभी चीज़ें – चायख़ाने का पुराना समोवार और चिनार का बूढ़ा पेड़ तक – ख़ास उसी के लिए लाये गये उपहार हों। अपने आसपास देखते समय यह ख़याल उसके दिमाग़ में बार-बार आ जाता

---

* रूसी पेय।

था कि अगर कहीं वह मकड़ी किसी और कोण से कूदी होती, तो आज यह कुछ न होता—न चिनार का पेड़, न समोवार, न यह दरी, न दरी पर सफ़ेद पतलून पहने बैठा यह आदमी, जिसे एक स्त्री का बढ़ा हुआ हाथ प्याले में महकती पीली चाय पेश कर रहा है और जो इस एक साधारण-से संबोधन "क्लार्क" को सुनते ही कुत्ते की तरह अपना सिर घुमा देता है। इसलिए उसे समोवार की कुटिल बनावट में, चिनार के पेड़ की विवेकपूर्ण उपयोगिता में, कुछ ही दूरी पर बहती अरीक़ की कलकल में कुछ सांत्वनादायी अनुभूति हो रही थी। वह हंसता और मज़ाक करता-करता ऐसी-ऐसी मज़ाकिया बातें कहता चला गया, जैसे अपनी चढ़ती जवानी के समय से कभी उसके दिमाग़ में भी नहीं आ पाती थीं, लेकिन जो आज न जाने क्यों अत्यधिक विनोदपूर्ण लग रही थीं। चाय पीती पोलोज़ोवा के तो हंसते-हंसते पेट में बल पड़ने लगे थे।

आख़िर चाय ख़त्म हो गई और वहां से चलने का समय हो गया, मगर जाने को जगह कोई थी ही नहीं। मर्री ने अपना प्रस्ताव दुहराया कि शिकार खेलने चला जाये, मगर पोलोज़ोवा उस दिन उनके शहर के बाहर जाने के ख़िलाफ़ थी।

वे अरीक़ के किनारे-किनारे टहलने लगे। तभी अचानक बड़े ज़ोर की आंधी आई और निमिष मात्र में ही रेत की बड़ी-बड़ी लहरों ने सारे क़सबे को आंखों से ओझल कर दिया। क्लार्क खड़ा होकर यह इंतज़ार करने लगा कि धूल बैठ जाये और वे लोग आगे बढ़ें। तभी हवा का एक ज़ोरदार झोंका और आया और सिर पर से उसकी टोपी को उड़ा ले गया। वह हवा में कौए की तरह फड़फड़ाई और फिर उड़कर चली गई। पीछे भागकर उसे पकड़ने का सवाल ही नहीं उठता था—धूल के इस घने मटियाले कुहरे में क़दम भर दूर की चीज़ों को भी पहचान पाना असंभव था। उसने पोलोज़ोवा को आवाज़ दी—वह उसकी बग़ल में ही एक पेड़ पर टिकी खड़ी थी। लेकिन न वह नज़र आ रही थी और न पेड़। क्लार्क ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे टटोला और एक-दो क़दम आगे बढ़ाने पर मर्री से जा भिड़ा। वे मूसलाधार वर्षा के समय पेड़ के नीचे खड़े आदमियों की तरह अपनी सांस रोके, होंठ भींचे और आंखें मिचमिचाते खड़े थे। सूई जैसी पैनी धूल उनके चेहरों पर थपेड़े मार रही थी, उनके नथुनों में घुसी जा रही थी और दांतों में किरकिरा रही थी।

कुछ समय के बाद हवा का जोर कुछ कम हो गया और धूल धीरे-धीरे बैठने लगी। वह ज़मीन पर अभी भी घुटने-घुटने ऊंची उड़ रही थी, जिसके कारण उसके ऊपर तैरता-सा क़सबा बड़ा अवास्तविक लग रहा था—मकान और पेड़ हवा में अधर लटके हुए थे और उनके और ज़मीन के बीच लहराती धूल की एक मटियाली परत फैली हुई थी, जिस पर वे रेगिस्तान में मरीचिका की तरह लग रहे थे।

"आपकी टोपी कहां है?"

क्लार्क ने अपनी उंगली से सामने खुले आकाश की तरफ़ इशारा किया।

"कोई बात नहीं, उसकी परवाह मत कीजिये। मेरे यहां चलिये—मैं यहां पास ही में रहती हूं,—मैं आपको दूसरी टोपी दे दूंगी।"

पोलोज़ोवा ने सड़क को पार किया और मिट्टी के एक झोंपड़े के सामने जाकर खड़ी हो गई।

"यह रहा मेरा घर, आइये, पधारिये। आप हाथ-मुंह तो धोना नहीं चाहेंगे? गर्द से आप एकदम मटियाले हो गये हैं।"

तौलिये से अपना मुंह पोंछते-पोंछते क्लार्क ने उस छोटे-से कमरे पर एक निगाह फिराई। दीवारें और फ़र्श मिट्टी के थे। नन्ही-सी खिड़की पर टंगे साफ़ सफ़ेद परदे को देखकर यह कहना एकदम आसान था कि इसमें कोई स्त्री ही रहती होगी। फ़र्नीचर के नाम पर कुल जमा चादर से ढंका एक पतला सा पलंग, एक छोटी सी मेज, एक स्टूल और किताबों का एक बक्सा था। मेज और बक्सा किताबों के क़रीने से लगे चट्टों से अटे पड़े थे। दीवार में ठुकी एक कील पर धारीदार ड्रेसिंग गाउन लटका हुआ था।

क्लार्क ने मेज़ पर से कुछ किताबें उठाईं और उनके नामों पर नजर डाली। सभी रूसी में थे।

"समझ में नहीं आता," उसने रूसी में कहा। यह उन दस-बारह रूसी वाक्यों में से एक था, जो उसने निर्माणस्थली पर सीख लिये थे।

"देखिये न, कितनी बार मैंने आपसे वादा किया है कि मैं आपको रूसी सिखाऊंगी और हर बार मैंने उसे तोड़ा है—कभी वक़्त ही नहीं मिल पाया। आइये, छुट्टी के इन दोनों दिनों का फ़ायदा उठाकर पहले दो पाठ कर डालते हैं। क्या ख़याल है, आपका?"

क्लार्क ने सिर हिलाकर सहमति जताई।

"ये कौनसी किताबें हैं?" क्षण भर की चुप्पी के बाद उसने पूछा।

"ये? यह है मार्क्स की 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास', यह रही एंगेल्स की 'प्रकृति की द्वंद्वात्मक गति', यह भी मार्क्स की ही किताब है 'अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत'।"

"सभी अर्थशास्त्र की ही किताबें हैं?"

"जी हां, राजनीतिक अर्थशास्त्र की।"

"और सिंचाई की किताबें?"

"सिंचाई के बारे में किताबें भी हैं। वे रहीं, बक्से पर।" उसने किताबों के एक छोटे-से ढेर की तरफ़ इशारा किया।

"आप अर्थशास्त्री बनना चाहती हैं या सिंचाई विशेषज्ञ?"

उसकी आवाज़ में भरा व्यंग्य पोलोज़ोवा से छिपा न रहा।

"क्या आप यह सोचते हैं कि सिंचाई विशेषज्ञ को विश्व अर्थतंत्र के प्रश्नों को नहीं समझना चाहिए?"

"अर्थशास्त्र, दर्शन, राजनीति, सिंचाई–हर चीज़ की जानकारी रखना असंभव है। यह बात सर्वज्ञानवादियों के ज़माने में ही संभव थी। आज अगर कोई हर बात की जानकारी चाहे, तो वह आदमी या तो अति प्रतिभाशाली होगा या फिर बिलकुल अनाड़ी। अगर आप अच्छी सिंचाई इंजीनियर बनना चाहती हैं, तो आपको अपना पुस्तकालय बदलना होगा। ये सभी पुस्तकें," उसने मेज और बक्से की किताबों के ढेरों की तरफ़ इशारा किया, "सिंचाई की समस्याओं के बारे में होनी चाहिए। और," उसने किताबों के छोटे-से ढेर की तरफ़ इशारा किया, "ये अन्य सभी प्रश्नों के बारे में हो सकती हैं।"

उसे पोलोज़ोवा पर इस तरह लैक्चर पेलते ख़ुशी हो रही थी।

"लेकिन मेरी राय में अगर आप अपनी ही विशेषता के अलावा और किसी चीज का अध्ययन नहीं करते, तो आप अच्छे विशेषज्ञ तक नहीं बन सकते," पोलोज़ोवा ने कहा।

"आप इस बात पर विश्वास कर सकती हैं कि मैं एक अच्छा सिंचाई विशेषज्ञ हूं, लेकिन राजनीति के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता।"

"क्या आपको इस बात पर बहुत गर्व है?"

"अगर मैंने राजनीतिज्ञ बनने की सोची होती, तो मैं सिंचाई का अध्ययन नहीं करता। मैंने राजनीति का अध्ययन किया होता और कांग्रेस के चुनावों में भाग लिया होता।"

"अहा! तो आप इसीको राजनीति कहते हैं, है न? कांग्रेस के चुनाव में खड़े हो गये! बात यह है कि मेरे लिए राजनीति एक बिलकुल ही अलग चीज़ है। उदाहरण के लिए, अमरीका में आप नये बाग़ानों के लिए लाखों हैक्टर की सिंचाई कर चुके हैं। अब अपनी उपज के लिए मंडियां न होने के कारण इन बाग़ानों के मालिक उन्हें जला रहे हैं; शायद साल भर के भीतर वे आपकी बनाई सिंचाई प्रणाली को भी नष्ट कर डालेंगे, ताकि काश्त का रक़बा कम किया जा सके। तो फिर इसका क्या लाभ कि आपने उसे बनाया? या फिर यह बात है कि इससे आपको क्या लेना-देना?"

"आपका यह ख़याल है कि क्योंकि मैं अमरीकी हूं और इंजीनियर हूं और क्योंकि मैं कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य नहीं हूं, इसलिए इसका यही मतलब है कि मैं पूंजीवादी हूं, शत्रु हूं। यह बेकार बात है। आप मेरे बारे में जानती ही क्या हैं? कुछ भी तो नहीं! मेरे पिता साधारण प्रेस-कंपोज़ीटर थे, जबकि आपके पिता शायद कोई वकील या डाक्टर थे। हो सकता है कि मुझमें आपकी बनिस्बत ज्यादा सर्वहारा ख़ून हो।"

"मेरे पिता बस एक पेशेवर क्रांतिकारी थे। बुद्धिजीवी वंश की होने के बारे में इस तरह की चुटकी लेना अच्छा नहीं। असल में मेरा पालन-पोषण मज़दूर वर्गीय वातावरण में ही हुआ था। जब मेरे पिता को निर्वासित किया गया था, तब मैं एकदम बच्ची थी। मेरे पिता के एक साथी ने, जो पार्टी के सदस्य थे और मज़दूर थे, मुझे शरण दी। मैं एक मज़दूर बस्ती में ही बड़ी हुई। बाद में, कई वर्ष बाद, जब मेरे पिता फ़रार होकर विदेश पहुंच गये, तो उनके साथियों ने मुझे उनके पास इंगलैंड भेज दिया। हम वहां कुछ ही वर्ष, फ़रवरी क्रांति तक ही रहे थे।"

"मैं कोई चुभनेवाली बात नहीं कहना चाहता था। मैं सिर्फ़ यह कहना चाहता था कि आपकी कल्पना में हर अमरीकी, जो मज़दूर नहीं है, पूरा थैलीशाह है। वैसे ही, जैसे हमारी कार्टून पत्रिकाओं में रूसियों को हमेशा बड़ी-बड़ी दाढ़ीवाले और मुंह में छुरा दबाये ही दिखाया जाता है।"

"मान लीजिये मेरी धारणा इतनी सीधी-सादी नहीं है—लेकिन हां, इस बात को मैं बेशक मान लूंगी कि आपके बारे में शायद ही कुछ जानती हूं और अमरीकी जीवन के बारे में मुझे सिर्फ़ उपन्यासों और अख़बारों को पढ़कर ही जानकारी हुई है।"

"तो, देखा आपने, इसका मतलब यह है कि आपने आज एक ऐसे

आदमी की जान बचाई है, जिसे आप जानती ही नहीं। शायद वह बचाने लायक़ था ही नहीं? आख़िर क्या फ़लांगा को कुचलने में आपने अपनी जान को ख़तरे में नहीं डाला था, वह आपके ऊपर चढ़ सकती थी। बेशक, इसमें भी राजनीति का कुछ तत्व ज़रूर है—आपने मुझे नहीं, बल्कि एक अमरीकी इंजीनियर को बचाया, जिसके कारण आपके देश को नुक़सान उठाना पड़ सकता था।"

"जब कोई आदमी ख़तरे में होता है, वह दुश्मन ही न हो, तो कोई खड़ा होकर यह नहीं सोचता कि उसकी मदद क्यों की जाये—आप बस मदद करते हैं, और क्या! और फ़लांगों के ज़हरीली होने की यह सारी बात बकवास है। बहुत करके उन्हें आपके पास यही सोचकर छोड़ा गया था कि उनसे आप डर जायेंगे, क्योंकि चिट्ठियां वांछित प्रभाव नहीं पैदा कर पाई थीं।"

"कुछ भी हो, मैं आपका आभारी हूं।"

इंजीनियर ऊर्तांबायेव का प्रयोग

नहर के तल को एक कॉफ़र बांध नदी से अलग करता था। उसके दोनों तरफ़ अपनी गरदनें ताने और मानो अचरज में देखते दो एक्स्केवेटर खड़े थे। उन्होंने कंकरों की ऊपरी परत को उलीचने का अपना काम ख़त्म कर दिया था। इसके नीचे चट्टान शुरू हो जाती थी और उसकी सतह को खुरचते हुए एक्स्केवेटरों के दांत बेबसी से खनकते थे। तब लोग नहर के तल में कूद पड़ते और चट्टान को एमोनल के विस्फोट से उड़ाने लगते। दिन में तीन बार नहर के तल से सीटियों की सनसनाती चीख़ उठती और लोगों की भीड़ ढीले पत्थरों पर तेज़ी से चढ़ जाती। इसके बाद नीचे से पहले विस्फोट की आवाज़ आती, उसके बाद दूसरे, तीसरे, आठवें की... तोप के धमाकों की दबी हुई आवाज़ की तरह मंद और बंधी हुई। यह हमले के पहले की अल्पकालिक गोलाबारी होती थी। और जब सोलहवां धमाका हो चुका होता, तो लोग कुदालों को संगीनों की तरह पकड़े ढीली मिट्टी को तोड़ने के लिए ढाल के नीचे की तरफ़ लपक पड़ते। उनके पीछे-पीछे और लोग लपके हुए आते, टूटे पत्थरों को हथगाड़ियों पर लाद लेते

ग्रौर तख़्ताबंदी की पतली पट्टी पर गाड़ियों को ग्रागे धकेलते हुए तेज़ी से दौड़ पड़ते।

तख़्तों की इस पट्टी को दौड़ते हुए एक सांस में ही पार करना पड़ता था, सैकंड भर को भी रुकने का मतलब था सारे बोझ को ग्रधबीच में ही उलट देना। वे तख़्तों को तेज़ी के साथ एक सांस में पार कर जाते ग्रौर हथगाड़ियों को ज़ोरदार खड़खड़ाहट के साथ ख़ाली कर देते; दूसरे मज़दूर पत्थरों को लपक लेते ग्रौर एक्स्केवेटर के खुले दांतोंवाले डोल में लाद देते। इसके बाद एक्स्केवेटर की गरदन ऊपर उठती ग्रौर ग्रर्धवृत्ताकार घूमकर डोल में भरे पत्थरों को झंझोड़कर नदी की पीली धारा में उलट देती, जो कॉफ़र बांध के दूसरी तरफ़ तेज़ी से बहती जा रही थी। नदी में जिस जगह मिट्टी ग्रौर पत्थर का यह ढेर गिरता, वहां क्षण भर के लिए एक भंवर बन जाता ग्रौर फिर कुमक की तरह तेज़ी से ग्राती शक्तिशाली लहरें इस विशाल बोझ को समेट लेतीं ग्रौर मानो ग्रदृश्य खड़खड़ाती हथगाड़ियों पर लादकर साथ में बहा ले जातीं।

क्लार्क ढ़ाल के ऊपर खड़ा कल के काम की रिपोर्ट को पढ़ रहा था कि तभी उसने कीर्श ग्रौर मोरोज़ोव को ग्राते हुए देखा।

"कहिये, ग्रापके यहां क्या हाल है?" कीर्श ने ग्रंग्रेज़ी में कहना शुरू किया, "कुछ प्रगति हो रही है, है न?"

"बहुत कम। हमें नहर की खुदाई का काम रोककर यहां क्रेनों की जगह दो एक्स्केवेटर लगाने पड़े हैं। ग्रौर कोई उपाय था ही नहीं। ग्रगर कहीं हम बंकरों की दो क़तारों के साथ एक साधारण कनवेयर भी लगा सकते होते, तो सारा काम दो-चार दिन में ही ख़त्म हो गया होता।"

"इसके बारे में बात करना ही बेकार है! हमने कुछ सौ मीटर पट्टे का ग्रनुरोध मास्को भेज रखा है, मगर यह एक बहुत ही दुर्लभ वस्तु है ग्रौर इसे जल्दी पाने की शायद ही ग्राशा की जा सकती है। क्या ग्राप एक्स्केवेटर के डोल से एक माइन हॉइस्ट नहीं लगा सकते? ग्रौर कुछ नहीं, तो इससे एक ब्यूसाइरस तो ग्रापके काम के लिए ख़ाली हो ही जायेगा।"

"मगर लकड़ी कहां है? मैं पहले ही पूछ-ताछ कर चुका हूं। मिल ही नहीं सकती।"

"हां... इस बारे में ग्रभी कुछ नहीं किया जा सकता। बात यह है कि पहले तैयारी का सारा काम करने का वक़्त था ही नहीं ग्रौर नहर

खोदना और साथ ही साथ सारी चीजें भी इकट्ठा करना काफ़ी मुश्किल काम है।"

"क्षमा कीजिये कि मैं विघ्न दे रहा हूं," क्लार्क के पीछे से मर्री की आवाज़ आई—वह कोर्श को संबोधित कर रहा था। "मुझे आपसे एक गंभीर मामले पर बात करनी है। मैं कल शाम आपसे मिलने के लिए आपके कार्यालय में गया था, मगर आप वहां थे नहीं। यह बहुत अच्छा है कि मिस्टर मोरोज़ोव भी यहीं हैं। यह काफ़ी महत्त्वपूर्ण सवाल है। क्या आप मुझे दस मिनट दे सकते हैं?"

"क्यों नहीं, अवश्य। चलिये, साथी मोरोज़ोव के युर्त में चलते हैं। वहां हम निर्विघ्न बातचीत कर सकते हैं।"

युर्त की घनी छाया में प्रवेश करके वे नक़्शों से अटी एक मेज़ के आसपास बैठ गये और क्षण भर के लिए बिना बोले बैठे ठंडी हवा का नाकों से पान करते रहे। आख़िर मर्री ने कहना शुरू किया:

"इस बात को मैं अच्छी तरह से अनुभव करता हूं कि उप-मुख्य इंजीनियर होने के नाते मिस्टर ऊर्तावायेव मेरे निकटस्थ प्रमुख हैं। मैं नहीं चाहता कि आप लोग यह सोचें कि मैं किसी भी तरह उन्हें आपकी निगाहों में गिराना चाहता हूं। मैं इस बारे में कई दिन से सोच रहा हूं और आख़िर इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि इस बारे में अब चुप रहने का मुझे कोई अधिकार नहीं है।"

उसने अपने पाइप से राख को झाड़ दिया।

कोर्श एकाग्र होकर उसकी बात सुनने लगा।

"विशेषकर अपने सहयोगी बार्कर के चले जाने के बाद से, क्योंकि मैंने इस बात का ज़िम्मा ले रखा है कि एक्स्केवेटरों के संयोजन के काम को मैं पूरा करवा दूंगा, इसलिए मैं अपने को इस काम के लिए उत्तरदायी समझता हूं और इस बात की छूट नहीं दे सकता कि इन मूल्यवान मशीनों का सत्यानाश किया जाये। इसका मतलब सारे निर्माण-कार्य का ही सर्वनाश करना होगा और आप सज्जनों को मुझसे यह पूछने का अधिकार होगा कि जब यह सर्वनाश किया जा रहा था, तब मैं कहां था और मैंने आपको समय रहते क्यों नहीं आगाह किया। मुझे क्षण भर के लिए भी इस बात में कोई शक नहीं है कि मिस्टर ऊर्तावायेव अच्छे से अच्छे इरादे से काम कर रहे हैं और उन्हें यह क़दम उठाने की प्रेरणा काम को तेज़ करने की

अत्यंत सराहनीय इच्छा से ही मिली है। मगर इरादा एक बात होती है और उसके व्यावहारिक परिणाम दूसरी, और इस मामले में परिणाम विनाशक सिद्ध हो सकते हैं।"

"ज़रा रुकिये, मैं यह बात अभी तक नहीं समझ पाया हूं कि ऊर्ताबायेव ने किया क्या है। एक्स्केवेटरों के संयोजन का काम क्या उनकी देखरेख में है—आपकी नहीं?"

"व्यवहार में मैं न तो संयोजन-कार्य का ज़िम्मा ले सकता हूं, न उसके लिए जवाबदेही कर सकता हूं। एक्स्केवेटर अब यहां अलग-अलग हिस्सों के रूप में नहीं लाये जा रहे हैं। उन्हें अब यहां से एक सौ बीस किलोमीटर दूर, मिस्टर ऊर्ताबायेव की निजी देखरेख में घाट पर ही संयोजित किया जा रहा है।"

"लेकिन उन्हें फिर यहां कैसे लाया जा सकता है? ठहरिये ज़रा, इसमें ज़रूर कोई न कोई गड़बड़ है।"

"बेशक है! आप जानते हैं कि हमारे पास एक्स्केवेटरों को अलग-अलग हिस्सों में घाट से निर्माणस्थली पर लाने के लिए काफ़ी शक्तिशाली ट्रैक्टर नहीं हैं। मिस्टर ऊर्ताबायेव ने इस समस्या का बहुत ही आसान हल निकाल लिया है। प्रत्यक्षतः उनका तर्क यह है: जब ख़ुद एक्स्केवेटरों में कैटरपिलर लगे हुए हैं, तो उन्हें यहां ढोकर लाने की क्या जरूरत है? एक्स्केवेटरों को घाट पर ही संयोजित कर लें और उन्हें ख़ुद ही चलाकर यहां ले आयें। अगर ये भारी-भरकम मशीनें दिन में सात किलोमीटर ही चलें, तो भी वे किसी भी सूरत में कोई दो सप्ताह में यहां पहुंच जायेंगी, जबकि इसका कोई ठिकाना नहीं कि ट्रैक्टर कब पहुंचेंगे।"

"ओह, अब मैं समझा!"

"लेकिन समझ की कसौटी पर यह योजना खरी नहीं उतरेगी। एक्स्केवेटर कोई मोटर ट्रक नहीं होता और उसे ऐसी यात्राओं के लिये नहीं बनाया जाता। उसमें कैटरपिलर इसलिए होते हैं कि काम की प्रक्रिया में वह इधर-उधर चल सके। मगर इस तरह का आना-जाना कुछ मीटर या कुछ दर्जन मीटर रोज़ से ज्यादा नहीं होता—न कि सैकड़ों किलोमीटर। इस प्रयोग का एकमात्र नतीजा यह होगा कि सभी एक्स्केवेटर बरबाद हो जायेंगे। अगर उनमें से एकाध निर्माणस्थली पर पहुंच भी गया, तो हफ़्ते दो हफ़्ते के भीतर वह कबाड़ के ढेर पर डालने के ही लायक़ रह जायेगा।

ध्यान रखें कि घाट से लेकर यहां तक उसे लोयस मिट्टी पर होकर ग्राना होगा। ग्राप ख़ुद जानते हैं कि यह मुलायम ग्रौर चिकनी मिट्टी कैसी संक्षारक होती है ग्रौर मशीनों के पुरज़ों को कितनी जल्दी ख़राब कर देती है। संक्षेप में, ग्रगर ग्राप इस मूर्खतापूर्ण प्रयोग को रोकने के लिए तत्काल क़दम नहीं उठाते, तो मुझे मजबूरन सारी ज़िम्मेदारी से इनकार करना होगा ग्रौर ग्रापसे यह ग्रनुरोध करना होगा कि एक्स्केवेटरों के संयोजन की देखभाल के काम से मुझे मुक्त कर दिया जाये। ग्रगर बार्कर यहां होते, तो वह फ़र्म की ग्रोर से ग्रपनी मशीनों के ऐसे दुरुपयोग के विरुद्ध निरपेक्ष विरोध प्रकट कर सकते थे। उन्होंने मुझसे इस बात की कई बार शिकायत की थी कि एक्स्केवेटरों को इस तथ्य की परवाह किये बिना यहां जगह-जगह ले जाया जाता है कि इससे मशीनरी ख़राब हो जाती है। ग्रभाग्यवश, मैं इस फ़र्म का प्रतिनिधि नहीं हूं ग्रौर मिस्टर ऊर्तावायेव की योजनाग्रों को क्रियान्वित होने से रोकने का ग्रधिकार मेरे पास नहीं है।"

"समझा... ठीक है, हम कल ही साथी ऊर्तावायेव को यहां बुला भेजेंगे ग्रौर मिलकर इस बात पर विचार करेंगे कि हल क्या हो। मैं ग्रौर साथी मोरोज़ोव दोनों ग्रापके बहुत ग्राभारी हैं। ग्राप विश्वास कर सकते हैं कि हम कल जो भी फ़ैसला लेंगे, उसका ग्राधार ग्रापके सुझाव ही होंगे।"

कीर्श ने उठकर मर्री से हाथ मिलाया।

जब मर्री चला गया, तो मोरोज़ोव उछलकर उठ खड़ा हुग्रा ग्रौर उत्तेजना के साथ युर्त में चहलक़दमी करने लगा।

"इसका मतलब क्या है? क्यों? ऐसी शर्मनाक बात हुई, तो कैसे? ब्यूसाइरस फ़र्म का प्रतिनिधि यहां ऊर्तावायेव की बग़ल में था, ग्रौर न सिर्फ़ यह कि उसने उसकी राय लेना ही ज़रूरी नहीं समझा, बल्कि उसने ज़ाहिरा तौर पर सारे एक्स्केवेटरों का सत्यानाश करने के लिए उसके जाने का फ़ायदा भी उठाया है। जानते हैं, मैं तरह-तरह के निर्माण-कार्यों को देख चुका हूं, मगर ऐसी बातों से सामना होने का मेरे लिए यह पहला ही मौक़ा है।"

"ज़रा ठहरिये, इवान मिख़ाइलोविच, ग्राख़िर बात इतनी साधारण नहीं है। उसने जो भी किया, ग्रच्छे इरादे से ही किया।"

"भाड़ में जायें उसके ऐसे इरादे!"

"ग्राप ख़ुद ही देख लीजिये, ग्रगर एक्स्केवेटर साबुत ग्रा गये होते,

तो हमारे पास दो हफ़्ते के भीतर छब्बीस एक्स्केवेटर होते और हम पूरे ज़ोर से काम करना शुरू कर देते। सिद्धांततः विचार ऐसा बुरा नहीं है।"

"सिद्धांततः तो एक्स्केवेटरों को यहां गुब्बारे से लाना भी कोई बुरा विचार नहीं होगा।"

"सारी मुसीबत यह मनहूस लोयस मिट्टी ही है, जो सभी मशीनों को बरबाद कर देती है।"

"हम ब्यूसाइरस फ़र्म को कैसे मुंह दिखा पायेंगे? अरे, यह तो एक पूरा तमाशा हो जायेगा! वे हर अख़बार में इस मामले का प्रचार करेंगे। बस, इसी बात की ज़रूरत थी कि उनका प्रतिनिधि यहां से चला जाये और दो सप्ताह के भीतर हमने बाईस एक्स्केवेटरों का सत्यानाश करके रख दिया!"

"बेशक यह एक अप्रिय घटना है। हमें संयोजन के काम को फ़ौरन रोकना होगा। आज ही साफ़ आदेश भेज दीजिये और ऊर्ताबायेव को यहां बुला भेजिये।"

"कमाल की बात है! यह सीधे-सीधे इस इरादे से किया गया है कि मैनेजमेंट के आगे एक हुई-हुआई बात भुगतने के लिए छोड़ दी जाये। आपने ऊर्ताबायेव की सूरत भी देखी है? नहीं! अपने नये आदेश जारी करने के पहले उसने नये मुख्य इंजीनियर से सलाह करना भी अनावश्यक समझा। मैंने भी उसे कभी नहीं देखा है। यहां आते समय वह रास्ते में ही मेरे सामने से निकल गया होगा–घाट पर भी उससे मेरी मुलाक़ात नहीं हुई थी। वह अच्छी तरह से जानता है कि हमें यहां आये हुए दो हफ़्ते हो चुके हैं और उसने इस बात की पूछताछ करने की भी तकलीफ़ नहीं की कि काम की आम योजना में कुछ परिवर्तन तो नहीं किये गये हैं। और उसने पूछताछ इसलिए नहीं की कि अगर वह हमसे मिलता, तो अपने इस प्रयोग के बारे में उसे अवश्य बताना पड़ता और यह वह पहले से जानता था कि कोई भी इसकी अनुमति नहीं देगा। वह यह सब अपने-आप–बिना किसी अधिकार के–कर रहा है और इसके लिए उस पर मुक़दमा चलाया जा सकता है!"

"लेकिन देखिये, इवान मिख़ाइलोविच, उसके न आने के अन्य कारण भी तो हो सकते हैं। लोग कहते हैं कि ऊर्ताबायेव एक अच्छा इंजीनियर है, वह बड़े उपक्रमवाला, उत्साही और उद्यमी कार्यकर्ता है। जब तक चेत्वेर्याकोव और येरेमिन यहां रहे, वह सही रवैया लेते हुए उनसे लगातार

लड़ता रहा। कुछ इंजीनियरों का कहना है कि अगर ऊर्तावायेव के प्रस्तावों को स्वीकार करके क्रियान्वित कर दिया गया होता, तो निर्माण-कार्य की हालत इतनी ख़राब न होती। चेत्वेर्याकोव के विरुद्ध संघर्ष में वह विजयी हुआ – चेत्वेर्याकोव को बरख़ास्त कर दिया गया। वह यहां अकेला ताजिक इंजीनियर है। वह यहां लगभग इस निर्माण-कार्य के शुरू होने के समय से ही काम कर रहा है। कोई वजह नहीं थी कि केंद्र से एक नया आदमी भेजने के बजाय उसे ही क्यों न मुख्य इंजीनियर नियुक्त कर दिया जाता। ऊर्तावायेव शक्की आदमी है। हर कोई मानता है कि उसे यहां सताया गया था और अपनी पहल को दिखाने का मौक़ा नहीं दिया गया था। वह मेरी नियुक्ति को अपने प्रति अन्याय समझ सकता है और इसमें अचरज की कोई बात नहीं है कि यहां आने और नये मैनेजमेंट को सलामी देने के बजाय उसने यहां से दूर रहना ही पसंद किया हो।"

"क्षमा कीजिये, मगर ऊर्तावायेव कम्युनिस्ट है, और यहां की परिस्थितियों को देखते हुए काफ़ी पुराना कम्युनिस्ट भी है।"

"निस्संदेह मैं इस बात को समझता हूं, मगर पार्टी सदस्यता के लिहाज़ के बावजूद बुरा मान लेना मानव स्वभाव ही है। यही कारण था कि मैंने उसे नहीं बुलवाया था। मैंने सोचा था कि उसे सारी बात पर विचार करने का अवसर दे देना चाहिए – फिर वह अपनी मरज़ी से ही आ जायेगा और हमारी आपस में अच्छी तरह से निभ जायेगी।"

"आपकी यह तर्क-प्रणाली किसी काम की नहीं। और उसे फ़ौरन न बुलवाकर आपने ग़लती की है। आपको इन भावनाओं से छुटकारा पाना होगा! अगर ऊर्तावायेव के बुरा मानने के बारे में आपका ख़याल सही है, तब तो बात और भी बुरी है। इन बातों को अनदेखा करना ठीक नहीं है। हम ऊर्तावायेव से पार्टी समिति में जवाब-तलब करेंगे और आपको उससे कहना होगा कि उसे आपके आदेशों का निर्विवाद रूप से पालन करना होगा। यहां दो मुख्य इंजीनियर नहीं हैं – मुख्य इंजीनियर सिर्फ़ एक है। उपक्रम अगर एक-व्यक्ति प्रबंध का उल्लंघन नहीं करता, तो बहुत अच्छी बात है, किंतु अगर वह महत्त्वाकांक्षा पर आधारित है, तो उससे सिर्फ़ नुक़सान ही हो सकता है। और यह बात कि आपने ऊर्तावायेव को फ़ौरन ही नहीं बुलाया, आपको परोक्ष रूप से इसका ज़िम्मेदार बना देती है। इसका कल ही अंत करना होगा। मैं तुरंत इस आशय का आदेश लिखता हूं कि एक्स्केवेटरों का

संयोजन अविलंब बंद कर दिया जाये और ऊर्ताबायेव को यहां बुलाया जाये। हम दोनों ही इस आदेश पर हस्ताक्षर करेंगे।"

रेगिस्तान में दौड़-धूप

दो दिन मोरोज़ोव ने ऊर्ताबायेव के आने का इंतज़ार किया। तीसरे दिन सुबह एक ट्रक घाट से आया। ऊर्ताबायेव इस बार भी नहीं आया था। उसने इस आशय का पत्र तक नहीं भेजा था कि वह किस कारण नहीं आ पा रहा है। मोरोज़ोव ने कार मंगवाई। दस मिनट बाद वह उसमें बैठा मैदान में घाट की दिशा में जा रहा था।

उसका ध्यान न जैरानों की तरफ़ गया, न आजकल अपना "ग्रीष्मावकाश" होने के कारण रास्ते भर आज़ादी के साथ चरते ऊंटों की तरफ़, जो सारी सड़क पर जहां-तहां मरम्मत के लिये लाये गये ट्रकों की तरह लेटे हुए थे। न उसका ध्यान सड़क के किनारे उन मरे हुए जानवरों की तरह जिन्होंने सुदूर नदी तक घिसट-घिसटकर पहुंच पाने के पहले ही प्यास के मारे दम तोड़ दिया था, पड़े टूटे हुए ट्रैक्टरों की तरफ़ ही गया। चारों तरफ़ रेगिस्तान था, जिसमें जहां-तहां कंटीली झाड़ियां उगी हुई थीं।

मोरोज़ोव का नाराज़ीभरा चिंतन तब टूटा, जब कार अचानक स्तेपी में बसी एक छोटी-सी बस्ती में जा घुसी, जिसमें कुछ बारकें और बरामदेदार सफ़ेद मकान थे। सारी बस्ती में पेड़ लगे हुए थे। बिलकुल मरुभूमि के बीच मरीचिका की तरह। मोरोज़ोव ने ड्राइवर से गाड़ी रोकने के लिए कहा, कार से उतरा और सड़क के किनारे एक पेड़ की पत्तियों को हाथ लगाकर देखा। भ्रांति नहीं थी – पत्तियां सचमुच की थीं। यह पोपलर का छोटा-सा पेड़ था, जो पिछले साल से ज़्यादा पहले का लगा हुआ नहीं हो सकता था। उसकी पर्णावली की सुकुमार हरितिमा इसकी साक्षी थी।

यह कोई मरीचिका नहीं थी। यह निर्माण परियोजना के दूसरे सैक्शन पर काम करनेवालों की बस्ती थी। मोरोज़ोव ने इस जगह को पहली बार ही देखा था। आते समय वह घाट से रात में आया था, जब वह गाड़ी की बत्तियों की निकल चढ़ी कैंची से उसके सामने अंधेरे में से सफ़ाई से कटी सड़क के अलावा और कुछ नहीं देख पाया था।

उसने ड्राइवर से गाड़ी को बस्ती के बीच में से ले चलने को कहा।

उसने देखा कि वहां जमीन का एक आयताकार टुकड़ा बाड़ से घिरा हुआ है–प्रत्यक्षतः यह भावी उद्यान था। यहां हरियाली की चौड़ी और बराबर पट्टियां थीं। खुली जगह के बीच में पूरे न बने बरामदे जैसे सायबान के नीचे एक खुला मंच था। मोरोज़ोव ने गाड़ी रुकवाई और किसी से सैक्शन के प्रमुख को बुलाकर लाने के लिए कहा।

एक कुत्ते को साथ लिये सफ़ेद कमीज़ पहने एक ठिंगना आदमी आया।

"क्या आप ही साथी रियूमिन हैं?"

"जी हां, मैं ही हूं।"

"मेरा नाम मोरोज़ोव है। बताइये तो, आपने कौनसा जादू करके यहां पेड़ लगा लिये और कैसे वे बड़े हो गये? आप पानी कहां से लाये?"

"यहां से कोई सात किलोमीटर की दूरी पर एक छोटी-सी अरीक़ है–पुरानी सिंचाई प्रणाली की एक शाखा। मैंने अपनी अरीक़ को उसके साथ जोड़ दिया और एक छोटा-सा पंपिंग स्टेशन बना दिया। वहीं से पानी लेकर पेड़ों को दे देते हैं।"

"लेकिन पानी आपकी अरीक़ में कैसे आया? इस मिट्टी पर सात किलोमीटर कोई मज़ाक थोड़े ही है!"

"बेशक, काम तो बहुत मुश्किल था। पहले तो पानी ज़मीन में ही समा जाया करता था। लेकिन हम लगे ही रहे और अब, जैसा कि आप देख रहे हैं, हमें काफ़ी पानी मिल जाता है।"

"क्या आप यहां बहुत समय से हैं?"

"एक साल से। निर्माण-कार्य के शुरू होने के समय से।"

"आपने इस जगह को बढ़िया बना लिया है। पहले सैक्शन के मुक़ाबले यह कहीं अच्छी है।"

"वहां मैनेजमेंट कई बार बदल चुका है। एक मैनेजर एक चीज़ शुरू करता है, तो दूसरा–दूसरी। लेकिन मैं यहां एकदम शुरू से ही हूं। हमारे पास सामान होता, तो साल भर में हम कहीं ज़्यादा बना सकते थे।"

"आप बनाते किस चीज़ से हैं? सरकंडों से?"

"सरकंडे और मिट्टी। लकड़ी बहुत कम है। यहां हम पृष्ठभूमि में हैं। सारी निर्माण सामग्री मुख्य सैक्शन को ही भेजी जाती है। बेशक, वहां काम भी ज़्यादा और अधिक कठिन है–चट्टानें और कंकर, जब कि यहां की मिट्टी लोयस है। लेकिन फिर भी, एक माने में, हमें कुछ मदद

देना लाभकर ही होगा। देखिये न, मुख्य सैक्शन की सभी इमारतें अस्थायी ही हैं, लेकिन इस जगह भावी राजकीय फ़ार्म की एक बस्ती बनाने की योजना बनाई जा रही है। हमारी बस्ती इस बात को ध्यान में रखते हुए ही बन रही है। लेकिन मैनेजमेंट से एक छकड़ा भर लकड़ी वसूल कर पाना भी विकट काम है। उसके लिए हर बार जाकर घुटने टेककर भीख मांगनी पड़ती है।"

"काम की क्या हालत है?"

"बड़ी मशीनों के बिना जितना भी काम किया जा सकता है, वह सब वक़्त पर ख़त्म कर दिया जायेगा–बल्कि शायद समय के पहले ही। जहां तक मशीनों का सवाल है, उसमें हम घाटे में ही रहे हैं। ट्रैक्टरों के मामले में हम बेहद बदक़िस्मत हैं–लगभग सभी की मरम्मत हो रही है और फ़ालतू पुरज़ों का अभाव है। मैकेनिकल डिपार्टमेंट ने समय रहते इस तरफ़ ध्यान नहीं दिया था। काम को हाथ से ही या घोड़ों की मदद से करना होगा। घोड़े ही त्राता हैं। लेकिन चारा जुटाने में हमें बहुत मुश्किल पड़ती है। पिछले साल तो हमारे घोड़े भूखे मरे–राजकीय फ़ार्म ने हमें सूखी घास दी ही नहीं। इस वसंत में हमने तय कर लिया कि राजकीय फ़ार्म पर निर्भर नहीं करेंगे और घास हमने अपने-आप ही काट ली। यहां घास काफ़ी अच्छी पैदा होती है, बस, उसे वसंत के शुरू में ही–धूप में उसके जल जाने के पहले ही–काट लेना चाहिए। हमने कोई तीस गांज घास काटी थी। यह अगले साल तक के लिए काफ़ी होगी, बशर्ते कि वे उसे जला न दें।"

"क्या मतलब–वे जला न दें? कौन?"

"स्तेपी में कुछ क़िर्गिज़ छोकरे या कोई और लोग आग लगा ही देते हैं। इस साल दो बार तो आग लग भी चुकी है। हर किसी को अपना-अपना काम छोड़कर घास को बचाने के लिए भागना पड़ा। हमने खाइयां खोदकर उसे किसी तरह बचा ही लिया। जब आप आगे जायेंगे, तो देखेंगे कि सभी टीले काले पड़े हुए हैं। पिछले कुछ सप्ताहों से स्थिति कुछ शांत है, मगर क्या भरोसा है–किसी भी रात को आग लग सकती है और ऐसी गरमी में तो एक चिनगारी भी काफ़ी होती है। हम रात को बारी-बारी से पहरा देते हैं। हमने हथियारबंद घुड़सवारों की गश्त का भी प्रबंध किया है, लेकिन चौकसी के लिए जगह इतनी बड़ी है कि निश्चिंत नहीं हुआ जा सकता।"

"हां, आपके यहां तो दक्षिणी अमरीकी घास मैदानों जैसी हालत ही है। बासमची भी हैं क्या?"

"पिछले साल थे। उन्होंने हमारे कुछ टेकनिशियनों को मार डाला था। मगर इस साल हमें उनकी कोई ख़बर सुनने को नहीं मिली है। आबादी से उन्हें कोई मदद नहीं मिलती। लोग देखते हैं कि काम चल रहा है—उन्हें आशा है कि जल्दी ही पानी मिलने लग जायेगा। यह सब उनके हित की ही बात है। उन्होंने आग बुझाने में हमारी मदद की और पहरेदारी में भी हाथ बंटाते हैं। कुल मिलाकर हालत सुधर रही है।"

"तो यह कहिये कि आपके सैक्शन में काम की हालत कोई ख़राब नहीं है?"

"हमारे कारण गाड़ी नहीं रुकेगी। हमारे यहां सारी मुश्किल बस एक ही जगह पर है, जहां दो एक्स्केवेटरों के बिना काम नहीं चल सकता। सुना है कि घाट से कुछ एक्स्केवेटर ख़ुद ही चलाकर इधर लाये जा रहे हैं—क्या आप उनमें से दो-एक हमें नहीं दे सकते?"

"एक्स्केवेटर अभी काफ़ी समय तक नहीं मिल पायेंगे। ट्रैक्टर जिन एक्स्केवेटरों को लेकर आ रहे हैं, वे मुख्य सैक्शन को मिलेंगे। इसलिए जल्दी एक्स्केवेटर पाने की आशा मत कीजिये। ठीक है, तो, नमस्ते!"

"हमारे सैक्शन को नहीं देखियेगा?"

"नहीं, अभी नहीं। मुझे जरूरी काम है। अगली बार मैं आपके पास विशेषकर आऊंगा और दो-एक दिन ठहरूंगा। आप मुझे रात को तो टिका लेंगे, न?"

"बड़ी ख़ुशी के साथ।"

कार आगे चल पड़ी। एक बार फिर सड़क के दोनों तरफ़ स्तेपी दौड़ते हुए चितकबरे घोड़े की तरह उनकी आंखों के आगे नाचने लगी।

चाल की तेजी के कारण सामने की स्तेपी एक नीरस मटियाली धोवन में परिणत हो गयी थी। मोरोजोव को दूर से धूल का एक विराट स्तंभ मैदान में धीरे-धीरे आगे बढ़ता दिखाई दिया। धूप को रोकने के लिए आंखों पर हाथ की आड़ करके उसने उसकी तरफ़ ज्यादा बारीकी के साथ देखा। धूल के बादल से एक विशाल छड़-सी निकली हुई थी। यह एक एक्स्केवेटर का हमाला था। मोरोजोव ने ड्राइवर को कार रोकने को कहा और उसमें खड़ा होकर उस महादानव को धीरे-धीरे रेगिस्तान में रेंगते

आते देखने लगा। उसके होंठों से गालियों की एक अस्पष्ट बाढ़ फूट पड़ी।

"खड़े किसलिए हो? चलो आगे!" वह अचानक ड्राइवर पर बरस पड़ा और तुरंत ही अपने आवेश पर लज्जा का अनुभव करने लगा। "क्या घाट अभी दूर है?" उसने अपने स्वर को यथासंभव मित्रतापूर्ण बनाने का यत्न करते हुए क्षण भर की ख़ामोशी के बाद पूछा।

"यही कोई नब्बे किलोमीटर।"

"तो जरा दाबो एक्सेलेरेटर को—हम बहुत धीरे जा रहे हैं।"

ड्राइवर ने कार को ऐसा झटका दिया, मानो वह कोई बिगड़ैल घोड़ा हो और वह स्तेपी को अंधाधुंध चाल से पार करने लगी।

कोई सात किलोमीटर बाद मोरोज़ोव को दूसरा एक्स्केवेटर नज़र आया, मगर इस बार उसने कार को नहीं रुकवाया। फिर उसने तीसरा एक्स्केवेटर देखा और फिर चौथा। घाट पहुंचने के पहले उसको छः एक्स्केवेटर मिले।

कार ने हवा के झोंके की तरह घाट में प्रवेश किया। ड्राइवर ने अचानक ही ब्रेक लगाया और मोरोज़ोव उसके खुले दरवाज़े से कूदकर क्या, उड़ता हुआ तटबंध के चरमराते कंकरों पर आ खड़ा हुआ।

"साथी ऊर्तावायेव कहां हैं?"

लोगों ने बारकों की तरफ़ इशारा कर दिया। मोरोज़ोव बारकों की तरफ़ गया और वहां मैदान के छोर पर उसने दो अर्धसंयोजित एक्स्केवेटर देखे। संयोजन-कार्य का सफ़ेद सूट पहने एक ताजिक निदेशन कर रहा था। मोरोज़ोव सीधा उसी के पास गया।

"क्या आप ही साथी ऊर्तावायेव हैं?"

"हां।"

"आपको मेरा पत्र मिला?"

"और आप कौन हैं?" ऊर्तावायेव ने मोरोज़ोव का सिर से पैर तक मुआयना किया।

"मैं मोरोज़ोव हूं।"

"नये प्रमुख?" उसका लहजा उग्र और उपहासपूर्ण था।

"आपको मेरा पत्र मिला?" मोरोज़ोव ने यह अनुभव करते हुए कि उसका गुस्सा उस पर हावी होता जा रहा है और अपने आत्म-नियंत्रण को न गंवाने का प्रयास करते हुए दुहराया।

"मिला था।"

"तो?"

"चलिये, यहां से चलते हैं। कहीं बैठकर बातें करते हैं... भाइयो, मेरे बिना ही काम पूरा कर लेना," ऊर्तावायेव ने मजदूरों से चिल्लाकर कहा, "मैं बाद में आकर देख लूंगा।"

इधर-उधर देखे बिना वह सीधा बारकों की तरफ़ चल दिया। मोरोज़ोव ने उसे अधबीच में ही पकड़ लिया।

"संयोजन का काम फ़ौरन बंद कीजिये और जो एक्स्केवेटर संयोजित किये जा चुके हैं, उन्हें खुलवा दीजिये।"

"जल्दी मत कीजिये," ऊर्तावायेव ने अवज्ञापूर्ण स्वर में कहा, "आइये, इस बारे में बातें कर लेते हैं। आज मुझे आठवें ब्यूसाइरस का संयोजन ख़त्म कर देना चाहिए और मैं आज ही रात को मुख्य सैक्शन आकर आपसे मिलने की सोच रहा था। क्या आप यहां विशेषकर एक्स्केवेटरों के लिए ही आये हैं?"

ऊर्तावायेव की मुद्रा और जिस तरह उसने "विशेषकर" शब्द पर जोर दिया, उसमें उपहास और तिरस्कार का पुट था।

"हां। और ऐसी कोई चीज नहीं है, जिसके बारे में हमें कोई ख़ास बातें करनी हों। आपको निर्माण-प्रमुख और मुख्य इंजीनियर द्वारा हस्ताक्षरित एक औपचारिक आदेश मिला कि आप संयोजन के काम को तुरंत बंद कर दें और मुख्य सैक्शन पहुंच जायें। आपने न केवल इस आदेश की पूर्ति करने की परवाह ही नहीं की है, बल्कि एक्स्केवेटरों का संयोजन और उन्हें चलाते हुए रवाना करना भी जारी रख रहे हैं। आप जानते हैं कि पार्टी की भाषा में इसे क्या कहा जाता है?"

"मैं यह जरूर जानता हूं कि निर्माण-प्रमुख और मुख्य इंजीनियर जब किसी नये काम पर आते हैं, तो उनके लिए यही अच्छा रहता है कि वे अंधाधुंध आदेश जारी करना न शुरू कर दें, बल्कि पहले काम की हालत से परिचित हो लें।"

वे घाट के मैनेजर के तख़्तों से बने छोटे-से कमरे में खड़े थे। ऊर्तावायेव ने दरवाजे का ताला बंद कर दिया और चाबी को मेज पर फेंक दिया।

"तो आप यही सोच रहे हैं? क्या आप यह समझते हैं कि आपको अपनी मरजी के मुताबिक़ सारे एक्स्केवेटरों को तोड़ने दिया जायेगा? आप ग़लती पर हैं। हम जानते हैं कि अपने को बहुत समझनेवाले नौजवान

इंजीनियरों की खरदिमाग़ी से कैसे निपटा जाता है। आदेश की पूर्ति न करने के लिए आपको उप-मुख्य इंजीनियर के पद से अस्थाई रूप से कार्यवंचित किया जाता है और आप सारा चार्ज साथी कोर्श को दे देंगे।"

"आप ज़रूरत से ज़्यादा जल्दबाज़ीभरा निर्णय ले रहे हैं और अपने कंधों पर एक बहुत गंभीर दायित्व डाल रहे हैं। एक्स्केवेटर जब तक काम करना शुरू नहीं कर देते, तब तक उनकी हालत के लिए ब्यूसाइरस फ़र्म उत्तरदायी है। इस मामले में मैं उसके प्रतिनिधि, इंजीनियर बार्कर द्वारा दी गई फ़र्म की सहमति से काम कर रहा हूं। अगर एक्स्केवेटर टूट जाते हैं, तो इसकी ज़िम्मेदारी ब्यूसाइरस फ़र्म पर होगी।"

"यह झूठ है! मैं पहले से ही जानता था कि फंस जाने पर आप सारा दोष बार्कर के मत्थे मंड देंगे, क्योंकि वह यहां से चला गया है और आप यह समझते हैं कि हम आपकी बात की सचाई की जांच नहीं कर सकते। ख़ैर, आप ग़लती पर हैं। जाने के पहले बार्कर ने अपना काम एक दूसरे अमरीकी इंजीनियर के सुपुर्द कर दिया था और उसे आदेश दे दिये थे और वह आपके मूर्खतापूर्ण प्रयोग का एकदम विरोध कर रहा है और इस बात की धमकी दे रहा है कि अगर एक्स्केवेटर तुरंत खोल नहीं दिये जाते, तो वह कोई भी ज़िम्मेदारी नहीं लेगा।"

"रुकिये ज़रा, इसमें ज़रूर कोई ग़लतफ़हमी होगी।"

"कोई ग़लतफ़हमी नहीं है, प्रिय साथी ऊर्ताबायेव, यह बस, ईमानदार लोगों में सर्वतः स्वीकृत इस नियम की ही एक मिसाल है कि आपने पकाया है, तो आप खाइये, उसका दोष औरों पर थोपने की कोशिश मत कीजिये।"

"लगता है कि आपका शायद यह ख़याल है कि निर्माण-प्रमुख के पद ने आपको अपने अधीनस्थ पार्टी सदस्यों के साथ गुस्ताख़ी से पेश आने का अधिकार दे दिया है। मैं आपके अनुचित संकेतों को नहीं समझता और समझने से इनकार करता हूं। आख़िर यह सारा मामला बहुत आसानी से साफ़ किया जा सकता है। बार्कर कहां चला गया है?"

"अमरीका।"

"यह कैसे हो सकता है? अभी तो एक्स्केवेटरों का संयोजन भी ख़त्म नहीं हुआ!"

"अनजान होने का ढोंग न कीजिये, साथी ऊर्ताबायेव। इंजीनियर बार्कर को गये एक हफ़्ता हो गया। आपका हर मज़दूर इसके बारे में

जानता है और निर्माणस्थली पर हर कोई इस बात को उसके जाने के एक हफ़्ते पहले से जानता था। आपकी चालाकी बेकार है और यह आपके लिए कोई तारीफ़ की बात नहीं है। आप ब्यूसाइरस फ़र्म और निर्माण-कार्य, दोनों के प्रसंग में मनमानी करने के दोषी हैं और इसकी आपको जवाबदेही करनी होगी। किसी और की पीठ पीछे छिपने की कोशिश करने का कोई फ़ायदा नहीं। आपके करने के लिए बस यही बात रहती है कि आप एक्स्केवेटरों के तुरंत खोले जाने का आदेश जारी कर दें। जिन एक्स्केवेटरों को यहां से रवाना किया जा चुका है, उनके साथ क्या किया जाये, यह हम कल तय करेंगे।"

"लेकिन आप क्या इस बात को नहीं समझते कि यही अकेला तरीक़ा है, जिससे हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि एक्स्केवेटर निर्माणस्थली पर सचमुच जल्दी से जल्दी पहुंच जायें..."

"यह हुई बात! आपको इसी से कहना शुरू करना चाहिए था। आपका तरीक़ा बस यह सुनिश्चित करेगा कि मशीनें टूट जायें और ब्यूसाइरस फ़र्म से हमारा झगड़ा हो। बार्कर ने पहले ही आपकी योजनाओं का विरोध किया था। जाइये और मशीनों के खोले जाने का हुक्म दीजिये। आप स्वयं मेरे साथ चलेंगे।"

"लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप ग़लती पर हैं..."

"हो सकता है। ऐसा हुआ, तो अपनी ग़लतियों की मैं ख़ुद जवाबदेही करूंगा। आप आदेश जारी करेंगे या नहीं?"

"नहीं।"

"अहा, तो यह बात है!"

"आपने अभी-अभी मुझे कार्यमुक्त किया है। इस क्षण के बाद मेरे आदेश वैध नहीं हैं। आप स्वयं ही आदेश जारी कीजिये।"

यह बात केवल तिरस्कारपूर्ण ही नहीं, चुनौती जैसा भी प्रतीत हो रही थी। मोरोज़ोव ने, जिसने प्रत्यक्ष प्रतिरोध की अपेक्षा नहीं की थी, तुरंत उत्तर नहीं दिया। ताजिक की आंखें ज़िद और विद्वेष से जल रही थीं।

"तो ऐसे हैं स्थानीय कर्मचारी!" मोरोज़ोव ने सोचा।

उसने मेज़ पर से चाबी उठाई और दरवाज़ा खोला।

"ठीक है, इस आदेश को ख़ुद मैं जारी करूंगा। और आपके साथ हम पार्टी समिति में बात करेंगे।"

मोरोज़ोव उसी दिन वापस रवाना नहीं हो सका–कार में कोई ख़राबी आ गई थी, जिसकी मरम्मत ज़रूरी थी। अगले दिन सुबह, जब मोरोज़ोव कार में बैठ चुका था, ख़बर मिली कि घाट से पंद्रह किलोमीटर दूर एक बजरा डूब गया है, जो दो एक्स्केवेटरों के पुरज़े लेकर आ रहा था। सारे मज़दूरों को तुरंत वहां भेजना पड़ा, ताकि वे पुरज़ों को पानी के प्रवाह के साथ वह जाने या चट्टानों से टकराकर क्षतिग्रस्त होने के पहले नदी के पेंदे से निकाल सकें।

पुरज़ों को निकालने के काम का मोरोज़ोव ने स्वयं निदेशन किया। देर गये रात तक कपड़े उतारकर आदमी मशालों और कार की बत्तियों के उजाले में तूफ़ानी पानी से लड़ते और टक्कर लेते पुरज़ा-पुरज़ा करके मूल्यवान चीज़ों को निकालने में लगे रहे। पौ फटते-फटते अधिकांश भाग बचाया जा चुका था। बस, एक बॉइलर और आधा कैटरपिलर ही नहीं मिल पाये। उन्हें बहाव के साथ-साथ और नीचे जाकर ढूंढना पड़ा।

पसीने से तर और थकान से निढाल मोरोज़ोव मिनट भर को कार में लेट गया। इतना क़ीमती समय नष्ट करने के लिए उसे अपने ही ऊपर ग़ुस्सा आ रहा था। क्या यहां दो एक्स्केवेटरों को बचाने के लिए इतना समय लगाना उचित था, जब वहां मैदान में छः और एक्स्केवेटर नष्ट हो रहे थे? उसे एक मिनट भी नष्ट नहीं करना चाहिए था। वह कार से उतरा, अपने पर हावी होती भारी निद्रालुता को भगाने के लिए सिर को ठंडे पानी में डुबो दिया और ऊर्ताबायेव को ढूंढ निकालने के बाद ड्राइवर को कूच करने का आदेश दिया।

जब वे घाट के सामने से निकले, तब तक सूरज काफ़ी ऊपर चढ़ चुका था। मोरोज़ोव चुप रहा–वह खिन्न मन था और ठिठुर रहा था। ऊर्ताबायेव भी चुप ही रहा। कार सड़क की लहरदार धूल को तेज़ी से पार करती चली जा रही थी और धूल ऊन के रोयों की तरह दोनों तरफ़ उड़ती जा रही थी। ऊर्ताबायेव ने जब सामने काफ़ी दूर एक एक्स्केवेटर को आगे जाते देखा, तो उसके चेहरे पर चमक आ गई। सीट पर घूमकर वह देर तक उस पर आंखें जमाये रहा। मोरोज़ोव एक कोने में कमर झुकाये आंखें बंद किये बैठा था। रेगिस्तान की भूरी पीठ पर कोड़े की तरह पड़ती सीधी सड़क का जैसे कोई अंत ही नहीं था। आसमान से रिसकर आती चिपचिपी गरमी आंखों को बंद किये दे रही थी, जिससे उन्हें मुश्किल से ही खोला जा सकता था। मोरोज़ोव को नींद आ गई।

उसकी आंख एक कर्णभेदी शोर से खुली। कोई दो सौ क़दम की दूरी पर एक के पीछे एक दो एक्स्केवेटर स्तेपी पर रेंगते चले जा रहे थे। उनके आगे किसी अप्रत्याशित मंचसज्जा का स्मरण दिलाती रंग-बिरंगे ख़ाके की तरह दूसरे सैक्शन की बस्ती फैली हुई थी।

लाल झंडे और रूमाल लिये मजदूरों की एक घनी भीड़ एक्स्केवेटरों का स्वागत करने के लिए बस्ती से उमड़ती निकली चली आ रही थी। भीड़ ने हवा में अपनी टोपियां उछालते हुए उल्लासपूर्ण चीत्कारों से उनका स्वागत किया।

मोरोज़ोव ने, जो अभी अधजगा ही था, इस सबको एक ही नज़र में देखकर भौंहें चढ़ा लीं और आंख के कोने से ऊर्ताबायेव पर नाराज़ी-भरी नज़र डाली। ऊर्ताबायेव प्रत्यक्षतः मोरोज़ोव की उपस्थिति के बारे में बिलकुल भूल चुका था। सीट पर खड़ा भीड़ का अभिनंदन करते हुए उसने अपनी टोपी को हवा में हिलाया और ताजिक भाषा में चिल्लाते हुए कुछ कहा।

भीड़ ने "हुर्रा" का ज़ोरदार नारा लगाकर जवाब दिया।

यह मोरोज़ोव की बरदाश्त के बाहर था।

"आप पूरी तरह से होश खो बैठे हैं, साथी ऊर्ताबायेव!"

ऊर्ताबायेव ने उसकी तरफ़ न समझनेवाली निगाह से देखा।

"लेकिन मैंने आपसे कहा था..."

"क्या कहा था?"

"वे पहुंच जायेंगे! मैंने आपसे कहा था कि वे पहुंच जायेंगे!"

"और हफ़्ते भर के भीतर वे सिर्फ़ कबाड़ख़ाने के लायक़ रह जायेंगे!"

"यह हम देख लेंगे," ऊर्ताबायेव का चेहरा स्याह हो गया।

कार भीड़ के बराबर आ गई। पहली क़तार में मोरोज़ोव की निगाह कुत्ता लिये नाटे क़द के एक आदमी पर पड़ी और उसने ड्राइवर के कंधे को छुआ। कार रुक गई। रियूमिन पास आ गया।

"यह कैसा मूर्खतापूर्ण प्रदर्शन है?" उसकी तरफ़ झुकते हुए मोरोज़ोव फूट पड़ा, "दुर्लभ विदेशी मुद्रा को बहाया जा रहा है, बाहर से मंगाई मशीनों को नष्ट किया जा रहा है और आप ख़ुशी के मारे पागल हुए जा रहे हैं! आप बांहें फैलाते हुए उनका स्वागत कर रहे हैं! मज़दूरों को अपनी जगह पर जाकर काम जारी रखने दीजिये—यह कोई उत्सव नहीं है। जहां तक

एक्स्केवेटरों का सवाल है, उन्हें आप अपने सैक्शन पर ही रख सकते हैं, जिससे वे और आगे न जाने पायें। आप दो एक्स्केवेटर चाहते थे – इन्हें ही ले लीजिये।"

रियूमिन अवाक खड़ा कुछ भी न समझते हुए मोरोज़ोव की तरफ़ घूरे जा रहा था।

इसी बीच भीड़ ने यह जानकर कि निर्माण-प्रमुख कार में जा रहा है, उसे घेर लिया और मोरोज़ोव का ज़ोरदार जय-जयकार किया। अब तो बात असह्य हो गई। मोरोज़ोव ने हाथ हिलाकर ड्राइवर को इशारा किया। ड्राइवर ने कार को स्टार्ट किया और हॉर्न बजाया। मगर भीड़ ने रास्ता नहीं दिया। हॉर्न की कर्णभेदी चीख़ों के साथ कार ने धीरे-धीरे आगे सरकना शुरू किया और आख़िर भीड़ से निकलकर झटके से आगे बढ़ी और पूरी चाल से दौड़ने लगी। मोरोज़ोव ने तिरछी नजर से ऊर्तावायेव की तरफ़ देखा। ऊर्तावायेव हंस रहा था।

भीड़ अचरजभरी आंखों से कार को देखती धीरे-धीरे बिखर गई।

रियूमिन और उसका कुत्ता सड़क के बीच में खड़े रहे। मिनट भर दोनों जाती हुई कार की तरफ़ देखते रहे – यहां तक कि वह धूल के बादल में आंखों से ओझल हो गई। कुत्ता ही पहले मुड़ा और उसने अपने मालिक के हाथ को चाटा। रियूमिन ने उसे कान के पीछे सहलाया।

"कुछ समझ में आया, वेग?" झुककर कुत्ते को थपथपाते हुए उसने कहा, "पता नहीं क्यों उन्होंने हमें झाड़ लगाई और फिर दो एक्स्केवेटर भी दे दिये। मैंने तीन दिन पहले मांगे थे, तो उसने साफ़ इनकार कर दिया। दिलचस्प बात है, न? कोई बात नहीं, हम ऐसे नख़रेवाले नहीं, इसलिए एक्स्केवेटरों को ले लेंगे – वे काम आयेंगे। और हम बुरा भी नहीं मानेंगे, है न? क्या कहते हो?"

कुत्ते ने दुम हिलाकर सहमति जताई।

बुख़ारा के अमीर का सहचर

...मेज पर रखी घड़ी दमे के रोगी की तरह घरघराती हुई चार बार खांसी। सिनीत्सिन ने उठकर अपना ड्रेसिंग गाउन पहना और बाहर चला गया। उसने मन में सोचा कि अभी पार्टी समिति के कार्यालय में कोई भी

नहीं होगा और वह बिना बाधा के एक घंटा अतिरिक्त काम कर डालेगा। वह स्नान करके कमरे में वापस आया और कपड़े पहनने लगा।

ग्रीष्म-प्रभात की ठंडी हवा ने थकान को पूरी तरह से मिटा दिया। चलते-चलते वह मन ही मन सबसे ज़रूरी कामों के बारे में सोचने लगा, जिन्हें तुरंत निपटाना था—एक्स्केवेटरों का मामला, अमरीकियों की हत्या का प्रयत्न, नहर-तल की खुदाई के काम में अवरोध, मैकेनिकल डिपार्टमेंट का धांधला, कारों का धांधला, हर सैक्शन में पार्टी इकाई के गठन के आधार पर पार्टी संगठन को पुनर्गठित करने का काम, दूसरे और तीसरे सैक्शनों की पार्टी इकाइयों का गठन, अख़बार को पांच दिन में कम से कम दो बार निकालने का इंतज़ाम करने का काम—कितने ही काम थे और हर काम दूसरे से ज्यादा महत्त्वपूर्ण और ज़रूरी था।

सिनीत्सिन पार्टी कार्यालय में धड़ाम से कुरसी में गिर गया और सिर को हाथों पर टिका दिया। उसे लग रहा था कि वह अच्छी तरह से काम नहीं कर पायेगा। उसने आंखें उठाईं, तो उसकी निगाह पीले रंग के एक बड़े लिफ़ाफ़े पर पड़ी। लिफ़ाफ़े पर टेढ़ी-मेढ़ी अरबी लिपि में पता लिखा हुआ था: "कम्युनिस्ट पार्टी की समिति को मिले"। सिनीत्सिन ने लिफ़ाफ़े को खोला। उसके भीतर पेंसिल से लिखा एक बड़ा काग़ज़ था। दायें से बायें जाते अजीब अरबी अक्षर कभी ऊपर चढ़ जाते, तो कभी नीचे चले जाते। सफ़े के नीचे की तरफ़ कई अंगूठों के निशान थे। पूरे काग़ज़ को देखकर यही लगता था कि जैसे आशुलिपि की किसी पाठ्यपुस्तक का कोई जटिल अभ्यास हो।

उसने अपने को क़ाबू में किया और अलग-अलग अक्षरों को मुश्किल से एकसाथ जोड़कर उनसे शब्द बनाते हुए पढ़ना शुरू किया:

सेवा में,

कम्युनिस्ट पार्टी की समिति

हम नीचे दस्तख़त करनेवाले दहक़ान, ग़रीब किसान, खेत मजदूर और मजदूर भी कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार और चेका को भी ख़बर देते हैं कि उन्हें सोवियत सत्ता के दुश्मन और बुख़ारा के अमीर के और बासमचियों और अफ़ग़ानिस्तान के पूंजीपतियों के भी सहचर, सैयद ऊर्ताबायेव, साकिन चुबेक

को गिरफ़्तार कर लेना और गोली से मार देना चाहिए, जो अब तक निर्माणस्थली पर इंजीनियर की हैसियत से काम करता रहा है...

सिनीत्सिन ने माथे पर हाथ फेरा और काग़ज़ को आंखों के और क़रीब खींच लिया।

...और जिसके कई सबूत हैं। तीन हफ़्ते हुए, जब मुख्य मुनीम और इंजीनियरी डिपार्टमेंट के प्रमुख अफ़ग़ानिस्तान भागकर गये, तो उनके साथ दो अफ़ग़ान मज़दूर भी भागकर गये थे, जो उनके गाइड थे। इन अफ़ग़ानों को ऊर्तावायेव ने ही काम पर रखा था और इसके अलावा, अफ़ग़ानिस्तान भागकर जाने के एक दिन पहले वे सैयद ऊर्तावायेव से मिलने के लिए आये थे और जब वे उसके पास से गये, तो उनके पास एक बंडल था, जिसकी तसदीक़ इन दहक़ानों और मज़दूरों से की जा सकती है–आलिम अस्मतुद्दीनोव, ख़्वाजा मूमिनोव, याक़ूबजान अब्दुर्रसूलोव और अब्दुला इमाम-बेरदी, जो पहले सेक्शन पर काम कर रहे थे और जिन्होंने सड़क से गुज़रते वक़्त अफ़ग़ानों को ऊर्तावायेव के यहां से बंडल लिये निकलते देखा है, जिससे उन्हें बड़ी हैरानी हुई थी।

हम सोवियत सरकार को इसकी इत्तला इसलिए दे रहे हैं, क्योंकि पिछले साल भी, बासमचियों के हमले के तीन दिन पहले, अफ़ग़ानिस्तान से दो दहक़ान सैयद ऊर्तावायेव के पास इस बहाने आये थे कि वे अफ़ग़ानिस्तान में सामूहिक फ़ार्म क़ायम करना चाहते हैं और तीन दिन बाद ही अफ़ग़ानिस्तान से बासमचियों का हमला हुआ और कई दहक़ान स्वयंसेवक उसमें मारे गये। आदीना तक़ीयेव और हलमुराद इकरामोव इसके गवाह हैं।

और जब बासमचियों ने कैयक़ क़िशलाक़ के पास घात बिठाई और स्वयंसेवकों के दस्ते पर हमला किया, जिसमें दहक़ान, सामूहिक किसान और पार्टी का उम्मीदवार सदस्य ईसा ख़्वाजायारोव गाइड था और जिस दस्ते का नायक ऊर्तावायेव था, मिलिशियामैन इब्राहीम रहीमोव, हाकिम मीरकुलानोव, ज़िला कार्यकारिणी समिति के प्रधान अब्दुर्रहीम क़ुरबानोव, अभियोक्ता

ख़ांनज़र ख़ुदाईकुलोव, दहक़ान रजब समनदरोव और कई और लोग, जिनके नाम याद नहीं हैं, लड़ाई में मारे गये और दो रूसी टेकनिशियनों को बासमचियों ने ऊर्ताबायेव के हुक्म से गोली से मार दिया था और ख़ुद ऊर्ताबायेव को बासमची-सरदार फ़ैयाज़ के हुक्म से छोड़ दिया गया था और इज्ज़त के साथ बासमचियों के एक घोड़े पर रवाना कर दिया गया था। लाल अक्तूबर सामूहिक फ़ार्म का उम्मीदवार पार्टी सदस्य ईसा ख़्वाजायारोव इसकी गवाही दे सकता है, जिसने सोवियत सरकार को अपने अनपढ़ होने के कारण पहले इसकी इत्तला नहीं दी थी। हम इस बात की तसदीक़ करते हैं कि यहां लिखी हर बात सच है।

इसके बाद कई दर्जन अंगूठों के निशान थे।

बाहर एक ट्रक इस तरह घनघना और कंपकंपा रहा था, मानो मक्खीमार काग़ज़ पर चिपकी अपने को छुटा पाने में असमर्थ मक्खी। नहर के तल में चट्टान को बारूद से उड़ाया जा रहा था। विस्फोटों की आवाज़ पेड़ को गिराती कुल्हाड़ी की चोटों की तरह बंधी और दबी हुई आ रही थी। बारकों के बीच की खुली जगह में हवा की लहरें गरमी में कंपन कर रही थीं। एक कार आकर खड़ी हो गई। कोमारेंको ने ड्राइवर से इंतज़ार करने के लिए कहा और मैदान को पार करके पार्टी समिति के कार्यालय में प्रवेश किया।

"अहा, तुम बिलकुल सही वक़्त पर ही आये हो!" सिनीत्सिन ने हर्षपूर्वक कहा।

उसने और लोगों को कमरे से जाने को कहा और दराज़ से अंगूठों के निशानोंवाला एक बड़ा काग़ज़ निकालकर कोमारेंको को दिखाते हुए कहा:

"अच्छा, देखें, इसके बारे में तुम क्या कहते हो!"

उसने एक-एक वाक्य करके सारे बयान का अनुवाद कर सुनाया।

"सुनो, इसका एक काग़ज़ पर लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ अनुवाद करके मुझे दे दो। फिर हम इसकी जांच कर लेंगे।"

"क्यों, क्या यह ज़्यादा ठीक नहीं रहेगा कि मैं तुम्हें अंगूठों के निशान लगी मूल प्रति ही दे दूं?"

"अंगूठों के निशान इकट्ठा करना मुश्किल नहीं है—वे हर किसीसे मिल सकते हैं। लेकिन क्या तुम इस ख़्वाजायारोव को जानते हो?"

"हां। इस नाम का एक उम्मीदवार पार्टी सदस्य नहर पर काम कर रहा है। अनपढ़ सामूहिक कृषक है – किसी भी तरह की कोई विशेषता उसने नहीं दिखाई है।"

"इस फ़ैयाज़ कांड के बारे में मुझे यहां के भूतपूर्व चेका-प्रमुख पेख़ोविच ने भी बताया था। यह बिलकुल सही है कि उस वक़्त कैंयक़ के पास हमारे एक पूरे दस्ते का सफ़ाया कर दिया गया था – एक ऊर्तावायेव ही ज़िंदा बच पाया था। ख़ुद फ़ैयाज़ ने ही उसे जाने दिया था। ऊर्तावायेव का कहना है कि उसने फ़ैयाज़ को अपने हथियारों के साथ आत्मसमर्पण करने के लिए राजी कर लिया था। वह उसी दिन पेख़ोविच के पास गया था। उसने उसे बताया था कि फ़ैयाज़ स्वयंसेवकों के आगे आत्मसमर्पण करने को तैयार नहीं है और सिर्फ़ चेका-प्रमुख के सामने ही हथियार डालेगा। ऐसे मामले हमारे पास अकसर आते रहे हैं। उन्होंने तीन दिन बाद दाग़ाना-कैंयक़ दर्रे में हथियार डालने का वादा किया था। दो दिन बाद ओस्तापोव की कमान में हमारे दस्ते ने हमला करके उनका सफ़ाया कर दिया, इसलिए दर्रे में मुलाक़ात की नौबत ही नहीं आई। फ़ैयाज़ ख़ुद अपने एक-दो बासमचियों के साथ भाग निकला, मगर हमारे लोगों ने पहाड़ों में दूर तक उनका पीछा किया। इसके बाद फ़ैयाज़ का एक बासमची फ़रख़ार में चेका-प्रमुख के सामने उसका सिर बोरे में लेकर हाज़िर हुआ। इस आदमी का नाम कुआनदीक ख़्वाजा-गिल्दी था। वह अब मूमिनाबाद में रहता है। उसने कैंयक़ के पास के छापे में बासमचियों की तरफ़ से अवश्य हिस्सा लिया होगा, इसलिए वह हमें ज़रूर कुछ बता सकेगा। यह सब तुम्हारी जानकारी के लिए बता रहा हूं।"

"दिलचस्प बात है! मतलब यह कि बयान है तथ्यों पर ही आधारित।"

"देखो, अपनी तरफ़ से इस मामले की तुम उसी तरह जांच करो, जिस तरह किसी भी पार्टी सदस्य के बारे में आनेवाले हर बयान की करते हो। अंगूठों के निशानों पर ज्यादा भरोसा मत करो। वे दर्जनों की तादाद में मिल सकते हैं। यह मालूम करो कि ख़्वाजायारोव कैसा आदमी है। उसीने यह बयान दिलवाया होगा। जहां तक मेरा सवाल है, मैं इसी में लग जाता हूं और गवाहों से पूछताछ शुरू कर देता हूं। मैं कुआनदीक को तथा कुछ और लोगों को भी बुलवाऊंगा।"

"मतलब यह कि तुम भी यही समझते हो कि यह सच हो सकता है?"

"शैतान ही जाने। मैं तो ऐसी-ऐसी बातें देख चुका हूं कि क़सम खा ली है कि कुछ भी हो जाये, अचरज नहीं करूंगा। एक्स्केवेटरों की क्या ख़बर है? कोई फ़ैसला किया?"

"फ़ैसला क्या करना था? जो दो एक्स्केवेटर दूसरे सैक्शन तक पहुंच गये थे, उन्हें वहीं छोड़ दिया गया है। फ़िलहाल वे काम कर रहे हैं। दूसरों को स्तेपी में ही छोड़ दिया गया है और हमने उन पर पहरेदार नियुक्त कर दिये हैं। जब ट्रैक्टर आ जायेंगे, तो हम उन्हें वहीं खोल डालेंगे और पुरज़ा-पुरज़ा करके यहां ले आयेंगे। घाट पर मशीनों को खोलना शुरू कर दिया गया है। ऊर्तावायेव को अपने पद से मुअत्तिल कर दिया गया है। मोरोज़ोव इस बात पर ज़ोर दे रहा है कि उसे सख़्त भर्त्सना के साथ बरख़ास्त कर दिया जाना चाहिए। यह तो मैं भी कहूंगा कि इस सारे मामले में ऊर्तावायेव का रवैया शुरू से अंत तक बड़ा निंदनीय रहा है। उसने मोरोज़ोव का आदेश मानने से इनकार किया और, आदेश के विरुद्ध, मशीनों का संयोजन करता रहा।"

"इसके बारे में तुम्हें सबसे पहले किसने बताया?"

"मर्री ने।"

"वह कहता है कि ऐसी यात्रा के बाद एक्स्केवेटर ख़राब हो जायेंगे?"

"पूरी तरह से। वह कोई भी ज़िम्मेदारी लेने से इनकार करता है।"

"दूसरे सैक्शन के पास जो दो एक्स्केवेटर छोड़ गये थे, उनके चालक कौन हैं?"

"मेत्योल्किन और सैक्शन के प्रमुख का भाई रियूमिन।"

"पार्टी सदस्य हैं?"

"हां।"

"वे क्या कहते हैं?"

"दोनों ही ऊर्तावायेव का समर्थन करते हैं। उनका कहना है कि मशीनें अच्छी हालत में हैं। लेकिन यह क्यों पूछ रहे हो?"

"मेरी इस मामले में दिलचस्पी है। अगर दोनों एक्स्केवेटर ठीक काम करते हैं, तो इसका मतलब है कि ऊर्तावायेव का प्रयोग आख़िर इतना मूर्खतापूर्ण भी नहीं था। क्यों, ठीक है न?"

"फिर भी, ये दोनों एक्स्केवेटर ठीक काम भी करें, तो भी ऊर्ताबायेव को बीस से अधिक एक्स्केवेटरों के साथ व्यूसाइरस फ़र्म के स्पष्ट विरोध के बावजूद, निर्माण-प्रमुख और मुख्य इंजीनियर के आदेश के विरुद्ध अपनी ही ज़िम्मेदारी पर प्रयोग करने का कोई अधिकार नहीं था। ऐसी बातों के लिए नियंत्रण आयोग लोगों की पीठ नहीं ठोकता।"

"ख़ैर, अपना काम करो। मैं भी चलता हूं। मुझे ख़बर देते रहना।"

"लेकिन यह बताओ – इस सारे मामले के बारे में तुम क्या सोचते हो?"

"मैं कुछ भी नहीं सोचता, मेरे भाई। मुरग़े ने सोचने की ग़लती की थी, सो उसने अपनी गरदन गंवाई। पहला काम है पता लगाना, सोचना मैं बाद में करूंगा। मेरी राय जानना चाहते हो? ख़ाली बैठे ही मत रहा करो – कुछ कसरत भी किया करो – इससे ख़ून की गरदिश बढ़ जाती है। हां, मेरे पास पिंग-पौंग के कुछ नये गेंद आये हैं। किसी शाम को आ जाओ, तो हो जाये एकाध गेम। ख़ैर, ख़ुदा हाफ़िज़!"

ऊर्ताबायेव का पैरोकार

सारी निर्माणस्थली "ऊर्ताबायेव कांड" और पार्टी से उसके प्रस्तावित निष्कासन विषयक अफ़वाहों से गरमियों की शाम को मच्छरों के दल की तरह गूंजने लगी। पार्टी तफ़तीश के लिए निर्धारित दिन के आते-आते तीनों ही सैक्शन पाठ को दोहराते स्कूली छात्रों की तरह ऊर्ताबायेव के नाम के सभी रूपों को दुहराने लगे।

उस दिन पार्टी समिति में काम-काज ढीली-ढाली रफ़्तार से ही हो रहा था। लगता था जैसे आनेवालों की संख्या भी रोज़ से कम है। सिनीत्सिन अलग-अलग सैक्शनों में पार्टी इकाई के आधार पर पार्टी कार्य के पुनर्गठन के बारे में स्थानीय अख़बार में अपने लेख के प्रूफ़ पढ़ रहा था कि तभी नासिरुद्दीनोव ने उसके कमरे में आकर कहा:

"मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूं, साथी सिनीत्सिन। मुझे ऊर्ताबायेव के मामले के बारे में कुछ कहना है।"

"आओ, बैठो," सिनीत्सिन ने उठते हुए कहा।

उसने जाकर अपने कमरे को पार्टी समिति के शेष भाग से अलग करनेवाले परदे को पिन से नत्थी कर दिया। इसका मतलब था कि दरवाजा बंद है और सचिव व्यस्त है।

"सुना है ऊर्तावायेव को पार्टी से निकालने का सवाल आज पार्टी समिति के व्यूरो के सामने पेश होनेवाला है। क्या यह ठीक है?"

"हां।"

"साथी सिनीत्सिन, मुझे भय है कि व्यूरो ग़लती कर रहा है—बहुत ही बड़ी ग़लती। इसी लिए मैं आपको आगाह करने के लिए आया हूं। ऊर्तावायेव को नहीं निकाला जाना चाहिए—वह दोषी नहीं है।"

"दोषी नहीं है? चलो, अच्छी बात है। तथ्य सामने रखो। ग़लती को तो जब भी सुधार दिया जाये, ठीक ही रहता है।"

"तथ्य मेरे पास नहीं हैं, लेकिन यह मैं जानता हूं कि वह दोषी नहीं है।"

सिनीत्सिन ने नाराज़ी के साथ अपनी पेंसिल से मेज़ को खटखटाया।

"तुम्हें बस यही कहना था? यह तो कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है। पार्टी समिति का व्यूरो मात्र तुम्हारी निजी राय के कारण तो अपना फ़ैसला नहीं बदल सकता। इसके लिए उसके सामने तथ्य होने चाहिए।"

"तथ्य तो आपके पास भी नहीं हैं!"

"बकवास मत करो, करीम। बेहतर होगा कि जिन चीज़ों को तुम समझते नहीं, उनके बारे में बातें न करो। ऊर्तावायेव पर हमारी जो आस्था और आशा थी, उसके साथ उसके विश्वासघात को देखकर मुझे उससे कहीं ज्यादा क्लेश हुआ है, जितना किसी और को। जब सामने विश्वासघात का प्रत्यक्ष मामला पेश होता है, तो उसमें व्यक्तिगत मैत्री की बात नहीं उठ सकती, साथी नासिरुद्दीनोव। इस बात को याद रखो। कोम्सोमोल समिति के सचिव को यह मालूम होना चाहिए। मेरा ख़याल था कि तुम ज्यादा समझदार हो।"

"बेकार नाराज़ होने का कोई लाभ नहीं, साथी सिनीत्सिन। मैं कोई बच्चा नहीं हूं। आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है और इस बात को मैं कभी नहीं भूलूंगा, लेकिन आप अकसर मुझसे ऐसे ही बातें करते हैं, मानो मैं बच्चा ही हूं। यह ठीक नहीं है। तब से मैं बड़ा हो गया हूं। पार्टी

के प्रारंभिक नियमों को मैं जानता ही हूं, इसलिए मुझे उनकी सीख देने की ज़रूरत नहीं। अगर मैं आपके पास महज़ इसलिए ऊर्तावायेव की पैरवी करने के लिए आया हूं कि वह मेरा मित्र है, तो आपको मेरे मुंह पर थूक देना चाहिए। मैं कहता हूं कि आपके पास कोई तथ्य नहीं हैं और मुझे मालूम है कि मैं क्या कह रहा हूं। मैं इसी इलाक़े का रहनेवाला हूं—यहीं मैं बड़ा हुआ हूं। आपको जैसा बयान मिला है, मैं ऐसे बहुत से देख चुका हूं। हमारे यहां जैसे ही कोई सक्रिय कार्यकर्ता सामने आने लगता है, ख़तरनाक होने लगता है, अमीर लोग उसे क़त्ल करने के बजाय उसकी बदनामी करने की कोशिशें करना शुरू कर देते हैं—वे उसके ख़िलाफ़ लिखित बयान भिजवाने का इंतज़ाम करते हैं, उन पर दर्जनों अंगूठों के निशान लगवाते हैं, ग़रीब किसानों को भड़काते हैं, जो उनके इशारों पर नाचते हैं। उनमें से हर कोई क़ुरान शरीफ़ को हाथ में उठाकर यह कह देगा कि आपने उसके बाप का क़त्ल किया है, मां का शीलभंग किया है और उसकी बेटी को फ़ुसलाया है। और वे अपनी लड़की तक को पेश कर देंगे और वह इस बात की तसदीक़ करेगी कि यह सब सही है। और जब आप उन्हें भड़कानेवाले आदमी को पकड़ लेंगे और उनके आगे बचाव का रास्ता नहीं रहने देंगे, तो वे सभी बेचारगी से सिर झुकाकर कहने लगेंगे: 'हम तो जाहिल हैं, न पढ़ सकते हैं, न लिख, हमें भड़का दिया गया है।' आप हमारे देश को अभी जानते नहीं, साथी सिनीत्सिन!"

"कुछ ज़रूर जानता हूं, मेरे प्यारे करीम—तुम मुझे सिखाओ मत। मैंने भी ऐसे कई बयान देखे हैं और मैं यह जानता हूं कि उनके प्रति क्या रवैया अपनाना चाहिए। पहले तथ्यों की जांच किये बिना हम कोई फ़ैसला लेनेवाले नहीं थे। ख़्वाजायारोव अमीरों का कोई मोहरा नहीं है। ख़्वाजायारोव बासमचियों से लड़ा था और ऊर्तावायेव ने हमारे साथ ग़द्दारी की थी और छिपे-छिपे उनके साथ काम कर रहा था। ख़्वाजायारोव बासमचियों से लड़ते हुए घायल हुआ था और उसके ख़िलाफ़ कोई भी कुछ नहीं कह सकता है। उसने हमें कैयक़ के पास की लड़ाई के बारे में जो बताया है, ऊर्तावायेव को तो गोली से उड़ा देने के लिए वही काफ़ी है।"

"तो क्या एक ही गवाह काफ़ी है?"

"कभी-कभी एक भी काफ़ी होता है। लेकिन अगर तुम्हारी दिलचस्पी हो, तो मैं तुम्हें बता सकता हूं कि उसके अलावा हमारे पास और गवाह

भी हैं। मैं तुम्हें यह सब इसलिए बता रहा हूं कि तुम इस बकवास को अपने दिमाग़ से निकाल सको। फ़ैयाज़ का एक आदमी बच रहा था—वही, जिसने पिछले साल अपने सरदार का सिर फ़रख़ार में चेका को पहुंचाया था। इस आदमी का नाम कुआनदीक है और उसने बासमचियों की तरफ़ से कैयक़ के पास के धावे में हिस्सा लिया था। कुछ दिन पहले कोमारेंको ने उससे पूछताछ की थी। कुआनदीक का कहना है कि फ़ैयाज़ ने उनसे पहले ही कह रखा था कि ऊर्ताबायेव को हाथ न लगाया जाये। यह है पहला तथ्य। वह कहता है कि दोनों रूसी टेकनिशियन लड़ाई में नहीं मारे गये थे, बल्कि क़ैदी बना लिये गये थे और बाद में, जब ऊर्ताबायेव फ़ैयाज़ से बातें कर रहा था, गोली से मारे गये थे। और ऊर्ताबायेव वहां खड़ा हुआ था और उसने उनका गोली से मारे जाना देखा था। उसके लिए यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण थी कि हमारी तरफ़ का कोई गवाह ज़िंदा न बचे। यह है दूसरा तथ्य। जब फ़ैयाज़ ने ऊर्ताबायेव को रिहा किया और एक घोड़े पर सवार करवाकर वहां से विदा किया, तो उसमें और बासमचियों में ऐसी कोई बात नहीं हुई थी कि फ़ैयाज़ का गिरोह तीन दिन बाद हथियार डाल देगा, जैसा कि ऊर्ताबायेव का दावा है। इसके विपरीत, ऊर्ताबायेव के रवाना होने के बाद फ़ैयाज़ ने अपने आदमियों को इकट्ठा किया और उनसे कहा कि तीन दिन बाद हम कुरगान-तेपा में होंगे, जहां सभी कुछ तैयार होगा। सभी समझ गये कि यह सब तैयारी ऊर्ताबायेव ही करेगा। क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी है?"

"आपने किसी बासमची की गवाही पर कब से विश्वास करना शुरू कर दिया है, साथी सिनीत्सिन?"

"कुआनदीक इस इलाक़े का निवासी नहीं है—वह मूमिनाबाद का रहनेवाला है। यह कोई नहीं सोच सकता था कि उससे पूछताछ की जायेगी। तुम्हें और सबूत चाहिए? तो हमारे पास और सबूत भी है—एक्स्केवेटरों का मामला। क्या यह काफ़ी नहीं है?"

"जहां तक एक्स्केवेटरों का सवाल है, तो पोलोज़ोवा ने इंजीनियर क्लार्क से इस बारे में पूछा था। क्लार्क को नहीं मालूम कि ऊर्ताबायेव ने बार्कर से परामर्श किया था, या नहीं।"

"लेकिन मर्री को मालूम है और यह काफ़ी है। ऊर्ताबायेव पूरे एक महीने से हमें झांसा देने की कोशिश कर रहा है—उसने बार्कर को मास्को

ग्रौर न्यूयार्क तार भेजे, लेकिन हमारे कथन का खंडन करने के लिए उसे कोई जवाब नहीं मिला। क्या तुम यह सोचते हो कि ऊर्ताबायेव को बरबाद करने के लिए सभी ने—ब्यूसाइरस फ़र्म, दहक़ानों ग्रौर बासमचियों ने भी मिलकर साजिश की है? ग्ररे, छोड़ो भी करीम। जाग्रो, जाकर ग्रपना काम देखो।"

"मैं जानता हूं कि मामला बहुत उलझा हुग्रा है, लेकिन इसी लिए इसे इतनी जल्दबाजी में नहीं निपटाना चाहिए। जरूरत पड़ने पर उसे कभी भी पार्टी से निकाला जा सकता है। एक ग्रौर बात याद रखनी चाहिए—ऊर्ताबायेव यहां ग्रकेला ताजिक इंजीनियर है, हमारे पास ग्रौर ऊर्ताबायेव नहीं हैं। ऐसे लोगों के साथ लापरवाही नहीं करनी चाहिए।"

"करीम, ग्रभी तुम मुझे सिखाने लायक़ नहीं हुए हो। मैं यह सब पहले से ही जानता था। तुम बस, मेरा समय नष्ट कर रहे हो।"

"मैं समय नष्ट नहीं कर रहा। मेरे शब्दों को ग्राप याद रखेंगे, साथी सिनीत्सिन। ग्राप एक बहुत बड़ी ग़लती कर रहे हैं—एक भयानक ग़लती! ऊर्ताबायेव दोषी नहीं है।"

"भई, मैं तो तुम्हारी यह तोता रटंत सुनते-सुनते थक गया हूं। गरमागरम हवाई बातें करने के बजाय ग्रपनी बात को साबित करो, तब हम उसके बारे में बातें कर सकते हैं।"

"मैं साबित कर दूंगा। बस, तब बहुत देर हो चुकी होगी ग्रौर तब ग्रापको ग्रपनी ग़लती की जवाबदेही करनी होगी, साथी सिनीत्सिन।"

"मेरी चिंता मत करो। मैं तब से ग्रपने कामों की जवाबदेही करता चला ग्रा रहा हूं, जब तुम घुटनों ही चला करते थे। मैं तुम्हारी सलाह के बिना भी ग्रपने कामों को कर सकता हूं।"

"मैं ग्रापके ख़िलाफ़ नहीं जाना चाहता था, साथी सिनीत्सिन। ग्राप ख़ुद मुझे इसके लिए मजबूर कर रहे हैं।"

"सुनो, ग्रगर तुम्हें ग्रपने सही होने के बारे में इतना विश्वास है, तो तुम इसके बारे में सीधे ताजिकिस्तान की केंद्रीय समिति के पास जाग्रो। बस, इतनी बकबक मत करो ग्रौर किसी को डराने की कोशिश भी मत करो। ग्रगर तुम कोरी बकवास जैसा ही सबूत पेश कर सकते हो, तो हम जल्दी ही तुम्हें ठीक कर सकते हैं। ख़ैर, ग्रब मेरा ग्रौर समय नष्ट

मत करो। अच्छा हो कि तुम अपना ध्यान कोम्सोमोल ब्रिगेड की तरफ़ दो–कल वह प्रतियोगिता में फिर हार गई थी।"

वह चिढ़ गया था और आज ही उसका शांत रहना सबसे ज्यादा ज़रूरी था। नासिरुद्दीनोव के साथ इस बातचीत ने उसे अप्रत्याशित रूप से क्षुब्ध कर दिया था। यह लड़का, जिसे पांच साल से उसने अपने छोटे भाई की तरह समझा था और उसकी हर सफलता पर ख़ुश हुआ था, आज किसी मूर्खतापूर्ण बात पर उसका विरोध करने की, उसे ही सलाह देने की, उसे सीख देने की कोशिश करने की, उसके विरुद्ध युद्ध घोषित करने की धृष्टता कर रहा है। सिनीत्सिन ने अपने मन में कहा कि ये लोग कितने कृतघ्न हैं, मगर उसने तत्क्षण अपने को संयत कर लिया। वास्तविकता यही थी कि उसने इस छोकरे के लिए जो कुछ भी किया था, वह पार्टी का सदस्य होने के नाते उसका प्राथमिक कर्त्तव्य ही था।

अपने काग़ज़ों को अपने पोर्टफ़ोलियो में भरकर सिनीत्सिन पार्टी समिति के कार्यालय से निकल पड़ा। उसे कुछ फ़ौरी समस्याओं के बारे में मोरोज़ोव के साथ बातें करनी थीं।

युर्त में उसे ख़ुद मोरोज़ोव के अलावा कीर्श, मर्री और नाटे क़द का एक साफ़-सुथरा टेकनिशियन ("जन्म से किसी कुलीन घराने का होगा," सिनीत्सिन ने सोचा), जो मर्री का अनुवादक था, बैठे मिले। टेकनिशियन करने को कुछ न होने के कारण बैठा अपने दांत कुरेद रहा था। मर्री कीर्श से अंग्रेज़ी में कुछ कह रहा था, जब कि मोरोज़ोव, जो मुश्किल से कुछ समझ पा रहा था, ध्यान से इस बातचीत को सुन रहा था। सिनीत्सिन ने ऊर्ताबायेव का नाम सुना। उसने मोरोज़ोव की तरफ़ प्रश्नभरी निगाह से देखा। मोरोज़ोव ने ख़ामोशी से इशारा करके उसे अपने बराबर बैठने के लिए कहा और कीर्श की तरफ़ झुकते हुए कहा :

"आप बाद में मुझे इसका अनुवाद कर देंगे, न? मैं सब कुछ नहीं समझ पा रहा।"

कीर्श ने सिर हिलाकर सहमति जताई।

"आपको यह बात समझनी चाहिए, मिस्टर कीर्श," मर्री अंग्रेज़ी में कह रहा था, "कि व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए यह बात बहुत ही अप्रिय है। देखिये, मैंने ही आपका ध्यान सबसे पहले मिस्टर ऊर्ताबायेव के प्रयोग

की तरफ़ खींचा था। सुना है कि मिस्टर ऊर्ताबायेव का कहना है कि उन्होंने बार्कर की अनुमति प्राप्त कर ली थी। मैं यह नहीं कह रहा कि यह संभव नहीं हो सकता। ठीक है कि जहां तक मुझे याद पड़ता है, मुझसे बातें करते समय बार्कर ने एक्स्केवेटरों के अपनी ही शक्ति पर चलाये जाने पर सख़्त नाराज़ी ज़ाहिर की थी। लेकिन आख़िर यह भी तो हो सकता है कि बार्कर के जाने के ठीक पहले मिस्टर ऊर्ताबायेव ने उन्हें क़ायल करने में सफलता प्राप्त कर ली हो। बार्कर ने, मान लीजिये, अपनी एक-दो मशीनों के साथ प्रयोग करने की अनुमति दे दी हो। इसलिए यह संभव है कि मेरे सहयोगी ऊर्ताबायेव अपने अधिकार से कुछ हद तक ही आगे गये हों..."

"मेरी समझ में नहीं आता कि आप ऊर्ताबायेव की सफ़ाई देने को इतने उत्सुक क्यों हैं?" कोर्श ने टोकते हुए कहा।

"देखिये, बात यह है कि इस तरह से यही प्रतीत होता है कि मैंने बिलकुल अनजाने ही अपने ताजिक सहयोगी के लिए अड़चनें पैदा कर दी हैं। यह हमारी व्यावसायिक नैतिकता के एकदम प्रारंभिक सिद्धांतों के भी विपरीत है। मेरे सहयोगी ऊर्ताबायेव इसे लांछन समझ सकते हैं। तथ्य तथ्य ही है कि इस मामले के कारण ऊर्ताबायेव को तकलीफ़ उठानी पड़ी है। मेरे लिए यह बात बड़ी अरुचिकर है। आप स्वयं इंजीनियर हैं और आप इस बात को समझ सकते हैं। मैं आपसे यह अनुरोध करने के लिए आया हूं कि मेरे सहयोगी ऊर्ताबायेव की ग़लती के कारण आप तुरंत कोई निष्कर्ष न निकाल बैठिये। अगर मैंने यह अनुभव किया कि मैंने एक स्थानीय सहयोगी के भविष्य को बिगाड़ा है, तो उससे यहां मेरे भावी कार्य में गंभीर बाधा पड़ेगी।"

"आपका यह सोचना ग़लत है कि मैनेजमेंट ने साथी ऊर्ताबायेव को उनकी ग़लती के कारण बरख़ास्त किया है। साथी ऊर्ताबायेव को कोई ग़लती करने के कारण नहीं, बल्कि बाद में उसे दुरुस्त करने से इनकार करने के लिए, निर्माण-प्रमुख की आज्ञा का पालन न करने के लिए बरख़ास्त किया गया है। एक्स्केवेटरों के क़िस्से का इस मामले से ज़रा भी ताल्लुक़ नहीं है और ख़ुद आपका सरोकार तो और भी कम है। और जहां तक बेकार के आदमियों द्वारा ऊर्ताबायेव के मुक़दमे के बारे में फैलाई अफ़वाहों का सवाल है, वह बिलकुल अलग ही मामला है। साथी ऊर्ताबायेव को

कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य होने के नाते उसके आगे हमारे निर्माण-कार्य से प्रत्यक्ष रूप से संबंध न रखनेवाले कुछ कामों के लिए जवाबदेही करनी होगी। आपका व्यावसायिक अंतःकरण एकदम साफ़ है..."

"मैं निर्दोष हूं ..."

छः बजे ब्यूरो के सदस्य एक-एक करके पार्टी समिति के कार्यालय में एकत्र होने लगे, जहां ब्यूरो ऊर्ताबायेव के प्रश्न पर विचार करनेवाला था। बाहर, दरवाज़े के पास ग़ैर-पार्टी मज़दूरों की एक छोटी-सी भीड़ जमा हो गई थी।

जब ऊर्ताबायेव आया, तो मज़दूर उस पर शत्रुतापूर्ण नज़रें डालते हुए आपस में कानाफूसी करने लगे।

ऊर्ताबायेव जल्दी से पार्टी समिति के कार्यालय में घुस गया। उसे ब्यूरो की मेज़ के पास ही ज़रा एक तरफ़ बैठा दिया गया। पांच मिनट बाद सिनीत्सिन और कोमारेंको ने नियंत्रण आयोग के एक प्रतिनिधि के साथ कमरे में प्रवेश किया।

सिनीत्सिन ने बैठक की कारंवाई शुरू करते हुए कहा कि कार्यसूची पर बस एक ही प्रश्न है और वह है साथी ऊर्ताबायेव का मामला, जो १९२४ से पार्टी के सदस्य हैं। उनपर बासमचियों के और अफ़ग़ानिस्तान में उनके सरग़नों के साथ संबंध रखने का, दो टेकनिशियनों की हत्या का और जान-बूझकर तोड़-फोड़ की कारंवाइयां करने का इलज़ाम लगाया गया है।

उसने रूसी और ताजिक, दोनों भाषाओं में वह बयान पढ़कर सुनाया, जो ख़्वाजायारोव तथा अन्य मज़दूरों ने पार्टी समिति को भेजा था और संक्षेप में एक्स्केवेटरों की कहानी सुनाई। उसने यह कहकर अपनी बात को ख़त्म किया कि पार्टी समिति के ब्यूरो ने उसके बताये सभी तथ्यों की विश्वसनीयता की जांच कर ली है। उसने प्रस्ताव किया कि प्रश्नों को तीन भागों में बांट देना चाहिए—ऊर्ताबायेव पर लगाये गये इलज़ामों की सत्यता से संबंधित प्रश्न, गवाह ख़्वाजायारोव से पूछे जानेवाले प्रश्न, और स्वयं ऊर्ताबायेव से पूछे जानेवाले प्रश्न। उसने अनुरोध किया कि बैठक में इस नियम का सख़्ती के साथ पालन किया जाये, क्योंकि इससे कारंवाई में बहुत सुविधा और आसानी हो जायेगी।

पहले वर्ग के प्रश्न मुख्यत: ख़्वाजायारोव तथा अन्य गवाहों की शिनाख़्त और एक्स्केवेटरों के मामले से सम्बन्धित थे। इसमें बहुत देर नहीं लगी।

गवाह ख़्वाजायारोव से मेज़ के पास आने और वहां से सवालों का जवाब देने के लिए कहा गया। एक दुबला-पतला दहक़ान अपनी जगह से उठा, जो कमर पर रूमाल से बंधा एक मैला सा चोग़ा पहने हुए था। उसकी पोशाक जगह-जगह से फटी हुई थी और बग़लों और इधर-उधर के छेदों से रूई के गुच्छे निकले हुए थे, जिससे वह झाग से सने घोड़े जैसा लग रहा था। उसकी बाईं आंख ग़ायब थी, जिसके कारण उसका चेहरा सपाट हुआ सा लग रहा था। वह सिर्फ़ ताजिक में बोल रहा था।

उससे यह बताने के लिए कहा गया कि कैयक़ के पास घात में ऊर्ताबायेव के दस्ते का किस तरह सफ़ाया किया गया था। अपनी मूंछ और दाढ़ी के ऊपर हाथ फेरकर मानो पानी निचोड़ते हुए उसने कहना शुरू किया :

"जब हम कैयक़ क़िशलाक़ के पास पहुंचे, तो अचानक हम पर जैसे बीस बंदूक़ों की गोलियां बरसना शुरू हो गईं। मेरा घोड़ा अपने पिछले पैरों को झटकता हुआ वहां का वहीं गिर पड़ा। मेरे पास हथियार नहीं थे, क्योंकि मैं गाइड था। समझे? मैंने मन में कहा – अगर मैं सड़क पर ही रहूंगा, तो ये लोग बहुत करके मुझे मार डालेंगे, और हथियार मेरे पास थे नहीं। लेकिन बिलकुल पास ही एक नीची-सी दीवार थी और दीवार में एक दरार थी, जिससे उस पर चढ़कर दूसरी तरफ़ जाया जा सकता था। और जब मैंने देखा कि कितने ही घोड़े और आदमी ज़मीन पर पड़े हुए हैं और कितने ही बिनसवार घोड़े सड़क पर सरपट भागे जा रहे हैं, तो मैं चढ़कर दीवार के दूसरी तरफ़ चला गया और दरार के पास घास पर पड़ गया। मुझे सड़क से नहीं देखा जा सकता था, लेकिन मैं दीवार की दरार में से सारी सड़क को देख सकता था। और मैंने देखा कि क़िशलाक़ में से काले घोड़ों पर सवार बासमची दौड़ते हुए आये और दस्ते पर टूट पड़े – और तब तक दस्ते में रह ही कितने लोग गये थे! और जब बासमची ऊर्ताबायेव के पास पहुंचे, तो उसने अपना हाथ उठा दिया और अपने हाथ में वह कुछ पकड़े हुए था। समझे? लेकिन उसके हाथ में था क्या, यह

मैं नहीं देख सका, बस, बासमचियों ने उसे छुआ भी नहीं और आगे निकल गये। ऊर्ताबायेव के घोड़े के पैर में चोट आई थी। वह उस पर से उतरा और सीधा क़िशलाक़ में चला गया। लगातार वह अपने उठे हुए हाथ में थामी किसी चीज को दिखाता जा रहा था। और अपने घोड़े पर सवार ख़ुद फ़ैयाज उसके पास आया और घोड़े से उतरे बिना उसने उसके हाथ को अपने दोनों हाथों में भींचकर उससे हाथ मिलाये। वे सड़क के किनारे पर खड़े किसी चीज के बारे में बातें कर रहे थे, मगर किस चीज के बारे में, यह मैं नहीं सुन सका। और इसके बाद बाक़ी घुड़सवार बासमची दो पैदल रूसियों को अपने आगे-आगे लिये वहां आये। दोनों के पास हथियार नहीं थे और वे हमारे दस्ते के थे। बासमची उन्हें फ़ैयाज के पास ले आये और ऊर्ताबायेव ने फ़ैयाज से कुछ कहा। फ़ैयाज ने अपना हाथ हिलाया और रूसियों को वहां से कोई तीस क़दम दूर, दीवार के पास ले जाया गया और चार बासमचियों ने उनके सिरों में गोलियां दाग़ दीं। और ऊर्तावायेव खड़ा देखता रहा और फ़ैयाज देखता रहा और मैंने देखा कि देखते हुए वह हंस रहा है और फ़ैयाज से कुछ कह रहा है। मैंने अपना सिर छिपा लिया और सोचने लगा: हाय-हाय-हाय!

"और इसके बाद वे सब क़िशलाक़ में चले गये, मगर मरे हुओं को सड़क पर ही पड़ा छोड़ दिया गया। और तब मैंने देखा कि मेरी टांग में से गोली आरपार निकल गई है। मैंने अपनी टांग को अपने कमरबंद से कसकर बांध लिया और अंधेरा होने के साथ दाग़ाना क़िशलाक़ में अपने दस्ते को ख़बर देने के लिए मैं चुपके से खड्ड में होकर चल पड़ा। समझे? लेकिन बासमचियों ने दाग़ाना क़िशलाक़ पर क़ब्ज़ा कर लिया था और मुझे बासमचियों ने पकड़ लिया और पूछने लगे: 'तुम्हारी टांग में गोली क्यों लगी हुई है?' मैंने उनसे कहा कि मैं अपने सामूहिक फ़ार्म की सड़क पर जा रहा था कि तभी बासमची और लाल सैनिक अचानक आ गये और गोलियां चलाने लगे और मेरी टांग में गोली लग गई। और मैं घर नहीं लौट सका, क्योंकि सड़क पर लाल सैनिक थे और वे यह सोच सकते थे कि मैं कोई घायल बासमची हूं। लेकिन उन्होंने मेरी बात पर यक़ीन नहीं किया और एक घोड़ा देकर वे मुझे अपने साथ लेकर चल दिये। दो दिन वे मुझे पहाड़ों में साथ-साथ घसीटते फिरे। तीसरे दिन मैं बच भागा और कोकताश क़िशलाक़ में पहुंच गया। मैं जिला कार्यकारी समिति के दफ़्तर

में गया और अपनी टांग की मरहमपट्टी करने के लिए कहा। उसी वक़्त एक कार इस्तालिनाबाद जा रही थी और बड़ा अफ़सर ने मुझे उसी कार पर बैठा दिया और यह हुक्म दिया कि मुझे इस्तालिनाबाद में अस्पताल ले जाया जाये। मैं दो महीने अस्पताल में पड़ा रहा।

"जब मैं अस्पताल से निकला, तो मुझे इस्तालिनाबाद की सड़क पर ऊर्ताबायेव मिला और मुझे बहुत अचरज हुआ। और ऊर्ताबायेव भी मुझे पहचान गया और मेरे पास आकर बोला: 'सलाम अलैकुम, ईसा! तुम्हीं ने तब हमें कैयक़ के पास फंसवाया था। मैं अभी तुम्हारी गिरफ़्तारी का हुक्म निकलवाता हूं!' मैं बेहद डर गया और मन में कहने लगा: 'मैं इस बात को कैसे साबित कर सकता हूं कि दस्ते को मैंने नहीं, बल्कि इसीने फंसवाया था? यहां इसकी बड़ी इज़्ज़त है और यह पढ़ा-लिखा आदमी है, जब कि मैं एक सीधा-सादा दहक़ान हूं और मैंने लिखना-पढ़ना कभी सीखा नहीं है – यक़ीन किसकी बात पर किया जायेगा – उसकी या मेरी?' समझे? और मैं उसकी ख़ुशामद करने लगा कि वह मुझे पकड़वाये नहीं, बल्कि घर जाने दे। मैंने उससे कहा कि तब मुझे कैयक़ के पास टांग में गोली लग गई थी और मैं अपनी ज़ख़्मी टांग लिये-लिये ख़रबूज़े के खेतों में होकर भाग निकला था और मैंने यह कुछ नहीं देखा कि कोई मारा गया है या नहीं। और उसने इस बात पर विचार किया और फिर बोला: 'अच्छा, ठीक है, मैं तुम्हें गिरफ़्तार नहीं करवाऊंगा। सीधे अपने घर चले जाओ और इस बात को याद रखना कि कैयक़ क़िशलाक़ के पास मैंने फ़ैयाज़ को इस बात के लिए राज़ी किया था कि वह चेका के सामने हथियार डाल दे।'

"मैं अपने सामूहिक फ़ार्म चला गया, लेकिन उसके बाद मैंने अपने पड़ोसियों को कहते सुना कि निर्माणस्थली पर मिट्टी खोदने के लिए मज़दूरों की ज़रूरत है और इसलिए मैं जाकर भरती हो गया। और वहां मैंने ऊर्ताबायेव को फिर देखा और हर कोई यही कहता था कि वह यहां बड़ा महत्त्वपूर्ण आदमी है। लेकिन फिर लोग कहने लगे कि सबसे बड़ा अफ़सर ऊर्ताबायेव से नाराज़ है और उस पर मुक़दमा चलाया जायेगा। और हमारी इकाई के सचिव ने कहा कि हमें बासमचियों के मददगारों का भेद खोलना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि बासमची फिर अफ़ग़ानिस्तान से आ जायें और हमारी फ़सल को रौंद डालें। समझे? और मज़दूरों ने यह कहना

शुरू किया कि उन्होंने देखा है कि किस तरह अफ़ग़ान ऊर्तावायेव से मिलने के लिए आते थे। तब मैंने बताया कि कैयक़ क़िशलाक़ के पास क्या हुआ था और उन्होंने कहा कि यह बात मुझे लिख कर देनी चाहिए, क्योंकि ऊर्तावायेव पर मुक़दमा चलाया जानेवाला है और उस पर अपनी सारी करनियों का एक बार में ही मुक़दमा चलना चाहिए। और मैंने जो कुछ भी कहा है, वह एकदम सच है..."

ख़्वाजायारोव की कहानी का सभी पर बहुत असर पड़ा। कोई बहुत सवाल नहीं उठे। ज्यादातर सवाल उन्हीं दो दिनों के बारे में थे, जिनमें वह बासमचियों का क़ैदी रहा था।

इसके बाद ऊर्तावायेव की सवालों का जवाब देने की बारी आई।

पहले सवाल के बाद ऊर्तावायेव उठा और उसने अभियोग पत्र की सभी बातों का एकसाथ उत्तर देने की अनुमति मांगी। उसने अपना पोर्टफ़ोलियो खोला और उसमें से कुछ काग़ज निकाले; उसके बाद वह काफ़ी देर तक उसे बंद नहीं कर पाया—हर किसी ने देखा कि उसके हाथ किस तरह कांप रहे हैं।

"साथियो, मुझ पर अभियोग लगानेवालों ने जिन घटनाओं का उल्लेख किया है, मैं उनका संक्षेप में और जहां तक हो सकेगा, सही वर्णन करने की कोशिश करूंगा। वे जो कुछ हुआ है, उसको जान-बूझकर तोड़-मरोड़ रहे हैं... इन अभियोगों का पहला सिलसिला पिछले साल के बारे में है—अफ़ग़ानिस्तान से बासमचियों के हमले के ठीक पहले के समय के बारे में। जिन गवाहों ने लिखित बयान की तैयारी में हिस्सा लिया है, उनका कहना है कि हमले के तीन दिन पहले अफ़ग़ानिस्तान से दो दहक़ान मुझसे मिलने के लिए आये थे। कहा गया है कि वे यह बहाना लेकर आये थे कि वे अफ़ग़ानिस्तान में एक सामूहिक फ़ार्म संगठित करना चाहते हैं, लेकिन असल में वे मुझे उस हमले की ख़बर देने के लिए आये थे, जिसकी तैयारी की जा रही थी। यह सही है कि अफ़ग़ानिस्तान के दो दहक़ान मुझसे मिलने के लिए आये थे; उन लोगों ने यहां, निर्माणस्थली पर दो-तीन महीने काम किया था और फिर अपने देश चले गये थे। वे मेरे पास अफ़ग़ानिस्तान के एक ज़िले—हाकिमत-ए-इमामसाहब के कलबात क़िशलाक़ के दहक़ानों का लिखित प्रार्थना पत्र लेकर आये थे। इस प्रार्थना पत्र पर बतौर दस्तख़त कई दर्जन अंगूठों के निशान लगे हुए थे।"

उसने एक मैला-सा काग़ज़ निकाला और उसे मेज़ पर रख दिया।

"इस प्रार्थना पत्र में उन्होंने कहा है कि उनके पास यह सिखाने के लिए एक प्रशिक्षक भेजा जाये कि सामूहिक फ़ार्म कैसे संगठित किया जाता है। मेरे ख़याल से इसमें कोई अजीब बात नहीं है। अफ़ग़ानिस्तान से सीमा चूंकि बंद नहीं है, इसलिए हमारे सामूहिक फ़ार्मों के बारे में ख़बर काफ़ी फैली है और अब भी फैल रही है। अफ़ग़ान दहक़ानों को—और ख़ासकर उन्हें, जो हमारे यहां काम कर चुके हैं—निजी कृषि पर हमारी सामूहिक कृषि की श्रेष्ठता नज़र आती है और वे इस 'राज़' को ख़ुद जानकर ख़ुश ही होंगे। साथियो, आपको मालूम करना चाहिए कि अफ़ग़ानिस्तान से इस तरह के कितने पूछताछ करनेवाले बाउमानाबाद की ज़िला समिति के सचिव के पास आते हैं और पंज दरिया के दूसरे किनारे पर सामूहिक फ़ार्म का संगठन करने में सहायता देने के लिए प्रशिक्षकों, ट्रैक्टरों और बीज की मांग करते हैं। यह बिलकुल स्वाभाविक बात है कि जो दहक़ान यहां पहले काम कर चुके हैं, वे मेरे पास ही आये। मैं यहां अकेला ऐसा ताजिक हूं, जो इंजीनियर और पार्टी सदस्य है और उनकी निगाहों में उनकी भाषा बोलनेवाला बड़ा अफ़सर है। यह अचरज की बात होगी कि वे मेरे बजाय किसी और के पास आयें। मुझे उन्हें इस बात का विश्वास दिलाने में बहुत मुश्किल हुई कि हम उनके पास प्रशिक्षक नहीं भेज सकते। मैंने उन्हें ताजिक भाषा में एक पुस्तिका दी, जिस में सामूहिक फ़ार्मों के बारे में निर्देश हैं और उन्हें बाउमानाबाद की ज़िला कार्यकारी समिति जाने की सलाह दी, जिसने, मुझे यक़ीन है, बीज देकर उनकी सहायता की। मेरे ख़याल से यह जानना बहुत मुश्किल नहीं होगा कि वे बाउमानाबाद गये थे या नहीं।"

"लेकिन आप ख़ुद कहते हैं कि इस तरह के बहुतेरे लोग बाउमानाबाद आते रहते हैं। आप यह कैसे कह सकते हैं कि वे वही थे या कोई और?"

"हां, यह तो ठीक है। इस बात को बिलकुल ठीक तरह से कह पाना असंभव है।"

मोरोज़ोव को, जिसने अभियुक्त पर से क्षण भर को भी अपनी आंखें नहीं हटाई थीं, लगा कि ऊर्तावायेव के चेहरे पर एक कुटिल मुसकान थिरक रही है।

"तो यह रही पिछले साल अफ़ग़ानिस्तान से आनेवालों की बात," ऊर्ताबायेव ने अपनी बात जारी रखी। "साथियो, मेरा अनुरोध है कि इस मुलाक़ात की तारीख़ में जान-बूझकर जो परिवर्तन किया गया है, उस पर ग़ौर कीजिये। दहक़ान मुझसे मिलने के लिए हमले के तीन दिन नहीं, एक महीने या शायद उससे भी ज्यादा पहले आये थे।"

"आप यह कैसे साबित कर सकते हैं?"

ऊर्ताबायेव ने प्रश्नकर्ता की तरफ़ देखने के लिए अपनी आंखें उठाईं और वे अपने ऊपर जमी हुई मोरोज़ोव की आंखों से जा टकराईं। मोरोज़ोव को दमकती दो शैतानीभरी और तिरस्कारपूर्ण चिनगारियां नज़र आईं।

"अफ़ग़ानिस्तान की इस दरख़ास्त पर कोई तारीख़ है?" कोमारेंको ने पूछा।

"नहीं। दहक़ानों को अपनी दरख़ास्तों पर तारीख़ डालने की अभाग्यवश आदत नहीं है।"

"इसलिए इसकी भी पुष्टि नहीं की जा सकती?"

ऊर्ताबायेव ने आस्तीन से माथे का पसीना पोंछा और एक बार फिर उसकी आंखें मोरोज़ोव की ओर उठ गईं। और इन आंखों की चालाकीभरी चमक से मोरोज़ोव को अचानक साफ़ हो गया कि ऊर्ताबायेव असल में ज़रा भी विचलित नहीं है – वह एकदम शांत और आत्मविश्वास से परिपूर्ण है और यह माथे को आस्तीन से पोंछना, यह हाथों का कांपना, काग़ज़ों को इस परेशानी के साथ टटोलना – यह सब कोरा अभिनय है, पहले से सोचा और रिहर्सल किया हुआ।

"बोलते रहिये।"

"तो, दो अफ़ग़ानों के आकर मुझसे मिलने के क़िस्से के सिलसिले में: ऐसा अकसर होता रहता था कि अफ़ग़ान मज़दूर सभी तरह के मामलों को लेकर मेरे पास आते रहते थे, क्योंकि अपनी भाषा में वे न फ़ोरमैन से बात कर सकते थे और न सैक्शन-प्रमुख से ही। ऐसा भी होता था कि वे मुझसे मेरे घर आकर मिला करते थे। मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि उस ख़ास दिन कोई मुझसे मिलने आया या नहीं। मुमकिन है कि कोई आया हो।"

"और क्या यह संभव है कि ये दोनों अफ़ग़ान आये हों?"

"हां, सम्भव है कि ये दोनों अफ़ग़ान आये हों, क्योंकि ऐसी कोई बात नहीं थी, जो उन्हें औरों से अलग करती और मैं इसकी तो कोई पेशीनगोई कर नहीं सकता था कि उनका भाग जाने का इरादा है।"

एक बार फिर ऊर्ताबायेव की आंखें जाकर मोरोज़ोव पर टिक गईं।

"लेकिन तब आप यह क्यों कहते हैं कि सारा क़िस्सा मनगढ़ंत है? ज़ाहिर तो यही हो रहा है कि यह ज़रा भी मनगढ़ंत नहीं है," मोरोज़ोव ने यह महसूस करते हुए रूखी आवाज़ में कहा कि ख़ून किस तेज़ी के साथ उसके चेहरे की तरफ़ जा रहा है।

"यह मनगढ़ंत है कि मैंने पहले से यह जानते हुए किन्हीं अफ़ग़ानों से मुलाक़ात की कि वे भाग जानेवाले हैं।"

"तो आप नहीं जानते थे कि वे भाग जाने की सोच रहे हैं?"

"नहीं, मैं नहीं जानता था। फिर, जहां तक कैंयक़ के पास हम पर छापे का सवाल है, मुझे सबसे पहले यही कहना है कि मैंने ख़्वाजायारोव को पहले कभी नहीं देखा है। बल्कि यह कहिये कि नहीं—यह बात पूरी तरह से ठीक नहीं है। मैंने उनका चेहरा पहले कहीं न कहीं ज़रूर देखा है। मैंने उन्हें कहीं देखा है। जब वह अपनी कहानी सुना रहे थे, मैं यहां बैठा उन्हें देख रहा था और यह याद करने की कोशिश कर रहा था कि मैंने उन्हें कहां देखा है।"

"कहीं यह कैंयक़ की ही तो बात नहीं है? ज़रा याद करने की कोशिश कीजिये।"

"नहीं, ख़्वाजायारोव कैंयक़ में नहीं थे। और उन्होंने हमारे दस्ते में गाइड का काम कभी नहीं किया।"

"लेकिन फिर भी उनका चेहरा परिचित है?"

"हां, उनका चेहरा परिचित है।"

लोग हंसने लगे।

"मेरे शब्दों को मज़ाक़ में बदलने की कोशिश करना अच्छी बात नहीं है, साथियो। मेरे लिए यह हंसी की बात नहीं है।"

"हां, मैं भी यही समझता हूं!"

"तो ख़ैर, ख़्वाजायारोव की यह सारी कहानी पूरी तरह से मनगढ़ंत है। ख़्वाजायारोव न हमारे दस्ते में थे, न कैंयक़ के पास। अभाग्यवश, इस मामूली-

सी बात का भी सबूत नहीं दिया जा सकता, क्योंकि सारे दस्ते में अकेला मैं ही ज़िंदा बच पाया था।"

"यही तो सबसे अजीब बात है!"

"मुझे यह बताने की अनुमति दीजिये कि कैंपक में क्या हुआ था।"

"बेशक, बताइये।"

"हमारा बारह आदमियों का दस्ता घात में फंस गया और, अब मैं जहां तक याद कर सकता हूं, बासमचियों के अपने छिपने की जगहों से हमारे ऊपर धावा करने के भी पहले उनका सफ़ाया हो चुका था। सबसे पहली गोलियों में से एक मेरे घोड़े को ही लगी थी, जिससे वह गिर पड़ा और मेरी टांग उसके नीचे फंस गई..."

"घोड़ा मारा गया था या घायल हुआ था?"

"घायल नहीं हुआ, मारा गया था। घोड़े से गिरते हुए मैं उसके नीचे आ गया था और ठीक से यह नहीं देख सका कि हमारे दस्ते के सभी लोग घात में ही मारे गये हैं या कोई ज़िंदा बच रहा है और उसका तलवार से ख़ात्मा किया गया। किसी भी सूरत में, जब मुझे घोड़े के नीचे से खींचकर निकाला गया, तब सारे दस्ते में अकेला मैं ही ज़िंदा बचा था।"

"और दोनों रूसी टेकनिशियन?"

"और सब के साथ ही मारे गये थे।"

"उन्हें बाद में गोली नहीं मारी गई?"

"मैं फिर कहता हूं: सारे दस्ते में अकेला मैं ही ज़िंदा बचा था, और प्रत्यक्षतः इसी लिए उन्होंने मुझे मारा नहीं, बल्कि मुझे ज़िंदा क़ैदी बना लिया और हमारी फ़ौजों की संख्या और स्थिति के बारे में मुझसे कुछ जानकारी हासिल करने की आशा में मुझे अपने सरदार के पास ले गये। फ़ैयाज़ ने ख़ुद मुझसे पूछताछ करना शुरू की। मैंने ताशक़ंद से पहुंची लाल सेना की टुकड़ियों की संख्या बढ़ा-चढ़ाकर बताई, कूर-आर्तिक तथा अन्य सरदारों के हथियार डालने की बात कही, यह साबित किया कि इब्राहीम-बेग का खेल ख़त्म हो गया है और हथियार डालने की सलाह देते हुए कहा कि जो लोग अपने हथियारों सहित आत्मसमर्पण कर देंगे, उन्हें सोवियत सरकार बिना सज़ा दिये अपने घर जाने देगी। फ़ैयाज़ को अन्य सरदारों से इसके बारे में मालूम था और उसने मुझसे कहा कि उसे हथियार डालने से इनकार नहीं—वह लड़ने से आजिज़ आ गया था और अब यह बात उसकी समझ

में आ गई थी कि इब्राहीम-बेग ने जनता की सहायता का वादा करके, जिससे अब ख़ुद उसे ही भागना पड़ रहा था, उसे एक बेकार के झमेले में फंसा दिया है। उसने मुझसे कहा कि उसने पहले इसलिए आत्मसमर्पण नहीं किया था कि उसे स्वयंसेवक दस्तों पर विश्वास नहीं है। स्थानीय आबादी में उसके बहुत पुराने और पक्के दुश्मन थे, जो उसके हाथ में पड़ते ही अपना हिसाब बराबर करने में चूकनेवाले नहीं थे। उसने कहा कि वह बस चेका-प्रमुख के आगे ही आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार है। मैंने इसकी व्यवस्था करने का वादा किया। हमने तय किया कि तीन दिन बाद फ़ैयाज और उसके आदमी दाग़ाना-कंयक़ खड्ड में इंतजार करेंगे और अगर चेका की टुकड़ी वहां पहुंच जाये, तो वे अपने हथियार डाल देंगे। उसके साथ मेरा यह समझौता हो जाने के बाद उसने मुझे एक नया घोड़ा दिया और वहां से जाने दिया। मैं वहां से क़ूरगान-तेपा गया और वहां के तत्कालीन चेका-प्रमुख, साथी पेख़ोविच को यह सब बताया। तीन दिन बाद हम दाग़ाना-कंयक़ खड्ड गये, मगर वहां कोई नहीं था।"

"अहा, तो फ़ैयाज़ ने आत्मसमर्पण नहीं किया?"

"मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिये। जहां तक मैं जान पाया हूं, हमारे एक और दस्ते ने एक दिन पहले अकस्मात फ़ैयाज़ के गिरोह पर हमला कर दिया था और उसका लगभग पूरी तरह से ख़ात्मा कर दिया था।"

"लेकिन इस सूरत में इस बात का क्या सबूत है कि फ़ैयाज़ ने कभी हथियार डालने का इरादा किया था और उसने आपके साथ यह समझौता किया था?"

"मेरी गवाही के अलावा इसका कोई और सबूत नहीं है।"

"यह बहुत कमज़ोर सबूत है... और क्या आप ख़्वाजायारोव से स्तालिनाबाद में नहीं मिले थे और उनसे वहां बात नहीं की थी?"

"नहीं, मैं उनसे न मिला, न मैंने बात की। मैं आपको पहले ही बता चुका हूं कि मैं ख़्वाजायारोव को नहीं जानता।"

"लेकिन ख़्वाजायारोव जिस समय की चर्चा कर रहे हैं, तब क्या आप स्तालिनाबाद में थे?"

"अगर आपका आशय बासमचियों के ख़त्म किये जाने के दो महीने बाद के समय से है, तो मैं उस समय स्तालिनाबाद में था।"

"ग्रहा, तो ग्राप उस समय स्तालिनाबाद में थे?"

"हां, उस समय मैं वहां था... मैं ग्रपनी बात जारी रखूं?"

"हां, एक्स्केवेटरों के बारे में वताइये।"

"एक्स्केवेटरों को संयोजित करके घाट से चलाकर ले जाने का विचार मुझे परिवहन के मामले में एकदम निराशाजनक परिस्थिति से सूझा था, जिसने हमारी निर्माणस्थली के सारे काम को रोक रखा था। एक्स्केवेटरों को ट्रैक्टरों की सहायता के बिना मुख्य सैक्शन ले ग्राने का मतलब होता सारे काम को कुछ ही हफ़्तों के भीतर पूरे ज़ोर के साथ शुरू कर देना, इसका मतलब होता निर्माण-कार्य को कई महीने ग्रागे बढ़ा देना। बेशक, मैंने इस प्रयोग को ग्रपने-ग्राप, व्यूसाइरस फ़र्म के प्रतिनिधि की सहमति के बिना जुरंत नहीं की। मैं इस फ़र्म के प्रतिनिधि, इंजीनियर बार्कर से मिला ग्रौर मैंने ग्रपनी योजना उन्हें समझाई। बार्कर ने कहा कि यह सही है कि उनकी फ़र्म के बनाये एक्स्केवेटरों को इतनी दूर तक कभी नहीं चलाया गया है – उनकी ग्रधिकतम सीमा सात से दस किलोमीटर प्रति दिन से ग्रधिक नहीं थी – लेकिन उन्होंने कहा कि सैद्धांतिक दृष्टि से यह ग्रसंभव नहीं है ग्रौर उनकी फ़र्म की तो ऐसा प्रयोग करने में दिलचस्पी तक होगी। उन्होंने कहा कि यात्रा के बाद बस, एक्स्केवेटरों की मरम्मत में हद से हद एक हफ़्ता ग्रौर लगाना पड़ेगा। ग्रगर हम ट्रैक्टरों का इंतज़ार करते, तो उस पर जितना समय नष्ट होता, उसके मुक़ाबले यह नहीं के बराबर था। चेल्येर्याकोव तब जाने ही वाले थे ग्रौर उन्हें कुछ भी करने का ग्रधिकार नहीं था। नये प्रमुख ग्रभी ग्राये नहीं थे। ग्रौर कोई था ही नहीं, जिससे मैं सलाह लेता। मैं घाट चला गया ग्रौर मैंने एक्स्केवेटरों को संयोजित करना ग्रौर चलाकर रवाना करना शुरू कर दिया। जब कुछ एक्स्केवेटर रवाना भी हो चुके थे ग्रौर बाक़ी में से ग्राधे लगभग पूरी तरह से संयोजित हो चुके थे, मुझे साथी मोरोज़ोव से एक ग्रप्रत्याशित पत्र प्राप्त हुग्रा, जिसमें सख़्ती से यह ग्रादेश दिया गया था कि मैं एक्स्केवेटरों का संयोजन ग्रविलंब बंद कर दूं ग्रौर मुख्य सैक्शन पहुंचूं। क्षण भर के लिए तो मैं बिलकुल हक्काबक्का गया। फिर मैंने सोचा कि शायद नये प्रमुख को ग्रभी इस मामले के बारे में इंजीनियर बार्कर के साथ परामर्श करने का समय नहीं मिल पाया है ग्रौर उन्हें डर है कि इस काम को मैं ग्रपने जोखिम पर कर रहा हूं। मैं उन एक्स्केवेटरों को तो, जो रवाना हो चुके थे ग्रौर ग्रधबीच में

थे, रोक नहीं सकता था। मैंने तय किया कि जो दो एक्स्केवेटर आधे संयोजित हो चुके हैं, उनका संयोजन ख़त्म कर दूं और फिर जाकर नये प्रमुख से मिल लूं। मुझे विश्वास था कि यह आदेश ग़लतफ़हमी के अलावा और कुछ नहीं है और जब साथी मोरोज़ोव को पता चलेगा कि मैं व्यूसाइरस फ़र्म की रज़ामंदी से काम कर रहा हूं, तो वह अपने आदेश की पूर्ति पर जोर नहीं देंगे। तभी, बिलकुल आख़िरी वक़्त पर, साथी मोरोज़ोव अप्रत्याशित रूप से आ पहुंचे, उन्होंने मुझे मुअत्तिल कर दिया और एक्स्केवेटरों के खोले जाने का आदेश जारी कर दिया।"

"तो आप अब भी इसी बात पर ज़ोर देते हैं कि आप इंजीनियर बार्कर की अनुमति से काम कर रहे थे?" मोरोज़ोव सवाल करते हुए ज़रा-सा उठ गया।

"हां, उनकी पूरी रज़ामंदी से।"

"बेशक, इसको भी साबित नहीं किया जा सकता, क्योंकि इंजीनियर बार्कर अमरीका चले गये हैं।"

"इसको साबित किया जा सकता है – अलबत्ता इस वक़्त नहीं।"

"लेकिन यह हो कैसे सकता है? इंजीनियर बार्कर ने आपसे एक बात कही और इंजीनियर मर्री से दूसरी?"

"मैं ख़ुद इस बात को नहीं समझ पा रहा। शायद इंजीनियर बार्कर आख़िरी वक़्त पर फ़र्म के प्रति अपनी जवाबदेही के दृष्टिगत घबरा गये और अपने कहे से मुकर गये।"

"रुकिये, ज़रा रुकिये! अगर आपने इंजीनियर बार्कर से इस बारे में कभी भी बात की होगी, तो इस बातचीत का कम से कम एक गवाह होना चाहिए – अनुवादक।"

क्षण भर को ख़ामोशी छा गई। मोरोज़ोव ने अपनी आंखें भींच लीं। यह बिलकुल निशाने पर चोट थी। ऊर्ताबायेव का चेहरा लाल हो गया, पहली बार उसकी आवाज़ में अनिश्चय और उलझन की गूंज थी।

"मैं स्वयं अंग्रेज़ी बोलना सीख रहा हूं और थोड़ी-बहुत बोल भी लेता हूं। और इस बारे में मैंने बार्कर से अनुवादक के बिना बात की थी।"

"फिर भी, जैसा कि मुझे अच्छी तरह से मालूम है, और मौक़ों पर

जब आप अमरीकियों से बात करते थे, तो आप अनुवादक की सहायता लेते थे।"

"हां, आम तौर पर, अगर सवाल बहुत मुश्किल होता, और मुझे शब्द न मिल पाते, तो मैं अनुवादक की सहायता लेने लगता था।"

"बस इसी प्रश्न पर ऐसा हुआ कि आपको शब्दों की दिक़्क़त नहीं पड़ी और आपने बिना अनुवादक के काम चला लिया, जो इस वक़्त यहां गवाही दे सकता था।"

"हां, इस बातचीत के समय कोई अनुवादक मौजूद नहीं था।"

"लगता है कि आप हमको बच्चे समझते हैं, ऊर्ताबायेव!"

"क्या आपको अपनी सफ़ाई में यही कहना है?" नियंत्रण आयोग के प्रतिनिधि ने रुखाई से पूछा।

"हां, इतना ही..."

ऊर्ताबायेव ने फिर माथे को आस्तीन से पोंछा। इस बार मोरोज़ोव को उसकी हरकत की सचाई में शक नहीं हुआ। "तुम्हें कोने में धकेल दिया गया है और इससे तुम नहीं निकल पाओगे," उसने मन में कहा।

"साथियो, मैं इस बात को समझता हूं कि ये सारे तथ्य, जिन्हें मेरे शत्रुओं ने इतनी कुशलता से विकृत कर दिया है, मेरे ख़िलाफ़ जा रहे हैं, और परिस्थितियों का संयोग कुछ ऐसा विचित्र है कि मैं एक भी तथाकथित ठोस प्रमाण से, अपने पक्ष में बोलनेवाले एक भी गवाह से उनका विरोध नहीं कर पा रहा हूं। इस बात को मैं समझता हूं कि आप मेरी बात को नहीं मानेंगे, अगर मैं आपसे कहूं कि मैं निर्दोष हूं..."

ऊर्ताबायेव की आवाज़ थरथराने लगी और फिर अचानक मानो इस डर से कि उसकी आवाज़ काफ़ी तेज़ नहीं है और सब लोग उसे सुन नहीं पायेंगे, उसने चिल्लाकर कहा:

"मैं निर्दोष हूं, साथियो!"

इससे एक खलबली-सी मच गई। कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया।

"नाटक रच रहा है! इसे मंच पर जाना चाहिए, न कि पार्टी समिति के ब्यूरो के सामने आना चाहिए," मोरोज़ोव ने नाराज़ी के साथ सोचा।

ऊर्ताबायेव ने माथे को आस्तीन से पोंछा और सूखी, फीकी आवाज़ में अपनी बात पूरी की:

"मैं पार्टी के लिए की अपनी छोटी-छोटी सेवाओं का उल्लेख नहीं करूंगा। पार्टी ने मुझे सब कुछ दिया है। मैंने पार्टी को बस वही दिया है, जो हर पार्टी सदस्य के लिए देना ज़रूरी है। पार्टी ने मुझे पढ़ने के लिए भेजा। पार्टी ने मुझे आदमी बनाया। मुझमें जो कुछ भी उपयोगी और अच्छी चीज है, उसके लिए मैं पार्टी का ऋणी हूं। पार्टी को मुझसे हर वह चीज़ छीनने का अधिकार है, जो उसने मुझे दी है। मुझे पार्टी से निष्कासित करने का अर्थ है मेरे जीवन को ले लेना। पार्टी ने मुझे जीवन दिया है, पार्टी को उसे ले लेने का अधिकार है।"

उसने कुछ काग़ज़ों को – जो प्रकटत: उसके समापन भाषण के नोट थे, जो उसने दिया नहीं था – हाथ में मरोड़कर पोर्टफ़ोलियो में ठूंस दिया।

मिनट भर को ख़ामोशी छाई रही।

"ख़ैर, यह सब करुणरस का उद्‌गार है, जिससे मामले के सार में कोई अंतर नहीं आता," मोरोज़ोव ने कहा, "हर चीज़ साफ़ है और अब वक़्त के हाथ से निकल जाने के बाद अफ़सोस करके आप कुछ नहीं कर सकते।"

"हां, मामला साफ़ है।"

"तो, साथियो, क्या कोई और सवाल है या हम इस पर तुरंत मत ले लें?"

"मामला साफ़ है!"

"तो इस पर मत ले लीजिये।"

"ऊर्तावायेव के पार्टी से निष्कासन के पक्ष में कौन हैं?"

ग्यारह हाथ उठे।

"विपक्ष में कौन हैं?"

कोमारेंको और एक्स्केवेटर चालक मेत्योलकिन ने अपने हाथ उठा दिये।

"मैं सभा की कार्रवाई समाप्त घोषित करता हूं।"

ऊर्तावायेव उठा, क्षण भर के लिए वह ऐसे आदमी की तरह अपनी जेबों को टटोलता रहा, जिसका बटुआ खो गया हो, फिर उसने अपना पार्टी कार्ड निकाला और उसे मेज़ पर रख दिया। फिर बिना इधर-उधर देखे वह तेजी से कमरे से निकल गया।

साथी कोमारेंको का संदेह

सिनीत्सिन और दिनों की बनिस्बत जल्दी घर लौट आया। आज की शाम को उसे ऐसा ही लग रहा था, जैसा किसी सर्जन को बड़ी सफ़ाई और निर्दोषता के साथ, चिकित्साविज्ञान की कला के सभी नियमों के अनुसार किये बड़े कठिन आपरेशन के बाद लगता है, जिसके दौरान रोगी की आपरेशन टेबल पर ही मौत हो जाती है।

सिनीत्सिन देर तक कमरे में इधर से उधर चहलक़दमी करता रहा। दरवाज़ा चरमराया। कोमारेंको ने कमरे में प्रवेश किया।

"मैं इधर से ही गुज़र रहा था, इसलिए सोचा कि तुम्हें भी झांक ही लूं। कोई ख़बर है?"

"अब तो तुम्हारी ही बारी है। ऊर्तावायेव को गिरफ़्तार करना होगा।"

"मैं लोगों को बिना बारी के ही गिरफ़्तार करता हूं, इसलिए इस बार भी मैं अपनी बारी नहीं ले रहा हूं।"

"तुम तो हमेशा मज़ाक़ करते हो। सारी बात के साबित हो जाने के बाद उसे इस तरह आज़ाद नहीं छोड़ा जा सकता।"

"क्यों नहीं?"

"तुम मज़ाक़ कर रहे हो या संजीदगी से कह रहे हो?"

"बेशक, संजीदगी से ही कह रहा हूं।"

"तुम्हें उन ठोस तथ्यों की परवाह नहीं है, जिन्हें जांच के दौरान सिर्फ़ मैंने ही नहीं, बल्कि तुमने भी प्रमाणित किया था?"

"हो सकता है कि जो तथ्य प्रमाणित किये गये थे, वे ऊर्तावायेव को पार्टी से निकालने के लिए काफ़ी हों। उसे गिरफ़्तार करने के लिए हमें एक-दो और बातों को साफ़ करना होगा।"

"अफ़ग़ानिस्तान से उसके जो संबंध हैं, क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं है?"

"अफ़ग़ानिस्तान से संबंध पूरी तरह से प्रकट नहीं हुए हैं। कुआनदीक झूठ बोल सकता है। एकमात्र गवाह तुम्हारा ख़्वाजायारोव ही है।"

"तो, शायद तुम्हारी राय में उसे निकालना ग़लत है?"

बाहर का दरवाज़ा धड़धड़ाया। सिनीत्सिन उठकर खड़ा हो गया। पोलोज़ोवा ने कमरे में प्रवेश किया।

"मैं विघ्न तो नहीं डाल रही?"

"कोई बात नहीं। इस बार आप क्या नहीं ख़बर लेकर आई हैं? अमरीकियों को तो कुछ नहीं हुआ?"

"कोई और फ़लांगा को नहीं निकली?" कोमारेंको ने पूछा।

"नहीं। कोई ख़ास बात नहीं हुई है। आज शाम को इंजीनियर क्लार्क ने पहली बार मुझे अपने शक के बारे में बताया। इस सवाल में गये बिना कि वह कितना सही है, मैंने यह अपना कर्तव्य समझा कि आपको इस बारे में बताऊं, ख़ासकर इसलिए भी कि निस्संदेह उनकी मंशा यही थी कि मैं ऐसा ही करूं।"

"हां-हां, बताइये। यह बात दिलचस्प होनी चाहिए," कोमारेंको ने उल्लसित होते हुए कहा।

"आपको याद होगा कि जब अमरीकियों को पहली बार धमकी भरे पत्र मिले थे, तब सब यही पूछते थे कि पत्र उनके कमरे में पहुंचे कैसे होंगे। उन्होंने भी इस बारे में माथापच्ची की और क्लार्क को यह विचार पैदा हुआ कि हो सकता है कि उन्हें आकर मिलनेवाले लोगों में से ही किसी ने इन पत्रों को चुपके से कमरे में रख दिया हो।"

"बहुत अच्छे! यही सबसे सीधा और समझदारी का समाधान है," कोमारेंको ने कहा।

"तो ख़ैर, क्लार्क ने यह याद करने की कोशिश शुरू की कि उस दिन उनसे मिलने के लिए कौन-कौन आया था। और वह इस नतीजे पर पहुंचे कि दोनों ही बार ऊर्ताबायेव उनके कमरों में आया था।"

"क्या? फिर ऊर्ताबायेव?" सिनीत्सिन ने कुरसी को अलग खिसका दिया और कमरे में चहलक़दमी करना शुरू कर दिया।

"साथी सिनीत्सिन, आपको उस समय भोजनालय में हुई बातचीत याद है, जब क्लार्क और मर्री ने अपने को मिले ख़त आपको पहली बार दिखाये थे? आपको याद है कि आपने कहा था कि कोई ताजिक कंकाल की खोपड़ी नहीं बनायेगा, क्योंकि यह एक यूरोपीय प्रतीक है?"

"हां, मुझे याद है।"

"क्लार्क का ध्यान इस बात की तरफ़ गया था कि ऊर्ताबायेव, जो इस बातचीत के समय मौजूद था, आपके इस विचार का बड़ी उत्सुकता से समर्थन कर रहा था कि कोई ताजिक उन रुक्क़ों का रचयिता नहीं हो सकता।"

"तो, फिर?"

"फिर फ़लांगों के क़िस्से ने यह बात निर्णायक रूप से साबित कर दी कि रुक्क़ों का रचयिता कोई ताजिक ही होना चाहिए। कोई यूरोपीय इस तरह की बात सोच भी नहीं सकता था। इस बात की पुष्टि में क्लार्क का ध्यान इस तरफ़ गया है कि जिस समय माचिसें खोली गई थीं, तब ख़ुद ऊर्ताबायेव वहां नहीं था, मानो वह पहले से ही अपने उस समय अन्यत्र होने का बहाना क़ायम करना चाहता था। इस बात की तरफ़ उनका एक विचित्र संयोग की तरह ध्यान गया है कि जैसे ही ऊर्ताबायेव की अपनी परेशानियां शुरू हुईं – एक्स्केवेटरों का मामला, आदि-आदि – धमकीभरे ख़तों का आना भी एकदम बंद हो गया, मानो उनका रचयिता और बातों में व्यस्त था और इस खेल को जारी रखना उसके लिए संभव नहीं रहा था। मुझे आपको बस, यही बताना है। बहुत समय तक इंजीनियर क्लार्क अपने शक के बारे में किसी को बताने का फ़ैसला नहीं कर पाये, क्योंकि उन्हें मालूम था कि ऊर्ताबायेव कम्युनिस्ट है। उन्होंने अब यह जानने के बाद ही ऐसा करने का निश्चय किया है कि ऊर्ताबायेव को पार्टी से निकाल दिया गया है। मैं आपको क्लार्क की बात लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ बता रही हूं। जहां तक मेरा सवाल है, मैं यह ज़रूर कहूंगी कि मैं यह विश्वास नहीं कर सकती कि ऐसा हो सकता है। मुझे तो यही लगता है कि यह कोई दुर्भाग्य-पूर्ण संयोग है..."

"धन्यवाद, साथी पोलोजोवा। आपने बिलकुल ठीक ही किया है – ख़ासकर इसलिए कि जहां तक मुझे मालूम है, आप और नासिरुद्दीनोव ऊर्ताबायेव के बहुत अच्छे मित्र हैं और आपको उसकी निर्दोषता का विश्वास है।"

"मैंने अपने कर्तव्य का ही पालन किया है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं अपनी निजी राय न रख सकूं। मैं अब भी यही समझती हूं कि ऊर्ताबायेव के मामले में कोई दुर्भाग्यपूर्ण ग़लती हुई है, जिसे मैं सुलझा नहीं सकती, मगर मेरी आशा है कि उसे सुलझा लिया जायेगा।"

"अभाग्यवश आपकी निजी राय से मामले में कोई नई बात नहीं पैदा होती। जहां तक साथी नासिरुद्दीनोव की बात है, उनके लिए यह ज़्यादा सही होगा कि वह पार्टी समिति के निर्णयों की आलोचना न करें और अन्य कोम्सोमोल सदस्यों को इस मामले में न घसीटें।"

"साथी नासिरुद्दीनोव और मैं किसी भी तरह कोम्सोमोल समिति की राय का प्रतिनिधित्व नहीं करते, बल्कि अपनी निजी रायों को ही प्रकट करते हैं। मेरा ख़याल है कि कोम्सोमोल और पार्टी के हर सदस्य का,– अगर वह यह समझता है कि किसी सुयोग्य पार्टी सदस्य के बारे में ग़लती हो गई है, न केवल यह अधिकार है, बल्कि कर्तव्य है कि वह इस ग़लती को सुलझाने और सही करने के लिए जो कुछ भी कर सकता है, करे। इसका कोम्सोमोलियों को पार्टी समिति के निर्णयों के बारे में बहस में घसीटने से कोई ताल्लुक़ नहीं।"

"आप निश्चिंत रहिये कि मैं सबसे पहले यह साबित करनेवाले का स्वागत करूंगा कि ऊर्ताबायेव के मामले का फ़ैसला करने में हमने ग़लती की है।"

"मुझे इसमें कोई शक नहीं है।"

"अभाग्यवश कोई भी इसे साबित नहीं कर पाता। सारा मामला निजी हमदर्दियों और रायों के बारे में निरर्थक बात पर आकर ख़त्म हो जाता है। इन बेकार की बातों को ख़त्म किया जाना चाहिए।"

"ठीक है, आपको इनके बारे में कुछ और सुनने को नहीं मिलेगा।"

"यह हुई ठीक बात!" सिनीत्सिन पोलोज़ोवा के साथ दरवाज़े तक गया। "हां, तो क्या कहते हो? क्या तुम अब भी ऊर्ताबायेव को गिरफ़्तार नहीं करोगे?" उसने कोमारेंको से पूछा।

"मुझे अपने विवेक के अनुसार काम करने दो। अपने किये की मैं जवाबदेही करूंगा।"

"मुझे डर है कि तुम अपने ऊपर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी ले रहे हो। मैं कम से कम यह जानना चाहूंगा कि तुम किस बिनाह पर इस तरह से चल रहे हो? क्या यह भी कोई निजी विश्वास की ही बात है या इसमें कोई और महत्त्वपूर्ण बात है?"

"जानते हो, इस मामले में कुछ ऐसी बात है, जो अभी तक पूरी तरह से सुलझी नहीं है।"

"मुझे यही डर है कि कहीं ऐसा न हो कि इधर तो तुम किसी रहस्यमय राजनीतिक षड्यंत्र का पता लगाने की कोशिश में लगे रहो और उधर वे धागे भी तुम्हारे हाथ से निकल जायें, जो अपने-आप हाथ में आ गये थे। तुम लोग कभी-कभी ऐसा भी करते हो। यक़ीन करो, मैं इस इलाक़े में

तुम से कहीं ज्यादा पहले से काम कर रहा हूं और मुझे कुछ अनुभव हो चुका है। ऐसा कभी नहीं होता कि एक ही स्थान पर बिलकुल समांतर काम करते दो संगठन हों, जिनमें से एक सिर्फ़ तोड़-फोड़ और आतंक की कार्रवाइयां करे और दूसरा बासमचियों और अफ़ग़ानिस्तान के साथ संबंध रखे। ऐसी बातें नहीं हुआ करतीं।"

"हां, मेरा भी यही ख़याल है।"

"धागे का एक सिरा हाथ में आ गया है, तो सारी लच्छी खुलकर रहेगी।"

"बशर्ते कि धागे का यह सिरा टूट न जाये। सारी बात यही है कि ठीक तरह से पकड़ रखी जाये..."

"और तुम्हारा ख़याल है कि ऊर्तांबायेव यही धागा नहीं है?"

"मेरे ख़याल में नहीं।"

"तुम बिना बात के मामला उलझा रहे हो। याद रखो कि अगर ऊर्तांबायेव को आज़ाद रहने दिया जाता है और अमरीकियों की जान लेने की कोई और कोशिश की जाती है, तो मैं इस बात को अपना कर्तव्य समझूंगा कि ताशक़ंद में चेका-प्रमुख को अपनी राय से अवगत करूं।"

"इसका तुम्हें अधिकार है। चाहो, तो तुम इंतज़ार किये बिना भी यह कर सकते हो। ख़ैर, ख़ुदा हाफ़िज़!"

कोमारेंको घोड़े पर सवार हो गया और बारकों से घिरी खुली जगह को क़दम चाल से पार करने लगा। सारी बस्ती सो रही थी– दुशाले की तरह रात में लिपटी हुई। जहां-तहां एकाध उजाली खिड़की अंधेरे में झिलमिला रही थी। दूर से देखने पर खिड़कियां तारों की तरह टिमटिमा रही थीं। खिड़कियों के कांचों में से राहगीर मानो दूरबीन के कांच में से और लोगों के नैशिक जीवन के अलग-अलग टुकड़ों को देख सकता था। लीजिये, हरी टोपी पहने वह ताजिक खिड़की पर बैठा कोई किताब पढ़ रहा है। वहां वह चेचकरू फ़ोरमैन, जिसका चश्मा उसकी नाक पर से फिसला जा रहा है, मेज़ पर दुहरा हुआ नीले ग्राफ़-पेपर पर कोई नक़्शा बनाने में लगा हुआ है। व्यक्तियों की ज़िंदगियों के टुकड़े...

कोमारेंको ने रास को झटके से खींचा। उसे अकसर और लोगों की ज़िंदगियों में झांकने का, अनाहूत अतिथि की तरह उनके पिछवाड़ों की

ताका-झांकी करने का अवसर मिलता रहता था। पारिवारिक डाक्टर की तरह वह यहां के हर आदमी के भीतर-वाहर को जानता था। जब वह लोगों से मिलता, तो वह उनमें उनके वालों या खाल के रंग या किसी और बाहरी पहचान के निशानों से भेद नहीं करता था। वह उन्हें वैसे ही पहचानता था, जैसे कोई डाक्टर अपने पुराने मरीज़ों को उनके भीतरी अंगों की विशिष्टताओं से पहचानता है – भूरे बालोंवाला लंबा आदमी नहीं, बल्कि बढ़ी हुई तिल्लीवाला आदमी; भारी बदन का चेचकरू आदमी नहीं, बल्कि बिगड़े जिगर का आदमी; लाल बालोंवाली पीन पयोधरा स्त्री नहीं, बल्कि गुरदे के दर्द की शिकार। कोमारेंको वह देखता था, जो उसके आसपास के लोगों में से और किसीको नज़र नहीं आ सकता था। मामूली खरोंच जैसे छोटे से दाग़ से विकृत उजली मूंछोंवाले सीनियर टेकनिशियन के चेहरे में उसे लाल सेना की गोली दिखाई देती, जिसे कभी निकाला नहीं गया था – वह गोली, जिसने इस सौम्य चेहरे को तब बिगाड़ा था, जब इस पर ताजिक टोपी नहीं, बल्कि प्रतिक्रांतिकारी जनरल व्रांगेल के चिह्न से अंकित फ़ौजी टोपी सजा करती थी। कपास चुनते एक सीधे-सादे दीखनेवाले दहक़ान की आंखों में – जो पुरस्कृत तूफ़ानी मज़दूर और एक टोली का नायक था – अपनी कुदाल उठाते हुए उसके सधे हुए हाथ की निपुण गति में उसने लड़ाई में क़ैद किये तीन लाल सैनिकों के सिरों को क़लम करती और अंत में अपने ही सरदार का भी सिर उतारती टेढ़ी वासमची तलवार की चमक को देख लिया। फीके कत्थई बालोंवाली एक स्त्री – मुख्य ख़ज़ांची की पत्नी – के होंठों पर थिरकती उदास मुसकान में, जो खाने का सामान ख़रीदने के लिए अकसर उसकी खिड़की के पास से हाथ में थैला लिये गुज़रती थी, वह चतुराई से छिपाये सोने के दांत को नहीं, बल्कि बिन चबाये काग़ज़ों की भिंची हुई गड्डी को देखा करता था, जिसे इसी मुसकराते हुए मुंह ने उस दिन निगल लिया था, जब इस महिला के पहले पति – ज़ारशाही ख़ुफ़िया पुलिस के एक प्रधान – के घर की अचानक तलाशी ली गई थी।

कोमारेंको नहीं मानता था कि लोग सभी तरह से परिपूर्ण और निष्पन्न होते हैं। वह उन्हें अपने निर्माण की सुदीर्घ प्रक्रिया में, अपनी सामाजिक जीवनी के पूरे भार के साथ देखा करता था।

घोड़े ने ठोकर खाई। कोमारेंको ने रास खींच ली और बस्ती के छोर पर बने आख़िरी झोंपड़ों के पास से क़दम चाल से निकल गया। बस्ती

सो रही थी और वह सुमों की असावधानी भरी टाप से उसकी नींद में ख़लल नहीं डालना चाहता था। उसने पीछे की तरफ़ निगाह डाली। बहुत दूर – मुख्य सैक्शन पर – बत्तियां जल रही थीं, एक ट्रैक्टर समान गति से धड़धड़ करता हुआ नहर के तल में रिस आये पानी को उलीच रहा था। बस्ती सो रही थी, नहर के तल पर काम चल रहा था। इस सब का – बस्ती की शांतिमय नींद का, ट्रैक्टर के इंजन की अविराम धड़धड़ का, सारी निर्माणस्थली के सामान्य रूप से काम करने का वह, कोमारेंको, जवाबदेह है। भारी ज़िम्मेदारी के अहसास ने उस पर बोझ नहीं डाला – उसने उसे गर्व की एक सुखद भावना से भर दिया। कोमारेंको ने अपना सीना फुला लिया और रास को झटका दिया। घोड़ा हलकी चाल से भागने लगा। सिर के ऊपर नैशाकाश चींटियों से भरी बांबी की तरह तारों से भरा हुआ था।

कोमारेंको को सिनीत्सिन के चेहरे की सख़्त और परेशानीभरी मुद्रा याद आ गई।

"हर किसीको ग़लती करने का अधिकार है," उसने बड़ी स्पष्टता के साथ सोचा, "एक मेरे सिवा। मुझे चूक करने का अधिकार नहीं दिया गया है।"

और उसीके साथ इसी ख़याल की एक कड़वी गूंज की तरह उसके मन में यह बात भी उठी:

"और फिर भी मैं चूक करता ही हूं। हां, इसकी तरफ़ से आंखें मूंदना ठीक नहीं। ठीक है कि नेमिरोव्स्की को पकड़ लिया गया है, मगर वह बहुत देर से पकड़ा गया – सारे काम को अव्यवस्थित करने का मौक़ा पा जाने के बाद। नेमिरोव्स्की के ख़िलाफ़ सारे सबूत मैंने ही जुटाये थे। लेकिन इसका क्या फ़ायदा? मुझे सबूत पहले ही इकट्ठा कर लेने चाहिए थे। येरेमिन का निष्क्रिय प्रतिरोध और अंधापन कोई बहाना नहीं है। फिर चूक हुई... और अब ऊर्तावायेव का मामला है। एकदम अनपेक्षित। संदेह की ज़रा भी गुंजाइश नहीं। आकस्मिक रिपोर्ट है। अगर ऊर्तावायेव सचमुच इस सबका दोषी है, तो ईमानदारी का एकमात्र रास्ता यह है कि मैं कम ज़िम्मेदारी के काम पर तबादला किये जाने का अनुरोध करूं..."

कोमारेंको ने अपने होंठों को भींच लिया। वह अपने को बहुत अच्छा चेका अधिकारी समझता था, लोगों के आरपार देख लेने की अपनी शक्ति

पर उसे गर्व था। और तभी अचानक – ऊर्तावायेव। ऊर्तावायेव के मामले में चूक अक्षम्य होगी। ऐसी ग़लती करनेवाला चेका अधिकारी इस योग्य नहीं कि एक निर्माणस्थली की सुरक्षा के उत्तरदायित्व को वहन कर सके।

"अगर ऊर्तावायेव दोषी है," उसने सोचा, "तो मुझे इस्तीफ़ा दे देना होगा और कोई और काम लेना होगा। किसी दूकान में जाकर आटा तोलने का काम।"

नहर-तल में हलचलभरी रात

उस दिन सुबह क्लार्क को ख़बर मिली कि स्तालिनाबाद से कंक्रीट मिश्रक और चट्टान की बरमाई करने के लिए कंप्रेसर आ गये हैं और वे नदी के दूसरे किनारे पर घाट पर इंतजार कर रहे हैं। उसने तय किया कि उनके पहुंचने तक वह बस्ती में ही रहेगा और मशीनों को ख़ुद ही प्राप्त करेगा। उसे बहुत लंबा इंतजार करना पड़ा, क्योंकि सारी सुबह घाट पर लकड़ी ढोनेवालों की भीड़ रही, जो पिछले दो दिन से पार करने की अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। कंक्रीट मिश्रक शाम के क़रीब पहुंचे। मशीनें प्राप्त कर लेने के बाद क्लार्क कीर्श से मिलने के लिए गया और उससे माइन हॉइस्ट बनाने के लिए कुछ लकड़ी देने का अनुरोध किया – काफ़ी लकड़ी आ गई थी और इसका कोई भरोसा नहीं था कि दुबारा वह कब आयेगी। कीर्श ने सभी सैक्शनों से आये लकड़ी के आवश्यक अनुरोधों की गड्डी पर निगाह डाली, सरसरी तौर पर यह हिसाब लगाया कि किसकी आवश्यकता कितनी बड़ी है और उसे लकड़ी देने के लिए तैयार हो गया। क्लार्क ने वादा किया कि दो एक्स्केवेटरों को दो-एक दिन के भीतर अपने असली काम के लिए मुक्त कर दिया जायेगा।

अपनी विजय पर उल्लसित होते हुए क्लार्क ने पोलोज़ोवा और फ़ोरमैन को लाने के लिए कार भेज दी। वह नष्ट हुए समय की क्षतिपूर्ति करने के लिए उसी दिन हॉइस्ट के निर्माण की तैयारी शुरू कर देना चाहता था।

एक बढ़ई को बुलवाया गया। टोपी पहने एक दाढ़ीवाला बूढ़ा आया और विनयपूर्वक दरवाज़े की चौखट पर ही खड़ा हो गया।

"आप साथी प्रीतूला हैं, न?" फ़ोरमैन ने पूछा।

"जी हां, मैं क्लीमेंती प्रीतूला ही हूं।"

"हमें नहर-तल में एक माइन हॉइस्ट खड़ा करना है। क्या आप यह काम कर सकेंगे?"

"क्यों नहीं? कर सकता हूं।"

"लेकिन क्या आपने पहले कभी यह बनाया है?"

"क्या, माइन हॉइस्ट? नहीं, मैंने कभी नहीं बनाया।"

"चलिये, कोई बात नहीं। हम आपको ख़ाका और सारे नाप दे देंगे। आप अमरीकी इंजीनियर की देखरेख में काम करेंगे।"

"ठीक है," क्लीमेंती ने रज़ामंदी जताई।

क्लार्क ने एक काग़ज़ पर हॉइस्ट का ख़ाका बनाकर बढ़ई को दे दिया। क्लीमेंती काग़ज़ को अपनी उंगलियों में थामकर देर तक ख़ाके की तरफ़ देखता रहा, मानो वह उसे हल करने के लिए दी गई कोई चित्र-पहेली हो।

"हां, तो कहिये! समझ में आ रहा है, न?"

"काग़ज़ पर तो सब हमेशा ही बिलकुल ठीक नज़र आता है, लेकिन बनाना शुरू करने के बाद इसका क्या ठिकाना है कि क्या बनेगा!"

"आप ख़ाके तो समझ लेते हैं, न?" फ़ोरमैन ने उसकी तरफ़ संदेह-भरी नज़रों से देखा।

"हम बढ़ई हैं। हमारा काम लकड़ी से बनाना है, काग़ज़ों से नहीं," क्लीमेंती ने बुरा मानते हुए जवाब दिया।

"लेकिन, मेरे भाई, इसे ख़ाके के बिना अपनी अक़्ल से ही नहीं बनाया जा सकता। क्या आपके यहां ऐसा कोई नहीं, जो ख़ाकों को समझता हो?"

"हमने काग़ज़ों के बिना ही इससे भी ज़्यादा बड़ी-बड़ी चीज़ें बनाई हैं। तुम बस, यह बता दो कि तुम्हारा यह हॉइस्ट होगा कैसा – यह कितना ऊंचा होगा और कितना चौड़ा – और हमारी चिंता मत कीजिये, हम इसे बिलकुल ठीक बना देंगे।"

"तुम कभी किसी खान में गये हो?"

"हां, गया हूं। लेकिन यहां तुम्हारी यह खान कहां है?"

"अरे, खान नहीं, लेकिन सिद्धांत वही है..."

"देखो, सिद्धांत-विद्धांत की बात मैं नहीं जानता। मैंने इस तरह की कोई चीज़ कभी नहीं देखी है और इस बारे में मैं झूठ बोलना नहीं चाहता।"

"तुम भी अजीब आदमी हो! ख़ैर, देखो, यह एक तरह का लकड़ी

का मीनार-सा होता है, जो ऊपर की तरफ़ पतला होता जाता है और उसके ऊपर एक पहिया होता है।"

"जानता हूं।"

"तो यह भी वैसा ही होता है, बस, उससे कुछ छोटा और पतला होता है और इसमें आने-जाने के पिंजरे की जगह एक्स्केवेटर का डोल ऊपर-नीचे जाता है। और सबसे ऊपर, जहां पहिया है, वहां एक तरफ़ जाता एक छोटा-सा मंच होता है।"

"लकड़ी का?"

"हां, यह एक पतली-सी पुलिया जैसा होता है और इस तरह बनाया जाता है कि उस पर होकर डोल एक तरफ़ जा सके। मीनार का पेंदा ख़ुद–नीचे–नहर के तले में है। यह कोई पचीस मीटर ऊंचा है और ऊपरवाला पहिया घूमता रहता है और डोल को कुएं से बाल्टी की तरह खींचता रहता है। ऊपर आ जाने पर डोल को एक तरफ़ ले जाना होता है। इसके लिए हमें मीनार से लेकर नहर-तल के किनारे तक यह पुलिया बनाने की ज़रूरत है, ताकि डोल उसके साथ जा सके और पत्थरों को लेवी पर उलट सके..."

"किस पर?"

"लेवी पर–मतलब तटबंध पर।"

"तो ऐसा कहो न। हमने कोई अमरीकी भाषा तो पढ़ी नहीं थी," क्लीमेंती ने क्लार्क की तरफ़ तिरछी नज़र से देखा।

"ख़ैर, तो तुम समझे?"

"इसमें समझने को है क्या–यह तो बिलकुल मामूली चीज़ है। बस, यह बता दो कि तुम्हारा यह जंतर खड़ा कहां किया जायेगा और मैं तुम्हें बता दूंगा कि हमें कितनी और किस क़िस्म की लकड़ी की ज़रूरत है।"

"चलो, कोशिश करते हैं। हम सैक्शन की तरफ़ ही जा रहे हैं। हमारे साथ ही चले चलो, और ख़ुद चलकर देख लो।"

तीनों कार में जा बैठे।

नहर-तल में अब तीनों पारियों में काम होता था। दिन-रात ठेले खड़खड़ाते रहते, दिन-रात दोनों डोल एक के बाद एक घरघराते हुए ऊपर उठते, अधबीच में ही जाकर उलटे हो जाते और पत्थरों को नीचे नदी में उलट देते और वे नदी की कॉफ़ी की रंगत की तूफ़ानी गहराइयों में

शकर के ढेलों की तरह से घुल जाते। रात के समय चारों ओर मीलों से नज़र आनेवाला बिजली का एक विशाल गोला नहर-तल पर पूनम के चांद की तरह से निकल आता और नीचे, पतली पगडंडी पर हथगाड़ियों के हत्थे थामे लोगों की एक अंतहीन क़तार लगातार इधर-उधर भागती रहती, सर्चलाइट की रोशनी में जिनके चेहरे सफ़ेद पाउडर से थुपे जैसे लगते। वे अपनी हथगाड़ियों को ख़ाली करते ही फिर लपकते आ जाते और एकाकी मकान की कारनिस पर व्यग्रतापूर्वक चलते निद्राचारियों की तरह उनके आने-जाने का यह सिलसिला लगातार चलता चला जाता।

कार जब बस्ती पहुंची, तो आधी रात हो चुकी थी। यहां का अंधेरा प्रकाश की सूइयों से छिदा हुआ था। नहर-तल के ऊपर प्रकाश का उद्दीप्त गोला लटका हुआ था, मगर ख़ुद नहर-तल में ख़ामोशी छाई हुई थी — एक्स्केवेटर ख़ामोश खड़े थे, उनकी बांहें नमाज़ियों की तरह आसमान की तरफ़ उठी हुई थीं।

"दोनों एक्स्केवेटर क्यों बेकार खड़े हैं? क्या पेट्रोल नहीं है?"

दुबला-पतला सौम्य-स्वभाव फ़ोरमैन अंद्रेई सवेल्येविच चिंता के मारे अपनी सीट पर उठ खड़ा हो गया।

"नहीं, यह नहीं हो सकता — कल ही तो उन्हें पेट्रोल मिला था। समझ में नहीं आता कि क्या बात है। दोनों एक्स्केवेटर एकसाथ ही तो रुक जानेवाले नहीं थे!"

कार खड़ी हो गई। वे उतरे और गिरते-पड़ते ढाल पर चढ़ने लगे। कुछ लोग ऊपर नहर-तल के छोर पर खड़े हुए थे। क्लार्क ने उनमें कोर्श और सिनीत्सिन को चीन्ह लिया। कोई गंभीर ही बात होगी।

"क्या बात है?"

सिनीत्सिन ने अपनी घड़ी की तरफ़ देखा। "वे दाला-बरज़ीवाले काम पर नहीं आये हैं। फिर खेल करने लगे हैं!"

"साथी पोलोज़ोवा!" सिनीत्सिन ने आवाज़ दी। "मैंने अभी नासिरुद्दीनोव को छोकरों को ख़बर देने और फ़ौरन एक कोम्सोमोल टुकड़ी जुटाने के लिए भेजा है। आप कार लेकर क़ूरग़ान चली जाइये। आपको जो भी कोम्सोमोली मिलें, उन्हें ले आइये।"

"ठीक है, साथी सिनीत्सिन।"

वह तेज़ी के साथ ढाल पर उतर गई।

"एक्स्केवेटर तो ठीक हैं, न?" कीर्श ने किसीसे पूछा।

क्लार्क चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल दिया।

"साथियो, तैयार रहिये। हम लोग घंटे भर के भीतर फिर काम करना शुरू कर देंगे।"

एक्स्केवेटर चालक ने सहमति में सिर हिला दिया। चमड़े का गरम कोट पहने होने पर भी वह कांप रहा था।

"आपको क्या हो रहा है? आपकी तबीयत तो ख़राब नहीं?"

"मलेरिया है। कोई बात नहीं..."

"आप घर ही क्यों नहीं रह गये? पहली पारी के चालक से आपकी जगह ले लेने को कहा जा सकता था।"

"कोई चारा नहीं था। वह बीमार है। कहते हैं कि उसे निमोनिया हो गया है। दूसरी पारी के चालक ने उसकी जगह दो पारी लगातार काम किया है।"

"धत तेरी की! ख़ैर, क्या आप काम खींच लेंगे? कल हम आपकी बदली का जुगाड़ कर लेंगे।"

"मैं खींच लूंगा। यह कोई पहला ही मौक़ा तो नहीं है।"

उसने अपने चमड़े के कोट का कालर ऊंचा किया और चालक-कक्ष में जा बैठा।

"अंद्रेई सवेल्येविच, अंद्रेई सवेल्येविच!" क्लीमेंती फ़ोरमैन की आस्तीन को झटके दे रहा था, "आपका वह जंतर कहां खड़ा किया जायेगा? वहां नीचे, है न?"

"भाड़ में जाये तुम्हारा यह जंतर! देखते नहीं, इस वक़्त यहां उसकी बात नहीं हो रही है?"

"आप मुझे बस यह दिखा दीजिये कि वह लगेगा कहां। सारे नाप-वाप मैं ख़ुद ही ले लूंगा।"

"वहां, नीचे। हां, हॉइस्ट लगाने के पहले हमें अभी इस जगह से तीन मीटर चट्टानी पत्थर और हटाने हैं। और अभी पत्थरों को उठाकर ले जाने के लिए कोई नहीं है, इसलिए हॉइस्ट को शायद अभी इंतज़ार ही करना पड़ेगा।"

क्लीमेंती ने अपनी जेब से पैमाना निकाला और उतरकर नहर-तल की तरफ़ जाने लगा।

कुछ देर बाद क्लार्क ने, जो तटबंध के किनारे पर अन्यमनस्कतापूर्वक चहलक़दमी कर रहा था, दूर से आती एक मोटर और समवेत स्वर में गाये जानेवाले गाने की आवाज़ सुनी। इस गीत ने उसे मास्को में सुने उस गीत की याद दिला दी, जब लाल सैनिकों की टुकड़ी सड़क पर उसके बराबर से गाती हुई गुज़री थी।

कुछ मिनट के बाद एक कार नीचे तटबंध पर आकर खड़ी हो गयी। कोई दर्जन भर तरुण, जो लड़कों से कुछ ही बड़े रहे होंगे, एक लड़की के साथ-साथ कार से उतर पड़े—क्लार्क ने देखा कि लड़की पोलोज़ोवा है। नौजवान गाते-गाते ही लपकते हुए ऊपर चढ़ने लगे, मानो वे धावा मारकर उसे जीतना चाह रहे हों। क्षण भर को क्लार्क को यह लगा कि जैसे वह सैनिकों को युद्धाभ्यास करते देख रहा हो। ऊपर चढ़ जाने के बाद कोम्सोमोली सिनीत्सिन के सामने क़तारबंद खड़े हो गये।

"नासिरुद्दीनोव कहां है?"

"अभी आ रहे हैं। हम उनसे आगे निकल आये हैं।"

नासिरुद्दीनोव अन्य कोम्सोमोलियों के साथ दूसरी तरफ़ से आ रहा था। वे लोग दुहरी क़तार में चले आ रहे थे। सर्चलाइट की चमक में उनके सांवले चेहरे क़लई चढ़े जैसे लग रहे थे। गीत एक बार फिर फूट पड़ा और वे खड़े ढाल पर एक क़तार में लपकते हुए उतरकर नहर-तल की तरफ़ जाने लगे।

"नासिरुद्दीनोव!"

"हां, साथी सिनीत्सिन!"

"तुम अच्छे संगठनकर्ता नहीं हो। तुम्हारे हथगाड़ी लेकर काम करने का क्या फ़ायदा—यह तो कोई भी कर सकता है। कोम्सोमोल समिति के सचिव को संगठन करना आना चाहिए। यह क्या—क्या तुम इन पचीस से ज़्यादा लोग इकट्ठा नहीं कर सकते थे?"

"रात का वक़्त है, साथी सिनीत्सिन, आधे घंटे के भीतर सभी लोगों को नहीं ढूंढा जा सकता था। कल मैं ज़्यादा अच्छा इंतज़ाम करूंगा, मगर आज मैं और ज़्यादा लोगों को नहीं जमा कर पाया—इसलिए ख़ुद मुझे काम करना होगा।"

नासिरुद्दीनोव मुसकरा दिया, सांवले चेहरे में उसके दांत एक

सफ़ेद फांक की तरह चमक उठे। जवाब का इंतज़ार किये बिना वह लपककर औरों के पीछे चला गया।

"साथी क्लार्क!"

पगडंडी के उभार पर पोलोज़ोवा खड़ी हुई थी।

"आप अब घर चले जाइये। मैं यहां लड़कों के साथ ही काम करूंगी। आप सुबह की पारी पर आ जाइये। मैं आपका यहीं इंतज़ार करूंगी।"

नीचे पहली हथगाड़ियों ने खड़खड़ाना भी शुरू कर दिया था और गैंतियों की आवाज़ें आने लगी थीं।

"अंद्रेई सवेल्येविच, अंद्रेई सवेल्येविच!" क्लीमेंती फ़ोरमैन की आस्तीन को झटके जा रहा था, "मैंने सारे नाप ले लिये हैं। इसे बनाया तो जा सकता है। कल ही लकड़ी को तैयार कर लेना चाहिए। मैं उसे ख़ुद छांटूंगा। लकड़ी बिलकुल ठीक ही क़िस्म की आई है। हम परसों ही काम शुरू कर देंगे। लेकिन आप यह कह रहे थे कि पहले चट्टानी पत्थर हटाने होंगे। लेकिन क्या इस काम को ये लोग करेंगे?" उसने कोम्सोमोलियों की तरफ़ इशारा किया।

फ़ोरमैन ने सिर के इशारे से सहमति प्रकट की।

"हां, यही। नहीं, तो और कौन?"

"लेकिन उनमें इतनी ताक़त कहां है? ये नहीं कर पायेंगे!"

"जितना कर सकते हैं, उतना तो करेंगे ही।"

"इन्हें बहुत वक़्त लगेगा। ऐसे काम के लिए अच्छे हट्टे-कट्टे आदमी चाहिए – ये बच्चे तो महीने भर में भी इसे नहीं कर सकते। क्या, इसके बिना काम नहीं चल सकता?"

"नहीं, नहीं चल सकता। मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूं। अगर तुम्हें इतनी ही चिंता है, तो जाओ, पत्थर अपने-आप हटाओ। मीन-मेख तो सभी निकाल सकते हैं, लेकिन जब हाथ बंटाने का सवाल आता है, तब सभी की नानी मर जाती है!"

फ़ोरमैन एक्स्केवेटर की तरफ़ चला गया।

डोल ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे आ-जा रहे थे। नीचे ठेलों के भार से त्रस्त तख़्ते कराह रहे थे। छोकरे अपनी हथगाड़ियों के हत्थों को उसी तरह, जैसे किसान अपने हलों को पकड़ते हैं, पकड़े हुए उन पर अपने पूरे ज़ोर

के साथ झुके हुए थे और उनकी हथगाड़ियां पथरीली ज़मीन में हलों की तरह ही उलट और अटक रही थीं।

"न, छोकरों को आदत नहीं है," क्लार्क ने मन में कहा, "इन दो टोलियों का काम ये नहीं कर सकते।"

वह अब भी ढाल की चोटी पर खड़ा-खड़ा अविश्वास के साथ नीचे की तरफ़ देख रहा था। पोलोज़ोवा और हरी टोपी पहने एक लड़का हथगाड़ियों से गिरे पत्थरों को एक्स्केवेटर के डोल में डाल रहे थे। क्लार्क वहां का वहीं खड़ा रहा। सच पूछो, तो उसके करने के लिए कुछ भी नहीं था, पर उसे लग रहा था कि वहां से चले जाना अटपटा लगेगा। वह यह दिखावा करते वहीं रुका रहा कि जैसे काम की निगरानी कर रहा है, मगर साथ ही उसे यह भी लग रहा था कि ख़ाली दर्शक की तरह से खड़े रहना कितना मूर्खतापूर्ण है। उसने फ़ोरमैन की तलाश में आंखें उठायीं, मानो सोच रहा हो कि फ़ोरमैन जो कर रहा है, उससे उसे भी कुछ करने का इशारा मिल जायेगा।

कुछ ही दूर टोपी पहने दाढ़ीवाला बढ़ई नीचे पेंदे की तरफ़ देख रहा था। वह भी क्लार्क की ही तरह वहां जमा हुआ था, मानो उसे भी यह न मालूम हो कि वह ख़ुद क्या करे। क्लार्क को यह सादृश्यता क्षोभजनक लगी। वह कार की तरफ़ जाने के लिए मुड़ा ही था कि तभी उसने देखा कि दढ़ियल पगडंडी पर उतरकर तल की तरफ़ जा रहा है। क्लार्क कुतूहलवश ठहर गया। नीचे पहुंचकर दढ़ियल लड़कों को धकेलते हुए आगे निकल गया और उसने ज़मीन पर से एक गैंती उठा ली। मिनट भर वह अनिश्चय के साथ खड़ा रहा, फिर वह मुड़ा और फिर उसने सबसे दुबले लड़के के पास जाकर, जिसने अधबीच में ही अपनी हथगाड़ी को उलट दिया था, हाथ से उसे नरमी के साथ अलग कर दिया और उसके हाथ में गैंती थमा दी—वैसे ही, जैसे बच्चे को नाराज़ न होने देने के लिए उसके हाथ में खिलौना दे देते हैं—और हथगाड़ी को फिर लादकर उसे सफ़ाई के साथ तख़्तों पर से डोल की तरफ़ ले गया। नीचे से वाहवाही की गुंजार फूट पड़ी।

क्लार्क जहां का तहां खड़ा था। उसे और भी ज़्यादा अटपटा लगने लगा। उसे लगा कि अब अगर वह मुड़कर कार की तरफ़ जाने लगेगा, तो हर कोई उसकी तरफ़ देखेगा।

तभी एक बिलकुल अप्रत्याशित बात हुई। एक एक्स्केवेटर का बिलकुल

ऊपर तक भरा डोल उठकर ऊपर गया नहीं। नीचे लोगों ने शोर किया और उसकी जंजीर को झटका, मगर डोल वहीं निश्चल पड़ा रहा।

क्लार्क तेजी से एक्स्केवेटर के पास गया और फ़ोरमैन से जा टकराया, जो चालक की निश्चल देह को उसके कक्ष के बाहर खींचकर ला रहा था। क्लार्क ने चालक को पत्थरों पर लेटाने में उसकी सहायता की।

"क्या बात है?" उसने फ़ोरमैन के कान के पास चिल्लाकर कहा और फ़ोरमैन को यद्यपि अंग्रेजी नहीं आती थी, फिर भी वह समझ गया और बोला :

"मलेरिया।"

क्लार्क भी समझ गया। चालक बेहोश हो गया था। क्लार्क ने उसके कोट के बटन खोले, तो उसके नीचे से भाप सी उठने लगी। फ़ोरमैन पानी लाने के लिए लपका। क्लार्क ने मरीज़ के माथे पर अपना हाथ रखा। माथा जैसे जल रहा था – उसे कम से कम चालीस डिग्री सेंटीग्रेड बुख़ार रहा होगा। फ़ोरमैन पानी लेकर दौड़ा-दौड़ा आया और उसे होश में लाने लगा। बीमार ने अपनी आंखें खोलीं। वे जल सी रही थीं और उनमें पुतलियां पारे की बूंदों की तरह ऊपर-नीचे फुदक रही थीं।

क्लार्क ने मरीज़ के कंधों को पकड़ा और फ़ोरमैन को उसके पैर पकड़ने का इशारा किया। दोनों मिलकर उसे नीचे खड़ी कार तक ले गये। क्लार्क ने अपने हाथ से ड्राइवर को बस्ती की तरफ़ इशारा किया और ख़ुद तटबंध पर चढ़ने लगा। फ़ोरमैन ख़ामोशी से उसके पीछे-पीछे हो लिया। निश्चल खड़े एक्स्केवेटर के पास आकर दोनों खड़े हो गये।

फ़ोरमैन ने हाथ हिलाया। शब्दों में रूपांतरित करने पर इस इशारे का मतलब था: "खेल ख़तम!"

क्लार्क ने ढाल से नीचे की तरफ़ निगाह डाली, जहां निश्चल पड़े डोल के आसपास लोगों की एक भीड़ जमा हो गई थी। फिर अपनी बर्फ़-सी सफ़ेद पतलून पर अफ़सोसभरी निगाह डालते हुए वह मुड़ा और एकदम चालक-कक्ष में घुस गया।

फ़ोरमैन की अचरज के मारे आंखें फट गईं।

डोल थरथराया और झटके के साथ ऊपर की तरफ़ उठ गया। नीचे से एक हर्षपूर्ण शोर उठा और बांध की दूसरी तरफ़ का पानी जैसे गुस्से के मारे खौलने लगा।

कक्ष में तेल की घनी गंध थी। क्लार्क ने ज़्यादा आराम से बैठकर अपनी आस्तीनें चढ़ा लीं और एक्स्केवेटर के हमाले का परकार की तरह उपयोग करते हुए नहर-तल से लेकर नदी तक के फ़ासले को सावधानी के साथ नापने लगा – पहले धीरे-धीरे और फिर अधिकाधिक तेज़ी के साथ।

नीचे अपने तेलहीन पहियों से चूं-चूं की आवाज़ करती बोझ से लदी हथगाड़ियां गड़गड़ाती रहीं। गैंतियां पत्थर की छाती को फोड़ती रहीं और पत्थरों के साथ गैंतियों की टक्कर से एक अविराम गूंज पैदा होती रही – ठक-ठक...

तेलहीन पहियों के शोर के साथ मिलकर उनसे एक नयी लय पैदा होने लगी – चूं-ठक, चूं-ठक...

क्लार्क इस संगीत को नहीं सुन रहा था। फ़ोरमैन अंद्रेई सवेल्येविच ही अकेला उसे सुन रहा था। वह अब भी एक्स्केवेटर के पास चकित हुआ खड़ा था।

वह एक पुराना कर्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ता था, जो अपनी ज़िंदगी में कितनी ही निर्माणस्थलियां देख चुका था और "पुराने ज़माने" में भी एकाध निर्माण-कार्य की सुपरवाइज़री कर चुका था। काम के प्रति अंद्रेई सवेल्येविच का वर्षों की नौकरी के दौरान पोषित अपना ही नज़रिया था, श्रम का उसका अपना ककहरा था, जिसे उसने उन दिनों सीखा था, जब वह हथगाड़ियों पर निर्माण सामग्रियां ढोया करता था। यह ककहरा बाइबिल आदेशों की तरह ही एकदम सीधा-सादा था: "काम तो काम ही है", "मालिक ज़्यादा काम चाहता है और मज़दूर कम", "खाना है, तो काम करना ही होगा", "जो बिना काम किये खा सकता है, वह कोई पागल नहीं कि काम करे"। काम की निगरानी करते समय वह मालिक के हितों को ध्यान में रखता था, ख़ूब अच्छी तरह देखभाल करता था और इस बात की मांग करता था कि ज़्यादा से ज़्यादा काम किया जाये और इस कारण उसकी एक अच्छे कर्मचारी के रूप में क़दर की जाती थी। जब "उत्साह", "तूफ़ानी काम" और "प्रतियोगिता" जैसे नये शब्दों ने निर्माणस्थलियों में प्रवेश किया, तो उसने उन्हें बोल्शेविकों की "सनकें" ही समझते हुए अविश्वास के साथ आंखें मिचकाते हुए स्वीकार तो कर लिया, लेकिन अपनी नापसंदगी ज़ाहिर नहीं की और इसलिए उसे अच्छा सोवियत कर्मचारी समझा जाता था। लेकिन असल में उसे यही सोचने की आदत थी कि मालिक की हमेशा अपनी "सनकें", अपनी "मौजें"

होती हैं और इन सनकों को सहना होता है – कभी यह मत जताओ कि तुम उस पर हंस रहे हो, क्योंकि कोई भी मालिक इस बात को बरदाश्त नहीं करेगा। जहां तक निर्माणस्थली पर आनेवाले विदेशी विशेषज्ञों की बात थी, अंद्रेई सवेल्येविच उनकी क़दर करता था, क्योंकि वे इस बात को समझते थे कि काम तो काम ही है, जिसमें कोई "तड़क-भड़क" नहीं होती और वे भी "सनकों" को व्यंग्यपूर्ण आंखों से देखते थे। वे खुलकर भी ऐसा कर सकते थे, मगर इस मामले में वे शिष्टाचार के सामान्यत: स्वीकृत नियमों का ही पालन करते थे।

रात में पारी भर एक मामूली एक्स्केवेटर चालक की तरह काम करने के लिए एक अमरीकी इंजीनियर का चालक-कक्ष में बैठ जाना – इस तरह की कोई भी बात देखने का अंद्रेई सवेल्येविच का यह पहला मौक़ा था। ढंग से देखने पर यह भी एक "सनक" ही थी, मगर इसे मात्र एक व्यंग्यपूर्ण मुसकान के साथ नहीं उड़ाया जा सकता था। यह काम के ककहरा के ख़िलाफ़ जाता था। अंद्रेई सवेल्येविच को इससे बहुत परेशानी हुई।

"भई वाह, यह तो ख़ूब चला रहा है!" डोल को इतनी तेज़ी के साथ उठते-गिरते देखकर कि लोग मुश्किल से पूरी तरह से भर पा रहे थे, अंद्रेई सवेल्येविच ने अपने मन में कहा।

अब संकोच का अनुभव करने की उसकी बारी थी। तटबंध के किनारे पर बिलकुल अकेला खड़ा और अपने चारों तरफ़ नज़र डालता हुआ वह सोच रहा था कि इस असामान्य स्थिति में उसे क्या करना चाहिए। ज़ाहिर था कि ऐसे वक़्त यहां ख़ाली खड़े रहना ठीक नहीं था, जब विदेशी इंजीनियर तक काम में सहायता दे रहा था।

गैंती की ठक-ठक और हथगाड़ियों के पहियों के चूं-चूं की आवाज़ अब पहले से भी ज्यादा ज़ोर के साथ गुंजित हो रही थी।

अंद्रेई सवेल्येविच को क्लार्क की ही तरह एक आकस्मिक घटना ने बचा लिया। अचानक नीचे से एक चीख़ सुन पड़ी और एक आदमी ज़मीन पर गिर पड़ा, फिर वह उठा और मिट्टी की दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो गया।

तब अंद्रेई सवेल्येविच नीचे उतर गया, मानो यह देखने के लिए कि क्या हो गया है। नीचे अपने को पसीने से तर लोगों के बीच पाकर उसने वहां फैली गड़बड़ में बिना किसी की निगाह में आये एक गैंती उठाई

ग्रौर टोपी को आंखों तक खींचकर वह शरमाते-शरमाते पत्थर तोड़ने लगा।

पहली शिफ़्ट के लोग जब ग्रगली सुबह को काम पर ग्राये, तो वे सीधे ही नहर-तल में उतरकर नहीं चले गये। उसके पहले ऊपर एक फ़ौरी सभा हुई। सभा की शुरूग्रात ट्रेड-यूनियन समिति के सचिव गालत्सेव ने की, जो हलके रंग के बाल ग्रौर लंबी टांगोंवाला दुबला-पतला ग्रादमी था। उसके बालों ग्रौर बरौनियों की चूज़े जैसी सफ़ेदी के कारण, जो धूप में जल सी गई लगती थीं, उसकी उम्र का ग्रंदाज़ा लगाना बहुत मुश्किल था। निर्माणस्थली पर उसे "मिस्री" के नाम से पुकारा जाता था, शायद इसलिए कि उसे देखकर यही लगता था कि वह रूई के गोदाम में सोया था ग्रौर उसे रोयें को झाड़ने का वक़्त नहीं मिल पाया ग्रौर उसके सिर, भौंहों ग्रौर बेहजामत चेहरे पर रूई का सफ़ेद रोयां लगा रह गया है।

उस दिन सुबह-सुबह ही गालत्सेव की सिनीत्सिन से बड़ी ग्रप्रिय बातचीत हुई थी—सिनीत्सिन ने उसे सुबह चार बजे बिस्तर से घसीटकर निकाल बाहर किया था। यह उन बातचीतों में एक थी, जिनमें एक बोलता रहता है ग्रौर दूसरा बिलकुल ख़ामोश रहता है। हुग्रा यह कि पिछली शाम को—पाप छिपाये नहीं छिपता—गालत्सेव ने छोटे ख़ज़ांची के बच्चे की साल-गिरह के उपलक्ष्य में एक बोतल वोद्का पी थी ग्रौर रात को दो बजे घर लौटने के बाद दीन-दुनिया को भुलाकर सो गया था। सिनीत्सिन से यह सुनकर कि दाला-बरज़ीवाले काम पर नहीं पहुंचे, उसने यह बिलकुल वाजिब बात कहकर बचने की कोशिश की थी कि वह रात भर तो नहर-तल में बैठा रह नहीं सकता। लेकिन सिनीत्सिन ने उसकी तरफ़ ऐसी ग्रर्थपूर्ण नज़र दौड़ाई कि गालत्सेव के मुह से फिर बात नहीं निकल सकी। मन ही मन उसने सभी टोली समितियों को ग्रविलंब पैरों पर खड़ा करने का संकल्प किया।

तीन घंटे के भीतर सभा का ग्रायोजन हो गया।

पत्थरों के ढेर पर, जिसे मंच का काम देना था, चढ़ते हुए गालत्सेव ने ग्रनुभव किया कि उसके भीतर वक्तृत्व का तूफ़ानी प्रवाह उमड़ रहा है।

उसने मौक़े के ग्रनुसार एक ग्रच्छी गरमागरम तक़रीर झाड़ दी, कोरी कमाई के लोभियों को गरमागरम गालियां दीं—चटपटी ज़रूर, लेकिन ग्रश्लील नहीं, ग्रौर ग्रपने भाषण में ग्रौद्योगिक-वित्तीय योजना तक को

घसीटते हुए बताया कि कोम्सोमोल टुकड़ियों ने अपने कार्यभार की ग्यारह घन मीटर से अतिपूर्ति की है।

वह भाषण हमेशा उसी तरह दिया करता था, जिस तरह वह ताश खेला करता था—तुरुपों को वह आख़िर तक बचाकर ही रखता था, जिससे श्रोताओं के सवाल करने या टोकने पर उसे चुप न रह जाना पड़े। आज भी वह बिलकुल क़ायदे से ही अपनी चाल चल रहा था, क्योंकि उसके हाथ में तीन बहुत अच्छे तुरुप थे—क्लार्क, अंद्रेई सवेल्येविच और बढ़ई क्लीमेंती। तुरुप पसीने से तर और तेल से सने भीड़ में ही खड़े थे। गालत्सेव ने उनका बिना जल्दबाज़ी के बारी-बारी से उपयोग किया। सबसे पहले उसने क्लीमेंती को लिया—एक वर्गचेतन मज़दूर, जिसने आकस्मिक संकट का उन्मूलन करने में अपने-आपको दिलोजान से झोंक दिया था; फिर वह अंद्रेई सवेल्येविच पर आया—औद्योगिक-वित्तीय योजना पूर्ति के लिए साझे संघर्ष में मजदूर जनता के साथ इंजीनियरी-टेकनिकल स्टाफ़ के एकजुट होने का नमूना; लेकिन उसने आख़िर जब अमरीकी इंजीनियर के बारे में कहना शुरू किया, जिसने बीमार पड़ गये एक्स्केवेटर चालक की जगह रात की सारी पारी भर काम किया था, तो तालियों की अविराम गड़गड़ाहट शुरू हो गई। भीड़ में से किसीने चिल्लाकर कहा: "उछालो उसे!" हतप्रभ क्लार्क को उसके ज़बरदस्त प्रतिरोध के बावजूद कई हाथों ने पकड़कर उठा लिया और चार बार ऊपर उछाल दिया और इसके बाद उसकी ज़मीन पर गिरी टोपी को बड़े आदर के साथ उठाकर उसे दे दिया गया और उसकी अपनी पतलून झाड़ने में मदद की और दोषी भाव से मुसकराते हुए उसे मुक्त कर दिया गया।

गालत्सेव कामचलाऊ मंच से नीचे उतरा। वह अपने भाषण और उससे पैदा हुए प्रभाव से ख़ूब संतुष्ट था। पत्थरों से उतरते समय वह ठोकर खा गया और सीधा क्लीमेंती की बांहों में जा पड़ा।

"क्या तुम इन लोगों से कुछ शब्द नहीं कहोगे, साथी प्रीतूला?" अपने को संभालते हुए उसने ऐसे कहा, मानो उस समय वह क्लीमेंती की ही तलाश में था।

सवाल इतना अप्रत्याशित था कि क्लीमेंती ने अपनी टोपी उतारकर हाथ में ले ली।

"क्या मैं?"

"बोल सकते हो?"

"क्यों, क्या तुम्हारे ख़याल में मेरे मुंह में ज़बान है ही नहीं?"

"तो मंच पर चले जाओ... साथियो, अब साथी प्रीतूला बोलेंगे, जिन्होंने रात की सारी पारी कोम्सोमोल टुकड़ी के साथ काम किया है।"

क्लीमेंती कुछ परेशान-सा वहां खड़ा होकर हाथों में अपनी टोपी को मरोड़ने लगा :

"हां तो, साथियो, बात यह है कि मुझे यहां एक हॉइस्ट बनाना है। इसके साथ एक मंच होता है, ताकि पहिये के सहारे खींचे पत्थर उस पर होकर चले जायें। इससे आपको बड़ी मदद मिलेगी और हम बढ़इयों के लिए भी यह बड़ा दिलचस्प काम है। बस, अकेली दिक़्क़त यह है कि मुझे यह बात पसंद नहीं कि कोई काम पड़ा रहे। अगर कोई मुझे कोई काम देता है, तो मैं उसे फ़ौरन ही पूरा कर डालना चाहता हूं। तो, यह अपने अंद्रेई सवेल्येविच हैं, है न यह बोले कि कुछ नहीं किया जा सकता। यह बोले कि पत्थर ले जाने के लिए कोई नहीं है। यह बोले कि जब तक पत्थर जाता नहीं, तब तक रुके रहो। लेकिन मैंने उनसे कहा—क्या ये लोग पत्थर ले जा सकते हैं? मैंने कहा कि इस हिसाब से तो काम रुका ही रहेगा। और कुछ ही पहले अंद्रेई सवेल्येविच ने मुझसे कहा था—तुम्हारा यह जो जंतर है न, यह कोई मामूली चीज़ नहीं है। वह बोले कि इसमें बड़ा भारी सिद्धान्त लगा है और तुम इसे काग़ज़ों के बिना नहीं बना सकते। तो मैंने उनसे कहा—भाई, हम इससे भी ज़्यादा बड़ी-बड़ी चीज़ें बना चुके हैं—हमने मिलें बनाई हैं, पवनचक्कियां बनाई हैं, तो तुम्हारे इसी जंतर में क्या सुरख़ाब के पर लगे हुए हैं कि जो हम इसे नहीं बना सकते? मैंने कहा—तुम दिखा भर दो कि इसे कहां बनाया जाना है और हम इसे बिलकुल ठीक बना देंगे। और तब देखा कि अभी तो पत्थर भी नहीं हटाया गया है और यह बोले कि जब तक यह नहीं होता, तब तक हम कुछ नहीं बना सकते। लेकिन काम को टालना किसीको भी अच्छा नहीं लगता—जहां कहा कि यह काम करना है, तो उसमें फ़ौरन ही लग जाने को मन करता है। और तब देखा यह कि अभी तो पत्थर ले जाना है—जब यह ही नहीं हुआ, तो भला हम बना कैसे सकते हैं? बेशक, यह काम तो करना ही होगा। नहीं, तो काम रुका ही रहेगा, बस..."

ज्यादा लोगों की समझ में नहीं आया कि क्लीमेंती क्या कह रहा है, मगर वह काफ़ी देर तक बोलता रहा, बल्कि कुछ जोश तक में आ गया और पत्थरों के ढेर पर से उतरते हुए अपनी टोपी से मुंह का पसीना पोंछने लगा। हर किसीने ज़ोर से तालियां बजाईं—उसने जो कहा था, उसके लिए नहीं, बल्कि रात में उसने जितनी हथगाड़ियां ढोई थीं, उसके लिए।

कोम्सोमोली नहर-तल से बाहर आ गये, क्योंकि शिफ़्ट अभी-अभी ख़त्म हो गई थी। वे उल्लासपूर्वक शोर मचाते हुए क्लार्क के आसपास इकट्ठा हो गये।

नहर-तल में काम करने की उस स्मरणीय रात के बाद से क्लार्क जिधर भी मुंह करता, यही चेहरे उसकी आंखों के सामने आ जाते थे। सड़क पर, खाने के कमरे में, निर्माणस्थली पर, सिनेमा में—सब कहीं ये अपरिचित सांवले चेहरे मित्रतापूर्ण मुसकराहट के साथ उसका अभिवादन करते। पहले तो क्लार्क को यह देखकर अचरज हुआ कि उसके परिचितों का दायरा कितना बड़ा है। उनके इस अभिवादन में कोरी औपचारिकता नहीं थी। वे उसके साथ मात्र एक परिचित की तरह नहीं, बल्कि अपने ही एक आदमी की तरह पेश आते। क्लार्क मुसकराहट के साथ उनके अभिवादन का प्रत्युत्तर देता। यहां आने के बाद के प्रारंभिक सप्ताहों में वह जिस ज़बरदस्त अकेलेपन का अनुभव किया करता था, वह इन लोगों की मृदु मुसकानों में धीरे-धीरे विलीन हो गया था, जिनके साथ उसने एक शब्द का भी आदान-प्रदान नहीं किया था, मगर जिनकी आंखें बस मित्रता की भाषा ही बोलती थीं।

एक बार रात में काफ़ी देर से बस्ती की तरफ़ लौटते समय क्लार्क का ध्यान इस बात की तरफ़ गया कि कोई उसके पीछे-पीछे आ रहा है। अगली शाम को पीछे की तरफ़ घूमकर देखने पर उसने पाया कि एक स्याह सी आकृति उसके कोई दस क़दम पीछे-पीछे चली आ रही है। यह कोई आकस्मिक बात ही नहीं हो सकती थी। क्लार्क ने पोलोज़ोवा को इसके बारे में बताया, तो उसने कुछ दोषी भाव से उसे बताया कि उन धमकीभरे पत्रों के बारे में जानने के बाद कोम्सोमोलियों ने इस डर से उसे बारी-बारी से घर पहुंचाने का ज़िम्मा ले लिया है कि मैदान में होकर रात

को घर लौटते समय कहीं उसके साथ कोई बुरी वात न हो जाये। क्लार्क ने बुदबुदाकर कुछ न समझ में आनेवाली वात कही – यह कहना मुश्किल था कि इस तरह की चौकीदारी से उसे ख़ुशी हुई या नाराज़ी। असल में उसे बस संकोच हो रहा था, लेकिन यह संकोच स्नेह की एक ऐसी भावना से परिपूर्ण था, जिससे उसे अच्छा ही लगा। अब निर्माणस्थली पर घूमते समय वह चौकन्ना होकर अपने आसपास नहीं देखा करता था, जैसा कि वह पहले किया करता था। वह अब सभी तरफ़ से अनगिनत अदृश्य मित्रों से घिरे होने की एक नई और सुखद अनुभूति से भरा हुआ था।

इस समय, जब कोम्सोमोली उसके आसपास इकट्ठा हो रहे थे, वह उनसे कोई अच्छी वात कहना, उन्हें यह समझाना चाह रहा था कि वह उनकी मित्रता की क़दर करता है और उसके मन में भी उनके लिए बहुत दोस्ती है। मगर उसे उस लेखक की ही भांति सही शब्द नहीं मिल पा रहे थे, जो अचानक अपने हस्ताक्षर देने को कहा जाने पर संकोच में पड़ जाता है, क्योंकि वह जानता है कि इसके लिए उसे साथ ही बिना तैयारी के कुछ लिखना भी होगा और ऐसा करना उसे इसलिए और भी मुश्किल लगता है कि वह जानता है कि उसका लिखा हाथ-दर-हाथ सभी को दिखाया जायेगा।

इसी वक़्त "मिस्री" नौजवानों को अलग हटाता वहां तक आया और उसने पोलोज़ोवा से किसी बात का अनुवाद करके क्लार्क को बताने के लिए कहा। वह चाहता था कि क्लार्क शाम को मज़दूरों और इंजीनियरों की सभा में ऊर्तावायेव के मामले के बारे में कुछ कहे। उसे एक्स्केवेटरों का घोटाला समझाने के लिए बस, कुछ ही शब्द कहने होंगे और अमरीकी विशेषज्ञ अगर भाषण दे दें, तो कुल मिलाकर यह बहुत अच्छा होगा। मर्री ने इनकार कर दिया है – कहता है कि उसने लोगों के आगे कभी भाषण नहीं दिया है। मज़दूरों को क्लार्क की उसके पहले भाषण के समय से ही याद है; उन्हें यह भी मालूम है कि उस रात को नहर-तल में संकट का सामना करने में उसने कैसा भाग लिया था। इस तरह भाषण देने के लिए वही सबसे उपयुक्त व्यक्ति है।

क्लार्क ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। गालत्सेव ने ज़ोर देने की कोशिश की, लेकिन क्लार्क ने सख़्ती के साथ उसकी बात को काट दिया – वह भीड़ के सामने भाषण नहीं दे सकता, वह एक्स्केवेटरों का

विशेषज्ञ नहीं है और न होने का दिखावा ही कर सकता है। पोलोज़ोवा के मुंह से बारक में अपने पहले भाषण की याद से उसे अब चिढ़ आ गई। उसके बारे में वह हमेशा कुछ खीझ के साथ ही सोचा करता था, जिसे उसने न तो तब और न कभी बाद में ही किसी पर ज़ाहिर किया था। पोलोज़ोवा तक को उसका कोई अंदाज़ नहीं था। समय के साथ खीझ की यह भावना धूमिल पड़ गई थी, लेकिन एक ऐसी घटना की याद अब भी उसे कचोटती रहती थी, जिसमें वह ख़ुद अपनी ही नज़र में बड़ी उपहासास्पद स्थिति में सामने आया था।

गालत्सेव ने आख़िर इस निश्चय पर पहुंचकर कि वह अमरीकी को राज़ी नहीं कर सकता, उससे शिष्टतापूर्वक विदा ली और अपनी लंबी टांगों पर बस्ती की तरफ़ चल दिया। रास्ते में वह गराज में गया और उसने उस सहायक मिस्तरी को अपने साथ लिया, जो सुबह उससे मिलने के लिए ट्रेड-यूनियन समिति के कार्यालय में आया था।

दाला-बरज़ीवालों की बारक के पास पहुंचने पर उसने उससे बाहर ही इंतज़ार करने के लिए कहा:

"तुम बारक के बाहर ही रहो। जब मैं बुलाऊं, तब आ जाना।"

बारक में असाधारण ख़ामोशी छाई हुई थी। "मिस्त्री" को आते देख दाला-बरज़ीवाले और भी सटकर बैठ गये। यह स्पष्ट था कि वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

"मिस्त्री" मेज़ पर जाकर बैठ गया, अपनी तंबाकू की थैली निकाली और निर्विकार भाव से एक सिगरेट बनाने लगा। सिगरेट बना लेने के बाद उसने थैली को अपने सबसे पासवाले आदमी की तरफ़ खिसका दिया, जैसे कह रहा हो, "लो, तुम भी बनाओ।"

कोई कुछ नहीं बोला।

"हां, तो फिर? तुमने कुछ सोचा?" आख़िर "मिस्त्री" ने सिगरेट का धूआं खींचते हुए कहा।

कोई जवाब नहीं मिला।

"क्या बात है—तुम्हारी ज़बानें तो नहीं खो गईं?"

"कुज़्नेत्सोव को बोलने दो," एक लाल दाढ़ीवाला आदमी बोला।

भीड़ में से अपना रास्ता बनाते हुए नीला बनियान पहने एक आदमी आगे आया। उसके बायें हाथ पर तीर से छिदे दिल का एक बड़ा-सा गोदना गुदा हुआ था।

"किसीने भी हमें काम पर जाने से नहीं रोका है, हम किसीको भी पकड़वाएंगे नहीं।"

"और किसको किससे पकड़वाने की बात की जा रही है?" गालत्सेव ने मेज पर से उछलकर और कुज्नेत्सोव पर झपटते हुए कहा, "तुम तोतों की तरह एक ही बात दुहराते रहते हो, 'हम उनको पकड़वायेंगे नहीं, हम उनको पकड़वायेंगे नहीं,' और सोचते हो कि यही मजदूर एकता है! एकता किसके साथ? वर्ग-शत्रु के साथ, कुलाकों के साथ, और भला किसके साथ! क्या तुम्हारे ख़याल में ऐसे भगोड़े कुलाकों की कोई कमी है, जो निर्माणस्थली पर हमारे बीच में घुस आये हैं? उनका औरों से भेद कैसे किया जाये—मेरी-तुम्हारी तरह सभी के दो हाथ और दो पैर हैं। उन्हें कैसे पहचाना जाये? उनके चलाये आंदोलन से! अगर तुम्हारी टुकड़ी में उन सूअरों में से कोई आंदोलन करता है, तो उसका गिरेबान पकड़कर उसे निकालकर सारे मजदूरों के सामने लाओ और कहो—'यह रहा एक कुलाक आंदोलनकर्ता, यारो, जरा देखो तो इसकी तरफ़, मजदूर के भेस में छिपा हुआ है!' यह होता है असली मजदूर का तौर-तरीक़ा! और तुम क्या कर रहे हो?"

"हमारे यहां कोई कुलाक-फुलाक नहीं है, इसलिए हमारी आंखों में धूल झोंकने की कोशिश मत करो!" कुज्नेत्सोव ने गुर्राते हुए कहा।

"नहीं है? अच्छी तरह जानते हो? चलो, फिर देख लेंगे।"

"मिस्त्री" उठकर दरवाजे की तरफ़ चल दिया। सब किसीने यही समझा कि वह नाराज होकर जा रहा है। लेकिन उसने दरवाजा खोला और आवाज दी :

"कोज्यूरा, आ जाओ।"

दूसरे सेक्शन का मिस्तरी अंदर आ गया।

"हां, तो बताओ तो, कौन है?"

कोज्यूरा ने भीड़ पर अपनी आंखें दौड़ाईं, सामनेवालों को अलग करके पीछेवालों पर निगाह डाली और सबको देख लेने के बाद हैरानी से बोला :

"लेकिन वह तो यहां नहीं है!"

"क्या मतलब कि यहां नहीं है?"

"नहीं है। मैंने कल उसे देखा था, पर आज वह नहीं है। सफ़ेद कमीज पहनता है वह, उसके बाल तो सनई हैं, पर दाढ़ी लाल है।"

दाला-वरज़ीवालों ने आपस में एक दूसरे की तरफ़ देखा।

"कहीं यह प्तीत्सिन की वात तो नहीं कर रहे," तरेलकिन ने अचानक कहा, "प्तीत्सिन! लेकिन वह गया कहां?"

सभी मानो आगे आने के लिए रास्ता बनाते हुए अलग हो गये, लेकिन प्तीत्सिन नहीं आया।

"क्या कहा था तुमने, लाल दाढ़ीवाला न? अरे, अभी तो वह यहीं था!"

"हां-हां, था तो!"

"एकदम यहीं तो खड़ा था!"

"लेकिन वह गया कहां होगा? बारक में दूसरा दरवाज़ा तो नहीं है?"

कुछ लोग बारक के दूसरे सिरे की तरफ़ लपके।

"खुला पड़ा है! ख़ुदा क़सम, एकदम खुला पड़ा है! इतनी जल्दी में वह गया कि दरवाज़ा बंद करने का भी वक़्त उसके पास नहीं था।"

"यह रहा तुम्हारा प्तीत्सिन!" अपने चारों तरफ़ देखते हुए "मिस्त्री" चिल्लाया। "कोज़्यूरा! भागकर जाओ मिलिशिया के पास!"

दरवाज़ा भड़ाक से बंद हो गया। बारक पर एक भारी ख़ामोशी छा गई।

"तो, तुम्हारे यहां कोई कुलाक-फुलाक नहीं है, है न?"–"मिस्त्री" कुज़्नेत्सोव की तरफ़ बढ़ा और कुज़्नेत्सोव क़दम-क़दम दीवार की तरफ़ खिसकने लगा। "मैं तुम्हारी आंखों में धूल झोंक रहा था, क्यों? और यहां, तुम्हारी टुकड़ी में प्तीत्सिन तुम्हारी नाक के ऐन नीचे बैठा हुआ था! सौ फ़ीसदी सर्वहारा, है न? और क्या तुम्हें यह मालूम है कि तुम्हारे इसी प्तीत्सिन ने तंबोव नगर के पास अपना फ़ालतू माल-मता छीन लिये जाने के बाद एक सामूहिक फ़ार्म का सारा अनाज जला दिया था? फ़ार्म का सत्यानाश हो गया और वह टूट गया। मेरे पास आज सुबह ही एक आदमी आया था और उसीने मुझे यह सब बताया। हो सकता है कि मेरी बात ग़लत हो, लेकिन कुछ भी हो, उससे बहुत मिलता है। उसने कहा कि हम उसे ढूंढ रहे हैं–सब कहीं उसकी तलाश कर रहे हैं, पर वह तो ऐसे ग़ायब हो गया है, जैसे तालाब में पत्थर। उसने कहा कि फिर पता चला कि वह यहां घुस आया है और उसने पहले सैक्शन में छिपने का ठिकाना खोज लिया है..."

दरवाज़ा धड़ाक से खुला और इतनी लंबी पतलून पहने कि जो उसकी बग़ल तक चढ़ी हुई थी और सुतली से कमर पर बंधी हुई थी, एक लड़का भागता हुआ बारक में घुस आया :

"यारो! देखा तुमने? एक आदमी नदी में कूद गया और तैरकर भाग गया। ख़ुदा क़सम, झूठ नहीं कह रहा! पानी उसे एक किलोमीटर बहाकर ले गया। उथले पानी में वह बाहर निकल आया और फिर दूसरे किनारे पर चढ़ गया।"

"लो, यह रहा तुम्हारा प्लोत्सिन!" अपना हाथ नचाते हुए "मिस्री" ने कहा। "'हम उनको पकड़वायेंगे नहीं, हम उनको पकड़वायेंगे नहीं',— और तुमने उसे पकड़वाया भी नहीं, क्यों है न?"

"मिस्री" दरवाज़े को इतनी ज़ोर से बंद करता हुआ बाहर चला गया कि छत से मिट्टी के टुकड़े झड़ पड़े। मिनट भर बाद ही वह तेज़ी से पार्टी समिति के कार्यालय की दिशा में जा रहा था।

अपना दैनिक चक्कर पूरा करके कोई दो घंटे बाद गालत्सेव उस युर्त में पहुंचा, जिसमें स्थानीय अख़बार के संपादकमंडल का कार्यालय था और वहां तरेलकिन और कुज़्नेत्सोव से एक बार फिर उसका सामना हो गया।

"तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"हम अख़बार में एक ऐलान निकलवाने के लिए आये हैं... उसी झगड़े के बारे में... यह कि हमने ग़लती की थी, वग़ैरह-वग़ैरह... और हमने कुछ ज़िम्मेदारियां भी ली हैं..."— कुज़्नेत्सोव ने "मिस्री" की तरफ़ देखे बिना पसीने से तर एक काग़ज़ उसके हाथ में ठूंस दिया।

"मिस्री" ने उस पर एक सरसरी नज़र डाली।

"और जहां तक आंदोलन करनेवालों का सवाल है, हमने दो और को गोदाम में बंद कर दिया है, जिससे वे कहीं भागने न पायें। अब यह पता लगाना है कि मामला क्या है और वे क्या कर रहे थे... हां, अगर यह पता लगे कि वे कुलाक नहीं हैं, तो उन्हें तंग न किया जाये। हम सब ने यह तय किया है कि हर किसीके कंधों पर अपना सिर है और इसलिए सब बराबर ज़िम्मेदार हैं।"

उन्होंने अपनी टोपियां ठीक कीं और जल्दी से युर्त से चले गये।

सारे सैक्शन में यह ख़बर एक्सप्रेस तार से भी ज़्यादा तेज़ी के साथ

फैल गई कि दाला-वरज़ीवालों ने अख़बार में एक ऐलान भेजा है और वे दिन को बारह बजे काम पर आ रहे हैं।

बारह बजने में ठीक पांच मिनट पर दाला-वरज़ीवाले नहर-तल के रास्ते पर नज़र आये। क्लार्क और पोलोज़ोवा जब प्रायश्चित्तकर्ताओं के जलूस को देखने के लिए नहर-तल से ऊपर आये, तब वे किनारे पर पहुंचने ही वाले थे।

"देखो तो उन्हें! लगता है, जैसे मेला देखने जा रहे हों!"

दाला-वरज़ीवाले एक दल बांधकर चल रहे थे। ज़ाहिर था कि आने के लिए उन्होंने लंबी तैयारी की थी। कपड़े तो उन्होंने सचमुच ऐसे ही पहन रखे थे, मानो मेला देखने को जा रहे हों। सभी ताज़ा धुली सफ़ेद कमीज़ें और पालिश से चमकते बूट पहने हुए थे। वे जानते थे कि मजदूर उन्हें अनुताप में लौटते देखने के लिए आयेंगे और उनके हत दर्प ने उन्हें इस बात के लिए प्रेरित किया था कि औरों को यह मजा न लेने दें। उनके रास्ते के दोनों तरफ़ उत्सुक दर्शनार्थियों की क़तारें लगी हुई थीं, पर वे बिलकुल सामने की तरफ़ देख रहे थे, मानो उनको यह तक नज़र नहीं आ रहा है कि वे वहां खड़े हुए हैं। सबसे आगे, एक अकार्डियनवादक उलटा चल रहा था और अपने बाजे को मोर की दुम की तरह फैला रहा था। उसके सामने सफ़ेद कमीज पहने एक बांका नौजवान नाच रहा था, जिसके बूट चमचम चमक रहे थे और हाथ कूल्हों पर टिके हुए थे। अकार्डियनवादक अपने पैर से ताल दे रहा था और ऊंची आवाज़ में गा रहा था।

गाते-गाते ही वे तटबंध से उतरे, गाते-गाते ही उन्होंने नहर-तल में प्रवेश किया और जब एक्स्केवेटर के हमाले ने संगीत-निदेशक की छड़ी की तरह अपनी फैली हुई बांह से एक अर्धवृत्त बना दिया, तब जाकर ही अकार्डियन की आवाज़ हथगाड़ियों की चूं-चूं और गैंतियों की ठक-ठक में विलीन हो गयी।

मंझधार में पड़ा हुआ आदमी

पौ फटने के साथ वर्षा की एक बौछार आई और उसने अतिथियों के आगमन की प्रतीक्षा करते सहृदय गृहस्थ की तरह धूलभरी धरती पर छिड़काव कर दिया।

ऊर्तावायेव ताशक़ंद की कलकल बहती नीली ग्ररीक़ों से घिरी एक सड़क पर चला जा रहा था। पोपलर के पेड़ मानो गारद की तरह उसके पीछे-पीछे चले ग्रा रहे थे। जब तक सड़क उसे एक चौक में नहीं ले ग्राई, तब तक वह चलता ही चला गया। चौक में पहुंचकर वह एक बग़लवाले रास्ते पर हो लिया ग्रौर बिना जल्दी किये चलता रहा। हाथों में पोर्टफ़ोलियो दाबे हड़बड़ाते लोग उसके बराबर से रगड़ खाते हुए उसकी मंथर चाल पर द्वेषपूर्ण निगाहें डालते हुए ग्रागे निकल जाते। जिस ग्रादमी को कहीं भी जाने की जल्दी न हो, उसे देखकर मन में ग्रविश्वास का ही भाव उत्पन्न होता है।

ऊर्तावायेव को सचमुच कहीं भी जाने की जल्दी नहीं थी। वह जिस मुलाक़ात के लिए ताशक़ंद ग्राया था, वह ग्यारह बजे होनेवाली थी ग्रौर इसी लिए वह बीच के इस एक घंटे को काटने के लिए पैदल ही जा रहा था।

यह पहला मौक़ा था कि जब ऊर्तावायेव ताशक़ंद बिलकुल ग्रपने निजी काम के लिए ग्राया था ग्रौर इसलिए ताशक़ंद के सदा ही इतने छोटे ग्रौर मोटर कारों में भागमभाग ग्रौर रिपोर्टों तथा ज्ञापनपत्रों की सरसराहट से इस क़दर भरे हुए दिन ग्रब उसे ऊबाऊ, ख़ाली-ख़ाली ग्रौर ग्रंतहीन हो गये से लग रहे थे। इसी बीच शहर ग्रपनी ठसाठस ग्रौर हड़बड़भरी ज़िंदगी जिये जाता था—दफ़्तरों की खुली खिड़कियों से टाइपराइटरों की कर्णकटु खटखट ग्रा रही थी, दरवाज़ों पर भीतर ग्राते ग्रौर बाहर जाते ग्रौर बिना रुके संक्षिप्त, स्टेनोग्राफ़िक इशारों से एक दूसरे का ग्रभिवादन करते लोगों की भीड़ लगी हुई थी। शहर धड़धड़ा ग्रौर सनसना रहा था, मानो बिजली के किसी शक्तिशाली धक्के ने लोगों ग्रौर मकानों के इस संकुल को एक धकधकाती इकाई में संगलित करके एकाकार कर दिया हो। बस, ग्रकेला वह—ऊर्तावायेव—ही ग्रपने ग्रंतर में एक ग्रपार ग्रचल स्थिरता का ग्रनुभव कर रहा था।

ऊर्तावायेव बाईं तरफ़ मुड़ गया। सामने-सामने पोपलरों की क़तारें एक सीधी ग्रंतहीन वृक्षवीथी सी बनाकर चली गई थीं। उसने राहत का ग्रनुभव किया, मानो वह ग्रपने पीछे-पीछे चली ग्रानेवाली ग्रदृश्य गारद से बच ग्राया हो। चिड़ियाघर के बाहर लगे होर्डिंग से चित्रित पशुग्रों की ग्राकृतियां राहगीरों की तरफ़ ग्रपनी गरदनें बढ़ाये हुए थीं ग्रौर वे इतने ख़ूंख़ार ग्रौर ग्रसली लग रहे थे, जितने सचमुच नहीं लगते।

ऊर्तावायेव ने घड़ी पर निगाह डाली और ट्राम पर सवार होने के लिए लपका – ग्यारह बजने में दस मिनट बाक़ी थे।

चेका कार्यालय के प्रवेश द्वार पर एक सजीला लाल सैनिक इधर-उधर घूमता हुआ पहरा दे रहा था। पास लेने के बाद ऊर्तावायेव ने पत्थर की चौड़ी सीढ़ियों को पार किया और जाकर निर्दिष्ट दरवाज़े पर दस्तक दी।

मेज़ पर बैठे आदमी ने, जिसके पीछे दीवार पर एक बड़ा नक़शा टंगा हुआ था, अपना सिर उठाया। कनपटी से लेकर उसके हजामत किये चेहरे पर भोंडेपन से सिला लंबा परिचित निशान फैला हुआ था। पिछले एक साल के भीतर बस उसका चौड़ा माथा ही और ऊंचा हो गया लगता था, मानो उसने सिर के बालों को लापरवाही से पीछे की तरफ़ धकेल दिया हो और उसके बालों में अब सफ़ेदी छिटक आई थी।

"मैं तुमसे मिलने आया हूं, साथी पेख़ोविच। बाधा तो नहीं दे रहा?"

"बैठो, बैठो," उसने जवाब दिया। "चेहरा तो तुम्हारा अच्छा नहीं लग रहा है, हम सब ही बूढ़े होते जा रहे हैं – और चारा भी क्या है! बरस तो बीतते ही चले जाते हैं। अच्छा किया कि तुम आ गये। तुमसे मिलकर ख़ुशी हुई। तो, सुनाओ, क्या ख़बर है?"

"ख़बर?" ऊर्तावायेव विषण्णतापूर्वक मुसकराया। "ख़बर के पीछे ही तो तुमसे मिलने के लिए आया हूं। अपनी ख़बर बुरी है, साथी पेख़ोविच। मेरे पार्टी से निकाले जाने के बारे में सुना है?"

"सुना तो है," पेख़ोविच ने अपनी पेंसिल को नचाते हुए निर्विकार स्वर में कहा।

"तो उसके बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है?"

"बहुत पेचीदा मामला है, मेरे भाई। शैतान भी उसे नहीं सुलझा सकता। और तुमने ख़ुद उसे और भी बिगाड़ दिया है। भला, एक्स्केवेटरों के साथ जूझने की तुम्हें क्या पड़ी थी? मैनेजमेंट के फ़ैसलों के ख़िलाफ़? इस तरह की मनमानी के लिए विशेषज्ञों को दंड दिया जाता है। और फिर, तुम तो कम्युनिस्ट थे।"

"लेकिन मैं ऐसा फ़र्म के प्रतिनिधि की सहमति से कर रहा था।"

"इससे क्या होता है, मेरे भाई! तुम्हें मैनेजमेंट की अनुमति लेनी चाहिए थी। तुम ख़ुद ही जानते हो कि ये विदेशी कैसे अस्थिर-मन होते हैं। अब ज़रा अपने इस प्रतिनिधि का पता लगाने की तो कोशिश करो।"

"उसका मैं पता लगा लूंगा। इसके लिए मुझे बस कुछ समय दीजिये। और इस मामले में मुख्य बात एक्स्केवेटरों की नहीं है। इसके लिए भर्त्सना की अपेक्षा की जा सकती है–हद से हद सख़्त चेतावनी के साथ, मगर ऐसी बातों के लिए पार्टी से निष्कासित नहीं किया जाता।"

"क्यों नहीं! मनमानी के लिए भी पार्टी से निष्कासन किया जा सकता है, और क्या!"

"तुम ख़ुद जानते हो कि मुझे किसी और बात के लिए निकाला गया है–बासमचियों और अफ़ग़ानिस्तान के साथ तथाकथित संबंधों के लिए। अच्छा, तुम मुझे सीधे-सीधे यह बताओ–तुम इस आरोप पर विश्वास करते हो? क्या तुम्हें इस बात पर विश्वास है कि मैंने सोवियत सत्ता को बासमचियों और बुख़ारा के अमीर को बेचा है?"

"क्या मेरी निजी राय तुम्हारे लिए जरूरी है?"

"हां, बहुत।"

"तो, देखो, बात यह है–मैं इस पर विश्वास नहीं करना चाहता, लेकिन तुम्हारे विरुद्ध जो तथ्य पेश किये गये हैं, वे बहुत ही गंभीर हैं। यह सिद्ध करना तुम्हारा काम है कि ये तथ्य निराधार हैं। कोरी ऊंची-ऊंची बातें करने से कुछ नहीं बनेगा।"

"सुनो, पेख़ोविच, चार दिन बाद मेरा मामला स्तालिनाबाद में केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सामने पेश होनेवाला है। मैं यहां, ताशक़ंद, ख़ास तौर पर तुमसे ही मिलने के लिए आया हूं। तुम ही अकेले ऐसे आदमी हो, जिसकी गवाही मेरी मदद कर सकती है। पिछले साल के हमले के समय तुम हमारे जिले के चेका-प्रमुख थे। कोमारेंको बाद में आया था, इसलिए वह सारी तफ़सील से परिचित नहीं है। मेरे ऊपर लगाया गया मुख्य आरोप कैयक़ के पास हमारी टुकड़ी का सफ़ाया किये जाने और फ़ैयाज के साथ मेरी बातचीत के बारे में ख़्वाजायारोव की गवाही पर आधारित है। मैंने इस बातचीत के बारे में सीधे तुम्हें जानकारी दी थी। अकेले तुम ही इस बात की गवाही दे सकते हो कि मेरी बातचीत के बाद फ़ैयाज के गिरोह पर ओस्तापोव की कमान में हमारी लाल सेना की एक टुकड़ी ने हमला किया था और फ़ैयाज के गिरोह की धज्जियां उड़ा दी थीं और फ़ैयाज ख़ुद पहाड़ों में खदेड़ दिया गया था। संक्षेप में यह कि फ़ैयाज के लिए अगले दिन दाग़ाना-कैयक़ की घाटी में आना और अपने हथियार डालना नामुमकिन हो गया था। तुम यह बात जानते हो, है न?"

"हां।"

"तो इसके बारे में केंद्रीय नियंत्रण आयोग को लिख दो। मुझे इस आशय का लिखित बयान दे दो।"

"बात यह है कि तुम्हारे मामले के बारे में मैं जो कुछ भी जानता हूं, उसकी मैं अपने स्रोतों से पहले ही गवाही दे चुका हूं। इस गवाही को दुबारा देने की कोई जरूरत नहीं है।"

"मतलब यह कि तुम मुझे इस आशय का बयान नहीं देना चाहते? आख़िर मैं तुमसे कोई अपनी राय देने या मेरी तरफ़ से कुछ करने के लिए तो कह नहीं रहा हूं। मैं तो तुमसे बस, एक तथ्य की पुष्टि करने के लिए कह रहा हूं, जिसे तुम अच्छी तरह से जानते हो। क्या तुम सचमुच मेरे लिए इतनी सी बात भी नहीं करोगे?"

"मेरे ख़याल में मैंने अपनी बात को बिलकुल साफ़ कर दिया है– मैं तुम्हारे मामले के बारे में पहले ही गवाही दे चुका हूं और इसे दुहराने की कोई तुक नहीं है।"

ऊर्ताबायेव उठ खड़ा हुआ।

"ठीक है, तो, मैं चला। माफ़ करना कि मैंने तुम्हारा वक़्त ख़राब किया।"

"तुम तो बहुत ही शक्की आदमी हो, ऊर्ताबायेव। मेरी बात पर विश्वास करो–इस सबसे कुछ नहीं होनेवाला है। इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि फ़ैयाज़ आत्मसमर्पण करने के लिए आ सकता था या नहीं। यह साबित करना तुम्हारा काम है कि ख़्वाजायारोव झूठ बोल रहा है और वह कभी भी तुम्हारे दस्ते में था ही नहीं। अगर तुम इस आशय की गवाही प्राप्त कर लो, तो तुम्हें और किसी चीज की जरूरत ही नहीं है। अगर तुम यह साबित नहीं कर सकते, तो चाहे तुम दर्जनों सिफ़ारिशी ख़त ले आओ, पर उनकी बिनाह पर तुम पार्टी में वापस नहीं लिये जा सकते।"

ऊर्ताबायेव ने अपने गुलाबी पास को उंगलियों में मरोड़ दिया।

"तुम मुझसे नाराज़ मत होओ," खिड़की से बाहर की तरफ़ देखते हुए उसने कहा, "इस बात को मैं भी समझ गया हूं कि इस सबसे कुछ नहीं होनेवाला है और ताशक़ंद आने की कोई तुक नहीं थी... ख़ैर, धन्यवाद, तुम अच्छे आदमी हो..."

"रुको ज़रा," पेख़ोविच अपनी मेज़ की दराज में कुछ ढूंढ रहा था।

"यहां एक चीज है, जो शायद तुम्हारे काम आ सकती है... अहा, यह रही!" उसने एक अख़बार निकाला और उसे खोला, "यह एक अफ़ग़ान अख़बार है। इसमें एक लेख पर निशान लगा हुआ है। यह तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी साबित हो सकता है।"

ऊर्तावायेव ने जल्दी-जल्दी लेख को पढ़ा, जिस पर लाल पेंसिल से निशान लगा हुआ था:

हमारा दिल उस गुलाब की तरह से लहूलुहान हो रहा है, जिसे किसी लापरवाह जियारती ने रास्ते पर फेंक दिया है और जिसे किसी राह गुजरते काफ़िले के ऊंट ने कुचलकर मिट्टी में मिला दिया है।

कितनी ही बार हमने अपने प्यारे हमवतनों से इसरार किया है कि वे अल्लाह के रहम और उसके पैग़ंबर के करम की ख़ातिर शरियत की पाक हिदायतों पर समझदारी के साथ अमल करें।

अफ़सोस की बात है कि हमारी आवाज़ अनसुनी ही रही है, जिस तरह गहरी नींद में ग़ाफ़िल मनमौजी दीनदार मुअज़्ज़िन की अज़ान को नहीं सुनते।

हमें ख़बर मिली है कि हाकिमत-ए-इमामसाहब में कलबात क़िशलाक़ के कुछ लामजहब लोगों ने इनसानियत की भलाई और ख़ुशहाली के लिए इस्लाम के सबसे अज़ीम और आला रहनुमा की ताक़ीदों की मुख़ालफ़त करते हुए अपने क़िशलाक़ में लामजहब लोगों को इकट्ठा करके ऐसा निज़ाम क़ायम कर दिया है, जो शरियत के ख़िलाफ़ है। आम रज़ामंदी से अल्लाह के क़ायम किये जायदाद के निज़ाम का ख़ात्मा करके इन दहक़ानों ने अपने खेतों को एकसाथ मिलाकर सोवियतों के लामज़हब लोगों की तरह, जिनके कारनामों के ख़याल से भी दीनदार लोग कांप उठते हैं, एक सोवियत सामूहिक फ़ार्म क़ायम कर लिया है। इन काफ़िरों की मिसाल से बहकावे में आकर अपनी रूहों को शैतान के हवाले करके इन मुसलमानों ने क़ुरान मजीद के पाक अलफ़ाज़ों को भुला दिया।

कलबात क़िशलाक़ के लामजहब बाशिंदों ने इसी तरह अल्लाह के लगाये सभी महसूलों को भी अदा करने से इनकार कर दिया

है और इबादत और नमाज़ के मामले में भी बहुत लापरवाही दिखाई है, जो इस्लाम की बुनियादों में एक है।

इस वक़्त अल्लाह के करम और एक मज़हबपरस्त हज़रत से मिली ख़बरों की बदौलत इस लामज़हब मामले के सरग़नाओं को मुनासिब सज़ा दी भी जा चुकी है। उनके सर क़लम करके मसजिद के सामने रख दिये गये हैं, ताकि दूसरे क़िशलाक़ों के बाशिंदे यह देख सकें कि क़ानून पाक शरियत की हिदायतों के ख़िलाफ़ अमल करनेवालों को किस तरह सज़ा देता है।

ऊर्तावायेव ने अख़बार की तह कर दी।

"क्या तुम मुझे यह अख़बार दे सकते हो?"

"ले लो। लेकिन, मेरे भाई, यह भी तुम्हारे ज़्यादा काम न आ सकेगा। तुम बहुत वक़्त बरबाद कर रहे हो। तुम्हें यहां ही पहुंचने में एक हफ़्ते से ज़्यादा लग गया होगा। तुम्हें कैयक़ से आगे कहीं जाने की ज़रूरत ही नहीं थी। गवाहों को मौक़े पर ही तलाश करो, दहक़ानों से बातें करो। मेरी बात को याद रखो। मैं एक पुराने दोस्त की हैसियत से बात कर रहा हूं..."

काना

उस इतवार को क्लार्क और दिनों की बनिस्बत देर से सोकर उठा था और पहले वह काफ़ी देर तक यही सोचता रहा कि ख़ाली समय को किस तरह से काटा जाये। करने को सचमुच कुछ भी नहीं था। पोलोज़ोवा, जिसे कोम्सोमोल संगठन ने छोटी लाइन डालने के काम को जल्दी पूरा करने में मदद देने के लिए बुला लिया था, एक सप्ताह से घाट पर ही थी। मर्री अपनी आदत के मुताबिक बंदूक़ लेकर कहीं जैरानों के शिकार पर चला गया था। कुछ देर सड़कों पर निरुद्देश्य घूमने के बाद क्लार्क ने भी उसीका अनुकरण करने का निश्चय किया। उसने कीर्श से एक बंदूक़ उधार ली, घोड़े पर सवार हुआ और उसे सरपट मैदान पर दौड़ाने लगा। मुख्य सैक्शन को पार करने के बाद उसने सड़क को छोड़ दिया और कंटीली झाड़ियों से होकर सीधा पहाड़ों की तरफ़ हो लिया। उसके पास पहुंचने पर बड़े-बड़े ललछौंह टीले, जो असल में ऊंट निकले, अपनी पतली-पतली टांगों

पर उछलकर खड़े हो जाते और एकदम भागते हुए मैदान में चले जाते। मैदान की पृष्ठभूमि में भूरे रंग के झुर्रीदार टीले उभरे हुए खड़े थे, मानो अपनी महाकाय पीठों को धूप सेंकने के लिए दलदल की सतह पर उठकर आये दरियाई घोड़ों की ठठरियां हों। उनके पास पहुंचता हुआ घोड़ा शक के साथ फूत्कार मार रहा था, मानो कहीं ये भी अपने मोटे उदरों को ज़मीन पर घसीटते हुए भाग न खड़े हों।

मगर क्लार्क को जैरान देखने को भी नहीं मिले। दिन भर भटकने के बाद वह शिकार की जिन निशानियों को लेकर वापस चला, वे थीं उसकी काठी पर झूलती तीन बटेर। गरमी इतनी तेज थी कि लगता था, जैसे शुद्ध स्पिरिट पी ली हो, जिसके कारण सूखा गला मानो ऐंठा जा रहा था। पहाड़ की मछली जैसी लंबी ढलवां पीठ पर सूरज क्षितिज से जा लगा था और दमकते हुए कांटे की तरह आंखों को चौंधिया रहा था। आख़िर दो पहाड़ियों के बीच एक तंग दर्रे में क्लार्क को एक अनजान क़िशलाक़ नजर आया और अपने घोड़े को कोड़ा लगा वह सबसे निकटवर्ती झोंपड़ों की तरफ़ सरपट बढ़ने लगा। उसने पहले झोंपड़े पर जाकर रास खींची, जिसे मिट्टी की एक अभेद्य ऊंची दीवार ने सड़क से अलग किया हुआ था। इस इलाक़े के और सभी निवास गृहों की तरह यह झोंपड़ा भी सड़क की तरफ़ तिरस्कार-पूर्वक अपनी पीठ किये खड़ा था।

क्लार्क ने रक़ाब पर खड़े होकर जोर से आवाज दी। कोई जवाब नहीं मिला। उसने एक बार फिर आवाज दी।

झोंपड़े के कोने के पीछे से एक दहक़ान सामने आया।

क्लार्क ने "आब" के जादुई शब्द को दुहराते हुए इशारे से बताया कि वह पानी पीना चाहता है। दहक़ान चला गया और एक तूंबा लेकर वापस आया। तूंबे के तोंदल पेट से गड़गड़ की आवाज करता पानी निकल आया। क्लार्क ने हाथ से मुंह को पोंछा और आभार प्रदर्शन करने के लिए अपना हाथ दिल से लगा दिया। वह काठी पर आराम से बैठ गया कि तभी उसका ध्यान इस बात की तरफ़ गया कि मरी हुई बटेरों से टपकता ख़ून उसकी काठी और बिरजिस को ख़राब कर रहा है। उसने बटेरों को खोलकर दहक़ान से इशारे से कहा कि वह उन्हें किसी चीज में लपेट दे।

दहक़ान तूंबे को ले गया और एक अख़बार लेकर वापस आया। पहले पृष्ठ के शीर्षक से क्लार्क ने पहचान लिया कि वह निर्माणस्थली पर

प्रकाशित होनेवाले स्थानीय पत्र की प्रति है। खुले हुए सफ़े में एक छेद नज़र आ रहा था, जहां किसीके चित्र के सिर को कैंची से सफ़ाई के साथ काट दिया गया था... क्लार्क ने पलक झपकते-झपकते अनुभव किया कि दहक़ान भी अख़बार के छेद की तरफ़ देख रहा है। उसने अपनी आंखें उठाईं और वे दहक़ान की आंखों से—बल्कि यह कहिये कि एक आंख से—जा टकराईं। दहक़ान की बाईं आंख नदारद थी और इससे उसका चेहरा मानो एक तरफ़ को खिंचा-सा हुआ था। बटेरों और अख़बार को छीनकर दहक़ान फिर झोंपड़े के पीछे जाकर आंख से ओझल हो गया। कुछ देर बाद वह बटेरों को किसी और काग़ज़ में लपेटकर लाया और बंडल को उसने क्लार्क के हाथों में ठूंस दिया। क्लार्क असमंजस में अजनबी के टेढ़े चेहरे की तरफ़ देखता रहा। वह उसे बदी और वैर से भरा लगा—अकेली आंख अधझपकी पलकों के पीछे से घृणा और दबाये हुए गुस्से के साथ देख रही थी।

इस निगाह में ही कुछ ऐसी भयानक बात थी या यह अनजाने वातावरण का प्रभाव था—पहाड़ की अंधियाली घाटी में मोथरे पच्चर की तरह घुसी हुई गांव की वीरान सड़क—कारण चाहे कुछ भी रहा हो, क्लार्क ने अचानक अनुभव किया कि एक वहशियाना आतंक के दौरे ने उसके गले को आ दबोचा है। उसने रास को झटका देकर घोड़े को खड़ा कर लिया, एकदम मोड़ दिया और उसे मिट्टी की इस घिरी अंधी सड़क से दूर स्तेपी में खुली जगह की तरफ़ सरपट दौड़ा दिया। पीछे की तरफ़ देखे बिना ही वह घोड़े पर चाबुक बरसाता चला गया, मानो अदृश्य पीछा करनेवाले उसे आ दबोचनेवाले ही हों।

फिर जिस तरह अचानक उसने घोड़े को दौड़ाना शुरू किया था, उसी तरह उसने रास को खींच भी लिया। उसके चारों तरफ़ निर्जन, निर्वृक्ष स्तेपी थी। पहाड़ की वह दरार अब मुश्किल से ही नज़र आ रही थी, जहां वह अनजान और जीवनहीन क़िशलाक़ स्थित था। क्लार्क ने घोड़े को मामूली चाल पर छोड़ दिया और शांति के साथ सोचने लगा कि क्या हुआ था। वह था क्या? डर? वह शुरू कैसे हुआ? अख़बार? नहीं, अख़बार से नहीं, अख़बार में जो छेद था, उससे—कैंची से कटे हुए छेद से।

घोड़ा चाबुक की अभ्यासगत मार खाने की प्रतीक्षा में निश्चल खड़ा हो गया था। दोनों ही काफ़ी देर वहीं, बीच स्तेपी में खड़े रहे। क्लार्क

बिलकुल निरुद्देश्य तरीक़े से दुहराये जा रहा था: "कैंची से कटा हुआ छेद"। अचानक उसके सिर से पांव तक कंपकंपी की एक लहर दौड़ गई—"बेशक, वह तो मेरा ही सिर था!"

घोड़े के पुट्ठे पर चाबुक पड़ा और वह मामूली चाल से चलने लगा: एक बार फिर क्लार्क के मस्तिष्क के आगे अख़बार का वह सुपरिचित पन्ना आ खड़ा हुआ, जिस पर इंजीनियर क्लार्क का चित्र और "तंबाकू कांड" के अवसर पर दिये उसके भाषण के बारे में लेख छपा था और उसीके साथ-साथ काग़ज़ का वह दूसरा, छोटा और सफ़ेद टुकड़ा भी आ गया, जिस पर अख़बार से सफ़ाई के साथ कटा उसका सिर चिपका हुआ था, जिसके कान काट दिये गये थे और आंखों को पिन से छेद दिया गया था।

"आख़िर वह क्या चीज़ थी, जिससे मैं इस क़दर डर गया?" यह अनुभूति बड़ी लज्जास्पद और अप्रिय थी कि वह डर गया था, "मुझे इस जगह को अच्छी तरह याद रखना चाहिए।" क्लार्क ने अपने घोड़े को एक बार फिर घुमाया। इतनी दूर से घाटी पहाड़ के ढाल पर एक मामूली दरार जैसी लग रही थी। चारों तरफ़ स्तेपी का अंतहीन विस्तार था। अंधेरा घिरने लगा था। जगह को याद रखना मुश्किल था।

क्लार्क रात को काफ़ी देर से मुख्य सैक्शन पहुंचा। सबसे पहले तो उसे यही विचार आया कि सिनीत्सिन के पास जाये और उसे सारा क़िस्सा सुनाये। लेकिन अभाग्यवश, सिनीत्सिन अंग्रेज़ी नहीं जानता था। इसलिये इसके अलावा और कोई चारा नहीं था कि अगले दिन तक ठहरा जाये।

पोलोज़ोवा अगले दिन भी नहीं लौटी। मरी उत्प्लव मार्ग के निर्माण की तैयारी के लिए किये जानेवाले काम का मुआयना करने के लिए सुबह ही दूसरे सैक्शन चला गया था।

क्लार्क ने कार को जाने दिया और खीझे मन से नहर की तरफ़ पैदल ही चल दिया। अब मैदान पर जहां तक आंख जाती थी, ऊंचा तट-बंध नजर आता था। खुदी हुई मिट्टी की ऊंचे खांचों के बीच कंकरीली ज़मीन में नहर का गहरा तल था।

इस विभाग में अपना काम पूरा करने के बाद एक्स्केवेटर ताज़ा मिट्टी में अपनी नाकें घुसाने के लिए और दक्षिण की तरफ़ चले गये थे। अब कोई पंद्रह एक्स्केवेटर काम पर लगे हुए थे। उनके पीछे-पीछे विस्फोटनकर्ता

थे, जिनका काम था एक्स्केवेटरों द्वारा उघाड़ी चट्टानी परत को विस्फोटकों से उड़ाना। इसके बाद गैंतियों की चोटों से खंडित पत्थर को मज़दूर बंकरों के खुले मुंहों में भर देते। तटबंध के ढाल पर बहते झरने की तरह, उलटी तरफ़ मोड़े पहाड़ी नाले की तरह, कनवेयर का घड़घड़ाता पट्टा पत्थर के खंडित टुकड़ों को ऊपर ले जाता था।

इस जगह नहर का तल लगभग बारह मीटर गहरा था, पर अभी उसे कोई छः मीटर और खोदना था। कनवेयर ठीक तरह से लगा नहीं था और इसलिए विस्फोटन का काम बड़ी सावधानी से, थोड़ा-थोड़ा विस्फोटक रखकर ही करना पड़ता था, नहीं तो इतने जतन से तैयार किये इस सारे जंतर के ही क्षतिग्रस्त हो जाने का ख़तरा था। क्लार्क ने देखा कि विस्फोटनकर्ताओं ने फिर विस्फोटक को ठीक तरीक़े से नहीं रखा है। दुर्भाग्यवश पोलोज़ोवा वहां नहीं थी और उसके बिना अपनी बात समझा पाना बहुत मुश्किल था। क्लार्क नहर के तल में उतर गया और इशारों से बताने लगा कि विस्फोटक को किस तरह रखना चाहिए।

विस्फोट का क्षण निकट आ रहा था। ढाल के ऊपर ट्रैक्टर को रोक दिया गया था और कनवेयर का चलता पट्टा अचानक रुक गया था, मानो झरना अधबीच ही जमकर बर्फ़ बन गया हो। इंजन की एकसुरी घरघराहट के बाद आनेवाली ख़ामोशी में कनवेयर पर लुढ़ककर तट की दूसरी तरफ़ जाते आख़िरी पत्थरों की आवाज़ भी सुनी जा सकती थी। तेज़ सीटियां बजने लगीं और मज़दूर तेज़ी के साथ ढाल पर लपक पड़े। क्लार्क ने उन्हें अपने से आगे जाने दिया और विस्फोटनकर्ताओं के साथ सबसे आख़िर में ऊपर चढ़ना शुरू किया। रास्ते को छोटा करने के लिए पत्थर से पत्थर पर कूदते हुए उसने एक तरफ़ मुड़कर एक और छलांग लगाई और उसकी ठोड़ी एक मज़दूर की पीठ से जा टकराई, जो अचानक रुक गया था। संतुलन को संभालने के लिए क्लार्क ने हाथ फैलाये। उसके रास्ते में आनेवाला मज़दूर फिसल गया और उसने हाथ से ज़मीन को थाम लिया। निमिष मात्र के लिए उसके चेहरे के एक हिस्से पर, बल्कि यह कहिये कि उसकी आंख, नेत्रहीन सपाट मुखपार्श्व–पर क्लार्क की निगाह जाकर ठहर गई। मज़दूर का पैर फिसल गया और क्लार्क के पैर से जा टकराया। क्लार्क के मुंह से एक चीख़ निकली और हवा को अपने फैले हाथों से जकड़ते हुए वह धड़ाम से नीचे जा गिरा...

मेत्योलकिन को सुराग़ मिला

उस स्मरणीय दिन को निर्माणस्थली पर एक और उल्लेखनीय घटना घटी थी। उस रात को दूसरे सैक्शन के चट्टों में आग लग गई। शक था कि आग जान-बूझकर लगाई गई है।

टेलीफ़ोन के बजने की आवाज़ से जागकर कोमारेंको कार में बैठकर दुर्घटना-स्थल पर पहुंचा। उसने पाया कि सारा ही सैक्शन जगा हुआ है। मजदूरों को आग बुझाने के लिए तुरंत एकत्र कर लेने के कारण बस एक ही चट्टा पूरी तरह से जल पाया था। दूसरे चट्टे की आग को बुझा दिया गया था और वह इमारतों तक नहीं पहुंच पाई थी।

अग्निकांड के स्थल से दूसरे सैक्शन की बस्ती में पहुंचकर अगली सुबह कोमारेंको और सैक्शन-प्रमुख रियूमिन बरामदे में बैठे चाय पी रहे थे और ऐसे चुटकुले सुना रहे थे कि कुत्ता बेग तक शिष्टतावश अपने पंजे की ओट में खीसें निकाल रहा था। तभी एक्स्केवेटर चालक मेत्योलकिन बिलकुल बेदम हुआ बरामदे की सीढ़ियों पर पहुंचा और उसने बताया कि एक ऊर्तावायेव एक्स्केवेटर ख़राब हो गया है और उसकी मुकम्मल मरम्मत करनी होगी।

कोमारेंको ने चाय को बिना पिये ही छोड़ दिया और अपने मेज़बान से विदाई लिये बिना मेत्योलकिन के साथ बाहर आ गया। उन्होंने बस्ती को ख़ामोशी से पार किया। कोमारेंको ही पहले बोला :

"क्या उसे ख़राब हुए काफ़ी देर हो गई?"

"आज सुबह से ही ख़राब है।"

"कल वह ठीक था?"

"बिलकुल शाम तक काम करता रहा था।"

"यह कब देखा कि उसमें कुछ ख़राबी है?"

मेत्योलकिन मुड़ा। उसका मूंछोंदार चेचकरू चेहरा सिकुड़कर विकृत हो गया। उसने अचानक हाथ से अपनी टोपी को सिर के पीछे की तरफ़ धकेल दिया, हताशा जताने के लिए हाथ फैला दिया और आगे बढ़ गया। तीन क़दम जाने के बाद वह फिर मुड़ गया।

"ख़ैर, ग़लती तो मेरी ही है—मैं जानता हूं। दें इसके लिए वे मुझे झाड़। हमने समझा कि सारी बस्ती में आग लग जायेगी और इसलिए मदद करने के लिए लपक गये..."

"छिः, मेत्योलकिन, मेरा तो ख़याल था कि तुम ऐसे आदमी हो, जिस पर निर्भर किया जा सकता है... और इससे भी बढ़कर बात यह है कि तुम कम्युनिस्ट हो!"

मेत्योलकिन ने जवाब नहीं दिया और अपने बूटों की तरफ़ क्षुब्ध नज़रों से देखता रहा।

"क्या तुम दोनों ही चले गये थे?"

"हमने काम बहुत देर से ख़त्म किया था। जल्दी में थे—जितना हो सके, ज़्यादा से ज़्यादा करना... अभी हमारी आंखें ज़रा झपकी ही थीं कि अचानक आग लग गई। हर कोई मदद के लिए दौड़ा और हम...हम भी चले गये। और तभी..."

"और तभी क्या? क्या तुमसे कहा नहीं गया था कि एक्स्केवेटर की अच्छी तरह रखवाली की जानी चाहिए?"

"बेशक कहा गया था... जानता हूं कि इसका दोष मेरे ही ऊपर है।"

"मुझे इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि तुम दोष अपने ऊपर लेते हो? क्या तुम बहुत देर में लौटे थे?"

"बहुत देर तो नहीं। हद से हद डेढ़ घंटे में।"

"नुक़सान क्या हुआ है?"

"एक पुरज़ा टूट गया है। हमारे स्टाक में ऐसे पुरज़े नहीं हैं—उन्हें मंगवाना होगा।"

"तुम्हारा क्या ख़याल है? वह घिस गया था या किसीने उसे जान-बूझकर तोड़ा है? कहीं वह किसीसे टूट तो नहीं गया?"

"मैं नहीं समझता कि ऐसा हुआ होगा... वह एक बहुत ही छोटा पुरज़ा है। अगर उसे इसे ही तोड़ने की बात सूझी, तो हरामज़ादे को एक्स्केवेटरों की विशेष जानकारी रही होगी।"

कोमारेंको ने एक्स्केवेटर के इंजन का बारीकी से मुआयना किया और टूटे हुए पुरज़े की बड़ी देर तक जांच करता रहा। फिर वह एक भी शब्द बोले बिना वहां से चल दिया।

वह अभी पचास क़दम भी नहीं गया होगा कि मेत्योलकिन उसीके बराबर आ पहुंचा।

"साथी कोमारेंको!"

"क्यों, क्या बात है?"

"क्या आपका यह ख़याल है कि पुरज़ा जान-बूझकर तोड़ा गया है? क्योंकि अगर बात यही है, तो जिसने ऐसा किया है, मैं उसे पकड़े बिना नहीं छोड़ूंगा। मैं उसे पकड़कर ही रहूंगा, चाहे इसमें मेरी जान ही क्यों न चली जाये..."

कोमारेंको आगे चलता चला गया। बड़ी देर तक मेत्योलकिन वहीं खड़ा उसे जाते देखता रहा।

एक्स्केवेटर के पास वापस आकर टोपी को उदासी के साथ आंखों तक खींचकर वह रेत पर बैठ गया। बहुत देर तक वह निश्चल एक्स्केवेटर के पास बैठा उदास आंखों से रेत की तरफ़—बल्कि यह कहिये कि रेत में पैरों से कुचलकर दबी एक छोटी-सी बादामी चीज़ की तरफ़—देखता रहा।

कई मिनट बाद ही धूप में चमककर वह छोटी-सी चीज़ मेत्योलकिन के ध्यान को अपनी तरफ़ आकर्षित कर पाई। उसने अपने पैर से उसे उलट दिया और फिर आगे झुककर उसे उठा लिया। वह कांच की एक छोटी-सी सपाट बोतल थी, जिसमें सुरती थी। अपनी हथेली पर लेकर उसने उसका मुआयना किया। सुरती का न वह इस्तेमाल करता था, न उसका सहकारी। इसकी आदत सिर्फ़ ताजिकों को ही थी। यह बोतल यहां हाल ही में गिरी थी।

मेत्योलकिन उछलकर खड़ा हो गया और बस्ती की तरफ़ भागने लगा। बस्ती से एक कार निकल रही थी—मैदान में पहुंचकर वह मुड़ी और मुख्य सैक्शन की तरफ़ रवाना हो गई। मेत्योलकिन तेज़ी से जाती कार के पीछे-पीछे भागने लगा।

"साथी कोमारेंको!" वह तेज़ी से भागते-भागते ही चिल्लाया, यद्यपि कार में किसीके लिए भी उसकी आवाज़ को सुन पाना संभव नहीं था। कार धूल के बादल में आंखों से ओझल भी होने लगी थी, मगर जब तक उसमें दम रहा, मेत्योलकिन उसके पीछे भागता ही रहा।

आख़िर वह रुक गया। वह भारी-भारी सांस ले रहा था और उस बहुमूल्य सुराग़ को अपने हाथ में कसकर जकड़े हुए था। रास्ता चलते दहक़ानों ने अपने घोड़ों को थाम लिया और उसकी तरफ़ इशारा करते हुए आपस में कुछ कहने लगे। मेत्योलकिन ने सोचा कि वे उसे पागल समझ रहे होंगे। दहक़ान कई थे, सभी एक से हरे चोग़े पहने हुए थे, सभी के एक से सांवले चेहरे थे और सभी के एक सी कटी हुई काली

दाढ़ियां थीं। सभी ने एकसाथ अपने-अपने कमरबंद में हाथ डाले और बिलकुल वैसी ही छोटी-छोटी बोतलें लीं, जैसी मेत्योलकिन अपने हाथ में जकड़े हुए था। सभी ने अपनी-अपनी हथेली पर ज़रा-ज़रा सी सुरती डाली और बिना जल्दी किये अपने मुंहों तक ले आये। सभी की मुखमुद्रा रहस्यमय और सौम्यतापूर्ण थी। मेत्योलकिन ने अपने माथे पर हाथ फेरा। वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि उसकी आंखें एक की जगह दो तो क्या, दस लोगों को देख रही हैं या सचमुच उसका दिमाग़ ही ख़राब हो गया है। सबसे पासवाले दहक़ान ने उसकी तरफ़ पानी से भरा तूंबा बढ़ा दिया।

मुजरिम चोग़ा नापता है

उस दिन ऊर्तावायेव का मामला स्तालिनाबाद में केंद्रीय नियंत्रण आयोग के सामने पेश होनेवाला था। ऊर्तावायेव सुबह ही ताशक़ंद से वापस आया था। बस की प्रतीक्षा न करके वह इस आशा में स्टेशन से पैदल ही चल दिया कि इससे शायद वह उद्विग्नता शांत हो जाये, जो उस पर अचानक हावी हो गई थी और मानसिक संतुलन फिर हासिल हो जाये, जिसकी आज उसे इतनी आवश्यकता थी।

जब भी वह इस शहर में आता, इसे बदला हुआ पाता, मगर फिर भी वह अपने परिचित क़िशलाक़ के आदिम ढांचे को पहचान लेता था।

उस समय यहां एक अंतहीन स्तेपी थी – धूलभरे रास्तों से कटी हुई। सुदूर तेरमीज़ से ऊंट बड़ी-बड़ी शहतीरें लेकर आते थे और कोहानदार शेरों जैसे घने अयालदार ऊंटों पर झूलते तिरछी आंखोंवाले क़िर्ग़िज़ अपने बेसुरे गीत गाते थे। रेगिस्तान में सैंकड़ों किलोमीटर तक घसीटे शहतीर पेंसिलों की तरह नोक उठाये हुए थे।

दूशंबे क़िशलाक़ के ऊपर उस दिन उत्तेजित लक़लक़ों की तरह हवाई जहाज़ मंडरा रहे थे। वे मिट्टी के जिस गांव के ऊपर घूम रहे थे, उसने पहले कभी पहिये भी नहीं देखे थे (अगर आगे जाकर बड़े-बूढ़े अपने नाती-पोतों से यह कहें कि उन्हें पहला पहिया आसमान से मिला था, तो वह ग़लत न होगा)। तेरमीज़ से दूशंबे जो पहला ऊंट पहली शहतीर लाया था, उससे खिंची रेखा के साथ-साथ आज रेलवे लाइन है और रात को इंजनों की आवाज़ से सियार भय खाते हैं।

आज धूलभरी नामहीन सड़कों के दोनों तरफ़ मकान खड़े हो गये हैं। अभी तीन बरस पहले ही सड़कों ने अपनी रक्षा करने की कोशिश की थी। घोड़ागाड़ियों के पहियों पर उनकी मनमानी चलती थी, जिस तरह आदमी अपनी गरदन दबोचनेवाले को लातें मारता है, उसी तरह सड़कों के गड्ढे आरियों को टेढ़ा कर देते और मोटरगाड़ियों की कमानियों और पहियों को तोड़ देते थे। तब शहर की मदद करने के लिए सुदूर उत्तर से राज लाये गये। उन्होंने अड़ियल सड़कों को कूट-कूटकर पत्थर की तरह सख़्त बना दिया। इसके बाद चौराहों पर लकड़ी की नाम लिखी छोटी-छोटी तख़्तियां लगा दी गईं और तब तक के नामहीन रास्ते अब नामधारी मार्ग और पथ बन गये। अब उन पर दफ़्तरी कर्मचारियों से भरी मोटर गाड़ियां तेज़ी से दौड़ती हैं और बढ़िया घोड़े जुती टमटमें चलती हैं।

हर वसंत में शहर पाड़बंदियों के जंगल से भर जाता था। शरद के आते-आते वे कट चुकी होती थीं और उनकी जगह एक नया महल्ला पैदा हो चुका होता था।

अपनी पहले की परिचित सड़कों को ऊर्तावायेव नहीं पहचान सका। वह कपास ओटने के एक कारख़ाने के पास खड़ा हो गया, जो पिछले साल वहां नहीं था। वह आहिस्ता से मुड़ा और शहर को अपनी पीठ की तरफ़ छोड़कर सामने, स्तेपी के पार अफ़ग़ानिस्तान की तरफ़ मुंह करके, केंद्रीय कार्यकारिणी समिति की इमारतवाली सड़क पर चलने लगा। वह केंद्रीय समिति की इमारत के सामने से गुज़रा, जिसके सामने फ़ुटपाथ के पास पत्थर के दो खंभे हैं, जिनके ऊपर किसी छत का भार नहीं – मात्र एक शिला है, जिससे एक तोरण जैसा बन गया है और जिसके नीचे से होते हुए जनतंत्र के सुपुत्र इमारत में घुसते हैं। उसने सुदूर ताशक़ंद से लाये पेड़ों की छाया से परिपूर्ण शहरी बाग़ को पार किया। मंथरा प्रकृति कब पोपलर और चिनार के पेड़ उपायेगी, शहर इस बात की प्रतीक्षा नहीं कर सकता था। उसे छाया की ज़रूरत थी और वह यहां बनी-बनाई छाया ले आया और सैकड़ों किलोमीटर की दूरी से उसे लाकर यहां की खुली ज़मीन में लगा दिया – नन्हे-नन्हे पौधे नहीं, बल्कि पूरे के पूरे हरे-भरे पेड़।

ताजिक उपभोक्ता सहकारी संघ के फाटक से सामान और हरी चाय से लदा ऊंटों का एक लंबा क़ाफ़िला निकला और उत्तर-पूर्व की तरफ़ चल

दिया, जहां क्षितिज पर पहाड़ पत्थर की बाड़ की तरह फैले हुए थे। यह काफ़िला गर्म शहर जा रहा था, जहां पहली सड़क अगले साल जाकर ही बन पायेगी।

ऊर्ताबायेव ने सड़क को पार किया और दहक़ान भवन के पास एक बड़े चौक में पहुंच गया। चौक के एक कोने में कांस्य मंच पर लेनिन की कांस्य प्रतिमा थी, जिसका एक हाथ पूर्व की तरफ़ इंगित कर रहा था। सिर्फ़ दो साल पहले तक चौक के पूर्व में मकानों की क़तार नहीं खड़ी हुई थी और वह ठेठ पर्वत श्रेणियों तक फैले खेतों तक चला गया था। हंसोड़ लोग इसे दुनिया का सबसे बड़ा चौक कहा करते थे। खुले चौक से होकर खेत शहर के भीतर तक चले आते थे और वसंत में झाड़-झंखाड़ के रेले सड़क पर फैल जाया करते थे। इस साल चौक और पहाड़ों के बीच पहली बार इमारतों की एक सफ़ेद दीवार खड़ी हो गई थी और खेत पहाड़ों की तरफ़ हट गये थे।

चौक के पीछे मुख्य सड़क शुरू होकर संकरे-से पुराने बाज़ार की तरफ़ चली जाती थी।

सड़क पर काली मिर्च, प्याज़ और भेड़ के मांस की सौंधी गंध छाई रहती थी। पिघलती चरबी की सनन-सनन के साथ राहगीरों की बातचीत की घरघराती आवाज़ें और भिश्तियों की रसहीन पुकारें मिली होती थीं।

यह तथाकथित पुराना एशिया था—वास्तविक पूर्व को देखने की उत्कंठा से अभिभूत हर नवागंतुक सबसे पहले इसे ही देखने के लिए दौड़ता था। पुराना एशिया यहीं से, नगरोपांत से शुरू होकर मुख्य सड़क के साथ-साथ सफ़ेद इमारतों की बढ़ती आती क़तार की तरफ़ चला जाता था, सड़क को अपने घुटनभरे झोंपड़ों से बंद कर देता था और चौक के दूसरी तरफ़ फैले हरे मार्ग के विशाल परिदृश्य को तिरस्कार की दृष्टि से देखता था। उसके और नये शहर के बीच में लेनिन की कांस्य प्रतिमा थी।

साल भर पहले ऐसा ही था। इस साल चौक को पार करने के बाद ऊर्ताबायेव स्तंभित-सा होकर वहां का वहीं खड़ा रह गया। बाज़ार का कहीं पता न था—न मिट्टी की झोंपड़ियां और न दूकानें। चारों तरफ़ ट्रैक्टरों से खुदी हुई ज़मीन के सिवा और कुछ न था। खिंची हुई गून की तरह एक तरफ़ को बुहारकर लगाये मिट्टी की दीवारों के खंडहर भावी सड़क की चौड़ाई को दर्शा रहे थे, जो मुख्य मार्ग का ही सिलसिला होनेवाली थी।

शहर आगे बढ़ता चला आ रहा था और पुराना एशियाई बाज़ार अपने बरतन-भांडे इकट्ठा करके नदी के पार खिसक गया था। अब भेड़ों की गंध तक वहां नहीं रही थी – चौड़े मार्ग की हवा उसे अपने साथ बहाकर ले गई थी।

जब ऊर्ताबायेव केंद्रीय नियंत्रण आयोग के कार्यालय में पहुंचा, तो उसे तुरंत जबरी के कमरे में पहुंचा दिया गया। अभियोक्ता ने काफ़ी देर तक उसके हाथ को अपने हाथ में थामे रखकर मित्रों की तरह उसका स्वागत किया।

"चलो, सारी बात पर सिलसिलेवार विचार करते हैं। अफ़ग़ान सामूहिक फ़ार्म के बारे में 'अनीस' में छपे लेख के अलावा तुम और क्या सामग्री जुटा पाये हो?"

"और कुछ नहीं।"

"और ख़्वाजायारोव? ऐं? मतलब यह कि इस बात की जड़ में तो कोई घटना नहीं थी? हो सकता है कि बहुत पहले कोई बात हुई हो? ऐं? तुम उससे पहले कभी नहीं मिले?"

"नहीं, मुझे याद नहीं पड़ता। मुझे लगा था कि मैंने उसे शायद कहीं देखा है, मगर हो सकता है कि मैंने उसे लोगों की किसी भीड़ में ही देखा हो। नहीं, मैं उससे पहले कभी नहीं मिला..."

"हुंह... तो लगता है कि ब्यूरो के सामने तुमने जो बयान दिया था, उसमें तुम और कुछ नहीं जोड़ सकते, ऐं?"

"हां, मेरा भी यही ख़याल है।"

"तो फिर तुम्हारे अतीत को ही लेते हैं। इसकी कुछ बातें मुझे साफ़ नहीं लग रही हैं। तुम एक ग़रीब किसान के लड़के हो, और चुबेक क़िशलाक़ में पैदा हुए थे। फिर तुम बुख़ारा के मदरसे में कैसे भरती हो गये?"

"मेरे चाचा पैसेवाले मुल्ला थे। मेरे पिता का परिवार काफ़ी बड़ा था – सब का पेट भरना मुश्किल था और मेरे चाचा के औलाद नहीं थी। मैं सबसे बड़ा बच्चा था। मेरे चाचा ने मुझे मौलवी बनाने का निश्चय किया। वह मुझे बुख़ारा ले गये और मदरसे में दाख़िल करवा दिया। चाचा का वहां अपना हुजरा था और उससे उन्हें ख़ासी आय होती थी। सच बात तो यह है कि मैं वहां शिक्षार्थी तो क्या, असल में नौकर जैसा ही था। मैं मुदर्रिस की ख़िदमत किया करता था। मैं कुल मिलाकर

कोई दो साल मदरसे में रहा। मेरे पिता और चाचा की सामाजिक स्थिति के बारे में चुबेक में पूछताछ की जा सकती है। वहां के दहक़ान इस बारे में अच्छी तरह से जानते हैं। मेरे पिता अभी वहीं रह रहे हैं..."

"तुमने मदरसा कब छोड़ा था?"

"१९१७ में – मेरे ख़याल में मार्च के महीने में। बुख़ारा के अमीर ने जब अपना फ़रमान जारी किया था, उसके कुछ ही बाद।"

"तुमने मदरसा अपने-आप छोड़ा था या तुम्हें निकाल दिया गया था?"

"मैं वहां से भाग गया था।"

"कहां भाग गये थे?"

"कूलाब।"

"तुम बुख़ारा से क्यों भागे?"

"यह काफ़ी लंबा क़िस्सा है और इसके अलावा, इसे साबित करने के लिए कोई गवाह नहीं है।"

"लेकिन इसे साबित करना क्यों ज़रूरी है?"

"ख़ैर, हो सकता है कि ज़रूरी न हो, लेकिन इसका मेरे मामले से कोई ताल्लुक़ नहीं है।"

"लेकिन तुम भागे क्यों? क्या तुम मदरसे से तंग आ गये थे?"

"नहीं, बात कुछ ऐसी हुई कि मेरा वहां रहना नामुमकिन हो गया।"

"कोई राज़ है क्या? ऐं?"

"नहीं, राज़ तो कोई नहीं है। अलबत्ता बताने में वक़्त बहुत लगेगा और बताने की कोई तुक नहीं है।"

"समझा... अच्छा, यह बताओ, क्या तुम बुख़ारा में मिर्ज़ा फ़तहउल्ला को जानते थे?"

"मिर्ज़ा फ़तहउल्ला?" ऊर्ताबायेव की आंखें चमक उठीं, "क्या आप मिर्ज़ा फ़तहउल्ला को जानते हैं? क्या आप तब बुख़ारा में ही थे? मिर्ज़ा फ़तहउल्ला तो १९१७ में मारे गये थे।"

"किसने कहा तुमसे यह?"

"क्या मतलब – किसने कहा मुझसे? यह मदरसा मीर-ए-अरब की बात है। अरे, इसीके कारण तो मुझे वहां से भागना पड़ा था।"

"क्या वह तुम्हारे हुजरा में ही छिपे थे?"

"आपको यह भी मालूम है?"

अभियोक्ता की मूंछों के नीचे एक मुसकान खेलने लगी।

"केंद्रीय नियंत्रण आयोग को सब कुछ मालूम है। अरे, केंद्रीय नियंत्रण आयोग की मरज़ी के बिना तो तुम्हारे चोग़े का कमरबन्द भी नहीं खिसक सकता। क्या तुम्हारा यह ख़याल है कि इस बात का फ़ैसला करने के पहले कि तुम्हें पार्टी में लिया जाये या नहीं, तुम्हारी ज़िंदगी के हर साल को महीना-महीना करके आंका नहीं गया होगा?"

"तब फिर मुझसे क्यों पूछ रहे हैं?"

"किसलिए पूछ रहे हैं? ठहरो, अभी बताता हूं... क्रांति के पहले, पढ़ना शुरू करने के पहले मैं दरज़ी का काम करता था। मैं चोग़े सिया करता था। गाहक आते और सीने का आदेश दे जाते। मैं नाप लेता और चोग़ा तैयार करना शुरू कर देता। कभी-कभी ऐसा भी होता कि चोग़ा तो तैयार हो जाता, पर गाहक उसे लेने के लिए न आता। कोई गाहक इस बीच में इतना ग़रीब हो गया होता था कि उसके पास अपना चोग़ा छुड़ाने लायक़ पैसे भी नहीं रहते थे, तो दूसरी तरफ़, कोई इतना अमीर हो गया होता था कि अपना सस्ता चोग़ा लेने के बजाय वह किसी और दरज़ी के पास जाता और उसे अपने लिए बढ़िया कपड़े का चोग़ा तैयार करने के लिए कह देता। इस तरह चोग़े मेरी दूकान पर ही पड़े रह जाते। कभी-कभी, साल दो साल के बाद होता यह कि वे गाहक ही फिर आ जाते। पहली तरह के गाहक के पास आख़िर फिर शायद पैसे आ जाते और दूसरी तरह के गाहक का इस बीच में शायद दीवाला निकल गया होता और उसे यह डर होता कि कहीं ऐसा न हो कि कपड़े के साथ-साथ उसकी पेशगी भी मारी जाये। ख़ैर, किसी भी सूरत में होता यह कि गाहक आता और अपने लिए बहुत पहले सिये गये चोग़े को पहनकर देखता। लेकिन तब वह पाता कि चोग़ा उसे ठीक नहीं आ रहा है—या तो इस बीच भूखों रहने के कारण वह बहुत दुबला हो गया होता था, जिससे चोग़ा उस पर ऐसे ही लटकने लग जाता, मानो छड़ी पर, या वह इतना मोटा हो गया होता कि चोग़ा उस पर चढ़ ही न पाता। या उसकी तोंद इस तरह निकल आती कि चोग़ा फटने को ही हो जाता। गाहक नाराज हो जाता, गालियां सुनाता और झल्लाकर चला जाता और मान लेता कि चोग़ा उसका है ही नहीं... ख़ैर, यही बात आदमी के किये के बारे में भी है। कभी-कभी

बहुत पहले हुई किसी बात का ख़याल आता है, तो मन में लगता है कि अहा, कितना अच्छा काम था वह! मगर मन में यह भी लग सकता है कि कितना बुरा काम था वह! और जब हम इस काम को उस आदमी से जोड़ने की कोशिश करते हैं, जिसने वह किया था, तो पता चलता है कि वह उसके लिए या तो बहुत ही छोटा काम रह गया है या उसके बस से बाहर का काम हो गया है। किसी भी सूरत में नतीजा एक ही होता है—काम उसीका है, मगर फिर भी उसका नहीं है। आदमी को उसके पुराने चोग़े से नहीं पहचाना जा सकता—इसके लिए उसे वह चोग़ा पहनाकर यह देखना ज़रूरी है कि वह उसे आता है या नहीं। कभी-कभी महत्व की बात यह नहीं होती कि आदमी अपने अतीत के बारे में क्या बता रहा है, बल्कि यह होती है कि कैसे बता रहा है। इसी लिए हम तुमसे बताने के लिए कह रहे हैं..."

फूटी आंखवाला आदमी

"तो, तुम्हारी राय में मिर्ज़ा फ़तहउल्ला १९१७ में मारे गये थे?" अभियोक्ता ने अपनी कुरसी पर पीठ टिकाते और ऊर्ताबायेव की तरफ़ अधखुली आंखों से देखते हुए पूछा।

"यह बिलकुल मेरी आंखों के सामने की बात है। क्या आपको यह नहीं मालूम?"

जबरी चुपचाप अपनी मूंछों को चबाता रहा और फिर बोला:

"मिर्ज़ा फ़तहउल्ला महमूदोव ज़िंदा हैं और मज़े में हैं। वह परसों ताशक़ंद आये थे। उन्होंने तुम्हारे मामले के बारे में सुना, तो तुम्हारे पक्ष में कहने के लिए आ गये।"

"हो नहीं सकता यह!"

"उनका कहना है कि उन्होंने सब कहीं तुम्हारी तलाश की, मदरसे में पूछताछ की, वग़ैरह-वग़ैरह। उन्होंने यह तो सुना था कि तुम भाग गये हो, मगर यह कोई नहीं बता पाया कि कहां चले गये हो।"

"क्या वह सचमुच ज़िंदा हैं?"

"क्या मैं कह नहीं रहा हूं तुमसे कि वह ज़िंदा हैं?"

"और वह हमारे साथ हैं?"

"बेशक। वह पार्टी सदस्य हैं। और कई जदीदों* जैसे नहीं हैं। वह बिलकुल शुरू से ही पूरी तरह से हमारे साथ रहे हैं। बेशक, जब-तब उन्होंने कुछ दक्षिणपंथी प्रवृत्ति दिखाई है, मगर उन्होंने अपने को जल्दी ही संभाल लिया है। मौजूदा राष्ट्रीयतावादी प्रतिक्रांतिकारियों के ख़िलाफ़ उन्होंने हमारी काफ़ी मदद की है—उन्हें वह ख़ूब अच्छी तरह से जानते हैं। तुमने जदीदों पर उनकी पुस्तिका पढ़ी है? बहुत बढ़िया है। इस पुस्तिका में एक वाक्य ऐसा है, जो जदीदी आंदोलन का सारतत्व बहुत अच्छी तरह बताता है। वह कहते हैं कि जदीद उस शिकारी की तरह है, जो तीतर पर निशाना लगाता है, मगर भालू पर चोट कर देता है और तब इतना घबरा जाता है कि अपनी बंदूक फेंककर भाग जाता है। बहुत अच्छी तरह से कहा है, है न? निशाना तो उन्होंने उदारतावादी संविधान पाने का लगाया था, पर हाथ लगी समाजवादी क्रांति! हां, जहां तक उनके 'अपनी बंदूक फेंककर भाग जाने' की बात है, तो वह मिर्ज़ा की पुरानी ग़लती है। मौजूदा मंज़िल में उनकी जो प्रतिक्रांतिकारी भूमिका है, उसको वह नज़रअंदाज़ करते हैं। फिर भी, बुनियादी तौर पर वह बड़े निष्ठावान आदमी हैं—पार्टी के लिए अपना सिर भी दे देंगे... रुको ज़रा, शायद वह आ ही गये हों। उन्होंने आज आने का वादा किया था—किसी भी क़ीमत पर वह तुमसे ज़रूर मिलना चाहते थे।"

जबरी ने बटन दबाया।

सचिव ने प्रवेश किया।

"साथी महमूदोव आ गये क्या?"

"अभी-अभी ही आये हैं। भेज दूं?"

"हां, भेज दो।"

मिर्ज़ा फ़तहउल्ला देहली पर पहुंच भी गया था।

"आदाब अर्ज़ है, मुल्लाजी! भई वाह, क्या मुलाक़ात हुई है!" फ़तहउल्ला ने अपने दोनों हाथों में ऊर्ताबायेव के हाथ को लेते हुए कहा। "क्यों, तुम्हें तो इसका ख़याल भी नहीं होगा कि मुझसे मुलाक़ात हो सकती है? ख़ैर, तो इस बार तुम्हें मुसीबत से निकालने का मौक़ा मुझे मिला है। हां, तुम ज्यादा नहीं बदले हो, क़सम ख़ुदा की, ज़रा भी नहीं बदले हो

---

*मध्य एशियाई राष्ट्रीयतावादी-सुधारवादी आंदोलन में भाग लेनेवाले लोग।

तुम! बस, अब तुम्हारे सिर पर इमामा नहीं है और तुम्हारे बाल कुछ पकने लगे हैं। अरे, तुम मेरी तरफ़ इस तरह क्यों घूरे जा रहे हो? क्या मुझे पहचान नहीं रहे हो? बहुत बूढ़ा हो गया हूं, है न? तो भई, समय के आगे किसका बस चलता है? अगर कहीं हम सड़क पर मिले होते, तब तो तुम शायद मुझे पहचानते भी नहीं।"

"नहीं, आप में ज्यादा तबदीली नहीं आई है," ऊर्ताबायेव ने अपनी आंखें फ़तहउल्ला के ऊपर से हटाईं नहीं, "लेकिन फिर भी मैं आपको नहीं पहचान पाता। और कुछ नहीं, तो सिर्फ़ इसलिए कि मुझे आपको जीता-जागता देखने की उम्मीद ही नहीं थी। अब भी मैं बात को पूरी तरह से समझ नहीं पा रहा हूं। यह हो कैसे सकता था? क्या आप वहां से सचमुच ज़िंदा बच निकले थे?"

"ठीक है, ज़रा अच्छी तरह से देख लो। मेरे ऊपर हाथ फेरकर देख लो।"

"हां, देख तो रहा हूं। बस, मैं अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर पा रहा। क्या मैंने इन्हीं आंखों से यह नहीं देखा था कि वे आपको किस तरह आंगन में घसीटकर ले गये थे और आपके अंग को अंग से अलग कर दिया था।"

"तुम्हारे उसी मदरसे में न? भई, वह भी एक अजीब तमाशा था! तब तो तुमने यह भी देखा होगा कि उन्होंने उसकी आंख कैसे फोड़ दी थी?"

"किसकी आंख?"

"रुको ज़रा—जबरी को नहीं मालूम कि हम किस बारे में बातें कर रहे हैं। वह शायद यही समझ रहे हैं कि हम दोनों के ही दिमाग़ ख़राब हो गये हैं। हां, भई, क्या हाल है? मैं तो तुमसे दुआ-सलाम करना तक भूल गया। समझ रहे हो न कि हम क्या बातें कर रहे हैं?"

"नहीं, अभी तक तो नहीं समझ रहा," अभियोक्ता ने सिर हिलाया, "समझा हुआ तो ऊर्ताबायेव भी नहीं लगता है।"

"मैंने तुम्हें बताया था न कि इन्होंने किस तरह मुझे अपने हुजरे में छिपा लिया था? हां, तो जब मुल्ला लोग झपटते हुए मदरसे में आये, तो इन्होंने मुझसे कहा, 'भागकर मुदर्रिस के हुजरे में जाकर छिप जाइये, वहां कोई नहीं है।' सोचने में वक़्त जाया किये बिना मैं वहां भाग गया। मैं दौड़ते हुए उस पतले ज़ीने पर चढ़ा और हुजरे में पहुंच गया। हुजर

छोटा-सा ही था—कोई चार क़दम का—और अंधेरा था। मैंने इधर-उधर निगाह जो डाली, तो देखा कि कोने में गद्दों पर कोई लेटा हुआ है। वह सफ़ेद इमामा बांधे हुए था—कोई इशान या मुल्ला रहा होगा। उसकी दाढ़ी काली थी और वह अफ़ग़ानी जूतियां पहने हुए था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूं, क्योंकि वापस जाने का सवाल ही नहीं उठता था। मैंने ज़रा ज़्यादा ग़ौर से देखा—इशान घोड़े बेचकर सोया हुआ था और ख़र्राटे ले रहा था। हुजरे के दूसरे कोने में मुझे एक नीचा-सा दरवाज़ा नज़र आया—शायद किसी और हुजरे में जाने का रास्ता। मैं हाथ-पैरों के बल चलकर उसमें घुस गया। देखता क्या हूं कि ढेर सारे कंबल रखे हुए हैं—वह ज़रूर सोने का कमरा रहा होगा। मैं एक कोने में जाकर दुबक गया, अपने ऊपर कई कंबल और तकिये डाल लिये और बिलकुल अचल होकर पड़ रहा। दूसरे हुजरे से बहुत शोर-शराबे, हल्ले-गुल्ले और चीख़-पुकार की आवाज़ें आने लगीं। फिर ख़ामोशी छा गई। मैं बिलकुल हिले-डुले बिना वहीं पड़ा रहा। कोई हुजरे में आया और फिर बाहर चला गया। फिर ख़ामोशी छा गई। मैं वहीं पड़ा-पड़ा इंतज़ार करता रहा। आख़िर मैंने अपने मन में कहा, 'चाहे कुछ भी हो जाये, मैं रात यहां नहीं गुज़ारूंगा। कहीं मुदर्रिस आ गया, तो वह आफ़त खड़ी कर देगा। यहां से भाग जाना चाहिए।' मैंने मुदर्रिस का चोग़ा पहन लिया, जो मेरी एड़ियों तक आता था, दूसरा इमामा बांधा और बाहर निगाह डाली। पहला हुजरा ख़ाली था—दाढ़ीवाला आदमी जा चुका था। बस, चायदानी के टुकड़े-टुकड़े हो गये थे और सारे कंबल उलटे-पलटे और पैरों से रौंदे हुए पड़े थे। मैं चुपके से सीढ़ियों पर से उतरा और बाहर आंगन में आ गया। वहां कोई भी नहीं था। मैंने अपनी नाक चोग़े में घुसा ली और इमामे को आंखों तक खींच लिया और चुपचाप, बिना जल्दी किये फाटक पर आ गया। मैं अपनी जूतियां घसीटता और एक बार भी पीछे की तरफ़ न देखता हुआ चलता चला गया। मैंने फाटक को पार किया, पहली ही गली में मुड़ गया और फिर ऐसे भागा, ऐसे भागा कि जैसे क़यामत आ गई हो! आख़िर जब मैं एक महफ़ूज़ जगह पर पहुंच गया, तो यक़ीन नहीं कर पा रहा था कि मैं बच निकला हूं। मैं इस चक्कर से निकला, तो कैसे?

"दो-तीन दिन बाद हमारा एक साथी—एक और जदीद—मुझसे मिलने

ग्राया। उसने कहा, 'जानते हो, क्या हुग्रा? दो दिन हुए, जब मिलर ग्रौर ग्रमीर ने हमारे प्रतिनिधिमंडल का ख़ात्मा करने की कोशिश की थी, तब एक जदीद का पीछा करती मुल्लाग्रों की भीड़ मदरसा मीर-ए-ग्ररब में जा घुसी ग्रौर उसने जदीद की जगह मार-मारकर एक बड़े ग्रफ़ग़ान इशान का भुरता बना दिया। वह क़ाबुल से ग्राया था ग्रौर मदरसे के मुदर्रिस के साथ ठहरा हुग्रा था। कहते हैं कि वह ग्रमीर के पास किसी गुप्त मिशन पर ग्राया हुग्रा था। जल्दी-जल्दी में मुल्लाग्रों ने उसे भेस बदला जदीद समझ लिया ग्रौर उसे हुजरे से घसीटकर बाहर ले जाकर उसकी कसकर ठुकाई की ग्रौर उसकी एक ग्रांख भी फोड़ डाली। ग्रगर एक मुल्ला ने वक़्त रहते उसे पहचान न लिया होता, तो वे मारते-मारते उसका दम ही निकाल देते। इशान ने ग्रमीर से शिक़ायत की है। कहते हैं कि ग्रमीर के हुक्म से उसे महल ले जाया गया है ग्रौर उसने रूसी रेजीडेंसी से डाक्टर को बुलवाया है ग्रौर पूछताछ शुरू करवा दी है। कहते हैं कि वह बच तो जायेगा, मगर उसकी ग्रांख ग्रच्छी नहीं हो सकती। उसके बदशक्ल चेहरे पर जिंदगी भर जदीदों का निशान बना रहेगा..."

जबरी ने ऊर्ताबायेव की तरफ़ निगाह डाली ग्रौर हंसना बंद कर दिया। ऊर्ताबायेव का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया था।

"एक ग्रांख फोड़ दी? एक ग्रांख?" उसने फ़तहउल्ला के चेहरे पर निश्वास छोड़ते हुए पूछा।

"क्यों, क्या हुग्रा तुम्हें? दिमाग़ तो नहीं ख़राब हो गया? क्या बात है?"

ऊर्ताबायेव उठकर खुली हुई खिड़की की तरफ़ चला गया।

जबरी ग्रौर फ़तहउल्ला ने एक दूसरे की तरफ़ देखा।

जब ऊर्ताबायेव ने मुड़कर देखा, तो उसका चेहरा शांत था। वह मेज के पास ग्रा गया।

"बेशक, मैं ग़लती पर हो सकता हूं," उसने मानो किसी ग्रौर ही ग्रावाज़ में, बहुत ही साफ़-साफ़ बोलते हुए ग्रौर बोलते समय जबरी पर ग्रपनी ग्रांखें टिकाये हुए कहा, "बेशक, मैं ग़लती पर हो सकता हूं... लेकिन ग्रापने ग्राज मुझसे पूछा था कि क्या मैंने ख़्वाजायारोव को पहले कहीं देखा था। मुझे लगता है कि मैंने उसे देखा था। ग्रलबत्ता यह बहुत ही पहले की बात है—ग्रौर तब उसकी दोनों ग्रांखें थीं। ग्रौर इसी कारण यह

बात कभी मेरे दिमाग़ में नहीं आई कि अगर ख़्वाजायारोव की दाढ़ी छांट दी जाये और दूसरी आंख लगा दी जाये, तो वह इशान ख़ालिक़ वलीद-ए-उमर की जीती-जागती मूरत बन जायेगा।"

दर्रे में सामूहिक फ़ार्म

मुख्य सैक्शन से दूसरे सैक्शन को जानेवाली सड़क पर वीरान मैदान में दो घुड़सवार चले जा रहे थे। कुम्हलाया हुआ हलदिया आकाश धूमिल होकर पश्चिमी क्षितिज पर शुष्क, पारदर्शी शिखा का रूप धारण करता जा रहा था। दिन की गरमी भी कम होने लगी थी। सवारों ने सड़क को छोड़ दिया और सीधे पहाड़ों की तरफ़ चल दिये। उनके घोड़े बहुत हल्की चाल से चल रहे थे। कोमारेंको ने पसीने से तर सिगरेट का पैकट निकाला, एक सिगरेट जलाई और अपने साथी की तरफ़ पैकट बढ़ाते हुए बोला :

"लो, सिगरेट पियो, मुख़्तारोव!"

वे पसीने से भीगे घोड़ों को तेज़ चलने के लिए मजबूर किये बिना ख़ामोशी के साथ चलते चले गये। ख़ाकी कमीज़ पहने गठीले ताजिक ने अपनी सिगरेट ख़त्म की और रक़ाब के साथ रगड़कर बड़ी सफ़ाई के साथ उसे बुझा दिया।

पहाड़ों में एक दरार में खड़े टीले के पीछे पहले झोंपड़े नज़र आये। सवारों ने रास को झटका और क़िशलाक़ की नेत्रहीन सड़क में हलकी दुलकी चाल से प्रवेश किया। कोई दसेक घरों के पास से होकर वे बहते पानी की आवाज़ की तरफ़ मुड़ गये और अधर लटकी एक पतली-सी नांद के पास खड़े हो गये और चुल्लुओं से पानी को उलीचने लगे। पानी की पतली धार की महीन खनक ने ख़ामोशी को सुतारी की तरह से चीर दिया। सवार कुछ आगे और जाने के बाद अलावख़ाने के सामने जाकर घोड़ों पर से उतर गये। मुख़्तारोव ने हाथों को अपने मुंह से लगाकर ताजिक में चिल्लाकर कुछ कहा। उसकी पुकार के जवाब में सबसे पासवाली दीवार के पीछे से बड़े गोल माथे और बड़ी-बड़ी आंखोंवाले एक छोकरे ने झांककर देखा और बाड़ में से निकलकर सामूहिक फ़ार्म के प्रधान को ढूंढकर लाने के लिए भाग गया। थोड़ी ही देर बाद ख़ुद प्रधान भी आता नज़र आया—अपने चोग़े पर हवाई बेड़े तथा रसायन सहयोग सोसाइटी

के बैज लगाये एक सौम्य मुख और हलके रंग की दाढ़ीवाला दहक़ान। उसका मुंह जिन घनी मूंछों से ढंका हुआ था, उनके कारण वह मुसकरा नहीं सकता था – वह अपनी बरौनियों से, अपने दाढ़ी से और अपने सारे हट्टे-कट्टे बदन से मुसकराता था। उसने अपने दोनों हाथों से मेहमानों से हाथ मिलाये। निमिष मात्र में ही अलावख़ाने के मिट्टी के फ़र्श पर नमदे के क़ालीन बिछ गये, तश्तरी में शहतूत और कटोरे में दही भी आ गया।

"सुनो, दौलत, हमारे पास ज़्यादा वक़्त नहीं है," मुख़्तारोव ने इधर-उधर दौड़-भाग करते प्रधान को रोकते हुए कहा। "ज़रा एक काम करो – दहक़ानों को इकट्ठा करो। हमें उनसे कुछ बात करनी है।"

प्रधान चला गया। क़ालीन पर बैठे कोमारेंको और मुख़्तारोव ने शहतूतों को खाना शुरू कर दिया।

"बेशक, प्रबंध समिति का दुबारा चुनाव करवाया जा सकता है," मुख़्तारोव ने कहना शुरू किया, "यद्यपि इसका मतलब होगा अधिकांश सक्रिय सदस्यों का हाथ से निकल जाना। लेकिन दौलत जैसा दूसरा प्रधान हमें नहीं मिलेगा। वह अच्छा किसान है, पढ़ा-लिखा भी है, पार्टी का उम्मीदवार सदस्य है, और भूतपूर्व चोबेसुख़िया* है। उसका काफ़ी मान है और सारे सामूहिक फ़ार्म को वह जैसे अपनी हथेली पर रखता है। उसकी जगह चाहे कोई भी क्यों न आ जाये, कोई भी काम को उसकी तरह से नहीं कर सकता।"

शहतूत की तश्तरी को ख़ाली कर देने के बाद कोमारेंको ने अपना हाथ दही के कटोरे की तरफ़ बढ़ाते हुए कहा:

"अगर तुम चाहते हो कि दहक़ान आयें और अपने मन की बातें सच-सच कहें, तो उनकी ज़बानें खोलने का अकेला तरीक़ा सारी ही प्रबन्ध समिति को फिर से चुनने के सवाल को पेश करना ही है। तुम सभा को शुरू करो, पार्टी की ज़िला समिति के सचिव की हैसियत से बताओ कि मामला क्या है और फिर मुझे बोलने की इजाज़त दे दो। मैं उनके सामूहिक फ़ार्म की प्रबंध समिति के सदस्य के नाते ही उनसे कुछ कहूंगा।"

दहक़ान धीरे-धीरे एक-एक दो-दो करके जमा होने लगे और एक बड़े

---

*मध्य एशिया में सोवियत सत्ता के समर्थक स्वयंसेवक दस्तों के सदस्य।

घेरे में बैठ गये। मुख़्तारोव ने उन सब से दुआ-सलाम की और हाथ मिलाये। सबसे पहले आनेवालों में एक था बूढ़ा इकराम अज़ीमोव – वही, जो पिछले साल सामूहिक कृषकों की यात्रा-मंडली के साथ मास्को हो आया था। लौटने के बाद उसने सभी क़िशलाक़ों में यही क़िस्सा सुनाया था कि मास्को में लोग काम नहीं करते, बल्कि सारे दिन सड़कों पर घूमते रहते हैं – जब भी बाहर निकलो, सड़कें हमेशा लोगों से भरी हुई ही मिलती हैं।

इकराम के बाद बेवा ज़ुमुर्रुद आई। अपने शौहर की मौत के बाद पूरे एक साल से उसने अजनबियों के आगे अपने मुंह को ढंकना बंद कर दिया था और अब वह बड़ी तल्ख़ी के साथ कहा करती थी कि सोवियतें कम से कम तीस साल देर से आईं – अगर उसने परदा करना तब छोड़ दिया होता, तो आसपास के सभी क़िशलाक़ों के सभी मर्द उसे देखने के लिए लपके आते, जब कि अब तो कोई उसके उघड़े हुए मुंह को घूमकर भी नहीं देखता।

बेवा के बाद हकीम-बदनसीब आया। क़िशलाक़ में उसे यह नाम उसके पीछे निरंतर पड़े रहनेवाले दुर्भाग्य के कारण दिया गया था। हमवार से हमवार सड़कों पर भी उसकी भेड़ों की टांगें टूट जाया करतीं, साल-दर-साल उसकी तरबूज़ और ख़रबूज़े की बग़ीचियों को जंगली सूअर रौंद जाया करते। बेचारा चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न करता, वह ग़रीबी से अपना पीछा नहीं छुड़ा पाता था। जब सामूहिक फ़ार्म का संगठन किया जा रहा था, तब हकीम-बदनसीब का सवाल लंबी और गंभीर बहस का विषय बन गया था। बूढ़ों ने इस आधार पर उसके शामिल किये जाने का डटकर विरोध किया कि फ़ार्म के बन जाने के बाद चूंकि सारी ज़मीन सामूहिक हो जायेगी और हकीम की अपनी अलग ज़मीन नहीं रहेगी, इसलिए मुमकिन है कि उसकी बदक़िस्मती सारे सामूहिक फ़ार्म की ही बदक़िस्मती बन जाये।

फ़ार्म का पहला प्रधान, रहीमशाह आलिमोव भी लंगड़ाता हुआ आ पहुंचा। वह सामूहीकरण का बड़ा उत्साही समर्थक था और बड़ा समझदार किसान था, मगर उसका सोवियतों के साथ बस एक प्रश्न पर मतभेद था – यूरोपीय कृषि औज़ारों की उपयोगिता के बारे में। जब सामूहिक फ़ार्म को ज़िले की तरफ़ से यूरोपीय हल और हैरो दिये गये, तो रहीमशाह ने अपने अविश्वास की भावनाओं को जताये बिना उन्हें भेंट की तरह स्वीकार तो कर लिया (भला भेंट में मिले घोड़े के दांत कौन गिनता है!), मगर उन्हें प्रबंध कार्यालय के आंगन में एक सम्मान की जगह पर ही पड़ा रहने

दिया और खेतों को लकड़ी के पुरातन हलों से ही जोतता और पटेलों का ही इस्तेमाल करता रहा। वह स्तेपी में हमेशा एक आदमी को चौकीदारी पर खड़ा रखता था, जिसका काम ही उसे ज़िला अधिकारियों के अप्रत्याशित दौरों की ख़बर देना था। ऐसा मौक़ा आ पड़ने पर प्रधान चालाकी से इतना नहीं, जितना कि उदार दाताओं को संतोष प्रदान करने की इच्छा से तुरंत यूरोपीय हलों में बैलों को जुड़वाता और उन्हें धूमधाम से खेतों पर भेज देता। बहुत अरसे तक ज़िला अधिकारी इस बात की सराहना करते रहे कि फ़ार्म को दिये औज़ार कितनी अच्छी हालत में हैं, लेकिन आख़िर जब उन्हें रहीमशाह की चाल का पता चला, तो उन्हें शक हुआ कि वह जान-बूझकर फ़सल को कम करने की कोशिश कर रहा है और उन्होंने उसे उसके पद से हटाकर उसकी जगह दौलत को नियुक्त कर दिया।

थोड़ा-थोड़ा करके अलावख़ाने के सामनेवाला मैदान लोगों से भरने लगा। सबसे आख़िर में आनेवालों में एक हैदर रजबोव था, जो हाल ही में सामूहिक कृषकों की कांग्रेस में शामिल होने के लिए स्तालिनाबाद गया था और वहां पता नहीं किस तरह शेष प्रतिनिधिमंडल से अलग हो गया था। आख़िर वह स्तालिनाबाद के हवाई अड्डे पर मिला, जहां वह दो दिन और रात से हर्षविह्वल हो यह देख रहा था कि हवाई जहाज़ कैसे उड़ते और उतरते हैं। उसके साथी प्रतिनिधि उसका और अधिक इंतज़ार नहीं कर सकते थे और इसलिए एक दिन पहले ही रवाना हो चुके थे। संयोग से उसी दिन एक जहाज़ क्लार्क के लिए डाक्टर को लेकर आ रहा था। खोये हुए प्रतिनिधि को उसी में एक जगह दे दी गई और इस तरह वह अपने ज़िले में वापस ले आया गया। पायलट ने बाद में बताया कि प्रतिनिधि ने उतरकर पहले तो जहाज़ के आगे सिर झुकाया और फिर किसी भी बात का जवाब न देते हुए सिर पर पैर रखकर वहां से भाग खड़ा हुआ। क़िशलाक़ लौटने के बाद हैदर ने – जो पहले भी कभी ज्यादा बातें नहीं करता था – अब बिलकुल मौन साध लिया और उसने सामूहिक कृषकों की कांग्रेस के बारे में कुछ भी नहीं बता कर दिया। पहले तो लोगों ने समझा कि उसकी ख़ामोशी कुछ दिन बाद टूट जायेगी और फिर वह बताने लगेगा, लेकिन बाद में उन्होंने निराशा से अपने कंधे उचका दिये और इस बात पर अफ़सोस करने लगे कि उन्होंने हैदर की जगह किसी और को क्यों नहीं भेजा।

पंद्रह लोग जमा हो गये, तो प्रधान वापस आया और बोला कि वह और किसीको नहीं इकट्ठा कर सकता – ख़ानज़रोव और क़ारी अब्दुस्सत्तारोव बीमार हैं, रह्मानोव शादी करने के लिए गया हुआ है, फ़ज़लुद्दीन अहमदोव फ़ार्म के काम से बस्ती गया हुआ है और जहां तक बाक़ी लोगों का सवाल है, उनमें से कुछ दूरवाले खेतों में हैं और कुछ अपने-अपने काम से बाहर गये हुए हैं।

"यह क्या बात है? हम आम सभा करने की तीन बार कोशिश कर चुके हैं और हर बार आधे से भी कम लोग शामिल होने के लिए आये। इस तरह कैसे काम चलेगा, दौलत?"

"तो मैं क्या करूं – मैं उन्हें कोई हांककर तो ला नहीं सकता? वे भेड़ों की तरह भटक जाते हैं। मैं उनसे बात कर चुका हूं, उन्हें पहले से ही कह चुका हूं। वे आना ही नहीं चाहते।"

"सभी सामूहिक कृषकों को इस सभा में होना चाहिए था..."

"तो फिर मैं क्या करूं? उन्हें बांधकर लाऊं? लोगों में वर्ग-चेतना ही नहीं है, वे अपने हित की बातें भी नहीं समझते।"

कोमारेंको से परामर्श करने के बाद मुख़्तारोव ने सभा करने का निश्चय किया। कोमारेंको दही ख़त्म कर रहा था।

"लगता है कि सारी पुरानी प्रबंध समिति यहां मौजूद है और बाक़ी सामूहिक कृषकों में से सिर्फ़ आठ ही आये हैं। तो फिर कैसा चुनाव होगा – ये अपने मत अपने को ही देंगे, है न?"

"मैंने तुमसे क्या कहा था? सारे सक्रिय सामूहिक कृषक मौजूदा प्रबंध समिति के सदस्य हैं और उनके अलावा पांचेक काफ़ी सक्रिय किसान भी हैं। बाक़ी लोग कमोबेश निष्क्रिय हैं। यही तो सारी मुसीबत है – असल में ऐसा कोई और है ही नहीं, जिसे वे चुन सकें।"

"तुम्हें कैसे मालूम? हो सकता है कि जब-जब तुम आम सभा करना चाहते हो, तब-तब उन्हें जान-बूझकर और काम पर भेज दिया जाता है?"

मुख़्तारोव ने आख़िरी फ़िक़रे को नहीं सुना। उसने सभा शुरू कर दी और संक्षिप्त प्रस्तावना के बाद कोमारेंको से बोलने के लिए कहा।

"धीरे-धीरे बोलना – मैं अनुवाद कर दूंगा।"

कोमारेंको ने हाथ से अपने मुंह को पोंछा।

"साथी दहक़ानो, मेरा ख़याल था कि मैं सिर्फ़ पंद्रह लोगों से ही नहीं, आप सभी से बात करूंगा। आपके सामूहिक फ़ार्म की प्रबंध समिति का सदस्य बने मुझे यह दूसरा साल है, लेकिन एक बार भी मैंने किसी भी सभा में आधे से ज्यादा सदस्यों को नहीं देखा। यह कोई अच्छी बात नहीं है! सामूहिक किसानों में राजनीतिक वर्ग-चेतना की कमी का होना कोई सफ़ाई नहीं है—यह बस इसी बात का एक और सबूत है कि प्रबंध समिति अपने काम को अच्छी तरह से नहीं कर रही है। समिति का पहला कर्तव्य है सारे ही सामूहिक कृषकों की राजनीतिक चेतना को ऊंचा करना, उन्हें सामूहिक फ़ार्म के नेतृत्व में खींचकर लाना और कामकाज को उसके अपने संकीर्ण क्षेत्र के भीतर ही नहीं चलाना... ठीक है, अनुवाद करो!

"...प्रबन्ध समिति के ख़राब काम का इज़हार सिर्फ़ इसी बात में नहीं हुआ है। ख़्वाजायारोव का शर्मनाक मामला, जो अंतिम क्षण तक हमारी प्रबंध समिति का सदस्य बना रहा, सारे ही सामूहिक फ़ार्म पर, और सबसे ऊपर उसके नेतृत्व पर कलंक लगाता है। प्रबन्ध समिति ने काफ़ी वर्ग-सतर्कता नहीं दिखाई, वह वर्ग शत्रु को समय रहते बेनक़ाब नहीं कर पाई, जो सामूहिक फ़ार्म में छिपकर घुस आया था। इससे भी बढ़कर बात यह है कि उसने इस दुश्मन को प्रोत्साहित किया, उसे तरक़्क़ी देकर जिम्मेदारी के पद पर पहुंचाया और सोवियत सत्ता को झांसा देने में उसकी मदद की। ख़्वाजायारोव के काले कारनामों की ज़िम्मेदारी सारी ही प्रबन्ध समिति के ऊपर है... चलो, अनुवाद करो!

"...अफ़ग़ान बासमची ख़्वाजायारोव यहां हम लोगों के बीच लगभग तीन साल सक्रिय रहा। इसमें ज़रा भी शक नहीं कि हमारे सामूहिक फ़ार्म के भीतर उसके मददगार भी रहे होंगे। प्रबन्ध समिति यह कहकर अपनी सफ़ाई देने की कोशिश करती है कि जिस अकेले आदमी को ख़्वाजायारोव के इरादों की जानकारी थी, वह था उसका तथाकथित भाई, जिसने उसे सामूहिक फ़ार्म में प्रवेश दिलवाया था और जो उसके साथ ही अफ़ग़ानिस्तान भाग गया है। यह एक बचकाना बहाना है। समिति न सिर्फ़ अपने सामूहिक फ़ार्म के सदस्यों को अफ़ग़ानिस्तान भाग जाने से रोकने में ही नाकामयाब रही है, बल्कि उसने उनके भाग जाने के बाद भी ख़्वाजायारोव के संगी-साथियों का परदाफ़ाश करने के लिए कुछ भी नहीं किया है। इससे यह साबित होता है कि—अगर हम इस बात को कम से कम करके भी कहें,

तो भी – प्रबन्ध समिति को तनिक भी वर्ग-चेतना नहीं है, वह जनसाधारण से अलग है और अपने ही सामूहिक फ़ार्म और उसके सदस्यों की मनोदशा से बिलकुल नावाकिफ़ है। दूसरे शब्दों में, मौजूदा प्रबंध समिति ने अपने आपको सामूहिक फ़ार्म का आगे प्रबंध करने के अयोग्य साबित कर दिया है... चलो, अनुवाद करो!

"...अंत में, पुरानी प्रबन्ध समिति के सदस्य के नाते मैं प्रस्ताव करता हूं कि सारे ही नेतृत्व का तुरंत फिर चुनाव किया जाना चाहिए। यह रही पहली बात। दूसरी बात यह है कि जिस सामूहिक फ़ार्म ने सोवियतों की अपने बदतरीन दुश्मनों का परदाफ़ाश करने में मदद नहीं की है, वह इस लायक़ नहीं है कि लाल अक्तूबर के नाम को धारण करे। इस कलंक के दाग़ को केवल सारे सामूहिक कृषक मिलकर ही मिटा सकते हैं, जिन्हें ख़्वाजायारोव पंथ के सभी अवशेषों का पता लगाने और नेस्त-नाबूद करने में हमारी मदद करनी होगी। नई प्रबन्ध समिति के सामने भी उसके पैदा होने के साथ यह कार्यभार आ खड़ा होगा। पार्टी उसके काम करने की योग्यता की जांच इस बात से करेगी कि वह इस कार्यभार को किस तरह पूरा करती है... अनुवाद करो, मैं अपनी बात कह चुका।"

जब शोर कुछ कम हुआ, तो दौलत ने बोलने की अनुमति मांगी।

"साथी दहक़ानो! साथी कोमारेंको ने जो कुछ कहा है, उससे सामूहिक फ़ार्म का प्रधान होने के नाते मुझे बहुत तकलीफ़ हुई है। ख़ासकर इसलिए और भी ज्यादा कि उन्होंने जो कहा है, वह बिलकुल ठीक है। हमें, जो उसी गांव में रहते हैं, जिसमें ख़्वाजायारोव रहता था, और उसके साथ-साथ प्रबन्ध समिति में भी काम करते थे, ज़िला समिति के साथियों के मुक़ाबले उसकी असलियत को पहले जान लेना चाहिए था। और मेरे ऊपर इसका दोष औरों के मुक़ाबले ज्यादा है। पिछली बार साथी मुख़्तारोव ने मुझसे पूछा था, 'तुम पार्टी के उम्मीदवार सदस्य हो, अगर तुम ख़ुद ही यह कहते हो कि तुम ख़्वाजायारोव को अच्छी तरह से नहीं जानते थे, तो तुमने उसे पार्टी की सदस्यता देने की सिफ़ारिश कैसे कर दी?' ख़्वाजायारोव को मैं और हम सब कैसे जानते थे? उसके काम से, उसकी बातों से। वह वर्ग-चेतन दहक़ानों की तरह बात करता था, सोवियतों के प्रति निष्ठा प्रकट करता था। और सभी लोग इस बात की गवाही देंगे कि वह काम अच्छा करता था, वर्ग-चेतन तरीक़े से काम करता था और उसे हमारे

सामूहिक फ़ार्म का सबसे अच्छा सक्रिय सदस्य माना जाता था। आख़िरी हमले के समय वह स्वयंसेवकों के एक दस्ते का गाइड बनकर गया था और बासमचियों से घायल होकर आया था। इसी लिए हमने उसे सबसे अच्छे चोबेसुर्ख़िया होने का सम्मानपत्र प्रदान किया। अब पता चलता है कि हो सकता है कि उसे बासमचियों ने घायल किया ही न हो, बल्कि वह हमारे सुर्ख़ अस्करों से ही घायल हुआ हो। लेकिन हमें इसके बारे में कैसे पता चलता? पूरा दस्ता ख़त्म कर दिया गया था। वह हमारे सुर्ख़ अस्करों के साथ क़िशलाक़ लौटकर आया था और उसका बड़ा सम्मान किया जाता था। हमारी पार्टी इकाई के सचिव ने मुझसे कहा, 'यह क्या बात है, दौलत? क्या अपने फ़ार्म पर तुम ही अकेले पार्टी के उम्मीदवार सदस्य हो? अगर तुम अपने सामूहिक फ़ार्म के सर्वश्रेष्ठ सक्रिय लोगों और चोबेसुर्ख़ियों को पार्टी में लाने में हमारी मदद नहीं करते, तो भला तुम किस तरह के कार्यकर्ता हो?' इसलिए जब मैं यहां लौटकर आया, तो मैं ख़्वाजायारोव से मिला और बोला, 'तुम पार्टी में क्यों नहीं शामिल हो जाते, ईसा? तुम्हारे पास सम्मानपत्र है, तुम फ़ार्म की प्रबन्ध समिति के सदस्य हो और सामूहिक फ़ार्म के सर्वश्रेष्ठ सक्रिय कारकुन हो,' मैंने उससे कहा, 'पार्टी का उम्मीदवार सदस्य बनने की दरख़ास्त दे दो।' और उसने जवाब दिया 'मैं बड़ी ख़ुशी से दरख़ास्त दे दूंगा, पार्टी मुझे पसंद है और सोवियत सत्ता पसंद है। लेकिन पार्टी में मुझे नहीं लिया जायेगा। इसके लिए ज़रूरी है कि कोई पार्टी सदस्य मेरी सिफ़ारिश करे।' और मैंने कहा, 'चलो, मैं तुम्हारी सिफ़ारिश कर दूंगा और 'लाल हलवाहा' सामूहिक फ़ार्म का आलिम असमतुल्लोनोव भी सिफ़ारिश कर देगा।' लेकिन बताइये, क्या आपके ख़याल में हम यह जानते थे कि हम किसकी सिफ़ारिश कर रहे हैं? अब पता चलता है कि हमने ग़लती की, लेकिन उस वक़्त सभी यही सोचते थे कि हम ठीक काम कर रहे हैं और पार्टी इकाई के सचिव तक ने इसके लिए मेरी बहुत तारीफ़ की थी। मैं तो अच्छा ही करना चाहता था, लेकिन अब पता चलता है कि मैं पार्टी के सामने दोषी हूं और सामूहिक फ़ार्म के सामने दोषी हूं। और अब पता लगता है कि मैं अपने अलावा और किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकता। मतलब यह कि मुझमें वर्ग-चेतना नहीं है और इसलिए मैं सामूहिक फ़ार्म का प्रधान होने का पात्र नहीं हूं। और इसलिए, साथियो, मेरी आपसे दरख़ास्त है कि आप मुझे प्रधान के पद से अलग कर दें और

मेरी जगह किसी और को नियुक्त कर दें। सामूहिक फ़ार्म मुझे चाहे किसी ही काम पर भेज दे, मैं आपके सामने और जिला समिति के साथियों के सामने यह साबित कर दूंगा कि मैं सोवियत सत्ता के लिए काम करने में कोई कसर नहीं छोड़ूंगा और किसी भी प्रतिक्रांतिकारी सांप का रास्ता रोकने से नहीं चूकूंगा। आखिर में, साथी दहक़ानो मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मैंने मेहनत से और ईमानदारी से और अपनी पूरी योग्यता से काम किया है और अगर मैंने किसीका कोई काम नहीं किया, तो वह मेहरबानी करके मुझे माफ़ कर दे और बुरा नहीं माने... और मैं आपसे यह भी कहना चाहता हूं कि यह हमारे लिए बड़ी शरम की बात है कि दो कुत्तों ने हमारे सारे सामूहिक फ़ार्म पर इतना बड़ा कलंक लगा दिया है। हम अब शरम के मारे और क़िशलाक़ों में अपने मुंह भी नहीं दिखा सकते हैं। कल कोई भी सामूहिक फ़ार्म की पैंठ में नहीं गया, और भला क्यों? हम जहां भी जाते हैं, लोग हमारी तरफ़ अपनी उंगलियों से इशारे करते हैं और कहते हैं, 'अहा, देखा, ये रहे 'लाल अक्तूबर' सामूहिक फ़ार्म वाले!' जब दहक़ानों ने यह सुना कि ख़्वाजायारोव ने विदेशी इंजीनियर को मारने की कोशिश की थी, तब से वे हमारे सामूहिक फ़ार्म को बहुत बुरा समझने लगे हैं। इसलिए, साथी दहक़ानो, मैं आपसे आपके हित में ही कह रहा हूं कि आप वर्ग-चेतन बनें। और अगर आप में से कोई भी कुछ भी जानता है, तो वह फ़ौरन आगे आये और बोले, ताकि हमारे सामूहिक फ़ार्म पर फिर कभी ऐसा कलंक न लगे, क्योंकि यह हम सभी के लिए बहुत बड़ा सबक़ है!"

जबरदस्त शोर मच गया। मलिक अब्दुक़ादिरोव ने बोलने की इजाजत मांगी और कहा कि सारा दोष प्रबन्ध समिति के ऊपर ही लगा देना ग़लत है। दोष सिर्फ़ समिति का ही नहीं, बल्कि सारे सामूहिक कृषकों का है। ख़्वाजायारोव को सभी जानते थे, मगर उसकी साजिशों की कोई भी थाह नहीं लगा पाया। और जहां तक दौलत की बात है, सामूहिक फ़ार्म के लिए उससे बेहतर प्रधान नहीं मिल सकता—वह पढ़ा-लिखा है और अच्छा किसान है और अगर उसकी जगह किसी कम लायक़ आदमी को नियुक्त कर दिया जाये, तो सामूहिक फ़ार्म को उससे कोई फ़ायदा नहीं होगा।

इसके बाद बेवा जुमुर्रुद ने बोलना शुरू किया और कहा कि दौलत को रहने दिया जा सकता है, मगर प्रबन्ध समिति का फिर चुनाव करना कोई

बुरा नहीं रहेगा, क्योंकि समिति के सदस्य बहुत दिनों से अपने पदों पर हैं और दूसरों को भी मौक़ा दिया जाना चाहिए। फिर सभाओं में भी ज़्यादा लोग आया करेंगे। इसके अलावा यह बात एकदम ज़रूरी है कि प्रबन्ध समिति में मरदों के अलावा औरतें भी हों। अभी क्या है कि लगता तो यही है कि सारे मरद बड़े वर्ग-चेतन हैं, लेकिन अपनी बीवियों को ताले में बंद करके रखते हैं, जैसे उनका सामूहिक फ़ार्म से कोई सरोकार ही नहीं है। लेकिन सोवियतों का कहना है कि औरतें भी सामूहिक फ़ार्म की उसी तरह से सदस्य हैं, जैसे कि मरद।

हंसी-मज़ाक़ और ठट्ठा शुरू हो गया। लेकिन तभी मुख़्तारोव ने सभा को क़ाबू में कर लिया और नाम प्रस्तावित करने का आदेश दिया।

चारों तरफ़ से नाम आने लगे:

"बेवा ज़ुमुर्रुद!"

"हैदर रजबोव!"

"ठीक है! बड़ा सक्रिय आदमी है—छः महीने में तो वह हमें स्तालिनाबाद कांग्रेस के बारे में भी बता देगा!"

"क्या हम पुरानी प्रबन्ध समिति के लोगों को भी चुन सकते हैं?"

"निजी तौर पर पुरानी समिति के सदस्य भी चुने जा सकते हैं।"

"साथी कोमारेंको!"

"दौलत!"

"शाहाबुद्दीन क़ासिमोव!"

"करी अब्दुस्सत्तारोव!"

"इकराम अज़ीमोव!"

पुनर्निर्वाचन के फलस्वरूप ये लोग नई प्रबन्ध समिति के सदस्य चुने गये: बेवा ज़ुमुर्रुद, हैदर रजबोव, करी अब्दुस्सत्तारोव, दौलत, बूढ़ा इकराम अज़ीमोव, नियाज़ हसनोव और कोमारेंको। दौलत को सभा ने सर्वसम्मति से फिर प्रधान चुना।

मुख़्तारोव और कोमारेंको के जाने के बाद दहक़ान अभी भी तरह-तरह की बातों के बारे में बहस करते हुए धीरे-धीरे बिखरकर अपने-अपने घर चले गये। सबसे आख़िर में नियाज़ हसनोव और मलिक अब्दुक़ादिरोव उठे। कपास की छंटाई पास आ रही थी। मलिक उस दिन दूरवाले खेतों पर गया था और कुछ पके हुए डोड़े लेकर आया था। नियाज़ फ़सल के बारे में

चिंतित था—दूरवाले खेतों की गोड़ाई ज़ाहिरा तौर पर संतोषजनक नहीं हुई थी।

रूई को देखने के लिए वे मलिक के घर में घुस गये। मेहमानख़ाने के नीम अंधेरे में उन्हें बूढ़ा इकराम अज़ीमोव, हैदर रजबोव, शाहाबुद्दीन क़ासिमोव और दो और दहक़ान भी मिले। सभी रूई को देखने आये थे। मलिक ने दरवाज़े को बंद किया, सावधानी से कुंडा चढ़ाया और मकान के ज़नाने हिस्से में चला गया। मेहमान क़ालीन पर क़ायदे से बैठ गये। कुछ ही मिनटों में मेज़बान लौट आया। डोड़ों की जगह उसके हाथ में एक चायदानी थी। उसके पीछे-पीछे एक बुरक़ापोश औरत थी। मेज़बान ने सबसे पहले उसीके हाथ में एक प्याला दिया। जब औरत ने अपने चेहरे पर से बुरक़े का नक़ाब हटाया, तो सभी ने देखा कि उसके दाढ़ी और नीचे की तरफ़ मुड़ी हुई मूंछें हैं और एक आंख नदारद है।

मिस्टर क्लार्क ने रूसी सीखी

ऊपर घिरी घनी घटाओं से फटी हुई मशक की तरह पानी की धारें गिर रही थीं। वर्षा की पारदर्शी बूंदें सड़क की चिपचिपी दलदल पर छपाक-छपाक करते हुए गिर रही थीं। बाहर बारिश की घरड़-घरड़ में भी पास आती टनटनाहट की आवाज़ सुनाई दे रही थी। पानी से तर और डरे हुए चूहे सा एक अकेला गधा सड़क पर ख़ाली कनस्तरों का खनखनाता हुआ बोझ लादे चला जा रहा था। पानी कनस्तरों को थपक रहा था। गधे के पीछे-पीछे अपने चोग़े को सिर पर डाले कीचड़ से अपने पैरों को मुश्किल से खींचता एक दहक़ान किसी तरह चला आ रहा था। उसके पैरों से बने गढ़ों में घना कीचड़ फिचफिच कर रहा था।

क्लार्क ने अपना क़लम रख दिया और अन्यमनस्कता के साथ कमरे में चहलक़दमी करने लगा। खिड़की के धुंधलाये कांचों पर होकर पानी की गंदली धाराएं बह रही थीं।

मेज़ के पास जाकर उसने किरमिच की जिल्द चढ़ी एक कापी उठाई। इस कापी में पोलोज़ोवा के संशोधनों से भरपूर उसके रूसी के अभ्यास थे। उसने पहले पृष्ठों को देखा, जो टेढ़े-मेढ़े घसीटे हुए अक्षरों और लाल पेंसिल के मुक्त-हस्त निशानों से रंगे हुए थे, उसने उनकी बादवाले अभ्यासों

से तुलना की और संतुष्ट हो गया। इन अभ्यासों के अक्षर क़तारों में थे, वे देखने में ख़ासे मरदाने और ज्यादा सुघड़ थे और लाल पेंसिल के निशान भी काफ़ी कम थे।

क्लार्क ने एक नया सफ़ा खोला, जिसके सिरे पर पोलोज़ोवा के हस्तलेख में आज की तारीख़ और शीर्षक लिखा हुआ था—"मनपसंद विषय पर निबंध"। उसने क़लम को स्याही में डुबाया और फिर विचारमग्न हो गया। इसके बाद उसने बड़ी सावधानी के साथ अक्षर बनाते हुए धीरे-धीरे लिखना शुरू किया। कोई छः लकीरें लिखने के बाद वह रुक गया और अपनी क़लम के सिरे को कुतरने लगा। निबंध-लेखन कठिन साबित हो रहा था। उसने शब्दकोश को उलटा-पलटा, एक कागज़ पर कुछ शब्द लिखे, फिर कापी को हाथ में लिया, दसेक लकीरें और लिखीं, फिर उठ खड़ा हुआ, कमरे में चहलक़दमी की, एक बार फिर शब्दकोश को उलटा-पलटा, एक वाक्य लिखा, उसे काट दिया, फिर लिखा, फिर काट दिया, चिढ़कर अपने बालों में उंगलियां फेरकर उन्हें अस्तव्यस्त कर दिया, पांच मिनट गहरे सोच में बैठा रहा और आख़िर फिर लिखने लगा। दो सफ़े लिखने के बाद उसने क़लम को रख दिया, अपने लिखे को पढ़ा, असंतोष के साथ माथे पर बल डाले और लिखे को फिर काटकर वह दुबारा लिखना शुरू करनेवाला ही था कि किसीने दरवाज़े पर दस्तक दी।

पोलोज़ोवा ने कमरे में प्रवेश किया। क्लार्क ने कापी को बंद किया और उसकी अगवानी करने के लिए खड़ा हो गया।

पानी से बिलकुल तर पोलोज़ोवा कुछ मिनट खड़ी अपने को झाड़ती रही, फिर उसने अपने ऊंचे बरसाती जूते उतारे और अपने पानी से सराबोर चमड़े के कोट को एक कुरसी की पीठ पर लटका दिया।

"आपको देखने के लिए आज डाक्टर आया था?"

"हां," क्लार्क ने रूसी में जवाब दिया।

"और उसने क्या कहा?"

"कहा कि मैं अब बिलकुल ठीक हूं और कल से बाहर निकल सकता हूं।"

अपने शिष्य की रूसी को हाथों-हाथ ठीक करते हुए पोलोज़ोवा ने कहा, "बहुत अच्छे! लेकिन जानते हैं, आपके कारण डाक्टर ने मुझे ख़ूब आड़े हाथ लिया।"

"आड़े हाथ?"

"मतलब यह कि खूब झाड़ लगाई। यह बोलचाल की भाषा का मुहावरा है, आप अभी इसे नहीं जानते। संक्षेप में यह कि उसने मुझे इस बात के लिए अच्छा लेक्चर पिलाया कि मैंने आपके अच्छे होने तक ठहरे बिना अभी से रूसी पढ़ाना क्यों शुरू कर दिया है।"

"क्या बेकार की बात है! आपके और आपके पढ़ाये बिना तो मैं पागल हो गया होता। मुझे ख़ाली बैठे अब तीन महीने हो जायेंगे।"

"देखिये, तीन महीने को 'त्रि मेस्यात्सा' कहते हैं, 'त्रि मिस्यात्सी' नहीं। और हां, आपने आज का निबंध लिखा या नहीं?"

"लिखा तो है, मगर वह कोई अच्छा नहीं है। मुझे कल तक का मौक़ा दीजिये, मैं उसे फिर लिखूंगा।"

"कल दूसरा निबंध लिखिये। अब आगे से हम पढ़ाई पर इतना समय नहीं लगा पायेंगे—शायद शामों के अलावा। और जब बरसात ख़त्म हो जायेगी, तब तो पढ़ने के लिए समय रहेगा ही नहीं—हमें मुख्य सैक्शन के काम को तेज़ी से पूरा करना होगा, नहीं तो हम खेतों को वसंत तक पानी नहीं दे पायेंगे। ख़ैर, अब ज़रा अपना आज का निबंध दिखाइये।" उसने क्लार्क की कापी की तरफ़ हाथ बढ़ाया। लेकिन क्लार्क ने उसके हाथ को पकड़ लिया।

"न, रहने दीजिये। कल मैं ज़्यादा अच्छा निबंध लिखूंगा।"

"आप अचानक इतने संकोची क्यों हो गये हैं? कोई समझेगा, जैसे आप अख़बार के लिए लिख रहे हैं!"

उसने कापी का लिखा हुआ आख़िरी सफ़ा खोला और ऊंची आवाज़ में पढ़ना शुरू किया:

"एक विदेशी आदमी..."

"न, न, दया करके इसे मन में ही पढ़िये," क्लार्क खिड़की की तरफ़ घूम गया।

पोलोज़ोवा ने अपने कंधे मचका दिये।

"आज आपको क्या हो गया है? आपने मुझसे शरमाना कब से शुरू कर दिया है?"

उसने मेज़ पर से लाल पेंसिल उठाई, कापी को अपने पास खींचा और मन-मन में पढ़ना शुरू कर दिया:

एक विदेशी आदमी दुर्घटना के कारण अपना होश गंवाकर बहुत दिन तक पलंग पर पड़ा रहा। जब उसे फिर होश आया, तो वह सभी कुछ—अपना सारा पिछला जीवन—भूल गया और उसे कुछ भी याद न रहा।

वह बेहद घबरा गया और याद करने की कोशिश करने लगा। आख़िर थोड़ा-थोड़ा करके उसे कुछ-कुछ याद आने लगा। और जब उसे याद आ गई, तो उसे लगा कि जैसे याद करना भी नहीं चाहिए था। फिर वह अच्छा होने लगा और अकसर यही सोचने लगा कि शायद यही अच्छा होता कि उसे कुछ याद आता ही नहीं, बल्कि उसने अपने होश में आने के दिन से ही, बिना किसी अतीत के, नये सिरे से जीना शुरू कर दिया होता। उसने मन में कहा, "मान लेता हूं कि मैं सभी कुछ भूल गया हूं। अब मैं इस तरह रहूंगा कि जैसे पहले कुछ हुआ ही नहीं था।"

वह काफ़ी अरसे बीमार रहा और उसे सोचने का काफ़ी समय मिला। एक लड़की उसे एक अनजान भाषा और एक अनजान जीवन की शिक्षा देने लगी। उसे लगा कि वह शिक्षा एक अनजान भाषा की ले रहा है, लेकिन वास्तव में पाई उसने एक अनजान जीवन की शिक्षा है।

वह जल्दी ही समझ गया कि उसका जीवन इस लड़की से अवियोज्य रूप से जुड़ा हुआ है, जिसने उसे यह अनजान भाषा सिखाई है। अब तक हुई हर बात को भूल जाना आसान है, मगर वह इस लड़की को कभी भी नहीं भूल पायेगा। वह उस लड़की से कहना चाहता था, "मैं तुमको प्यार करता हूं।" लेकिन उसे लगा कि यह तो बहुत साधारण सी बात होगी, क्योंकि सभी बुरे उपन्यासों में नायक सदा बीमार होता है और बाद में अपनी नर्स को प्यार करने लगता है और उससे शादी करने का अनुरोध करता है। उसे डर था कि वह लड़की, जो उसे पहले से जानती थी, यह समझेगी कि वह पहले का ही अनजान आदमी है और अपने तरुण जीवन को एक अजनबी के पुराने जीवन के साथ नहीं जोड़ना चाहेगी। कई बार उसने लड़की को अपनी बात समझाने और कहने की इच्छा की, लेकिन वह

यह नहीं जानता था कि यह कैसे करे। तब वह "मनपसंद विषय पर निबंध" लिखने के लिए बैठ गया। लेकिन यह निबंध किसी मनपसंद विषय पर नहीं, इस बारे में है कि मैं किसे प्यार करता हूं।

"छिः-छिः," पोलोज़ोवा ने सिर हिलाया। "कितने दिन से मैं आपको पढ़ा रही हूं — और सब बिलकुल बेकार! एक निबंध में आपने पहले कभी इतनी सारी ग़लतियां नहीं की हैं!"

क्लार्क उदासी से मुस्कराया और बोला:

"मैंने आपसे पहले ही कहा था कि इसे आज मत पढ़िये — मैं कल अच्छा निबंध लिख दूंगा। बात यह है कि मैंने इसे बड़ी उत्तेजना में लिखा था।"

"क्या आप उत्तेजना में अंग्रेज़ी में भी ग़लतियां करते हैं?"

"शायद, लेकिन इतना उत्तेजित मैं पहले कभी नहीं था।"

"ख़ैर, इस बात को याद रखिये कि 'जीज़्न' (ज़िंदगी) स्त्रीलिंग है, इसलिए नई ज़िंदगी 'नोवी जीज़्न' नहीं, 'नोवाया जीज़्न' होती है। और 'प्यार करता हूं' के लिए 'या ल्यूब्यू' नहीं, 'या ल्यूब्ल्यू' लिखा जाता है..."

क्लार्क ने कापी को झपटकर उठा लिया और निबंध लिखे सफ़ों को फाड़ने लगा।

पोलोज़ोवा ने उन काग़ज़ों को उससे ले लिया।

"फाड़िये मत। अपनी अध्यापिका के सामने इस तरह अभद्रता का आचरण नहीं करना चाहिए। निबंध तो निबंध ही है," उसने काग़ज़ों को अपने ब्लाउज़ में ठूंसते हुए कहा। "इतनी ग़लतियों के लिए तो, सच, आपको बस सिफ़र मिलना चाहिए।"

"और विषयवस्तु के लिए?"

"विषयवस्तु के बारे में हम तब बात करेंगे, जब आप इसे नये सिरे से, बिना एक भी ग़लती किये लिख लेंगे। और आप चाहे कितने ही उत्तेजित क्यों न हों, 'या ल्यूब्ल्यू' लिखने में फिर ग़लती न हो, इसके लिए इसे अलग काग़ज़ पर बत्तीस बार लिखकर मुझे दिखाइये," उसने क्लार्क की तरफ़ हंसती हुई उल्लसित आंखें उठा दीं।

क्लार्क ने उसकी कोहनियां पकड़कर अपने पास खींच लिया और चूम लिया।

दो मुलाक़ातें

भोर के समय चमड़े के कोट, भेड़ की खाल के लबादे और चोग़े पहने लोगों की भीड़ नहर-मुख पर जमा हो गई। उन्होंने एक विशाल फ़ैस्टून को अपने सिरों के ऊपर उठाया हुआ था। दूकान में लाल कपड़ा नहीं था, इसलिए लाल और सफ़ेद बुंदकियोंवाले सादे कपड़े पर ही बड़े-बड़े सफ़ेद अक्षरों में लिखा हुआ था: "कोम्सोमोल के तूफ़ानी मजदूरों को बोल्शेविक सलाम!" बारिश इस तरह हो रही थी, मानो पहाड़ी नालों में बाढ़ आई हुई हो। पानी की बौछार से भीगे सफ़ेद अक्षर फ़ैस्टून पर से उखड़कर बैंडवालों के नमी से स्याह हुए कपड़ों के ऊपर आ गिरे थे, जिन्होंने एहतियातन अपने बाजों के भोंपुओं को अपनी पोशाकों में छिपा रखा था। बस्ती की तरफ़ से पानी में छप-छप करता गालत्सेव भागा-भागा आया और उसने सिनीत्सिन के हाथ में पानी से तर फ़ोनोग्राम दे दिया। सिनीत्सिन ने पानी से अधमिटे अक्षरों को बड़ी मुश्किल से पढ़ा:

> छोटी लाइन पर चलनेवाली पहली ट्रेन चार बजकर आठ मिनट पर दूसरे सैक्शन सही-सलामत और ठीक वक़्त पर पहुंच गई। पांच मिनट की सभा के बाद साढ़े चार बजे वह मुख्य सैक्शन की तरफ़ रवाना हो गई। द्वितीय सैक्शन-प्रमुख रियूमिन।

सिनीत्सिन ने काग़ज को अपनी जेब में रख लिया और अपनी घड़ी की तरफ़ देखा।

पांच मिनट के भीतर उसे यहां पहुंच जाना चाहिए।

उसने अपने चारों तरफ़ खड़े लोगों पर एक नजर फेरी: मोमजामे की बरसाती से अपने सिर को ढंके कीर्श ऐसा लग रहा था, जैसे नाटक के मंच पर अवतरित प्रेत; मोरोज़ोव ने चमड़े का कोट और चमड़े का ही टोप पहना हुआ था; ऊर्तावायेव अपनी बरसाती के बावजूद बदन तक भीगा हुआ था; कोमारेंको ऊपर से नीचे तक चमड़े में कसा हुआ था; पुराने फ़ैशन के बड़े छाते के नीचे खड़ा ओसिप विकेंत्येविच फौवारे की तरह चारों तरफ़ पानी बरसा रहा था; अंद्रेई सावेल्येविच ने अपनी बरसाती के ऊपर कंधों पर एक लाल-सा मोमजामा डाल रखा था ("निश्चय ही रसोई की

मेज़ पर से उठाया हुआ है")। "फ़ोरमैन, टेकनिशियन, मजदूर – दो सौ लोग तो होंगे यहां पर। कोई बुरा तो नहीं रहा! ऐसे मनहूस मौसम में भी इतने सारे लोग पहुंच ही गये!"

कहीं दूर से इंजन की सीटी की गहरी आवाज़ आई। वस्ती की तरफ़ से आते, अजब तरीक़े से टेढ़ी-मेढ़ी छलांगें लगाते आख़िरी आनेवाले भी नज़र आने लगे। चेतावनी की घंटी की तरह लगातार बजती सीटी की आवाज़ पास आने लगी। पानी की झड़ी के कारण किसी भी चीज़ को साफ़ देख पाना असंभव था। आख़िर जब इंजन की इस्पाती छाती अंधेरे से निकलती दिखाई दी, तो ट्रेन मुश्किल से सौ क़दम की दूरी पर रह गई थी। ऊपर घना सीसे जैसा धूआं मंडराने लगा। बैंडवालों की पोशाकों से निकलते ही उनके बाजे चमचमाने लगे। एकदम "इंटरनेशनल" की धुनें गूंज उठीं।

लाल झंडों से – जो बारिश के कारण स्याह हो गये थे – सजे फक-फक करते इंजन ने ब्रेक लगाया, एक फूत्कार छोड़ी और इस तरह भाप का भभका छोड़ा, मानो उसके गरमी से लाल हुए पहिये बर्फ़ से ठंडे पानी के तल में जा घुसे हों। इंजन से और डिब्बों से बदन तक तर हर्ष-विभोर भीड़ कीचड़ में कूद पड़ी। बैंड जोर-ज़ोर से बजने लगा। बाजों के गलों से संगीत की धुनों के साथ-साथ इस तरह पानी की फुहारें भी छूट रही थीं, मानो दमकल रबर की नलियों से पानी की धारें निकल रही हों।

सिनीत्सिन ने अपने हाथ से इशारा किया। पानी से अवरुद्ध बाजों से एक और फटी सी खंखार निकली और फिर वे ख़ामोश हो गये।

"साथियो!" – पानी उसके मुंह में घुसा जा रहा था, जिसके कारण बोलना लगभग असंभव हो गया था। "...हमारे वीर कोम्सोमोल संगठन के प्रयासों की बदौलत... घाट से नहर-मुख तक लाइन वक़्त पर... कोम्सोमोल... द्वारा निर्धारित योजना के...तीन महीने...बिछ गई है..." पानी उसकी आंखों में घुसा जा रहा था, उसके कानों में गरज रहा था, उसके चमड़े के कोट के उठे हुए कालर के भीतर रिसा जा रहा था और कमर पर ठंडी धारों के रूप में बहे जा रहा था। "...ऐसे ख़राब मौसम के बावजूद... जैसे कि... आप देख रहे हैं..." सिनीत्सिन ने अपना हाथ हिलाया – बोलना असंभव था।

उसने अपनी तरफ़ आते नासिरुद्दीनोव की तरफ़ क़दम बढ़ाये और उसे कसकर अपने से लगा लिया। एक दूसरे को अपनी बिन हजामत बनी ठोढ़ियों

से काटते हुए उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से चुंबन लिये। वारिश उनके गालों पर आंसुओं की तरह वह रही थी – या कौन जाने, वे सचमुच के ही आंसू थे?

ख़ामोशी को सुनकर बैंडवालों ने अपने बाजों को फूंककर उनसे पानी निकाला और "इंटरनेशनल" की धुनें एक बार फिर गूंजने लगीं।

"चलिये, सब क्लब चलते हैं!" ऊर्ताबायेव ने चिल्लाकर कहा।

"क्लब चलो! क्लब चलो!"

"छोकरों को चाय तो पिलानी ही चाहिए!"

लोगों ने नसिरुद्दीनोव और दूसरे कोम्सोमोलियों को पकड़कर कंधों पर उठा लिया और एक प्रयाण गीत की धुनों के साथ बस्ती की तरफ़ चल दिये।

जब क्लब में स्वागत के औपचारिक भाषण चल रहे थे, कोमारेंको चुपके से उठा और सिगरेट पीने के लिए वाहर निकल आया। दरवाज़े में वह ऊर्ताबायेव से टकरा गया। ऊर्ताबायेव के पानी से तर कपड़ों से भाप उठ रही थी।

"ज़रा एक सिगरेट तो दो – मेरी तो सभी तर हो गई हैं।"

"शौक़ से लो। तो यह है तुम्हारे यहां का मौसम, मेरे ताजिक भाइयो! और इस बात की शिकायत करते तुम नहीं थकते कि तुम्हारे यहां पानी काफ़ी नहीं है! सरदियों में आसमान से टपकनेवाले इस पानी को ही देख लो। इसके लिए वस इतना करने की ज़रूरत है कि इसे जलागारों में इकट्ठा कर लिया जाये – फिर सिंचाई की नहरों की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। नली उठाई और बाग़ में छिड़क दिया पानी, बस, और क्या! ख़ैर, सुनाओ, क्या हाल है? मोरोज़ोव से तो पट रही है, न?"

"और उससे पटेगी क्यों नहीं? वह अच्छा कार्यकर्ता है – दक्ष है, येरेमिन जैसा नहीं है।"

"यह तो अच्छी बात है। पर तुम मुझसे मिलने के लिए कभी क्यों नहीं आते?"

"काम बहुत है। फिर, मौसम भी कोई बहुत अच्छा नहीं रहा है। सच मानना, दो महीनों में आज पहली बार बस्ती में आया हूं। जब मैं आया, तो मेरी इच्छा थी कि तुमसे मिलूं और तुम्हें धन्यवाद दूं, पर मैं बेहद व्यस्त था।"

"मुझे धन्यवाद क्यों देना चाहते थे?"

"इस बात पर विश्वास न करने के लिए कि मैं दोषी हूं। पूरे ब्यूरो में बस तुम और मेत्योलकिन ही ऐसे थे, जिन्होंने मेरे निष्कासन के पक्ष में मत नहीं दिया था। क्या तुम सोचते हो कि मैं इस बात को भूल गया हूं? कुछ दिन पहले मैं दूसरे सैक्शन भी गया था—मेत्योलकिन से भी मिलना चाहा, लेकिन उसने मुझे आते देखा, तो वह दूसरे दरवाज़े से भाग गया। आज तक मैं यह नहीं समझ पाया हूं कि उसने ऐसा क्यों किया।"

"क्या भाग गया?" कोमारेंको खिलखिलाकर हंस पड़ा, "उस एक्स्केवेटर के कारण वह अपने को तुम्हारे आगे दोषी समझता है, जिसकी वह रखवाली नहीं कर पाया था।"

"लेकिन उसे ब्यूरो से किस कारण अलग किया गया?"

"पीना शुरू कर दिया था उसने। एक्स्केवेटर की बात उसके दिल को लग गई। उसके दिमाग़ में यह बात समा गई कि तुम्हारा कबाड़ा आख़िर उसीकी वजह से हुआ था। वह पहले नहीं पीता था—कह सकते हो कि औरों के लिए एक मिसाल था, कभी भी काम से ग़ैरहाज़िर नहीं होता था। लेकिन जब उसने पीना शुरू किया, तो लगातार पूरे तीन दिन ग़ायब रहा। इसके लिए हमने उसे सख़्त झाड़ लगाई।"

"हां, तो पीना छोड़ा या नहीं?"

"छोड़ दिया। उसके बाद तो तीन बोनस भी पा चुका है। अपनी दैनिक योजना की दो सौ पचीस प्रतिशत पूर्ति करता है और काम की लागत को उसने आधा कर दिया है।"

"तो तुम्हारा क्या ख़याल है—क्या एक्स्केवेटर को सचमुच किसीने जानबूझकर तोड़ा था?"

"क्या कहा जा सकता है!"

"आख़िर दूसरा एक्स्केवेटर भी तो अब तक काम करता ही रहा है और सही-सलामत है।"

"हां, अफ़सोस की बात है कि सिर्फ़ एक ही एक्स्केवेटर। एक तो अपवाद भी हो सकता है। अगर दो होते, तो बात कुछ और होती . . . अच्छा, ऊर्तावायेव, पुराने दोस्त के नाते मुझे एक बात बताओ—मामला तो ख़त्म हो ही चुका है और तुम यह भी जानते हो कि तुम्हारी मुसीबत का असली कारण यह नहीं था। मैं कुछ बिलकुल दूसरे कारणों से यह बात जानना

चाहता हूं। क्या बार्कर ने सभी एक्स्केवेटरों को संयोजित करके उन्हें चलाकर ले जाने का फ़ैसला किया था, या पहले प्रयोग के तौर पर एक या दो एक्स्केवेटरों के साथ जोखिम लेने की सोची थी, ऐं? सच बतलाना। तब तो शायद तुम हद से कुछ ज्यादा ही चले गये थे, है न?"

"सुनो, मैं कम्युनिस्ट होने के नाते कहता हूं कि ब्यूरो के सामने अपनी गवाही में मैंने जो कुछ भी कहा था, वह लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ सही था। मैं किसी और बात में हद से आगे चला गया था और इस बात को मैंने नियंत्रण आयोग के सामने स्वीकार कर लिया था। मुझे महज़ बार्कर के साथ अपने समझौते के आधार पर—पहले मैनेजमेंट की स्वीकृति लिए बिना सारे काम को शुरू करने का कोई अधिकार न था। इसके लिए मुझे भुगतना पड़ा और वह वाजिब भी था।"

"अच्छा, मैं अब चला। तुम रुकोगे यहीं? आओ किसी शाम को मेरे घर। मेरे पास अच्छा रेडियो है। बंबई भी सुन सकते हैं। नये-नये गाने और नये से नया संगीत—सब। ख़ैर, ख़ुदा हाफ़िज़!"

नसिरुद्दीनोव समारोह के ख़त्म होने तक न रुककर चुपके से क्लब से खिसक गया और गराज की तरफ़ चल दिया। गराज से उसी वक़्त एक ट्रक बस्ती की तरफ़ जा रहा था। उसे ड्राइवर के साथ ही बैठने की जगह मिल गई।

वह बस्ती के छोर पर, मुख्य अरीक़ के पास उतर गया और धड़कते हुए दिल के साथ सुपरिचित गली में मुड़ गया। अभी सुबह ही थी—पोलोज़ोवा शायद अभी सो ही रही हो।

पोलोज़ोवा के दरवाज़े पर ताला लगा देख वह हैरान हो गया। तो क्या वह इतनी जल्दी ही घर से निकल गई? शायद वह ट्रेन के आने के समय उससे मिलने के लिए ही गई हो। उसे देर हो गई होगी और वे रास्ते में एक दूसरे को नहीं देख पाये होंगे। अफ़सोस! तो, अब वह क्या करे? वापस चला जाये? कहीं ऐसा न हो कि वे रास्ते में फिर इसी तरह बिन मिले निकल जायें। यहीं इंतज़ार करना ज्यादा अच्छा रहेगा।

दरवाज़े पर बस, लकड़ी की एक मामूली छड़ ही लगी हुई थी। उसने अपना हाथ बढ़ाया—और तभी ठहर गया। क्या उसे मरियम की ग़ैरमौजूदगी में

उसके कमरे में ठहर जाने का अधिकार है? कैसा बेवक़ूफ़ी का सवाल है! "तुम ट्रक से अपना सामान उठाकर सीधे मेरे यहां आ सकते हो!"–यह बात क्या मरियम ने ही नहीं कही थी? तो फिर यह निरर्थक दुविधा क्यों? उसने हिम्मत करके दरवाजा खोला और भीतर घुस गया।

उसने कमरे में चारों तरफ़ निगाह दौड़ाई। सभी कुछ बिलकुल वैसा ही था, जैसा उसके यहां से जाने के समय था। शायद मरियम को उसके आने की अपेक्षा न हो? लेकिन अगर ऐसा होता, तो वह उससे मिलने के लिए न गई होती। इतनी जल्दी वह चली कहां गई होगी? फिर निर्माणस्थली पर सभी लोगों को मालूम था कि पहली ट्रेन आज ही आनेवाली है। यह कैसे हो सकता है कि मरियम को इसकी जानकारी न हो?

अचानक उसे ख़याल आया कि वह अपने सामान की गठरी लिये अभी तक बीच कमरे में ही खड़ा हुआ है। उसने गठरी को किताबों के बक्से पर रख दिया। उसके दिल में एक अजीब सा दर्द हो रहा था। उसने सोचा कि बैठकर मरियम का इंतजार करे और स्टूल की तलाश में इधर-उधर नजर दौड़ाई। कमरे में एक ही स्टूल था और वह पलंग के सिरहाने के पास था। उसने स्टूल पर पड़ी किताब को–किताब अंग्रेजी में थी–उठाया और उसे वह मेज पर रखने ही को था कि कोई चीज फड़फड़ाती हुई फ़र्श पर आ गिरी। वह उसे उठाने के लिए झुका। वह अमरीकी इंजीनियर क्लार्क का फ़ोटो था।

देर तक करीम फ़ोटो को अपनी उंगलियों में पकड़े खड़ा रहा। उसने फ़ोटो में चित्रित आदमी की आकृति के हर विवरण का अध्ययन किया, मानो उसने उसे पहले कभी न देखा हो–फीका सफ़ेद चेहरा, अच्छी तरह संवरे हुए बाल, चौड़ा माथा, पतली और सीधी नाक, उदासी की छाप पड़े सुंदर होंठ। फिर उसने फ़ोटो को उसकी जगह पर वापस रख दिया और दीवार पर टंगे छोटे-से शीशे के सामने आ खड़ा हुआ। शीशे से जो चेहरा उसकी तरफ़ देख रहा था, वह मटमैला और बिन हजामत था, सिर पर बिखरे हुए बेक़ाबू बाल थे और नाक बेहद छोटी थी। दर्पण के इस अपरिपक्व छोकरे का ऊपरी होंठ फड़क रहा था। करीम तुरंत मुड़ गया और उसने अपने बालों में उंगलियां फेरीं। उसने अपने ओवर ऑल की छोटी-छोटी बांहों से भद्देपन से निकले अपने हाथों की तरफ़ नाराजी के साथ देखा और उन्हें अपनी कमर के पीछे छिपा लिया। फिर वह खिड़की

के पास चला गया और बहुत देर तक उसके मटियाले कांचों पर भावहीन चेहरे से देखता रहा। कांचों पर होकर पानी बह रहा था।

दरवाज़े के खुलने की आवाज़ को सुनकर वह घूम गया। पोलोज़ोवा कमरे में खड़ी थी। एक ही नज़र में उसने सभी कुछ देख लिया—किताबों के बक्से पर पड़ी गठरी, खिड़की के पास खड़ा नसिरुद्दीनोव—और उसका चेहरा लाल हो गया। मिनट भर दोनों ख़ामोश खड़े रहे।

"ग्रहा, तुम ग्रा गये, करीम!"—उसकी ग्रावाज़ में कृत्रिमता थी—वह उसमें ज़ाहिरा तौर पर जिस हर्ष और विस्मय का पुट देने की कोशिश कर रही थी, वह कहीं नज़र नहीं ग्रा रहा था।

"सलाम, मरियम!"

दोनों ने जल्दी-जल्दी हाथ मिलाये, दोनों ही ग्रभिनंदन के इस ग्रटपटेपन को महसूस कर रहे थे। पोलोज़ोवा ने बड़ी लगन के साथ ग्रपने चमड़े के कोट को झाड़ना शुरू किया। उसने कोट को उतार दिया, और मानो यह न समझ पाते हुए कि उसके साथ क्या किया जाये, बहुत ही ज्यादा सावधानी के साथ उसे पोंछकर सुखाने लगी।

"कैसा ख़राब मौसम है! है, न? ख़ैर, तुम सुनाग्रो, क्या हाल है, करीम?"

"ठीक ही है, मरियम। छोटी लाइन बिछाने का काम हमने ख़त्म कर दिया है। इसलिए मैं तुमसे मिलने के लिए ग्रा गया... सोचा, देख लूं, तुम कैसी हो... ग्रगली बार ग्राऊंगा, तो ज्यादा ठहरूंगा। ग्रब मैं चला... वहां छोकरे इंतज़ार कर रहे होंगे..." उसने ग्रनाड़ीपन से बक्से पर से ग्रपनी गठरी उठाई और उसे ग्रपने पीछे छिपाते हुए ग्रपना हाथ बढ़ाकर बोला, "ग्रच्छा, मरियम, यह देखकर मन को बहुत ख़ुशी हुई कि तुम ग्रच्छी हो।"

"ग्ररे, इतनी बारिश में तुम कैसे जा सकते हो?"

करीम मुसकरा दिया।

"मरियम, इसी बारिश में हमने ग्राख़िरी पचास किलोमीटर पटरियां बिछाई थीं। ग्रब तो मैं इसका ग्रादी हो गया हूं।"

"तो क्या ज़रा भी नहीं बैठोगे?"

"नहीं, मरियम। वहां वे मेरा इंतज़ार कर रहे हैं। मैं और किसी वक़्त ग्राऊंगा। ग्रच्छा, चला।"

"अच्छा। लेकिन देखना, आना जरूर..."

उसने मरियम से कसकर हाथ मिलाया और गठरी को छिपाते हुए बाहर दौड़ गया। खिड़की के मटियाले कांचों पर बारिश धड़धड़ा रही थी।

...करीम मेस में ज्यादा देर नहीं रुका। हाल ही रातों के काम की थकान से चूर और सब सो रहे थे। वह अपनी खटिया पर पहुंचा, अपनी गठरी उस पर रखी और फिर बाहर निकल गया। अपने साथियों के जिज्ञासाभरे सवालों को सुनने की उसे ज़रा भी इच्छा नहीं थी। बाहर बिन रुके मूसलधार वर्षा हो रही थी। क्षण भर वह इस दुविधा में खड़ा रहा कि कहां जाये, और फिर तेज क़दमों से पार्टी समिति के दफ़्तर की तरफ़ चल दिया।

पार्टी समिति का दफ़्तर अब बरसात शुरू होने के पहले बनी एक नई बारक में स्थित था। और सब नई बारकों में उसे ढूंढने में करीम को कुछ कठिनाई हुई। वहां अपने मित्रों के साथ दुआ-सलाम के बाद वह सिनीत्सिन से मिलने के लिए चला गया।

"कहो, क्या हाल है, करीम? तुम्हें देखकर बहुत ख़ुशी हुई, बहुत। मेरा ख़याल था कि हमारी-तुम्हारी मुलाक़ात इतनी जल्दी नहीं होगी।"

"क्यों? क्या आपको यह विश्वास नहीं था, साथी सिनीत्सिन, कि हम काम को वक़्त पर पूरा कर देंगे?"

"नहीं, इसमें तो मुझे तनिक भी शक नहीं था, पर शायद मैं ही तुम्हें यहां नहीं मिलता। तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे अपने पद से अलग कर दिया गया है? केंद्रीय नियंत्रण आयोग की गश्ती समिति ने ऊर्तावायेव कांड के सिलसिले में यह कारंवाई की है।"

"लेकिन इस निर्णय को तो रद्द कर दिया गया है, न?"

"हां, स्तालिनाबाद में इस फ़ैसले को रद्द कर दिया गया। उन्होंने निर्माण-कार्य के पूरा होने तक मुझे यहीं रहने देने का निर्णय किया है, इसलिए और भी कि इसमें अब ज्यादा देर नहीं है। अलबत्ता मेरी और मोरोज़ोव–दोनों–की सख़्त भर्त्सना की गई है। क्या तुम ऊर्तावायेव से मिले हो?"

"हां, उसके बहाल किये जाने के कुछ समय बाद मिला था। वह पटरी बिछाने की जगह आकर हमसे मिला था।"

"तो, देखा तुमने, करीम, ऊर्तावायेव के मामले में तुम्हारी बात ही

सही निकली। याद है कि तब तुम किस तरह मेरे पास आये थे? और मैं तुम्हारी बात भी सुनने के लिए तैयार न था। बहुत शान में आया हुआ था मैं उस वक़्त।"

"ऐसी बातें करने की कोई ज़रूरत नहीं, साथी सिनीत्सिन। हर कोई आदमी ग़लती कर सकता है। और यह तो बहुत ही मुश्किल मामला था। सभी ग़लती पर थे। मैं भी तो कोई भी सबूत नहीं पेश कर सका था। आप भला मेरी बात कैसे मान लेते?"

"नहीं, करीम, मैं बहुत शान में आया हुआ था। मैं ख़ुद इस बात को मानता हूं। मेरी तरफ़ से सफ़ाइयां देने का कोई फ़ायदा नहीं। मैंने तुम्हें तब बच्चे की तरह झाड़ा था। तुम मेरी आंखों के सामने ही बड़े हुए हो, लेकिन मेरा ध्यान कभी इस तरफ़ गया ही नहीं कि तुम किस तरह बड़े हो गये हो। मैं तुम्हें बच्चा ही समझता रहा और तुम्हारे विकास में मैंने बाधा डाली—इस बात को मैं अब महसूस कर रहा हूं। मैंने तुम्हें अपनी पशक़दमी दिखाने का मौक़ा नहीं दिया। पार्टी इस तरह की हरकतों को स्थानीय कार्यकर्ताओं के विकास को नज़रअंदाज़ करना कहती है। और पार्टी का कहना ठीक है। अलबत्ता तुम्हारे मामले में यह बात ऊर्ताबायेव के मामले की बनिस्बत कहीं ज़्यादा स्पष्टता के साथ सामने आई। मैंने नियंत्रण आयोग के सामने इस बात को खुलकर मान लिया और यह भी बता दिया कि तुमने मुझे चेतावनी दी थी।"

"मैं अगर कुछ साबित ही नहीं कर सका, तो वह चेतावनी कैसी हुई?"

"अरे, छोड़ो भी इस बात को! पटरी बिछाने के काम ने साबित कर दिया है कि तुम कैसी मिट्टी के बने हुए हो। पहली बार तुम्हें यह दिखाने का असली मौक़ा मिला कि तुम क्या कर सकते हो, और कितना शानदार काम तुमने करके दिखाया है! शाबाश! तुम्हारे कारण मैं ख़ुश हूं, करीम, बहुत ख़ुश। तुम मास्को जाओगे अध्ययन करने के लिए—एक शानदार कार्यकर्ता बनोगे।"

"हम साथ-साथ चलेंगे, साथी सिनीत्सिन—इस निर्माण-कार्य के ख़त्म होने के साथ। मैं तो चाहता हूं कि जितनी जल्दी हो सके, चल दें।"

"नहीं, भाई, साथ-साथ नहीं जायेंगे। पहले तो मुझे अपने काम से यह साबित करना होगा कि मुझे अध्ययन के लिए भेजना वाजिब होगा। और मैं अपनी ग़लती को दुहराऊंगा नहीं। मैं किसी दूर-दराज़ इलाक़े में—

शायद मत्चा ज़िले में—नियुक्त किये जाने की प्रार्थना करूंगा—वहां काम की काफ़ी गुंजाइश है।"

करीम ने हतप्रभ होकर सिनीत्सिन की तरफ़ देखा। दोनों चुप रहे।

"जानते हैं, क्या, साथी सिनीत्सिन, मेरा भी यही ख़याल है कि मुझे भी अभी मास्को नहीं जाना चाहिए। पहली बात तो यही है कि अभी साल-दो-साल मुझे क़िशलाक़ों में ही काम करना चाहिए। मुझे अपने साथ अपने ज़िले ले चलिए। मैं वहां कोम्सोमोल का संगठन करूंगा। हम दोनों बहुत काम करेंगे। और मास्को का पास भी ख़राब करने की ज़रूरत नहीं—हम उसे ज़ुलैनोव को दे सकते हैं—वह अच्छा वर्ग-चेतन कार्यकर्ता है।"

"यह क्या सोच रहे हो? बकवास मत करो! तुम्हें मास्को जाने का पास दिया जा रहा है, इसलिए सीधे-सीधे चले जाओ, और क्या!"

"ईमान की बात है, साथी सिनीत्सिन, मैं ख़ुद ज़्यादा अच्छी तरह से जानता हूं। अभी मैं सिर्फ़ अठारह साल का हूं—मैं बाद में भी जा सकता हूं। और कई लोग तो तीस-तीस चालीस-चालीस साल की उम्र में ही अध्ययन शुरू करते हैं, मगर फिर भी अच्छे कार्यकर्ता बन जाते हैं। क्यों? इसलिये कि उन्हें काफ़ी व्यावहारिक अनुभव मिल चुका होता है और इससे उनकी नींव मज़बूत हो जाती है, जिस पर विज्ञान जड़ पकड़ सकता है। लेकिन मुझे कैसा व्यावहारिक अनुभव मिला है? साथी सिनीत्सिन, बात यह है कि आज आपने पहली बार मुझसे इस तरह से बातें की हैं, जैसी आप बालिग़ आदमियों से करते हैं। और आपने जो कहा, वह ठीक ही है। आपने ख़ुद कहा है कि मुझे अपनी पेशक़दमी दिखाने का मौक़ा मिलना चाहिए। ठीक है, तो मुझे अब व्यावहारिक काम में इसका प्रदर्शन करने दीजिये। मैं अध्ययन के लिए बाद में जा सकता हूं। अब तक मैंने सभी जगह आपके साथ ही काम किया है और हमने मिलकर अच्छा काम किया है। मैं जो कुछ भी जानता हूं, उसे मैंने आपसे ही सीखा है और मैं और सीखना चाहता हूं। मुझे अपने साथ अपने ज़िले ले चलिये। इसके बाद आप मास्को जायेंगे और मैं भी जाऊंगा।"

"लेकिन शायद मैं बिलकुल ही न जाऊं, तो?"

"ज़रूर जायेंगे। पार्टी आप जैसे कार्यकर्ताओं की क़दर करना जानती है। तो, हम साथ-साथ ही जायेंगे, न? इस साल हम ज़ुलैनोव को पढ़ने के लिए भेज देंगे—मैं अभी जाकर उसे बता देता हूं, वह ख़ुश होगा, हां।"

"यह क्या कह रहे हो—लगता है, जैसे तुम मेरा साथ देने के लिए ही अध्ययन करने का मौक़ा छोड़ रहे हो? यही बात है, न?"

"मैं उसे छोड़ नहीं रहा हूं—मैं उसे बस, कुछ वक़्त के लिए मुलतवी कर रहा हूं। ज़िद मत कीजिये, साथी सिनीत्सिन। चाहे कुछ भी हो जाये, मैं उसी ज़िले में भेजे जाने की मांग करूंगा, जिसमें आप जायेंगे। आख़िर आप मेरे साथ काम करने से तो इनकार नहीं कर देंगे—ख़ासकर यह देखते हुए कि आपका ही कहना है कि मैं कोई बुरा कार्यकर्ता नहीं हूं। ठीक है, न?"

सिनीत्सिन ने अपना हाथ करीम के कंधे पर रख दिया।

"बेशक तुम पढ़ने के लिए ही जाओगे—व्यावहारिक काम की बातें करके मेरी आंखों में धूल झोंकने की कोशिश मत करो। लेकिन हम बहुत अच्छे दोस्त रहेंगे—तुम बहुत अच्छे साथी हो, करीम।"

हैदर रजबोव का अपराध

कोमारेंको के कमरे में सिगरेट का धूआं हवा में बंदनवारों की तरह लटका हुआ था। भोर के साथ ही जो कामों से भरा दिन शुरू हुआ था, उसका अभी कोई अंत होता नज़र नहीं आ रहा था। उस सुबह एक विशेष हरकारा ताशक़ंद से एक गुप्त पैकेट लेकर आया था। पैकेट में कृषि जन-कमिसारियत के मध्य एशियाई विभागों में तोड़-फोड़ करनेवालों के एक व्यापक संगठन के बारे में सूचना थी। मैकेनिकल डिपार्टमेंट का भूतपूर्व प्रमुख, इंजीनियर नेमिरोव्स्की इसी संगठन का सदस्य था। पैकेट में नेमिरोव्स्की की तफ़तीश का विवरण और उसके बयान की प्रति भी थी। उसके बयान से पता चला कि इस संगठन का एक और सदस्य, जो नेमिरोव्स्की का एक घनिष्ठ सहयोगी था, अभी निर्माणस्थली पर ही निर्विघ्न काम किये चला जा रहा है।

काग़ज़ों को दराज़ में बंद करके कोमारेंको ने उसकी तुरंत गिरफ़्तारी का आदेश जारी कर दिया।

उसके सामने जो दयनीय नमूने का आदमी पेश किया गया, वह डर के मारे सिर से पांव तक फक पड़ा हुआ था और उसके हाथ इस तरह कांप रहे थे कि देखकर घिन आती थी। इसके बाद दो घंटे का अनिवार्य

संवाद चला—आहत दर्प, स्पष्ट इनकार, अतिशय आत्मविश्वास, एक-दो बार अपने जवाबों में गड़बड़ा जाना, दोषी-जन्य चुप्पी, इसके बाद तोड़-फोड़ के ज़रिये कमाई की नगण्य रक़मों की फ़ेहरिस्त, और अंत में—वमन की तरह बीभत्स प्रवाह में बहकर आता गिलगिला अनुताप।

इंजीनियर के ताशक़ंद भेजे जाने के आदेश पर हस्ताक्षर करने के बाद कोमारेंको ने घंटी बजाकर एक गिलास कड़क चाय मंगवाई। उसकी अपने हाथ धोने की सख़्त इच्छा हो रही थी—जैसी पीपदार घाव का आपरेशन करने के बाद होती है। अदम्य घृणा की भावना उस पर छाई हुई थी—"इस तरह के लोग अपने को हमारा दुश्मन कहने की जुरंत करते हैं!" बरसाती पानी की तरह गंदली चाय उसकी बदमज़गी को दूर नहीं कर सकी।

टेलीफ़ोन घनघना उठा:

"मुख़्तारोव और गालियेव निजी काम से आये हैं।"

"आने दो।"

ज़िला समिति के सचिव ने फ़ौजदारी अनुसंधानकर्ता तातार गालियेव के साथ प्रवेश किया।

"नमस्कार, साथियो! तशरीफ़ रखिये। कहिये, क्या सेवा कर सकता हूं?"

"इन्हें तुमसे कुछ काम है," मुख़्तारोव ने अनुसंधानकर्ता की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"सच तो यह है कि बात कोई बहुत महत्वपूर्ण नहीं है," अनुसंधानकर्ता ने अपनी कुरसी को कोमारेंको के क़रीब खींचते हुए कहा। "साथी मुख़्तारोव ने बतलाया था कि आप 'लाल अक्तूबर' सामूहिक फ़ार्म की प्रबंध समिति के सदस्य हैं और इस फ़ार्म के अलग-अलग किसानों को जानते हैं।"

"हां, कुछ को जानता हूं।"

"हैदर रजबोव को जानते हैं?"

"जानता हूं। हमारी प्रबंध समिति का सदस्य है। इसी शरद में चुना गया था।"

"उसके बारे में आपका क्या ख़याल है?"

"किस अर्थ में?"

"बात यह है कि हैदर ने कल अपनी पत्नी की हत्या कर दी।"

"हैदर रजबोव ने? वही, जो स्तालिनाबाद में सामूहिक कृषकों की कांग्रेस में भाग लेने गया था और हवाई जहाज़ में बैठकर वापस आया था?"

"हां-हां, वही।"

"और उसने अपनी बीवी को क़त्ल कर दिया है?"

"गला काट दिया। बहुत ही पाशविक हत्या है। सिर लगभग पूरी तरह से अलग कर दिया गया है। छाती में दो घाव हैं और हाथ तो बिलकुल कटे-फटे हैं। ज़ाहिर है कि उसने अपने को बचाने की कोशिश की होगी।"

"लेकिन उसने ख़ून किसलिए किया, कुछ पता लगा?"

"पिता और पड़ोसियों का कहना है कि वह उसे छोड़कर जाना चाहती थी। हैदर बहुत दिनों से उसे जान से मारने की धमकी दे रहा था और हर तरह से उसके साथ बहुत बुरा वर्ताव करता था। इसके ख़िलाफ़ सिर्फ़ एक बयान है—एक औरत का—क्या नाम है उसका?" अनुसंधानकर्ता ने अपनी नोटबुक पर एक नज़र डाली। "वेवा ज़ुमुर्रुद। हां, तो यह वेवा ज़ुमुर्रुद हैदर और उसकी बीवी—दोनों—को जानती थी और उसका कहना है कि पूरे क़िशलाक़ में उन जैसा एक दूसरे को प्यार करनेवाला जोड़ा और कोई नहीं था। कोई शौहर अपनी बीवी के साथ इतना अच्छा वर्ताव नहीं करता था, जितना हैदर। उसका कहना है कि चूंकि उनके संबंध इतने अच्छे थे और वे एक दूसरे को इतना प्यार करते थे, इसलिए इस बात को सोचा भी नहीं जा सकता कि हैदर अपनी बीवी का ख़ून कर सकता है। लेकिन बेशक, यह कोई सबूत नहीं है। इसके विपरीत, इस तरह के अधिकांश ख़ून ईर्ष्या के कारण ही किये जाते हैं।"

"क्या कोई चश्मदीद गवाह है?"

"पड़ोसियों ने चीख़ और बड़ा शोर-शराबा सुना। दरवाज़ा अंदर से बंद था। वे लोग बीवी के पिता को ख़बरदार करने के लिए भागे। वह भागता हुआ आया और दरवाज़े में ही हैदर से टकरा गया, जो भागकर जा रहा था। पिता ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन हैदर ने उसे छुरे से डरा दिया। हैदर उसी शाम को क़िशलाक़ में वापस आ गया, जब मिलिशिया मौक़े पर पहुंच चुकी थी और मैं गवाहों से पूछताछ कर ही रहा था। पहली परीक्षा में उसके शरीर पर ख़ून के कोई निशान नहीं मिले। निस्संदेह, इतने ज़ोर की बारिश में ऐसा होना कोई अचरज की बात

नहीं है... अलावा इसके, वह अपने चोग़े और बदन को किसी भी अरीक़ में धो सकता था।"

"और ख़ुद हैदर क्या कहता है?"

"जब वह आया,—मैं उस वक़्त उसी के घर में बैठा हुआ था,—तो वह सीधा अपनी बीवी की लाश पर झपटा और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। अभाग्यवश, मैं ताजिक बहुत अच्छी तरह से नहीं समझता। लेकिन यह भी एक आम बात ही है—बाद में पछतावा होता ही है। इसके बाद जब उसे मिलिशिया के लोगों ने हिरासत में ले लिया, तो उसने एकदम चुप्पी साध ली और कुछ भी नहीं कहा। उसे देखकर लगता है, जैसे सख़्त मानसिक आघात लगा है। हम उससे कुछ भी नहीं जान सके।"

"रुकिये, ज़रा, रुकिये! मैंने उसे अभी हाल ही में तो कहीं देखा था। अरे, कब? हां, कल ही तो—यहीं, बस्ती में ही।"

"किस वक़्त? कुछ याद है?" अनुसंधानकर्ता ने पूछा।

"ठहरिये, अभी बताता हूं। यह कोई चार बजे की बात रही होगी, जब मैं खाना खाकर वापस आ रहा था। यहीं—इसी सड़क पर, दफ़्तर के पास। जानते हैं, यह मुझे क्यों याद आ गया? कल मुझे अपने सामूहिक फ़ार्म के दो दहक़ान मिले थे—पहले यही हैदर और बाद में शाहाबुद्दीन क़ासिमोव का बेटा—और वह भी दफ़्तर के पास ही।"

"आपको यक़ीन है कि यह कल ही की और चार बजे की बात है?"

"लगभग।"

"क्योंकि यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। ख़ून भी लगभग इसी समय हुआ था।"

"देखिये, मैं यह हलफ़िया बयान तो देना पसंद नहीं करूंगा कि बात ठीक चार ही बजे की है या यह कि वह आदमी हैदर ही था। मौसम ही कुछ ऐसा था कि जिसमें—कहते हैं न कि—सारे ही बिल्ले काले दिखाई देते हैं। और न मैंने अपनी घड़ी ही देखी थी—इसलिए मैं ग़लती पर भी हो सकता हूं।"

"समझा। अच्छा, आप ख़ुद हैदर के बारे में कुछ बता सकते हैं?"

"क्या बताऊं—हैदर रजबोव के बारे में मैं शायद उतना ही जानता हूं, जितना मुख़्तारोव जानते हैं। हैदर ने कभी कोई ख़ास राजनीतिक सरगरमी नहीं दिखाई है। उसके ससुर—मलिक अब्दुक़ादिरोव—ने १९२२ में अपने

आंगन में सोते दो लाल सैनिकों की हत्या कर दी थी। लेकिन यह सब तो पुराने इतिहास की बातें हैं। उस वक़्त और भी बहुतेरे लोगों ने ऐसी ही बातें की थीं – महज़ इसलिए कि वे वर्ग-चेतन नहीं थे या इसलिए कि उन्हें अमीरों ने ऐसा करने के लिए भड़का दिया था। उसके बाद से उसके ख़िलाफ़ कोई एसी बात नहीं कही जा सकती।"

"और गवाहों के बारे में तो आप कुछ नहीं बता सकते? मुख्य गवाह – हैदर का पड़ोसी और सामूहिक फ़ार्म का प्रधान, दौलत – तो साथी मुख़्तारोव की राय में पूरी तरह से भरोसा करने लायक आदमी है।"

कोमारेंको सिगरेट से उठते धूएं के छल्ले की तरफ़ ख़ामोशी के साथ देखता रहा।

"जानते हो, मुख़्तारोव, मुझे यह सामूहिक फ़ार्म बिलकुल भी पसंद नहीं है। ईमान से बताओ, हम इसके सदस्यों के बारे में इसके अलावा सचमुच और क्या जानते हैं कि वर्तमान सामूहिक कृषकों में से बहुत से १९२२ में बासमचियों के साथ अफ़ग़ानिस्तान चले गये थे और फिर १९२८ में ही लौटकर आये थे?"

"देखो, बात का बतंगड़ न बनाओ," मुख़्तारोव ने बुरा मानते हुए कहा, "ऐसे न जाने कितने दहक़ान हैं, जो पुराने समय में बासमचियों के चक्कर में आ गये थे। आख़िर १९२२ में यहां कितने लोग यह जानते थे कि सोवियतें असल में क्या हैं?"

"मैं उसकी बात नहीं कर रहा हूं। मैं जो कह रहा हूं, वह यह है – ऐसे बहुत सारे अमीर थे, जो अफ़ग़ानिस्तान में अपना सारा माल-असबाब बेचकर इस तरह के सामूहिक फ़ार्मों में छिपकर घुस आये हैं। और फिर उन और लोगों के बारे में क्या कहा जाये, जो अमीरों के हाथ के मोहरे हैं? इस जैसे सामूहिक फ़ार्मों में ज़बरदस्त राजनीतिक कार्य करने की आवश्यकता थी। क्या हमने इस तरह का काफ़ी काम किया है? क्या हमने वहां काफ़ी आदमी भेजे हैं? हमने वहां किसे भेजा?"

"क्यों, दौलत को भेजा है।"

"तुम्हें याद है कि शरद में हम वहां एक सभा करने के लिए गये थे? वहां से लौटते समय मैं सारे रास्ते उस सामूहिक फ़ार्म के ही बारे में सोचता रहा था। मुझे वहां के सक्रिय कर्मी अच्छे नहीं लगते।"

"तुम्हारा मतलब किनसे है?"

"मिसाल के लिए शाहाबुद्दीन क़ासिमोव को ही ले लो, जिसे हमने तब प्रबंध समिति से अलग किया था। वह कैसा आदमी है—यह बता सकते हो भला?"

"बीच के दरजे का किसान है वह। किसी को याद नहीं कि कभी उसके पास चालीस से ज़्यादा भेड़ें भी रही हों।"

"हां, तो इसी शाहाबुद्दीन क़ासिमोव ने अफ़ग़ानिस्तान से लौटकर आने के पहले मज़ार-ए-शरीफ़ में भेड़ों का एक पूरा रेवड़ बेचा था। अब वह क़सम खाकर कहता है कि भेड़ें उसकी नहीं, उसके ससुर की थीं। जाकर लगा लो पता! और जब वह १९२९ में हमारी तरफ़ आया, तो वह सामूहिक फ़ार्म में तुरंत शामिल हो गया—वही उसके बारे में उत्प्रेरित होनेवाला सबसे पहला आदमी था... या अपने इस दौलत को ही ले लो। देखो, मेरे कहने का बुरा मत मानो, मुख़्तारोव। मैं जानता हूं कि वह सक्रिय कर्मी है, वग़ैरह-वग़ैरह। लेकिन ज़रा मिनट भर के लिए उसकी सक्रियता और प्रबंध कुशलता के बारे में भूल जाओ और एक-दो और छोटी-छोटी बातों पर ग़ौर करो। जब भी कोई ऐसी बात होती है, जिसमें दाल में कुछ काला होता है, तो उसमें दौलत का होना अवश्यंभावी होता है। ख़्वाजायारोव का मामला ही ले लो। ख़्वाजायारोव को सामूहिक फ़ार्म में किसने लिया? दौलत ने। उसे पार्टी की सदस्यता देने की किसने सिफ़ारिश की? दौलत ने। सम्मानपत्र के लिए ख़्वाजायारोव का नाम किसने प्रस्तावित किया? दौलत ने। फिर इसी ख़ून की बात को ले लो। अकेला गवाह कौन है? दौलत... इसलिए साथी गालियेव, जहां तक गवाहों का सवाल है, मेरी राय है कि आप बहुत ही सावधानी बरतें। अच्छा होगा कि आप ख़ुद हैदर का ही बयान लेने की कोशिश करें।"

मिस्टर क्लार्क को दुभाषिया चाहिए

छः एक्स्केवेटर नहर के ऊबड़-खाबड़ तल को खुरच और कुतर रहे थे। खड़े किनारों के बीच रात बिजली के किरण-पुंजों से कटी काली नदी की तरह बह रही थी। सीटी की एक थरथराती आवाज़ आई और एक्स्केवेटरों ने मानो आज्ञा का पालन करते हुए अपने सिर घुमा दिये और आतुर प्रतीक्षा में खड़े हो गये।

पत्थरों पर फिसलता हुआ क्लार्क नीचे आ पहुंचा।

"क्या बात है? क्या यहां भी चट्टान है?"

अंद्रेई सावेल्येविच ने चट्टान की परत का एक टुकड़ा उठाया, अंगूठे के नाख़ून से उसको तोड़ा, उसे अपनी उंगलियों में मसला और अपनी जीभ पर रख लिया।

"कांग्लोमेरेट है। स्वाद में तो मिट्टी जैसा है, पर खोदना शुरू करो, तो चट्टान है। यह एक्स्केवेटरों के बस की चीज़ नहीं है–डोल टूटने के अलावा और कुछ नहीं होगा। विस्फोट से उड़ाने के अलावा और कोई चारा नहीं है।"

"लेकिन यह स्तर है कितना बड़ा?"

"सत्रहवीं चौकी तक चला गया है। नौ-दस मीटर खोदते-न-खोदते कंकर ख़त्म हो जाता है और–माफ़ कीजिये–यह हरामी आ जाता है।"

"यह कैसे हो सकता है?" क्लार्क ने अपनी टूटी-फूटी रूसी में कहा। "योजना में कंकर दिखाया गया है। सारी योजना एक्स्केवेटरों के काम पर ही आधारित है। अगर सभी जगह कांग्लोमेरेट है, तब तो सारी योजना गई भाड़ में। क्या यहां भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण नहीं किया गया था?"

अंद्रेई सावेल्येविच ने सहानुभूतिपूर्वक सिर हिला दिया।

"हमारी हालत को तो आप जानते ही हैं–बस, जल्दी, जल्दी, जल्दी! आज नींव बनाना शुरू की नहीं कि कल छत भी डाल दो। तो बस, बात यही है–सारा काम जल्दी-जल्दी में किया गया है, और क्या! दो-तीन जगह बरमाई की उन्होंने–वहां उन्हें कंकर के सिवा कुछ नहीं मिला... और अब भुगतना हमें पड़ रहा है!"

"इसका जल्दी से कोई सरोकार नहीं। काम जल्दी भी करना चाहिए और अच्छा भी। रफ़्तार और गुण–हां! रफ़्तार नहीं और गुण नहीं, तो समाजवाद भी नहीं।"

अंद्रेई सावेल्येविच हतप्रभ होकर अमरीकी की तरफ़ देखता रह गया और कुछ नहीं बोला।

"हर चौकी में से अलग-अलग जगह से इस कांग्लोमेरेट के नमूने लीजिये और उन्हें प्रयोगशाला में ले जाइये। कल शाम चार बजे तक उनका विश्लेषण हो जाना चाहिए। मैंक-६ को तुरंत तेरहवीं चौकी पर

श्रौर व्यूसाइरस-७० को नवीं चौकी पर भेज दीजिये। हम वहां कोशिश करके देखते हैं।"

सुबह तक बारह एक्स्केवेटर खोदते-खोदते ठोस चट्टान तक पहुंच गये थे श्रौर काम को बंद करके खड़े हो गये थे।

नहर-तल से बाहर श्राते समय क्लार्क के मुंह से रूसी श्रौर श्रंग्रेजी गालियों की एक न समझ में श्रानेवाली झड़ी बरस रही थी। एक शिला पर बैठकर उसने मुख्य इंजीनियर के लिए एक रिपोर्ट घसीटी श्रौर उसे हरकारे के हाथ दूसरे सैक्शन भेज दिया। बरसात ख़त्म होने के बाद सारा ही मैनेजमेंट वहीं चला गया था। हरकारे को रवाना करने के बाद क्लार्क बस्ती की तरफ़ चल दिया। बारकें श्रब ठेठ नहर-मुख तक श्रा गई थीं, रेगिस्तान में जा घुसी थीं श्रौर एक टेढ़ी-मेढ़ी श्रृंखला में नदी के साथ-साथ दूर तक चली गई थीं।

नहर-मुख से कंक्रीट-मिश्रकों की बंधी हुई घड़घड़ की श्रावाज़ श्रा रही थी। क्लार्क ने थकान से श्रपनी श्रांखों पर हाथ फेरा। नहर-मुख का निर्माण शीघ्र ही पूरा हो जायेगा। लेकिन खुदाई का काम? वह रास्ते से होकर जानेवाले एक छोटे से चश्मे पर झुक गया श्रौर उसके पानी से श्रपने चेहरे को ताज़ा किया। चट्टान के उस पार से नदी की श्रविराम गरज सुन पड़ रही थी। क्लार्क इस शोर का इतना श्रादी हो गया था कि उसकी तरफ़ श्रब उसका ध्यान भी नहीं जाता था। इस समय भोर की भंगुर निस्तब्धता में उसे सुन वह यक़ायक़ यह सोच नहीं पाया कि वह किस चीज़ की श्रावाज़ है।

बस्ती धीरे-धीरे जाग रही थी। रंगीन बनियानें पहने लोग बारकों की दहलीज़ों पर नज़र श्राने लगे थे। प्रातःकालीन वायु की पारदर्शी नीलिमा को धुंधलाता हुश्रा एक ट्रक धड़धड़ाता हुश्रा निकल गया।

इंजीनियरों श्रौर टेकनिशियनों की नई बारक, जिसमें क्लार्क बस्ती से श्राकर रहने लगा था, श्रौर बारकों से कुछ हटकर, बिलकुल नदी के किनारे पर स्थित थी। क्लार्क ने दरवाज़े को धकेला।

"कौन, जिम?"

"हां, मेरी। तुम्हें जगा तो नहीं दिया मैंने?"

"क्या श्रभी-श्रभी श्रा रहे हो?" श्रांखें बंद किये-किये ही पोलोज़ोवा ने श्रपने बिखरे बालों को ठीक करते हुए कहा।

"हां। सारी रात मुसीबतों का सामना करना पड़ा।"

"क्यों, कुछ हो गया क्या?" पोलोज़ोवा ने अंग्रेज़ी में पूछा।

"दस मीटर की गहराई पर हमें कंकर की जगह कांग्लोमेरेट मिला है। उसे उड़ाना होगा।"

"बहुत है?"

"मोटे हिसाब के अनुसार कम से कम सत्तर हज़ार घन मीटर है।"

"क्या कह रहे हो! इससे तो काम में ज़बरदस्त रुकावट आ जायेगी।"

"कम से कम तीन महीने की।"

"लेकिन यह हुआ कैसे? क्या किसीको यह पहले मालूम नहीं था?"

"यही तो मैं भी जानना चाहता हूं। सर्वेक्षण-कार्य के आधार पर, योजना के अनुसार, यह सब कंकर होना चाहिए।"

"रुको ज़रा, मैं ज़रा चाय बना लाऊं... हां, तो अब क्या होगा?"

"देखते हैं। मैंने कोर्श को रिपोर्ट भेज दी है। वही फ़ैसला करेंगे। पूरी लाइन पर मशीनों को बदलना होगा।"

उसने एक साफ़ काग़ज़ उठाया और मेज़ पर अपनी कोहनियां टिकाकर उसे अंकों की तिरछी लकीरों से भरने लगा।

"बैठो, जिम। चाय पियो। बहुत परेशान हो?"

"कोई ख़ुश होने की बात तो है नहीं। हम वक़्त पर काम को ख़त्म नहीं कर पायेंगे।"

"न, एकदम आशा नहीं छोड़ देनी चाहिए। शायद कोई हल निकल ही आये। और मज़दूर भेज दिये जायेंगे।"

"हमारे पास मशीनें नहीं हैं। हमारे एक्स्केवेटर इस चट्टान के लिए किसी काम के नहीं।"

उसने क्लार्क के हाथ को सहलाया।

"मुझे बहुत ख़ुशी है कि तुम्हें निर्माण-कार्य की सफलता की इतनी सच्ची, इतनी गहरी चिंता है। तुम तो पूरे सोवियत इंजीनियर हो गये हो—तीन दिन से शेव तक नहीं की तुमने!"

उसने लजाकर अपनी ठोड़ी पर हाथ फेरा।

"माफ़ करना, मेरी, मैं अभी जाकर शेव करता हूं। यह कोई सोवियतपन नहीं है—यह कोरा बेढंगापन है।"

"सुनो, जिम, मुझे तुम्हें दो ख़बरें सुनानी हैं—एक अच्छी है और एक ख़राब। कल तुम मुझे दिन भर नहीं मिले, इसलिए कल नहीं सुना सकी।"

"अच्छा, तो बुरी ख़बर क्या है?"

"तुम अच्छी ख़बर पहले क्यों नहीं सुनना चाहते? मुझे कोम्सोमोल समिति के ब्यूरो की सदस्या नियुक्त किया गया है। ख़ुश हो, न?"

"क्यों नहीं! और बुरी ख़बर क्या है?"

"मेरा तबादला दूसरे सैक्शन को किया जा रहा है। हमें कुछ समय के लिए अलग होना पड़ेगा—शायद निर्माण-कार्य के पूरा होने तक।"

"तुम्हारा कौन तबादला कर रहा है और क्यों?"

"कोम्सोमोल समिति। मर्री का दुभाषिया चला गया है। नया दुभाषिया मंगवाने की कोई तुक नहीं है—उसके आते-आते दो महीने निकल जायेंगे। और यहां मेरे अलावा और कोई नहीं है। यह रहा पहला कारण—यद्यपि मुख्य कारण नहीं। मुख्य कारण यह है कि मुझे दूसरे सैक्शन की कोम्सोमोल इकाई का सचिव बना दिया गया है। जरा सोचो तो, कितना बड़ा, कितना दिलचस्प काम है यह!"

"हां, देख तो रहा हूं कि तुम बहुत ख़ुश हो।"

"मुझे यह सोचकर बुरा लग रहा है कि हम लोग साथ-साथ नहीं रह पायेंगे। लेकिन जहां तक ख़ुद काम का सवाल है, मैं बहुत ख़ुश हूं। तुम समझ नहीं पा रहे हो कि कोम्सोमोल संगठन मुझपर कितना विश्वास कर रहा है। इस इकाई में एक सौ बीस सदस्य हैं। बल्कि मुझे तो थोड़ा डर भी लग रहा है कि मैं इस काम को कर पाऊंगी या नहीं।"

"क्या तुम सचमुच वहां जाना चाहती हो? मर्री की दुभाषिया बनकर?"

"क्या मतलब कि जाना चाहती हूं? क्या मैंने बताया नहीं कि मुझे नियुक्त किया जा चुका है? मैं आज ही जा रही हूं। तुम नाराज़ हो? अरे जिम, नाराज़ नहीं होना चाहिए। जरा समझदारी की बात करो। आख़िर जगह कोई दूर भी तो नहीं है—कुल बीस किलोमीटर का ही तो फ़ासला है। हम हफ़्ते में कम से कम एक बार तो मिल सकते हैं—शायद ज्यादा ही। वैसे भी, अब भी हम कभी-कभी कई-कई दिन तक आपस में नहीं मिल पाते हैं। तुम इस बात को क्यों नहीं समझना चाहते कि मेरे लिए यह एक बहुत बड़ा और बहुत ज़िम्मेदारी का काम है, जो पहली बार मेरे सुपुर्द किया जा रहा है और जिसे मुझे किसी भी क़ीमत पर अच्छी तरह से करना है। हां, जिम!"

"इस बात से मैं इनकार नहीं करता कि मर्री की स्थायी सहायिका

का काम करना किसी भी युवती के लिए बहुत दिलचस्प होगा। लेकिन यह मैं जरूर समझता हूं कि मेरी पत्नी के लिए यह काम अरोचक और अनुपयुक्त होगा।"

"जिम! क्या बात है यह! ईर्ष्या? इस तरह की बातें करते तुम्हें शर्म आनी चाहिए! क्या तुम सचमुच नाराज़ हो?"

"मैं सिर्फ़ नाराज़ ही नहीं हूं—मैं इसके सख़्त ख़िलाफ़ हूं।"

"लेकिन भला क्यों? इसलिए कि हम साथ-साथ नहीं रह पायेंगे या इसलिए कि मैं मर्री के साथ काम करूंगी?"

"दोनों कारणों से। मेरा ख़याल है कि मर्री को रूसी सीखने का उतना ही मौक़ा मिला था, जितना कि मुझे। और अगर उसने रूसी सीखने की परवाह नहीं की, तो यह कोई वजह नहीं है कि जिसके लिए मेरी बीवी मेरा घर छोड़कर उसकी दुभाषिया का काम करे।"

"'मेरी बीवी, मेरा घर!' थोड़ा-थोड़ा करके तुम्हारी पुरानी भाषा फिर उभरकर आने लगी है। इसे सुनना कोई बहुत अच्छा नहीं लगता। हां, तो जिम! पगले मत बनो! तुम भी कैसे शेख़ीबाज़ हो! तुमने रूसी सीख ली और मर्री ने सीखना नहीं चाही! पहली बात तो यही है कि क्या तुम अपने दिल पर हाथ रखकर यह कह सकते हो कि अगर तुम्हें मुझसे प्यार न हो गया होता, तो तुम रूसी इतनी जल्दी सीख लेते? इसके अलावा, जब तुम बीमार पड़े हुए थे, तब तुम्हें रूसी सीखने का काफ़ी वक़्त मिल गया था। दूसरी बात यह है कि अगर—मान लो, मर्री रूसी सीखना न चाहे, तो उसे इसके लिए कौन मजबूर कर सकता है? मैनेजमेंट उसे दुभाषिया देने के लिए प्रतिबद्ध है। दुभाषिये के बिना वह काम नहीं कर सकता और मुफ़्त ही तनख़ा पायेगा। सारा सवाल यह है—मर्री की यहां ज़रूरत है या नहीं? तुम ख़ुद ख़ूब अच्छी तरह से जानते हो कि उसकी ज़रूरत है, इसलिए उसके लिए ऐसी परिस्थितियां प्रदान करना ज़रूरी है, जिनमें वह हमारे लिए अधिक से अधिक काम कर सके। मर्री की दुभाषिया बनना 'तुम्हारी बीवी'—जैसा कि तुम कहना चाहते हो—के लिए भी कोई हेठी या बेइज़्ज़ती की बात नहीं है।"

"ठीक है, अगर मैनेजमेंट मर्री को दुभाषिया देने के लिए प्रतिबद्ध है, तो वह मुझे भी दुभाषिया देने के लिए उतना ही प्रतिबद्ध है। मैं भी वैसा ही अमरीकी हूं, जैसा कि वह।"

"अभी कल ही जब तुमसे यह कहा गया था कि तुम सामान्य अमरीकी हो, तो तुम बुरा मान गये थे। सिनीत्सिन से यह किसने कहा था, 'मैं अमरीकी नहीं हूं, मैं सोवियत हूं'? और इसके अलावा, मेरे प्यारे जिम, तुम अब बहुत बढ़िया रूसी बोल सकते हो और तुम्हें दुभाषिये की बिलकुल भी ज़रूरत नहीं है।"

"मैंने रूसी सीख ली है, यह मेरा अपना मामला है–किसी और को इससे कोई गरज़ नहीं। मुझे भी रूसी सीखने के लिए कोई मजबूर नहीं किया गया था और दुभाषिया पाने का मुझे भी उतना ही अधिकार है, जितना कि मर्री को। जब तक तुम्हारे किसी और काम पर जाने का मतलब तुम्हारा घर छोड़कर जाना नहीं था, मैंने कोई आपत्ति नहीं की थी। लेकिन अगर वे–मानो मेरे रूसी सीख लेने और दुभाषिये के बिना काम चला लेने के इनाम के तौर पर–मुझसे मेरी बीवी को छीन लेना और उसे मर्री की दुभाषिया बना देना चाहते हैं, तो मैं आज ही सीधा मोरोज़ोव के पास जाऊंगा और मांग करूंगा कि मुझे मेरी दुभाषिया वापस दी जाये और क्या!"

"तुम्हारी बीवी को कौन छीन रहा है? तुम यह क्या बकवास कर रहे हो? तुम्हें बस, सोने को नहीं मिल पाया है और इसलिए लगता है कि शायद तुम यह नहीं समझ पा रहे हो कि तुम कहां हो। मोरोज़ोव के पास जाने की कोशिश मत करना–अपनी और मेरी जगहंसाई कराना चाहो, तो बात दूसरी है। अब तक तुम्हें जान लेना चाहिए था कि सोवियत क़ानून के मुताबिक़ पति और पत्नी एक ही जगह एक दूसरे के मातहत काम नहीं कर सकते हैं। और यह इनाम कौनसा है, जिसकी तुम बातें कर रहे हो? क्या बात है–रूसी बोलना सीख ली है, तो समझते हैं कि सारे निर्माण-संगठन पर कोई बहुत बड़ा एहसान कर दिया है और हर किसीको इनका शुक्रगुज़ार होना चाहिए! भारी उपकार किया है–एक दुभाषिये की बचत कर दी है!"

"मैं अभी इतनी अच्छी रूसी नहीं बोलता कि दुभाषिये के बिना काम चला सकूं।"

"तुम किसको बहकाने की कोशिश कर रहे हो? मोरोज़ोव को? निर्माण-संगठन को? पार्टी को? शर्म नहीं आती तुम्हें! गार्हस्थ्य की पवित्रता का उल्लंघन हो गया है! देखो, कुछ महीनों के लिए बीवी को

अलग करना चाह रहे हैं—और फ़ौरन ही इनकी सारी सोवियत भावनाएं भी इन्हें छोड़कर चली गयीं। अब अपने 'घर-संसार' की रक्षा के लिए छोटे-छोटे टुच्चे झूठ बोलने से भी इनकार नहीं करते!"

"हंसी उड़ाना चाहो, तो जितनी चाहे उड़ा लो। लेकिन मेरा ख़याल है कि लोग साथ-साथ रहते हैं, तो उन्हें एक दूसरे की भावनाओं का कुछ लिहाज़ करना चाहिए। मैं तुम्हें बरज रहा हूं—तुम कहीं भी नहीं जाओगी! समझीं?"

"अहा, आपको शुरू से ही इसी तरह बातें करनी चाहिए थीं, फिर बहस और झगड़े का सवाल ही नहीं उठता। मैं भी कैसी पागल हूं कि मन में कुछ नहीं रखा, बता दिया कि मैं कितनी ख़ुश हूं, कोम्सोमोल की बात, अपने को मिले ज़िम्मेदारी के काम की बात बता दी। और बदले में क्या सुना—सिर्फ़ एक बात—'मेरी बीवी मेरे घर से नहीं जा सकती'। आप शायद यह समझते हैं कि हमारे देश में और हमारे यहां की हालतों में भी 'मेरी बीवी' की उपाधि आपको मेरे साथ चीज़-वस्तु जैसा वर्ताव करने का अधिकार दे देती है। अगर हां, तो आप ग़लती कर रहे हैं। आप इस उपाधि को वापस ले सकते हैं। जब हमने साथ-साथ रहना शुरू किया था, तब आपने अपनी शर्तें नहीं बताई थीं और मेरा इस उपाधि को इतनी बड़ी क़ीमत पर ख़रीदने का कभी भी कोई इरादा नहीं था। मैं आपके साथ तब तक रही, जब तक यह समझती रही कि आप सचमुच हम ही लोगों में एक हैं। अब देखने में आता है कि आपके सारे सौ फ़ीसदी सोवियत रुझान कोरे बाह्य आवरण के सिवा और कुछ नहीं थे। ज़रा सा कुरेदा नहीं कि आपमें छिपा क्षुद्र और टुच्चा निम्न-पूंजीवादी बाहर निकल आया। नमस्कार, मिस्टर क्लार्क, अगर आपको रूसी के अपने अधूरे ज्ञान के कारण दुभाषिये की ज़रूरत पड़ती है, तो मेहरबानी करके अपने-आप तलाश कर लीजिये।"

"अगर तुम जा रही हो, तो फिर लौटकर आना संभव नहीं रहेगा। मेरी राय है कि तुम इस बात पर अच्छी तरह से विचार कर लो।"

"सलाह के लिए शुक्रिया। मैं सोच चुकी। अगर आपको तकलीफ़ न हो, तो मेरी जो कुछ चीज़ें हैं, उन्हें ड्राइवर से दूसरे सैक्शन भिजवा दीजिये। अच्छा, नमस्कार, मिस्टर क्लार्क।"

...खिड़की के कांच पर एक मक्खी विषादपूर्ण स्वर में भिनभिना रही

थी। खिड़की से वक़्श नदी दिखाई देती थी। भिनभिनाती हुई मक्खी कांच के ऊपर चढ़ती जा रही थी। न, वह मक्खी नहीं थी, वह तो एक बड़ी, पतली कमरवाली धारीदार भिड़ थी। वह लगातार भिनभिनाती हुई हठधर्मी के साथ ऊपर चढ़ती ही चली जा रही थी। लगता था, जैसे भिड़ दो स्वतंत्र भागों से मिलकर बनी है—एक नन्हा सा ट्रैक्टर और उसके पीछे जुड़ी एक नन्ही सी गाड़ी। मेज़ पर अलंकृत प्यालों में रखी चाय ठंडी हो गई थी। क्लार्क ने पेंसिल उठाई, आंकड़े लिखे काग़ज़ को पास खींचा और अपने हिसाब की जांच करने लगा। अंकों की पंक्तियां उसकी आंखों के आगे बारिश की बूंदों की तरह तिरछी होकर नाच रही थीं। उसने काग़ज़ को मोड़कर अपनी जेब में रख लिया। किसीने बाहरी दरवाज़े को खटखटाया।

"क्या अमरीकी इंजीनियर यहीं रहते हैं?"

"क्यों, क्या बात है?"

"मुख्य इंजीनियर आपसे फ़ौरन मिलना चाहते हैं।"

"ठीक है। मैं अभी आता हूं।"

बारक से निकलने के बाद पोलोज़ोवा यंत्रवत मुख्य सेक्शन की तरफ़ चल दी। अभी समय ज़्यादा नहीं हुआ था। कोम्सोमोल समिति के कार्यालय में शायद अभी कोई न हो। और दूसरे सेक्शन जानेवाली कार अभी काफ़ी देर तक नहीं जायेगी। पोलोज़ोवा नदी के साथ-साथ जा रही थी। अपमान की कड़ुवाहट से उसके भिंचे हुए सूखे होंठ थर-थर कांप रहे थे, उसकी आंखें झुलसानेवाली शुष्कता से जल रही थीं। "मैं उस जैसे आदमी के साथ इतने दिन भला कैसे रह ली?"

मुख्य सेक्शन पहुंचने के पहले उसे अचानक नदी के खड़े तट के किनारे एक शिला पर हरी टोपी पहने एक ठिंगना सा लड़का दिखाई दिया।

"करीम!"

"अरे, मरियम?"

"तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"तीसरे सेक्शन से आया था। आज काफ़ी काम करना होगा। अब सोने का कोई फ़ायदा नहीं, इसलिए आकर नदी के किनारे पर बैठ गया। ठंडा है यहां और धूल भी नहीं है। लेकिन तुम इतनी सुबह-सुबह कहां जा रही हो?"

"मैं?.. मैं भी जरा घूमने के लिए निकल आई थी। सुबह कितनी ख़ामोशी होती है–मुझे यह बहुत पसंद है। मैं दूसरे सैक्शन जाने के लिए कार का इंतज़ार कर रही हूं।"

"तो क्या तुम वहां आज से ही काम करना शुरू कर रही हो?"

"हां, टालूं क्यों? बात यह है कि इकाई अब लगभग पूरी तरह से नेतृत्वहीन है। जितनी जल्दी काम संभाला जाये, उतना ही अच्छा है।"

"हां, बात तो ठीक है।"

बातचीत आगे नहीं बढ़ पाई। पोलोज़ोवा सोच रही थी–अच्छा हो कि रुकूं नहीं, कह दूं कि कहीं जाने की जल्दी में हूं। लेकिन फिर उसने मन में कहा कि कहीं भी जाने की जल्दी नहीं है और इस तरह जाना अटपटा लगेगा। उसने अपनी आंखें नासिरुद्दीनोव की तरफ़ उठाईं:

"करीम!"

"हां, मरियम?"

"सुनो, करीम। मैं बहुत दिन से तुमसे बात करना चाह रही थी..." वह झूठ बोली और चुप हो गई।

"किस बारे में, मरियम?"

"बात यह है कि पता नहीं क्यों, पिछली बार अच्छा नहीं रहा... मतलब, उस समय, जब तुम आये थे... मैं किसी तरह तुम्हें सब कुछ बताना चाहती थी कि बात क्या है, लेकिन वक़्त ही नहीं मिला... नहीं, मैं ठीक कह रही हूं–बात यह नहीं है कि वक़्त नहीं मिला, बल्कि यह है कि उसके बारे में बात करना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। ख़ैर, अब मैंने तुम्हें बताने का निश्चय कर लिया है और बात शुरू भी कर दी है, लेकिन... लेकिन यह नहीं समझ पा रही हूं कि कैसे कहूं।"

"लेकिन उसकी बात ही क्यों करती हो, मरियम?"

"नहीं, उसकी बात करनी है मुझे, ज़रूर करनी है। बात यह है कि उस वक़्त–पटरी बिछाते समय–हम उत्तेजना के ऐसे वातावरण में, इतने हिल-मिलकर, इतने तनावपूर्ण वातावरण में रह रहे थे कि... न, मेरा यह मतलब नहीं, लेकिन समझते हो न कि सामूहिक उत्साह के ऐसे क्षण बार-बार नहीं आते। ज़िंदगी में कभी भी मैं उस एक सप्ताह को नहीं भूल पाऊंगी। मैं तुमसे सच कह रही हूं, करीम, जब तक ज़िंदा हूं, उसे कभी-कभी नहीं भूल पाऊंगी!"

"मैं भी कभी नहीं भूलूंगा, मरियम।"

"और, जानते हो, तब मैं तुम्हें, तुम सबको बहुत प्यार करती थी। न, यह भी ठीक नहीं है—मैं अब भी तुम सबको बहुत प्यार करती हूं। और, करीम, मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं... एक साथी के नाते तुम्हें बहुत प्यार करती हूं। लेकिन, उन दिनों मैं तुम सब को पहले किसी भी वक़्त की बनिस्बत कहीं ज्यादा प्यार करती थी। और ख़ासकर तुम्हें। क्योंकि तुम उस सब... उस चमत्कार के प्राण थे। ख़ैर, मैं इस बात को कह नहीं सकती, लेकिन तुम समझते हो—आख़िर तुम्हें भी ऐसा ही लगता था। और, समझ रहे हो, न, मुझे हमारी यह अद्‌भुत रूप से प्रगाढ़ मैत्री तब... उसे मैंने प्यार समझ लिया... जैसे औरत किसी आदमी को प्यार करती है। लेकिन बाद में मैंने अनुभव किया कि बात यह नहीं है, मैं तुम्हें प्यार करती हूं, बेहद प्यार करती हूं, लेकिन दूसरी तरह से। और मेरे ख़याल से यह अच्छा ही हुआ कि इस बात को मैंने हम लोगों के साथ-साथ रहना शुरू करने के पहले ही महसूस कर लिया।"

"मेरा भी यही ख़याल है, मरियम।"

"और तुम मुझसे नाराज़ तो नहीं हो?"

"मैं तुमसे क्यों नाराज़ होऊंगा? क्या कोई भी अपने को किसी ऐसे आदमी से प्यार करने के लिए मजबूर कर सकता है, जिसे वह प्यार नहीं करता?"

"देखो, करीम, उस बार जब तुम आये थे, तब यह सब समझाना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। और इसलिए यह और भी मुश्किल था कि तभी मुझे एक दूसरे आदमी से प्यार हो गया था। लेकिन हो सकता था कि तुम मुझे एक बुरी, बदचलन लड़की समझ लेते।"

"मैंने ऐसा नहीं समझा था, मरियम।"

"मैं जानती हूं कि तुम बहुत अच्छे साथी हो करीम... और, फिर, बात कुछ ऐसी हुई कि यह आदमी हमारा साथी नहीं, बल्कि एक विदेशी इंजीनियर था। तुम यह भी सोच सकते थे कि मैंने, एक कोम्सोमोली ने एक अच्छे और विश्वसनीय साथी को एक विदेशी पूंजीवादी की ख़ातिर छोड़ दिया है।"

"हमारे लड़कों ने यह सवाल उठाया था, मरियम, और मुझसे पूछा था कि किसी भी कोम्सोमोली को पराये वर्ग के आदमी के साथ रहने का

अधिकार है या नहीं, लेकिन मैंने उनसे कहा कि अगर मरियम उसके साथ रह रही है, तो इसका यही मतलब है कि वह कोई पराये वर्ग का नहीं, बल्कि हमारा ही आदमी है। और अगर वह अभी पूरी तरह से हम जैसा नहीं भी हो पाया है, तो मरियम उसकी पूर्ण रूप से हम जैसा ही बनने में मदद करेगी।"

"क्या तुमने उनसे यही कहा था?"

"हां। इसके बाद उन्होंने इस सवाल को फिर कभी नहीं उठाया।"

"तुमने ठीक कहा था, करीम।"

नीचे पानी मस्ती से कलकल कर रहा था। नहर-मुख की तरफ़ से कंक्रीट मिश्रकों की बंधी हुई घड़घड़ाहट की आवाज़ आ रही थी, मानो घाट पर धोबिन कपड़े फटक रही हो।

"और तुम, मरियम, अच्छी हो? सुखी हो?"

"हां... जानते हो, जो तुमने कहा, वह बिलकुल ठीक है। बेशक, वह अभी पूरी तरह से हम जैसा नहीं बन पाया है, लेकिन मेरा ख़याल है कि मैं उसकी हम जैसा ही बनने में मदद कर सकती हूं और करूंगी।"

"तुम्हें पक्का यक़ीन नहीं है, मरियम?"

"हम में से कोई भी ग़लती कर सकता है... लेकिन मैं नहीं समझती कि मैंने ग़लती की है।"

"अगर तुम्हें कभी भी समर्थन और सहायता की ज़रूरत पड़े, मरियम, तो यह मत भूल जाना कि तुम्हारे पास अच्छे और विश्वसनीय साथी हैं।"

"मैं इस बात को हमेशा याद रखूंगी, करीम।"

"मैं समिति के कार्यालय जा रहा हूं। अच्छा, मरियम, मैं चला। दूसरे सैक्शन में अपना काम ख़ूब अच्छी तरह से संभालना। मैं दसेक दिन में आकर देखूंगा कि तुम किस तरह से काम चला रही हो।"

"अलविदा, करीम। मेरा ख़याल है कि मैं उसे ठीक ही संभाल लूंगी।"

इंजीनियर ऊर्ताबायेव का नया प्रयोग

उस शाम को मोरोज़ोव के फ़्लैट में एक विशेष बैठक हुई। ख़ुद मोरोज़ोव के अलावा क्लार्क ने वहां कौर्श, ऊर्ताबायेव और विस्फोटन-विशेषज्ञ – एक जार्जियाई–को पाया, जिसका नाम याद रखना बहुत मुश्किल था।

मोरोज़ोव ने उन्हें संक्षेप में उस ख़बर से अवगत करवाया, जिसे वे पहले से ही जानते थे कि अभी तक कल्पित सत्तर हज़ार घन मीटर की जगह दो लाख चालीस हज़ार घन मीटर कांग्लोमेरेट हटाना होगा। इस प्रकार पैदा हुई समस्या के सभी संभव हलों पर उन्हें तुरंत विचार करना होगा। मोरोज़ोव ने शिष्टतापूर्वक क्लार्क की राय मांगी। क्लार्क ने अपने कंधे मचका दिये :

"मैं तो यही नहीं समझ पा रहा हूं कि इस मामले में भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण किसने किया," उसने रूसी में कहा, "यह कोरी भूल नहीं है, यह शुद्ध अंतर्ध्वंस है।"

"आपका कहना बिलकुल सही है। चेका ने हाल ही में योजना संगठनों और कृषि की जन-कमिसारियत के मध्य एशियाई विभागों में तोड़-फोड़ करनेवाले एक संगठन का पता लगाया है और इस संगठन की शाखाएं सिंचाई प्रणाली तक भी फैली हुई थीं। इसमें शक नहीं किया जा सकता कि जब हमारे निर्माण-कार्य की योजना बनाई जा रही थी और प्रारंभिक सर्वेक्षण किये जा रहे थे, उस समय तोड़-फोड़ की कई कार्रवाइयां जान-बूझकर की गई थीं। इन कार्रवाइयों का सीधा लक्ष्य था हमारे निर्माण-कार्य को ख़राब से ख़राब स्थिति में डाल देना और उसकी प्रगति में अधिकतम बाधा डालना। किया क्या जाये – वर्ग संघर्ष तो वर्ग संघर्ष ही है और इस मामले में जो चीज़ दांव पर है, वह है कपास के बारे में सोवियत संघ की आर्थिक स्वतंत्रता। असल में तो मैं आपको यह चेतावनी देना चाहता हूं कि निर्माण-कार्य के समाप्त होने के पहले-पहले आप इस तरह के और कई अप्रिय आश्चर्यों का सामना करने की भी आशा कर सकते हैं। आज, सत्रहवीं चौकी पर परीक्षण-बरमाई के दौरान बारह मीटर की गहराई पर पानी मिला। यह एक और चीज़ है, जिसे भूवैज्ञानिक संस्थान के सर्वेक्षक 'नहीं देख पाये' और, ज़ाहिर है कि यह बात भी कांग्लोमेरेट के हटाये जाने के काम में बाधक होगी।"

"मतलब यह है कि हमें विस्फोटन और पानी को पंप करने के काम को साथ-साथ करना होगा?"

"जी हां। काम इतना आगे बढ़ चुका है कि अब नहर-रुख़ को तो बदला नहीं जा सकता। हमें काम की योजना का इस तरह पुनर्गठन करना

होगा कि इन अप्रत्याशित कठिनाइयों के बावजूद उसे नियत समय पर ही पूरा किया जा सके।"

क्लार्क ने अपनी जेब से एक मुड़ा हुआ काग़ज़ निकाला।

"मैंने यह हिसाब लगाया है कि हमारे पास जो मशीनरी है, उससे कितना काम किया जा सकता है। यह आवश्यक है कि दूसरे सैक्शन से दो और एक्स्केवेटर यहां लाये जायें। इतनी गहराई पर मिट्टी को दो मंजिलों में ही निकालना होगा—एक एक्स्केवेटर नीचे और एक ऊपर। इस तरह की व्यवस्था करके हम काम को योजना के एक महीने के बजाय दो महीनों में पूरा कर सकते हैं—अलबत्ता पानी को पंप करके निकालने में होनेवाला संभव विलंब इसके बाहर है।"

क्लार्क ने पेंसिल को रख दिया और अपने हिसाब का काग़ज़ मोरोज़ोव को दे दिया।

"हां, योजना तो एकदम व्यावहारिक है," मोरोज़ोव ने सराहना की। "बस, इसे इस तरह ढालना होगा कि सारा काम एक महीने में किया जा सके।"

"यह असंभव है। हमारी मशीनें इतनी गहराई के लिए एकदम अनुपयुक्त हैं। वे इससे ज्यादा काम नहीं कर सकतीं।"

"इसी बात पर तो हमें विचार करना है। आपकी क्या राय है, साथी कीर्श?"

"मैं उस योजना से सहमत हूं, जो साथी ऊर्तावायेव ने बनाई है और मुझे दिखा भी चुके हैं।"

"बताइये, साथी ऊर्तावायेव।"

ऊर्तावायेव ने भी अपनी जेब से एक काग़ज़ निकाला।

"मेरी योजना इस विचार पर आधारित है कि कांग्लोमेरेट को निकालने से संबद्ध सारा काम उन एक्स्केवेटरों को हाथ लगाये बिना, जो दूसरे सैक्शन पर काम कर रहे हैं, एक महीने के भीतर ख़त्म हो जाना चाहिए। नहीं तो एक आकस्मिकता का सामना करते-करते हम दूसरी आकस्मिकता पैदा कर देंगे।"

"यह असंभव है। बस, मेंक-६ एक्स्केवेटरों को छोड़कर हमारे एक्स्केवेटर ज्यादा से ज्यादा सात से ग्यारह मीटर की गहराई तक ही काम कर सकते हैं। इस सैक्शन में नहर का तल अठारह मीटर गहरा है।"

"मुझे मालूम है, साथी क्लार्क। मगर ये आंकड़े फ़र्म द्वारा निर्धारित किये हुए हैं–यह कहिये कि सूचीपत्र के आंकड़े हैं। हमारे एक्स्केवेटरों की पहुंच को उनके केबलों की लंबाई में वृद्धि करके काफ़ी बढ़ाया जा सकता है। अगर हम ऐसा कर लें, तो सामान्य मेंक-५ या ब्यूसाइरस-५० भी सात के बजाय बारह मीटर और मेंक-६ अठारह मीटर की गहराई से मिट्टी उलीचने लगेगा। इससे किसी हद तक एक्स्केवेटरों को जोड़ों में काम करना नहीं पड़ेगा और हमारे लिए दूसरे सेक्शन में काम कर रहे एक्स्केवेटरों के बिना काम चलाना संभव हो जायेगा। केबलों की लंबाई को साढ़े तेरह मीटर तक, और एक्स्केवेटरों की क़िस्म के अनुसार कुछ मामलों में तेईस मीटर तक बढ़ाया जा सकता है। यह रहा एक उपाय। दूसरा उपाय यह रहा–जैसा कि आप जानते ही हैं, मेंक एक्स्केवेटरों के डोल हमारी मिट्टी के बहुत उपयुक्त नहीं हैं और उनकी उत्पादकता बहुत कम है। इसलिए मेरी राय है कि उनकी जगह कुछ तो टूटे हुए ब्यूसाइरसों के डोल,–जिनकी समाई कहीं अधिक है–०.७ और ०.६ घन मीटर के मुक़ाबले १.५ घन मीटर–और कुछ हमारी वर्कशापों के बने डोल लगा दिये जायें। इससे एक्स्केवेटरों की उत्पादकता काफ़ी बढ़ जायेगी–औसतन बीस, बल्कि पचीस हज़ार घन मीटर और कुछ मामलों में तीस हज़ार घन मीटर प्रति एक्स्केवेटर तक हो जायेगी। मैं जो आंकड़े दे रहा हूं, वे काल्पनिक नहीं हैं। उनकी मैं काम के दौरान पुष्टि कर चुका हूं, वे कई एक्स्केवेटरों पर किये प्रयोगों पर आधारित हैं।"

"मैं कुछ कहना चाहता हूं।"

"कहिये।"

"साथी ऊर्तावायेव, आप एक अच्छे इंजीनियर हैं। आप ख़ुद जानते हैं कि हर मशीन की अपनी निर्धारित क्षमता होती है, जिसके आगे नहीं जाया जा सकता। मतलब यह कि आगे जाया तो जा सकता है, लेकिन ऐसा करने से मशीन जल्दी ख़राब होती है। उसकी ज़िंदगी आधी रह जाती है। यह मशीन के उपयोग का बर्बर और विवेकहीन तरीक़ा है। मैं इस बात की ज़रा भी ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता कि इन हालतों में क्या होगा।"

"प्रिय साथी क्लार्क," ऊर्तावायेव मुसकराया, "हम अपनी आयात की हुई मशीनरी के साथ कई ऐसी बातें करते हैं, जिनकी विदेशी फ़र्में कभी कल्पना भी नहीं कर सकतीं। नहर-मुख और छियालीसवीं चौकी पर हमारे

कंक्रीट मिश्रक हर पारी में सूचीपत्र में उल्लिखित संख्या से दो गुना मिश्रण तैयार कर रहे हैं। अगर हमने नियमों का सख़्ती से पालन किया होता, तो हम खुदाई कार्य में ड्रैग-लाइनों का भी उपयोग नहीं कर सकते थे। हमें अपनी सारी ड्रैग-लाइनें वापस भेज देनी चाहिए थीं और डोलों के आने तक रुके रहना चाहिए था।"

"ड्रैग-लाइनों का उपयोग आवश्यक है। मशीनों से ज़रूरत से ज्यादा काम लेना और उनका उस गहराई पर उपयोग करना, जिसके वे उपयुक्त नहीं हैं, आवश्यक नहीं है।"

"यह भी आवश्यक है। नहीं तो हम निर्माण-कार्य को समय पर पूरा नहीं कर पायेंगे।"

"मूल्यवान मशीनों का विवेकहीन उपयोग करके उनका सत्यानाश कर देने से काम को एक महीना देर से ख़त्म करना बेहतर है। आपकी सरकार उनके लिए सोना देती है और आपके देश में अन्य निर्माण-कार्यों में भी उनकी आवश्यकता पड़ेगी।"

"साथी क्लार्क," कोर्श ने बीच में कहा, "यह बहुत ही पुराना विवाद है और यह उसे फिर शुरू करने का समय नहीं है। एक बहुत ही सीधी-सादी बात को समझने की कोशिश कीजिये—हमारे देश के लिए, जो किसी भी क्षण बाहर से आक्रमण की अपेक्षा कर सकता है, मूल्यवान मशीनरी के विवेकपूर्ण और मितव्ययपूर्ण उपयोग के मुक़ाबले न्यूनतम समय के भीतर अपने औद्योगिक आधार का निर्माण करना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। जब हमारे औद्योगिक आधार का निर्माण हो जायेगा, तब हम इस मशीनरी का ख़ुद उत्पादन कर सकेंगे। फिर, अगर आप हमारे निर्माण-कार्यों का अध्ययन करें, तो ज्यादा गौर से देखने पर आपको पता चलेगा कि मशीनरी के उपयोग का यह तरीक़ा, जो पहली नज़र में बर्बर लगता है, अंततः असल में इतना विवेकहीन भी नहीं है। जटिलतम विदेशी मशीनरी की जानकारी हासिल करने में हमारा लक्ष्य बिलकुल उसी तरह की मशीनरी का ही हमारे देश में उत्पादन करना नहीं है, बल्कि और भी ज्यादा परिष्कृत मशीनें बनाने के लिए और ऐसी मशीनें बनाने के लिए जानकारी हासिल करना है, जो हमारी आवश्यकताओं के अधिक अनुकूल हों। उनके साथ प्रयोग करके उनको घिसते समय हम साथ ही साथ इन नई, परिष्कृत मशीनों के निर्माण का रास्ता भी तैयार कर रहे हैं। इन मशीनों की क्षमता का

निर्धारण हमारे मौजूदा काम के नये, अश्रुतपूर्व पैमाने से किया जायेगा। दूसरे शब्दों में, विदेशी साज-सामान का हमारे द्वारा बर्बर उपयोग – पहली नज़र में चाहे यह बात कितनी ही विरोधाभासपूर्ण क्यों न प्रतीत हो – अत्यंत आधुनिक प्रविधि के विकास को उत्प्रेरित कर रहा है..."

"ख़ैर, साथियो, इस झगड़े को किसी और समय के लिए स्थगित कर देना चाहिए," मोरोज़ोव ने टोकते हुए कहा। "फ़िलहाल इस बात पर विचार करना ज़्यादा सही रहेगा कि इस समय हम जिस मुश्किल में फंस गये हैं, उससे कैसे निकला जाये। जहां तक मैं हिसाब लगा पाया हूं, साथी ऊर्ताबायेव, आपकी योजना भी खुदाई कार्य के एक महीने में पूरा हो जाने को सुनिश्चित नहीं करती है।"

"बाक़ी बात विस्फोटन-विशेषज्ञ और बेलदारों पर निर्भर करती है। अगर वे गहन कार्य के एक तूफ़ानी दौर का ऐलान कर देते हैं और नियत लक्ष्य को पचास प्रतिशत बढ़ा देते हैं – जो बिलकुल संभव है – तो हम कांग्लोमेरेट की खुदाई का काम एक महीने के भीतर ख़त्म कर सकते हैं।"

"बस?" मोरोज़ोव ने सबकी तरफ़ देखते हुए कहा, "तो साथी कोर्श, आप कृपया साथी ऊर्ताबायेव और साथी क्लार्क के साथ मिलकर कांग्लोमेरेट संबंधी कार्य की विस्तृत योजना बनाकर कल तक तैयार कर लीजिये, ताकि परसों उसके आधार पर अलग-अलग टुकड़ियों की अपनी-अपनी योजनाएं तैयार की जा सकें..."

बदक़िस्मत सामूहिक फ़ार्म

देर गये रात को कमरा बंद करके कोमारेंको ने रेडियो खोल दिया। मास्को से इस बहुकंठी बक्से के प्राप्त होने के बाद से तो उसने टेबल-टेनिस तक खेलना बंद कर दिया था और काम के बाद घर लौटकर वह घंटों अपने रेडियो सेट से ही उलझा रहता था। अपनी पत्नी की प्रचंड आपत्तियों के आगे झुककर – जिसकी नींद हर आधे घंटे के बाद सनसनाहट और गरज की कर्णभेदी आवाज़ों से खुल जाया करती थी – कोमारेंको ने अपने कमरे के दरवाज़े पर एक कंबल तो लटका दिया, पर अपने इस मन-बहलाव को बंद नहीं किया। संगीत से उसे कभी भी कोई बहुत लगाव नहीं

रहा था और इसलिए किसी भी एक प्रोग्राम को अंत तक सुने बिना वह लगातार स्टेशनों को बदलता रहता था। उसे तो इन गाती और गरजती लहरों की तलाश में भटकने की प्रक्रिया ही सम्मोहित करती थी। डायल पर नॉब को घुमाती उसकी उंगलियों के दबाव से रेडियो खांसने, सनसनाने और खरखराने लगता—कहीं से टूं-टूं—टुन-टुनन-टुन—टूं-टूं की आवाज़ें आने लगतीं, बेतार के तारों पर रहस्यमय और अबूझ संदेश दौड़ने लगते, पृथ्वी उसकी उंगलियों की हर हरकत के साथ सीटी बजाते हुए उसके आदेश का पालन करने लगती और वीणा के तारों की तरह तना हुआ उसका हर अक्षांश अपनी-अपनी अबोधगम्य भाषा में गाने लगता।

कोमारेंको ने नॉब को घुमाया। आवाज़ के टुकड़ों को बहाकर लाती लंबी सनसनाहट एक बार फिर सुनाई देने लगी। आवाज़ें जमकर और फूलकर आख़िर अंग्रेज़ी में कही जानेवाली बात में परिणत हो गईं।

दरवाज़े पर कंबल हिला। मुख़्तारोव ने कमरे में प्रवेश किया और चकित होकर दरवाज़े के पास ही खड़ा रह गया।

"आओ, आओ!" रेडियो की चीख़ों के ऊपर चिल्लाते हुए कोमारेंको ने कहा। "यह म्याऊं-म्याऊं सुन रहे हो, न? अंग्रेज इस बात का रोना रो रहे हैं कि उनकी हालत ख़राब हो रही है। रुको ज़रा, हम अभी पेशावर भी पकड़ लेते हैं।"

"इस सबको अलग करो। मुझे तुमसे काम है।"

कोमारेंको ने रेडियो बंद कर दिया।

"क्या नई बात हो गई?"

"मैं तुमसे 'लाल अक्तूबर' सामूहिक फ़ार्म के बारे में कुछ बातें करना चाहता हूं।"

"सदा तैयार—जैसे हमारे बाल पायनियर साथी कहते हैं।"

"बात यह है—वहां जल्दी ही बोआई शुरू होनेवाली है। दूसरी जुताई कुछ दिनों के भीतर ख़त्म हो जायेगी। अब पता चला है कि सामूहिक फ़ार्म की प्रबंध समिति ने यह आदेश दिया है कि सबसे बढ़िया मिट्टी के तीस हैक्टर क्षेत्र पर, जो मिस्री कपास के उपयुक्त है, गेहूं बोया जाये, और कपास वे उस मिट्टी पर बोने की सोच रहे हैं, जिसके बारे में मालूम है कि वह उसके लिए बहुत अच्छी नहीं है..."

"इसी सबूत की तो ज़रूरत थी।"

"क्या मतलब?"

"मैंने कहा कि इसी सबूत की तो जरूरत थी। याद है, मैंने एक महीने पहले तुम्हें इस सामूहिक फ़ार्म के बारे में चेतावनी दी थी?"

"हां, तुमने ठीक ही कहा था।"

"कोई बात नहीं, ऐसे निराश मत हो – इस सबका नतीजा अच्छा ही निकलेगा। लेकिन क्या सामूहिक कृषकों को इसके बारे में मालूम है और वे कुछ नहीं कह रहे हैं?"

"उनमें से बहुतों को तो मालूम भी नहीं है। प्रबंध समिति की बनाई योजना का ग्राम सभा में अनुमोदन किया गया था। लेकिन, पिछली बार की ही तरह, सभा जान-बूझकर ऐसे वक़्त पर बुलाई गई, जब ज़्यादातर सामूहिक कृषक उसमें शामिल नहीं हो सकते थे। ख़ैर, कुछ भी हो, औपचारिक रूप से योजना का अनुमोदन किया गया है। सामूहिक कृषकों का समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रबंध समिति यह अफ़वाहें उड़ा रही है कि ज़्यादा से ज़्यादा अगस्त तक फिर लड़ाई होगी। समिति के लोगों का कहना है, 'अगर अच्छी जमीन पर कपास बोयेंगे, तो सब को भूखों मरना पड़ेगा। अगर लड़ाई छिड़ गई, तो अनाज का प्रदाय बंद हो जायेगा। हमें अपना ध्यान रखना चाहिए और इस बात को सुनिश्चित करना चाहिए कि क़िशलाक़ में कम से कम इतना अनाज हो कि अगले वसंत तक चल सके।' और ज़्यादातर दहक़ान अनपढ़ हैं और ऊपर से कोई बहुत विश्वसनीय भी नहीं हैं – सभी बीच के दरजे के किसान हैं। उन्हें बहकाना कोई ज़्यादा मुश्किल नहीं है। मजेदार बात यह है – जानते हो, हमें इसके बारे में किसने बताया है?"

"रहीमशाह आलिमोव ने?"

"तुम्हें कहां से पता चल गया?"

"मुझे? मुझे और सूत्रों से पता चल गया..."

"क्या रहीमशाह ने ही बताया था?"

"न, रहीमशाह ने नहीं, किसी और दहक़ान ने। लेकिन इससे तुम्हें क्या फ़र्क़ पड़ता है?"

"लेकिन तुमने इसके बारे में मुझे क्यों नहीं बताया?"

"मुझे आज ही पता चला।"

"तो, तुम्हारा इस बारे में क्या ख़याल है? तुम्हें रहीमशाह की याद

है? वही, जो सामूहिक फ़ार्म का पहला प्रधान था और जो यूरोपीय हलों को दिखाने के लिए पड़ा रहने देता था और उनकी जगह लकड़ी के हलों का इस्तेमाल किया करता था?"

"हां, तो इसमें अचरज की क्या बात है? तब से दो साल गुज़र चुके हैं। अगर इतने दिन में भी हमारे दहक़ानों ने कुछ भी विकास नहीं किया, तो सोवियत सत्ता का लाभ ही क्या हुआ? अच्छा, यह बताओ, तुमने रहीमशाह को क्या हिदायत दी है?"

"अभी कोई नहीं। मैंने उससे बस, यही कहा है कि सामूहिक कृषकों से अलग-अलग बात करके समझाये और योजना को ज़िला अधिकारियों के हस्तक्षेप के बिना बदलवाने की कोशिश करे।"

"बिलकुल ठीक है। और फ़िलहाल कोई और क़दम मत उठाओ। नहीं, तो सारा तमाशा बिगड़ जायेगा। हद से हद अगर वे योजना को बदलवाने में कामयाब न हो सकें, तो कुछ ऐसा करें, जिससे इस तीस हैक्टर की बोआई सबसे बाद में ही शुरू हो।"

"मैंने उससे क़रीब-क़रीब यही कहा है।"

"बिलकुल ठीक है। अच्छा, सुनो। सामूहिक फ़ार्म में सोवियत समर्थक दहक़ानों का एक केंद्र बन रहा है—इसमें रहीमशाह आलिमोव, हाकिम-बदनसीब, बेवा ज़ुमुर्रुद, मंसूर नासिरोव और पांच-छः और दहक़ान हैं, जो इतने वर्ग-चेतन नहीं हैं। यह एक बिलकुल स्वाभाविक और सामान्य प्रक्रिया है। अपना ध्यान इसीकी तरफ़ लगाओ। निस्संदेह, सामूहिक फ़ार्म में किये जानेवाले राजनीतिक जागरण के सभी काम में इसी केंद्र का माध्यम के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए। मैं तुमसे बेवा ज़ुमुर्रुद की ख़ास तौर पर सिफ़ारिश करता हूं—वह बहुत ही समझदार औरत है।"

"जानते हो, इस सामूहिक फ़ार्म के कारण तो अपने पर ही थूकने को मन करता है।"

"कोई बात नहीं, ऐसी बातें होती ही रहती हैं। बहुत परेशान मत हो। वहां कुछ सफ़ाई करनी होगी। सक्रिय कर्मियों की संख्या बढ़ रही है—और यही मुख्य बात है। तुम्हारे उस तीस हैक्टर पर एक पूरा कम्युनिस्ट केंद्र पैदा हो रहा है, मेरे यार, और फिर भी तुम ख़ुश नहीं हो! आओ, बैठो, अब पेशावर सुनते हैं..."

भू-स्खलन

मुख्य नहर की खड़ी चट्टानी दीवार के ऊपर, तटबंध की संकरी मेंड़ पर कुछ लोग इकहरी लकीर में जा रहे थे। सबसे आगे-आगे कमीज़ के बटन खोले हुए और पसीने से तर मोरोज़ोव पत्थर से पत्थर पर उछलता चला जा रहा था। उसके पीछे-पीछे और लगभग साथ ही साथ भागता और उसकी छलांगों की भग्न लय को पकड़ने की निष्फल चेष्टा करता नीली गास्कन टोपी पहने एक हांफता हुआ आदमी था। क्लार्क और अंद्रेई सावेल्येविच सबसे पीछे थे। टोपी पहने आदमी एक विदेशी लेखक था—एक विदेशी कम्युनिस्ट पार्टी का युवा सदस्य,—जो एक बड़े उदार अख़बार का संवाददाता बनकर यहां आया था। विदेशी लेखक को सोवियत संघ आये छः महीने हो चुके थे, वह कई और निर्माण-परियोजनाएं देख चुका था और ख़ासी अच्छी रूसी बोलने लगा था। इस तमाम अवधि में वह एक अदम्य उल्लासोत्तेजना की अवस्था में रहता आया था। जो कुछ भी देखने में आता था, वह इतना भव्य, इतना शानदार था कि अत्यंत उदात्त भावाकुल भाषा ही उसे अभिव्यक्त कर सकती थी।

ताजिकिस्तान पहुंचने के पहले लेखक को अपने अख़बार के संपादक का एक पत्र मिला था। पत्र द्वारा बड़ी शिष्ट भाषा में उसे सूचित किया गया था कि उसके लेख अपने रचयिता की चारित्रिक चमत्कारपूर्ण शैली के बावजूद सोवियत रूस के जीवन का बहुत पक्षपातपूर्ण चित्रण करते हैं। संपादक ने उससे "महान रूसी प्रयोग" को अधिक वस्तुनिष्ठ दृष्टि से देखने का अनुरोध किया था। पत्र में लिखा था कि नहीं तो लेखक की मौलिक और प्रांजल प्रतिभा को सराहने के बावजूद अख़बार को उसके लेखों को बड़े अफ़सोस के साथ अस्वीकृत करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, क्योंकि वह अपने पाठकों की अपेक्षाओं की तुष्टि करने का प्रयत्न करता है, जो नये रूस के बारे में पूर्णतः वस्तुपरक और निष्पक्ष सूचना की मांग करते हैं।

लेखक कोई कम परेशान नहीं था। वह इस अख़बार से अपने संबंध तोड़ना नहीं चाहता था, जो उसे व्यापक जनता के सामने अपने विचारों को रखने का अवसर प्रदान करता था और जो एक बहुत बड़ा और उत्तरदायित्वपूर्ण काम था। वह उन लोगों को यह बात नहीं समझा सकता था कि यहां के, उत्तेजना के आवेग से छलकते जीवन के बारे में निष्पक्षता

के साथ लिख पाना असंभव है। उसने निश्चय किया कि वह कमियों और त्रुटियों की तरफ़ ज्यादा ध्यान देगा, लेकिन नई निर्माणस्थली पहुंचने के साथ वह अपने इस संकल्प के बारे में बिलकुल भूल गया। यह देश उसे आकर्षित करता था, जिसके कपास के मैदानों पर उसे तैमूर लंग के हाथों चुनवाये हुए शवस्तूप दिखाये गये थे और जहां मैदान को चीरती हुई सिलसिलेवार नालियां हज़ारों साल पहले निर्मित सिंचाई प्रणाली के अवशेषों को दर्शा रही थीं। उसकी कल्पना के आगे इस रेगिस्तान में किसी अनाम ख़ान की इच्छा से एकत्रित, घर बने कुदालों से धरती की सख़्त पपड़ी में दसियों किलोमीटर नहरें खोदते और उनके ऊंचे किनारों पर मिट्टी और पत्थर के भारी-भारी बोझों को अपनी नंगी पीठों पर ढोते अधनंगे दासों की भीड़ों की तसवीर आकर खड़ी हो जाती थी।

आज इसी जगह पर उसने संसार में अकेले स्वतंत्र लोगों द्वारा अत्याधुनिक प्राविधिक साधनों से चकरा देनेवाली गहराई की एक नहर को बनते देखा। लेखक के दिमाग़ में दसियों तुलनाएं और ऐतिहासिक सादृश्यताएं रूप लेने लगीं। उसके सिर के ऊपर विंचों की पक्षियों जैसी चीख़ों के साथ एक्स्केवेटरों के लदे हुए डोल मंडरा रहे थे। उसके सामने की तरफ़ बारूद से उड़ाये चट्टानी स्तर के बड़े-बड़े टुकड़े इनसानी हाथ की मदद के बिना कनवेयर के सहारे ऊपर जा रहे थे। लेखक कनवेयर के पास जाकर खड़ा हो गया और नीचे की तरफ़ देखने लगा। कनवेयर का पट्टा उसे गैलेरी लफ़ायेत की याद दिला रहा था। उसके पीछे कहीं से स्किप-हॉइस्ट के चलने की धड़धड़ आवाज़ आ रही थी।

मोरोज़ोव ने मशीनों की निर्धारित क्षमता और समाजवादी प्रतियोगिता के फलस्वरूप मजदूरों द्वारा प्राप्त रेकार्ड तोड़नेवाले आंकड़ों का हाथों हाथ उल्लेख करते हुए विदेशी लेखक को कामकाजी सटीकता से साज़-सामान की जानकारी दी। लेखक ने अपनी नोटबुक में जल्दी-जल्दी कुछ नोट घसीटे। मोरोज़ोव ने उनकी तरफ़ देखा नहीं, लेकिन अगर उसने ऐसा किया होता, तो शायद उसे अचरज होता। बिखरे हुए आंकड़ों के साथ-साथ उसे पारिभाषिक शब्दों की भी एक लंबी और अव्यवस्थित तालिका नजर आती – फ़लड-बैंड, ड्रैग-लाइन, बंकर, डंप-कार, आदि-आदि। लेखक इन खनकते शब्दों को याद करके, जिन्हें वह समझता भी नहीं था, प्रविधि का ज्ञान प्राप्त कर रहा था।

सोवियत संघ में तीन महीने ही रहने के बाद यह बात वह समझ चुका था कि कंक्रीट के सांचों को छाते के दस्ते जैसी चीज़ समझकर समाजवादी निर्माण का समर्थन करना, या भापघन की पताकाओं पर बने एक भाप-योजक दंड से जुड़े हथौड़े जैसी धारणा रखना और वर्ग-विहीन समाज की बातें करना असम्भव है। तब उसने बड़ी उत्सुकता के साथ प्राविधिक ज्ञान प्राप्त करना शुरू किया और अपने दिमाग़ में सैकड़ों कठिन पारिभाषिक शब्दों को ठूंसने लगा, जो इस देश में तो रोजमर्रा की बातचीत में रोटी और पानी की तरह आम हो गये थे, लेकिन जो उसके दिमाग़ में तुरंत लोहे और इस्पात की अविराम धड़धड़ाहट में बदल जाते थे...

जिस जगह मोरोज़ोव रुक गया था, वहां नहर की गहराई सोलह मीटर जमा बारह मीटर – तटबंध की ऊंचाई थी। नीचे, असमतल चट्टानी दर्रे के पेंदे में, मज़दूर चट्टान के बारूद से उखड़े टुकड़ों को सब्बलों और गैंतियों से तोड़-तोड़कर हथगाड़ियों पर लाद-लादकर ले जा रहे थे और उन्हें बंकरों के खुले मुंहों में उलट रहे थे।

"ज़रा इधर देखिये," मोरोज़ोव ने विदेशी की तरफ़ मुड़कर कहा, "यह हमारी सबसे बढ़िया टुकड़ियों में से एक है। यह पूरी तरह से फ़ारसी मज़दूरों की ही टुकड़ी है, जो अपने देश की ख़ुशगवार हुकूमत से बचने के लिए भागकर यहां आ गये हैं। चट्टान की खुदाई में इनका जवाब नहीं। ताजिकिस्तान को इन्होंने घर बना लिया है, जहां हर दहक़ान इनकी भाषा को समझता है। आपको मालूम ही होगा कि ताजिक और फ़ारसी लोग एक ही भाषा बोलते हैं और उसमें बहुत थोड़ा – ख़ासकर उच्चारण का ही – अंतर है। इन लोगों ने अपने को यहां स्वेच्छा से एक टुकड़ी में संगठित कर लिया है और निर्माण-कार्य की समाप्ति तक यहीं काम करने का क़रार दिया है।"

"फ़ारसी उत्प्रवासी!" लेखक ने उल्लसित होकर कहा। "कितनी मज़ेदार बात है! यह कहिये कि आपके यहां तो सचमुच की अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी बनी हुई है।"

"अंद्रेई सावेल्येविच, हमारी निर्माणस्थली पर कितनी जातियों के लोग काम करते हैं?"

"ट्रेड-यूनियन समिति के आंकड़ों के मुताबिक़ सोलह जातियों के।"

"रुकिये ज़रा, हम अभी हिसाब लगा लेते हैं। ताजिक – एक, उज़्बेक –

दो, क़ज़ाख़ – तीन, क़िर्गिज़ – चार, रूसी – पांच, उक्रइनी – छः, लेज़्गिन – सात, ओस्सेतिन – आठ, फ़ारसी – नौ, हिन्दुस्तानी – दस, – हां, हमारे यहां कुछ हिंदुस्तानी भी काम कर रहे हैं। अफ़ग़ान – ग्यारह, – अफ़ग़ानों की कई टुकड़ियां हैं – यहां और तीसरे सैक्शन में। बीस फ़ी-सदी ड्राइवर तातार हैं, – लीजिये, बारह तक तो हम पहुंच भी गये। मैकेनिकल वर्कशॉपों में जर्मन और पोल लोग भी हैं – चौदह। इंजीनियरों और टेकनिशियनों में जार्जियाई, आर्मीनियाई और यहूदी भी हैं – मतलब सत्रह, फिर दो अमरीकी इंजीनियर हैं, जिनमें से एक सैक्शन-प्रमुख है – अठारह। भला, कोई और भी है क्या?"

"तुर्क भी तो हैं, साथी मोरोज़ोव।"

"हां, तुर्क और तुर्कमान भी हैं – बीस जातियों के लोग। ट्रेड-यूनियन समिति के आंकड़े किसी काम के नहीं हैं। तो, साथी लेखक, यह इस बात का एक छोटा-सा और सजीव उदाहरण है कि हमारे देश में, हमारे किसी भी जनतंत्र में, किस तरह सभी जातियों के मेहनतकश लोगों के संयुक्त प्रयासों से समाजवाद का निर्माण किया जा रहा है..."

नीचे, नहर के पेंदे में, खड़ी चट्टानी दीवार के नीचे फ़ारसी मज़दूर बंधी हुई चोटों से पत्थर के टुकड़े कर रहे थे। अचानक दीवार का एक हिस्सा टूट गया और एक बड़ी सी शिला बिना आवाज़ किये नीचे खिसक आई और कुछ मज़दूरों के ऊपर जा पड़ी। एक चीख़ भी नहीं सुन पड़ी। कुछ मज़दूरों को बस, छलांग लगाकर बच पाने का ही समय मिल पाया और वे मानो स्तंभित हुए खड़े हो गये। शिला के नीचे से छूटने के निष्फल प्रयास में मछलियों की तरह तड़पते और छटपटाते दो आदमी नज़र आ रहे थे।

विदेशी लेखक अचरज में मुंह बाये देख रहा था और यह नहीं समझ पा रहा था कि हुआ क्या है। सबसे पहले इस तरफ़ मोरोज़ोव का ही ध्यान गया।

"अरे! देखो-देखो, आदमी दब गया – एक नहीं..."

वह कनवेयर की नाली में होकर नीचे की तरफ़ लपक गया। उसके पैरों के नीचे से फिसलते पत्थर आवाज़ करते हुए उसके आगे-आगे लुढ़कते जा रहे थे। क्लार्क और अंद्रेई सावेल्येविच भी उसके पीछे-पीछे लपके।

विदेशी लेखक तट के ऊपर अकेला रह गया। वह इस गरदनतोड़

ढाल पर दौड़ते हुए नीचे जाने का फ़ैसला न कर सका – तीस मीटर की ऊंचाई से अपनी कमर पर फिसलकर नीचे जाने का विचार उसे भाया नहीं। वह फक पड़ा चेहरा लिये और अपनी गरदन को तान-तानकर नीचे देखता वहीं खड़ा रहा। नीचे मौत एक बलि ले भी चुकी थी। विदेशी लेखक युद्ध में जा चुका था और वहां अनेक लोगों को मारे जाते देख चुका था। मौत को देखकर उस पर कोई बहुत असर नहीं पड़ा। जो उसने अभी-अभी देखा था, कारख़ानों की भाषा में उसे "दुर्घटना" कहा जाता है। उसने मन में कहा कि अपने लेखों में निर्माणस्थली का वर्णन करते समय उसे इस दुर्घटना का अवश्य उल्लेख करना चाहिए। कम से कम तब उस पर वस्तुपरकता की कमी दिखाने का आरोप नहीं लगाया जा सकेगा। वह यह तक सोचने लगा कि वर्णन के लिए किन शब्दों का उपयोग किया जाना चाहिए – "यह भगीरथ प्रयास बलिदान लिये बिना नहीं रहता। अचलायमान प्रकृति अपने अधिराज्य में समाजवाद के अनधिकार प्रवेश का उसी प्रकार प्रतिरोध करती है, जैसे वह पहले पूंजीवाद के प्रवेश का करती थी..." उसने अपनी जेबों को टटोला और यह जानकर उसे बहुत खीज हुई कि चट्टानों पर उछलते समय उसकी पेंसिल कहीं गिर गई है।

नीचे मजदूरों की भीड़ इकट्ठा हो गई थी। शिला के नीचे सब्बल घुसाकर उसे उठाना उनके बस के बाहर का काम साबित हुआ, यद्यपि लगभग बीस लोगों ने उसके लिए मिलकर कोशिश की थी। इसके लिए जरूरी था कि पहले उसे गैंतियों से तोड़ा जाये और टुकड़े-टुकड़े करके हटाया जाये। नीचे दबे लोगों को चोट न पहुंचे, इसके लिए शिला को दूसरी तरफ़ से – दीवार की तरफ़ से – तोड़ना था। दीवार का जो हिस्सा गिर गया था, उसने किनारे के तले एक गहरा कोटर बना दिया था। इस कोटर के ऊपर जो आगे निकली हुई चट्टान लटक रही थी, वह किसी भी क्षण नीचे गिरकर मदद करनेवालों को दबा सकती थी। मजदूर अनिश्चय में खड़े हुए थे।

"यारो!" मोरोजोव चिल्लाया। "हम उन्हें इस तरह मरने के लिए नहीं छोड़ सकते! यह चट्टान मुलायम है – दो-तीन चोटों में ही टूट जायेगी। हम सोवियत मजदूर अपने साथियों को अपनी आंखों के सामने नहीं मरने दे सकते!"

मोरोजोव किनारे के नीचे जा खड़ा हुआ। अपने सबसे पास के मजदूर के हाथ से सब्बल छीनकर उसने चट्टान पर पूरे जोर से चोट की। तीसरी

चोट के बाद चट्टान चटक गई। क्लार्क, अंद्रेई सावेल्येविच और तरेलकिन की टुकड़ी के पांच-छः और मज़दूर उसकी मदद करने के लिए लपके।

उनके संयुक्त प्रयास से चट्टान को कई टुकड़ों में तोड़कर अलग खिसका दिया गया। उसके नीचे से चार लोशों को खींचकर निकाला गया। चट्टान ने एक आदमी की टांग और एक का बायां कंधा तोड़ दिया था, तीसरे मजदूर की हंसली और जांघ टूट गई थी। चौथा मजदूर एक कुचले हुए और लहूलुहान पिंड में परिणत हो चुका था।

अंद्रेई सावेल्येविच ने टूटी हुई टांगवाले फ़ारसी को अपनी कमर पर लादा और लड़खड़ाते और ठोकर खाते हुए उसे ढाल के ऊपर ले गया। क्लार्क और एक रूसी मज़दूर ने दूसरे घायल को उठाया और वहां से ले गये। तीसरे को तरेलकिन की टुकड़ी के दो मजदूर उठाकर ले गये। अपने मृत साथी के शरीर को फ़ारसियों ने ख़ुद उठा लिया। पास की एक टुकड़ी के एक ताजिक ने अपना बिल्कुल नया चोग़ा उतारा और उसे ज़मीन पर बिछा दिया। मौन आभार के साथ फ़ारसियों ने मृतक को उस पर लेटा दिया और उसके कुचले हुए चेहरे पर चोग़े की बांहों को मोड़ते हुए उसे ढंककर लाश को कनवेयर की तरफ़ ले चले। अन्य मज़दूर भीड़ बनाकर उनके पीछे चल दिये। अभी वे लोग कोई तीस ही क़दम गये होंगे कि पीछे से एक शुष्क घरघराहट की आवाज़ आई और आगे की तरफ़ निकली हुई चट्टान धड़ाम से नीचे आ गिरी। सभी ने घूमकर देखा।

जलूस धीरे-धीरे आगे बढ़ चला।

कनवेयर के पास पहुंचकर मोरोज़ोव ने अपने दोनों हाथों को मुंह पर लगाया और चिल्लाकर कहा:

"काम बंद करो!"

हथगाड़ियों की कर्णकटु चूं-चूं अचानक बंद हो गई। मिट्टी और पत्थर के आख़िरी टुकड़े ऊपर जा रहे । उनके बाद कनवेयर का ख़ाली पट्टा आ गया।

"रोको इसे!"

कनवेयर रुक गया। शव लिये जलूस उसके पास आकर खड़ा हो गया।

"कनवेयर पर लेटा दो!" मोरोज़ोव ने आदेश दिया।

मज़दूरों ने कनवेयर के चौड़े पट्टे पर नये चोग़े में लिपटी लाश को सावधानी के साथ लेटा दिया, जिसका कुचला हुआ चेहरा चोग़े की मुड़ी

हुई बांहों से ढंका हुआ था। लगता था, जैसे मृतक ने अपने क्षत चेहरे को हाथों की ओट में ले रखा है।

"चलाओ!"

कनवेयर का पट्टा धीरे-धीरे चलने लगा। बहुरंगी चोग़े में लिपटा शरीर बिना रुके और शान के साथ ढलवां किनारे के ऊपर जाने लगा। अठारह एस्केवेटरों के साइरन एकसाथ क्रंदन करने लगे। अचानक, मानो किसी इशारे पर, अठारहों एक्स्केवेटरों के बूम अपने ख़ाली डोलों के साथ ऊपर उठ गये और जैसे सलामी देते हुए निश्चल खड़े हो गये। चटकीले रंग के चोग़े में लिपटा शरीर धीरे-धीरे ऊपर पहुंच गया...

नहर-तल से निकलकर आता मोरोज़ोव ऊपर आते ही विदेशी लेखक से टकरा गया, जो उससे मिलने के लिए लपकता हुआ आ रहा था।

"अपूर्व! अद्‌भुत!" विदेशी लेखक बार-बार कहे जा रहा था। उसकी आंखें जगमग-जगमग कर रही थीं।

"क्या अद्‌भुत है?" मोरोज़ोव ने नीली टोपीवाले की तरफ़ अबूझ आंखों से देखा।

"अद्‌भुत थी! कैसी शवयात्रा थी! कितनी शानदार थी! महान फ़्रांसीसी क्रांति के जनरलों को भी इतना मान न मिला होगा।"

"ओह!.." मोरोज़ोव बड़बड़ाया। उसे अपने इस ऊबाऊ अतिथि के होने का अब जाकर ही ध्यान आया। "ज़रा माफ़ कीजियेगा," वह क्लार्क की तरफ़ मुड़ा, "साथी क्लार्क, कृपया आठवीं चौकी तक काम को फ़ौरन बंद करने का आदेश दे दीजिये और मज़दूरों से नहर-तल से आने के लिए कह दीजिये।"

क्लार्क ने उसकी तरफ़ प्रश्नभरी दृष्टि से देखा।

"क्या मतलब? मैं आपकी बात पूरी तरह से समझा नहीं। क्या काम बंद करवा रहे हैं? कब तक के लिए?"

"जब तक हम किनारों को साठ डिगरी के कोण तक नहीं खोद लेते।"

"साथी मोरोज़ोव, आप यह नहीं समझ रहे हैं कि इसका मतलब क्या होगा। इसका मतलब होगा कम से कम तीस हज़ार घन मीटर और पत्थर हटाना। इससे काम के पूरा होने में कम से कम एक महीने का विलंब हो जायेगा।"

"तो क्या आपके ख़याल में मज़दूरों को मारना बेहतर रहेगा?"

"यह पहला मामला था।"

"आप ख़ुद जानते हैं कि यह हरामी चट्टान मिट्टी की तरह सिल्लियों में उखड़ आती है। अभी हमें तीन मीटर और खुदाई करनी है। अगर एक दुर्घटना अब हो गई है, तब तो ज्यादा गहराई पर और भी दुर्घटनाएं होंगी।"

"हां, है तो, फिर भी जितना हमारी योजना में था, किनारा उससे ज्यादा ही ढालू है। इसके अलावा, भला ऐसा कौनसा बड़ा काम होता है, जिसमें सांघातिक दुर्घटनाएं नहीं होतीं..."

"हमारे यहां ऐसा ही होना चाहिए। कृपया आदेश जारी कर दीजिये। शाम को सात बजे बैठक में हिस्सा लेने के लिए मेरे यहां आ जाइये।"

क्लार्क ने सिर झुका लिया और चला गया।

"अगर मैंने आपकी बात को ठीक समझा है, तो इसका मतलब हुआ कि आप काम की मात्रा में तीस हजार घन मीटर की वृद्धि करने का निश्चय कर रहे हैं?" विदेशी लेखक ने मोरोज़ोव से पूछा।

"लगभग।"

"और यह सब मजदूरों के साथ होनेवाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए?"

"तो इसमें अचरज की क्या बात है?"

"बात यह है कि मेरे देश में मालिकों को साज़-सामान पर तीस हजार और ख़र्च करने के बजाय साल में तीन सौ मजदूरों को मारना ज्यादा मंज़ूर होगा।"

"हां, लेकिन यह आपके देश की बात है... आप हंस किस बात पर रहे हैं?"

"मैं बिलकुल भी नहीं हंस रहा हूं। यहां आने के पहले मुझे मेरे अख़बार के संपादक का पत्र मिला था। उसने लिखा है कि उसे मेरे लेखों को अस्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, क्योंकि वे बहुत पक्षपातपूर्ण भावना के साथ लिखे गये हैं। आज इस दुर्घटना को देखकर मैंने इसका अपने अगले लेख में वर्णन करने का निश्चय किया था, ताकि यह दिखा सकूं कि मैं यहां की सिर्फ़ अच्छाइयों को ही नहीं देखता हूं। लेकिन अब अगर मैं ये बातें लिखूं, तो क्या आपके ख़याल में वे इस बात पर विश्वास करेंगे कि वह वस्तुपरक है?"

"आप उन्हें बता दीजिये कि इस निर्माण-कार्य में हम पिछड़ गये हैं—

उन्हें यह सुनकर ख़ुशी होगी," मोरोज़ोव ने कड़वी हंसी के साथ कहा, "और अपने संपादक को लिख दीजिये कि पक्षपातपूर्ण भावना दिखानेवाले आप ही अकेले नहीं हैं। वे हमारे साथियों की पक्षपातपूर्ण भावना से पूछताछ करते हैं, हम पक्षपातपूर्ण भावना से काम करते हैं और इसका नतीजा एक वस्तुपरक तथ्य होता है—क्रांति। अच्छा, नमस्कार! मुझे अभी एक-दो आदेश और जारी करने हैं।"

ज़िंदगी में एक बार तो मरना ही है

तीन घंटे बाद मज़दूरों का एक दल दफ़्तर में क्लार्क से मिलने के लिए आया।

"क्यों, क्या चाहिए?" उन्हें दहलीज़ पर देखते ही अंद्रेई सावेल्येविच चमक गया। "अगर तरेलकिन और कुज़्नेत्सोव भी यहां हैं, तो इसका मतलब है कोई बखेड़ा। क्यों, क्या इरादा है?"

"हमें साथी इंजीनियर से मिलना है," तरेलकिन ने आगे आते हुए क्लार्क की तरफ़ इशारा किया, "यह एक प्रतिनिधिमंडल है।"

"कैसा प्रतिनिधिमंडल? तुम्हारी अपनी ट्रेड-यूनियन समिति है, फिर तुम्हें प्रतिनिधिमंडलों से क्या लेना-देना? बखेड़ा भी तुम आज के दिन ही शुरू कर रहे हो—तुम्हें अपने पर शरम आनी चाहिए!"

"रुकिये ज़रा, अंद्रेई सावेल्येविच," क्लार्क ने उठते हुए कहा, जो विदेशी लेखक को नहर-मुख के निर्माण की योजना समझा रहा था। "हो सकता है कि ये लोग कोई बात सुझाने के लिए आये हों। हमें मज़दूरों की पेशक़दमी को बढ़ावा देना चाहिए।"

"सुझाव!" नाराज़ फ़ोरमैन ने खीझ के साथ कहा। "इनके पास सिर्फ़ एक सुझाव है—काम कम और पैसा ज़्यादा!"

"हां, कहिये, साथियो!"

"जी, बात यह है कि हमने सुना है कि पत्थर की खुदाई के काम को बंद किया जा रहा है और आज की दुर्घटना के कारण किनारों को और ज़्यादा ढालू बनाया जा रहा है। सुना है कि इसकी वजह से निर्माण-कार्य एक महीना बाद में ख़त्म होगा। क्या यह सच है?"

"हां, है तो ऐसा ही," क्लार्क ने जवाब दिया।

"तो, बात यह है कि हम यह कहने के लिए आये हैं कि हम बिलकुल इसी हालत में—किनारों को और ढालू बनाये बिना—स्वयंसेवकों की तरह काम करने के लिए तैयार हैं। और इससे मैनेजमेंट के लिए कोई परेशानी पैदा नहीं होगी। हम लोग स्वयंसेवक हैं, इसलिए इसका यह मतलब है कि हम अपनी मर्ज़ी से ऐसा कर रहे हैं।"

"मैनेजमेंट आपके सुझाव शायद ही स्वीकार करेगा," क्लार्क ने सख़्ती के साथ कहा। वह मज़दूरों के इस अप्रत्याशित निर्णय से उद्वेलित हो गया था, और इस बात से डर रहा था कि कहीं उसकी आवाज़ का कंपन उसकी उत्तेजना को प्रकट न कर दे।

"क्यों स्वीकार नहीं करेगा?" तरेलकिन ने हैरान होकर पूछा। "जो न चाहें, वे काम न करें। हम स्वयंसेवकों की ही पांच-छः टुकड़ियां बना लेंगे। इतना ही चाहिए भी। अगर आप चाहें, तो वे लिखकर दे देंगे कि यह काम वे अपनी मर्ज़ी से कर रहे हैं।"

"ठीक है, मैं निर्माण-प्रमुख को आपके प्रस्ताव के बारे में बता दूंगा। लेकिन मैं फिर कह रहा हूं—मैनेजमेंट शायद ही आपकी जानों को ख़तरे में डालने के लिए तैयार होगा।"

"मैनेजमेंट को हमारे बारे में इस तरह डरने की ज़रूरत नहीं," कुज़्नेत्सोव ने आगे बढ़ते हुए कहा, "हर आदमी को ज़िंदगी में एक बार तो मरना ही है,—है, या नहीं? ख़ुद ही तो वे अख़बारों और सभाओं में हमेशा यह कहते रहते हैं कि निर्माण-कार्य एक मोर्चा है। तो अगर यह मोर्चा है, तो इसका मतलब है कि हमें यहां काम भी ऐसे ही करना है, जैसे मानो मोर्चे पर ही हैं,—है या नहीं? अगर मोर्चे पर कोई ख़तरनाक काम करना होता है,—छापा मारने या टोह लेने के लिए जाना—तो उसके लिए स्वयंसेवक ही जाते हैं। और जो लोग न जाना चाहें, वे पीछे रुक सकते हैं—उन पर कोई ज़बरदस्ती नहीं की जाती। यहां भी यही बात है। अगर लड़के स्वयंसेवक बनकर काम करना चाहते हैं, तो यह उनका अपना मामला है—मैनेजमेंट को इससे क्या लेना-देना है!"

"ठीक है, मैं निर्माण-प्रमुख को आज आपके निर्णय के बारे में बता दूंगा।"

मज़दूर बाहर जाने लगे।

"साथियो," विदेशी लेखक ने उठते हुए कहा, "मैं ग्राप लोगों से हाथ मिलाना चाहता हूं।"

"क्या?" तरेलकिन ग्रौर कुज्नेत्सोव हैरान होकर नीली टोपीवाले ग्रादमी की तरफ़ ग्रांखें फाड़कर देखने लगे।

"मैंने कहा—मैं ग्राप लोगों से हाथ मिलाना चाहता हूं। मैं ग्रापकी वीरता से बहुत प्रभावित हुग्रा हूं—यह समाजवाद की भूमि के ग्रनुरूप ही है।"

तरेलकिन ग्रौर कुज्नेत्सोव ने एक दूसरे की तरफ़ देखा।

"ग्राप किसी ग्रख़बार के ग्रादमी तो नहीं हैं?" तरेलकिन ने चौकन्नेपन से पूछा।

"मैं लेखक हूं।"

"हां, ग्राप लोग ग्रख़बारों में लिखने के उस्ताद होते हैं!" तरेलकिन ने समझदारी के साथ ग्रपना सिर हिलाते हुए कहा। "लेकिन जब कोई ठोस काम करने का सवाल पैदा होता है, तो ग्राप लोग कहीं नजर नहीं ग्राते। ग्रच्छा हो ग्राप जाकर इन मैनेजमेंटवालों से कह दें कि वे बेवकूफ़ी न करें। वे तो सिर्फ़ यह चिल्लाना ही जानते हैं—कम काम, कम परिणाम। ग्रौर जब लोग काम करना चाहते हैं, तो वे उन्हें करने नहीं देते।"

उन्होंने विदेशी के साथ सतर्कता से हाथ मिलाये, ग्रपनी टोपियों को ठीक किया ग्रौर बाहर चले गये।

...विदेशी लेखक को एक इंजीनियर के सुपुर्द करके क्लार्क मोरोज़ोव की तलाश में निकल गया। उसने उसे नहर-मुख पर कंक्रीट के गुण की परीक्षा करने के लिए उसकी जांच करते पाया। कंक्रीट-कर्मियों की उपस्थिति में उससे बातें न करने की इच्छा से क्लार्क ने उससे क्षण भर के लिए ग्रपने साथ ग्राने का ग्रनुरोध किया। वे नहर के किनारे पर जाकर एक लैंप-पोस्ट के पास पत्थर की मुंडेर पर बैठ गये। क्लार्क ने उसे मज़दूरों के प्रतिनिधिमंडल के प्रस्ताव के बारे में संक्षेप में बताया। मोरोज़ोव ख़ामोशी से उसकी बात सुनता रहा।

"ग्रापकी बात पूरी हो गई?"

"हां।"

"तो, सुनिये, यह सब बेकार की बकवास के ग्रलावा कुछ नहीं है। हम स्वयंसेवकों को ऐसी हालतों में काम करने की इजाज़त नहीं देंगे, जो उनकी ज़िंदगी के लिए ख़तरनाक हैं। उनसे कहिये कि वे ग्रपना यह ग्रांदोलन-

आंदोलन बंद करें। आपके फ़ारसी मजदूर पहले ही मेरे पास आकर यह घोषित कर गये हैं कि चूंकि रूसी मजदूर स्वयंसेवक बनकर काम करने के लिए तैयार हैं, इसलिए वे भी यही करना चाहते हैं। आप प्रतिनिधियों से कह दीजिये कि अगर उन्हें अपनी वीरता ही दिखाने का शौक़ है, तो ऐसा वे विना दिखावट के, अपने नियत काम की माता को बढ़ाकर सामान्य परिस्थितियों में भी कर सकते हैं।"

क्लार्क का मुंह लाल हो गया।

"साथी मोरोज़ोव, आप यहां के प्रमुख हैं और निर्णय करने का अधिकार आपको ही है, लेकिन इस बारे में मुझे अपनी राय देने की आज्ञा दीजिये। मेरा ख़याल है कि आप जो कर रहे हैं, वह ठीक नहीं है। मजदूर निर्माण-कार्य को तेज़ी से करना चाहते हैं और आप उन्हें ऐसा करने नहीं दे रहे हैं। यह मज़दूरों के जोश पर ठंडा पानी छिड़कना है। यह मज़दूरों की पेशक़दमी को निरुत्साहित करना है। यह अवसरवाद है।"

मोरोज़ोव ने अधमुंदी आंखों से उसकी तरफ़ देखा।

"और अलग खड़े-खड़े यह देखना कि मज़दूर किस तरह मरते हैं, क्या है – बता सकते हैं आप?"

"मैं अलग नहीं खड़े रहना चाहता," क्लार्क ने और भी लाल होते हुए कहा। "मैं यह कहने के लिए आया था कि इंजीनियरों को मज़दूरों के पीछे नहीं रहना चाहिए और मैं ख़ुद सारे वक़्त मजदूरों के साथ नहर-तल में ही काम करूंगा।"

मोरोज़ोव उठ खड़ा हुआ।

"माफ़ कीजिये, साथी क्लार्क, मैंने आपका अनुचित अपमान किया है। आपकी ईमानदारी, आपकी वीरता और हमारे निर्माण-कार्य के प्रति आपकी गहरी निष्ठा के बारे में मैंने कभी संदेह नहीं किया है। आप जो करना चाह रहे हैं, वह बहुत ही मर्मस्पर्शी और सदाशयता की बात है। इस बात को एक विदेशी इंजीनियर के मुंह से सुनना ख़ासकर हृदयस्पर्शी है। लेकिन आप और आपकी इच्छा के प्रति पूरा सम्मान रखने के बावजूद निर्माण-प्रमुख और आपका वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते मैं इस प्रस्ताव को क्रियान्वित करने की अनुमति नहीं दूंगा। अभी कुछ ही पहले आपने मुझे अवसरवादी कहा था और मैं आपसे नाराज़ नहीं हुआ था। मेरा ख़याल है कि नाराज़

ग्राप भी नहीं होंगे। मुझे ख़ुशी है कि ग्रापने हमारी राजनीतिक शब्दावली को इतनी जल्दी सीख लिया है, लेकिन मुझे लगता है कि ग्राप ग्रभी उसके मतलब को पूरी तरह से नहीं समझे हैं। मजदूरों की पेशक़दमी एक शान-दार चीज है, लेकिन हमारे यहां मजदूर वर्ग के ग्रगुग्रा दस्ते – कम्युनिस्ट पार्टी – के होने का ग्रौर इस बात का कि पार्टी ने हमें देश का ग्रौर उसके निर्माण-कार्य का नेतृत्व करने के लिए भेजा है, एकमात्र कारण यही है कि हम इस पेशक़दमी को ठीक दिशा में मोड़ सकें। ग्रवसरवाद, प्यारे साथी क्लार्क, न्यूनतम प्रतिरोध की नीति है। कई बार ऐसा होता है कि ग्रवसरवादी वह व्यक्ति नहीं होता, जो मजदूरों की ग़लत दिशा में निदेशित पेशक़दमी की ग्रगुग्राई करने से इनकार कर देता है ग्रौर उसे सही दिशा में मोड़ने की कोशिश करता है, बल्कि वह व्यक्ति होता है, जो ग्रपने को इस पेशक़दमी से निर्देशित होने देता है, क्योंकि समय विशेष पर उसे निदे-शित करने की ग्रपेक्षा उसे मान लेना ग्रधिक ग्रासान ग्रौर लाभदायी होता है।"

"ग्राप मुझे क़ायल नहीं कर पाये हैं। ग्रापकी पार्टी का यह कहना बिल-कुल ठीक है कि निर्माण-कार्य एक मोर्चा है। मोर्चे का कमांडर विजय को पास लाने के लिए एक-दो ग्रादमियों की बलि देने में कभी नहीं झिझकता। ग्राप लोग मानवतावादी भावुकता की तो हंसी उड़ाते हैं, लेकिन इस मामले में ख़ुद ग्रापका ग्राचरण मानवतावादियों जैसा है।"

"ग्राप कोई बहुत ग्रच्छी तुलना नहीं कर रहे हैं। ग्रगर लक्ष्य हानि के बिना प्राप्त किया जा सकता है, तो उसके लिए ग्रपने सैनिकों की जानें झोंकनेवाले कमांडर को बुरा ही कहना होगा। साथी क्लार्क, मजदूरों ग्रौर किसानों का ख़ून बहुत क़ीमती है। जब उसकी ज़रूरत पड़ेगी – ग्रौर वह दिन दूर नहीं है – तब हम में से हर कोई ग्रपनी जिंदगी सरलता से ग्रौर बिना ग्राडंबरपूर्ण शब्दों के न्योछावर कर सकेगा। पर एक ऐसे समय पर मजदूरों की जिंदगी के साथ खेलना, जब वह एक निर्मम ग्रावश्यकता नहीं है, एक घोर ग्रपराध है। चलिये, इस विषय को ग्रब ख़त्म करें।"

"यह ग्रापका मत है। बहरहाल, मैं ग्रपनी राय पर ग्रब भी क़ायम हूं..."

ख़ाक-ए-क़बर

फ़ोरमैन के दफ़्तर में घुसते ही मोरोज़ोव ने एक सिहरन के साथ यह अनुभव किया कि चार बज चुके हैं। कल ही उसने यह व्यवस्था की थी कि आज शाम को ठीक चार बजे एक आयोग कत्ता-ताग़ पहाड़ के लिए रवाना होगा। यह पहाड़ दूसरे और तीसरे सैक्शनों की सीमा पर था। उसने आज्ञा दी कि विदेशी लेखक को तुरंत ढूंढकर लाया जाये – उसे उसके लिए अपने फ़्लैट में सोने की गुंजाइश करनी होगी और खाने का इंतजाम करना होगा – और ड्राइवर को कत्ता-ताग़ पहाड़ का सबसे छोटा रास्ता पकड़ने का आदेश दिया।

"आप बहुत भूखे तो नहीं हैं?" कार के चल पड़ने के बाद उसने लेखक से पूछा। "आप चाहें, तो मैं आपको रास्ते में भोजनालय पर उतारता हुआ जा सकता हूं।"

"नहीं, नहीं! मैं खाना बाद में खाऊंगा – आपके ही साथ।"

"हमारे साथ खाना हमेशा ही सुविधाजनक नहीं रहता। कभी-कभी तो हम रात में बहुत देर तक खाना नहीं खा पाते हैं। लेकिन अगर आप सचमुच इतने भूखे नहीं हैं, तो आपको कत्ता-ताग़ की समस्या को सुलझाने के लिए नियुक्त किये गये हमारे आयोग की बैठक में उपस्थित रहना दिलचस्प लगेगा। ताशक़ंद से हमें इस समस्या के हल में सहायता देने के लिए एक विख्यात इतालवी विशेषज्ञ भेजा गया है, जो मध्य एशिया में हमारी एक सिंचाई परियोजना का परामर्शदाता इंजीनियर भी रह चुका है। आपकी वहां उत्प्लव-मार्ग के निर्माण के हमारे फ़ोरमैन, अमरीकी इंजीनियर मर्री और ताजिक इंजीनियर ऊर्ताबायेव से मुलाक़ात होगी। आयोग असल में लगभग पूरी तरह से अंतर्राष्ट्रीय है।"

"लेकिन यह कत्ता-ताग़ की समस्या है क्या? क्या यह कोई ऐसा विशेष प्रश्न है, जिसे मुझ जैसा साधारण आदमी समझ नहीं पायेगा?"

"नहीं, समस्या बहुत सीधी-सादी है। एक सौ पंचानवेवीं चौकी पर नहर के रास्ते में एक पांच सौ मीटर ऊंचा पहाड़ आता है। नहर इस पहाड़ की बग़ल को बिलकुल छूती हुई निकलती है। इस जगह पर पहुंचते-पहुंचते ज़मीन में बहुत बड़ा उतार आता है और नहर का यह हिस्सा घाटी की सतह से छः से बारह मीटर तक ऊंचे बांधों में होकर गुजरता है। ख़ुद

कत्ता-ताग़ पहाड़ पर, जहां ढाल और भी ज़्यादा है, नहर और घाटी की सतह में लगभग पचीस मीटर का अंतर है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि नहर की बाईं तरफ़ तो कत्ता-ताग़ पहाड़ के छिले हुए पार्श्व से निर्मित प्राकृतिक तटबंध है, जबकि दूसरी तरफ़ उसे नीचे घाटी से अलग करता हुआ कोई तीस मीटर ऊंचा कृत्रिम बांध है। जब आप वहां पहुंचेंगे, तो आपके सामने सारी तसवीर फ़ौरन साफ़ हो जायेगी।"

"न, मैं अब भी समझ सकता हूं।"

"तो कत्ता-ताग़ की समस्या असल में मिट्टी की समस्या है। इसलिए कि पानी उसमें से रिसे नहीं और कृत्रिम बांध को बहाकर न ले जाये, हमें सख़्त मिट्टी चाहिए। लेकिन ठीक इसी जगह हमें एक धूसर क़िस्म की मिट्टी मिलती है। यहां के रहनेवाले उसे 'ख़ाक-ए-क़ब्र' कहते हैं। रंग और खिसकने के गुण की दृष्टि से यह सचमुच राख जैसी ही है। हां, मैं आपको यह बतलाना तो भूल ही गया कि ख़ुद कत्ता-ताग़ को यहां की आबादी पवित्र मानती है।"

"सच? दिलचस्प बात है यह!"

"पहाड़ की चोटी पर एक मज़ार है, जहां बहुत पुराने समय से कुछ मुसलमान पीरों के अस्थि-अवशेष चिर-विश्राम कर रहे हैं। अलबत्ता यह बात मैं आज तक नहीं समझ पाया हूं कि उस ज़माने में दीनदार लोग लाशों को वहां तक कैसे उठाकर ले जाते होंगे। पहाड़ की चढ़ाई इतनी खड़ी और विकट है कि आदमी का ऊपर तक पहुंचना कठिन है... तो, संक्षेप में यह कि यहां की मुस्लिम आबादी का विश्वास है कि इन पीरों को ख़ुद अल्लाह या कम से कम उसके पैग़ंबर ने ही ऊपर पहुंचाकर दफ़नाया है। ऐसा अंधविश्वास है कि इसकी चोटी पर वही आदमी चढ़ सकता है, जिस पर अल्लाह की ख़ास और करम की नज़र हो। और चढ़ाई क्योंकि सख़्त है और अल्लाह घमंडी लोगों को पसंद नहीं करता, इसलिए यहां के बहुत कम बाशिंदों ने ही इस पर चढ़ने की कोशिश की है। लेकिन हमारे एक इंजीनियर और दो टेकनिशियनों ने इस काम को कर दिखाया – जैसा कि आप जानते ही हैं, हमारे लोग स्वभाव से ही जिज्ञासु हैं। उनमें से दो लोग तो सही-सलामत वापस आ गये, मगर तीसरे ने फिसलकर अपनी टांग तोड़ ली। बेशक, मुल्लाओं ने अपने प्रचार में इस घटना का ख़ूब उपयोग किया। आपके लिए यह समझना मुश्किल नहीं

होगा कि हमारे लिए इस पहाड़ से संबद्ध दंतकथाएं लोकवार्ता की दृष्टि से इतनी रोचक नहीं हैं, जितनी कि राजनीतिक दृष्टिकोण से। नहर के निर्माण के लिए हमें इस पवित्र पहाड़ की नाक काटकर उसे विरूप कर देना पड़ा है। इस पहाड़ की भूवैज्ञानिक संरचना बहुत ही अविश्वसनीय है। धूसर मिट्टी को पानी बड़ी आसानी के साथ बहाकर ले जाता है। ज़रा सोचिये तो सही, नहर में पानी छोड़ने के बाद अगर पानी ने पहाड़ का तलोच्छेदन करना शुरू कर दिया और किसी दिन या रात को पहाड़ ही नीचे सरक आया और उसने हमारी नहर को ही भर दिया, तो क्या होगा! पानी बांधों के ऊपर से होकर बह निकलेगा, निमिष मात्र में आसपास के इलाक़े को जलमग्न कर देगा और सिंचाई प्रणाली के काफ़ी बड़े भाग को नष्ट कर देगा। इस इलाक़े में नौआबादकारों के कितने ही सामूहिक फ़ार्म हैं। अपार हानि, खेती के विनाश आदि की तो बात ही क्या है, आप सोच सकते हैं कि इससे अमीरों द्वारा चलाये जानेवाले प्रचार को कितना प्रोत्साहन मिलेगा!"

"हां, है तो सचमुच भारी समस्या!"

"तो, इस वक़्त हम इसी समस्या से अपने माथे लड़ा रहे हैं। जब यहां का भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण किया गया था और नहर का रास्ता निर्धारित किया गया था, तब सिंचाई विभाग के सर्वेक्षकों ने या तो मूर्खता के कारण या दुर्भावना के कारण इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं दिया कि यह जगह कितनी ख़तरनाक है। वैसे, सच तो यह है कि नहर के लिए कोई और रास्ता लेना संभव भी नहीं था। यह मुश्किल नहर के वस्तुतः खुद जाने के समय तक–उसमें पानी के छोड़े जाने के दो महीने पहले तक–हमारे सामने नहीं आई। अब इतना समय नहीं है कि कुछ भी अदला-बदली की जा सके। सारी नहर खोदी जा चुकी है। इसलिए हमारे लिए कुछ इस तरह की व्यवस्था करना ज़रूरी हो गया है कि इस तरह के अप्रिय अचरजों का सामना न करना पड़े... अरे, संभलकर! ज़्यादा चोट तो नहीं लगी?"

"नहीं, नहीं, कोई बात नहीं। बस, ज़रा सिर टकरा गया था।"

"अभी आप हमारी सड़कों के आदी नहीं हुए हैं। असल में कार में बातें करना है ही ख़तरनाक–जीभ दांतों के नीचे आ सकती है। लेकिन मैं तो अब इन झटकों का इतना आदी हो गया हूं कि कार में भी घोड़े बेचकर सो सकता हूं।"

"लेकिन लगातार इस तरह उछालें खाते-खाते कोई सो कैसे सकता है?"

"आपसे सच कह रहा हूं। बस, आदत की बात है...लीजिये, आख़िर हम पहुंच ही गये।"

एक ऊंचे बांध के तले चार कारें एक क़तार में खड़ी हुई थीं। तटबंध पर चढ़ते ही मोरोज़ोव और विदेशी लेखक की निगाह नीचे एक एक्स्केवेटर के आसपास चित्रवत खड़े लोगों के एक समूह पर पड़ी—कीर्श, मर्री, पोलोज़ोवा, ऊर्ताबायेव, इतालवी, फ़ैशनेबुल मोज़े पहने ख़ूब सजा-संवरा नवयुवक, रियूमिन और एक कुत्ता। अनुभवहीनता के कारण विदेशी लेखक ने चटकीले रंग की टोपी पहने धूप से संवलाये इतालवी को ताजिक और यूरोपीय पोशाक पहने ऊर्ताबायेव को इतालवी समझ लिया। वह सफ़ाचट चेहरेवाले साफ़-सुथरे कीर्श को ही अमरीकी माननेवाला था कि मर्री के पाइप के कारण रुक गया। बस, रियूमिन के असंदिग्ध रूसी नाक-नक़्श के कारण उसकी जाति के बारे में उसे कोई संदेह नहीं हुआ।

"तो यह रहा कत्ता-ताग़ पहाड़ और यह रही 'ख़ाक-ए-क़बर'—ले जाये इसे शैतान उड़ाकर!" मोरोज़ोव ने मुट्ठी भर धूसर मिट्टी उठाकर लेखक को दी।

वे लोग एक्स्केवेटर के पास पहुंच चुके थे और औपचारिक परिचय के बाद—जिसका नतीजा यह हुआ कि लेखक का लोगों को पहली नजर में पहचान लेने की अपनी योग्यता में विश्वास हिल गया—वे लोग नहर-तल के साथ-साथ चलने लगे।

मौक़े के सर्वेक्षण में ज्यादा देर नहीं लगी। इतालवी और विदेशी लेखक के अलावा हर कोई स्थान से ख़ूब अच्छी तरह परिचित था। इतालवी ने जानकारों की तरह धूसर मिट्टी को अपनी उंगलियों में मसला, उसे जीभ से चाखा, जेब से एक छोटी-सी बोतल निकाली (जिसमें शायद यू-डी-कोलोन था), उससे कुछ बूंदें हथेली पर डालीं और उसमें ज़रा-सी ख़ाक-ए-क़बर मिलाई। नतीजे के तौर पर साधारण कीचड़ प्राप्त हुआ। इतालवी ने बड़ी सतर्कता के साथ रेशमी रूमाल से अपने हाथों को पोंछा, ऊपर पहाड़ और फिर नीचे नहर के तल पर निगाह डाली और दुभाषिये के ज़रिये कहा कि उसके लिए हर चीज साफ़ है और अब यहां और रुकने की कोई तुक नहीं है। सब चढ़कर बांध पर आ गये और फिर दूसरी तरफ़ उतर गये।

कोई पांच सौ क़दम की दूरी पर खड़े किये गये शामियाने में दो उदास भूतपूर्व ग्रोस्सेतिन कुलाकों ने उनके सामने बढ़िया प्लेटों में ग्राइसक्रीम रख दी। प्लेटों पर नारा अंकित था – "सार्वजनिक भोजन-व्यवस्था – नये जीवन का रास्ता"। खटकनेवाली सिर्फ़ एक चीज़ थी – चम्मच, जो बेहद बड़े-बड़े ग्रौर बेहयाई से क़लई चढ़े थे।

मोरोज़ोव ने सभी विदेशियों को बच्चों-सा माननेवाले ग्रादमी जैसे ग्रात्मतुष्ट भाव से एक प्लेट विदेशी लेखक की तरफ़ खिसका दी।

इतालवी ने जेब से एक छोटा-सा डिब्बा निकाला, जिसमें चांदी का एक मुड़नेवाला कांटा, छुरा ग्रौर चम्मच रखा हुग्रा था ग्रौर तनावभरी ख़ामोशी में दो प्लेटों का सफ़ाया कर दिया – ग्रपनी ग्रौर ऊर्तावायेव की। उदास ग्रोस्सेतिन नाराज़ी से प्लेटों को हटाकर ले गये।

एक-दो मिनट ग्रौर ठहरने के बाद मोरोज़ोव ने बैठक की कार्रवाई को शुरू किया ग्रौर शिष्टतापूर्वक सबसे पहले इतालवी से बोलने का ग्रनुरोध किया।

"सीन्योर कावालकांती का कहना है," दुभाषिये ने सुरीली ग्रावाज़ में ग्रलापना शुरू किया, "कि इस तरह की मिट्टी पर पानी को ग्राने देना ग्रसंभव है। वह एक ही हल सुझा सकते हैं, ग्रौर वह यह कि संकट के पूरे क्षेत्र में नहर-तल पर कंक्रीट का ग्रस्तर बिछा दिया जाये। कंक्रीट की मोटी ढालों से एक तरफ़ तो पानी के रिसने की संभावना नहीं रहेगी, ग्रौर, दूसरी तरफ़, वे पहाड़ के तल को मज़बूती देंगी ग्रौर उसका धंसना रोकेंगी।"

मोरोज़ोव ने मन ही मन तेज़ी से कुछ हिसाब लगाया – दो किलोमीटर, दो हज़ार टन कंक्रीट, छः लाख रूबल, छः महीने का काम...

"सीन्योर कावालकांती का ख़याल है कि यही एकमात्र व्यावहारिक हल है।"

स्पष्टवादी सीन्योर वहां उस सर्जन की तरह निश्चल ग्रौर निर्विकार भाव से बैठे हुए थे, जिसने रोग का निदान कर लिया है, ग्रपनी ग्राख़िरी राय दे दी है ग्रौर इसके लिए ठीक पांच मिनट इंतज़ार करने के लिए तैयार है कि मरीज़ यह तय कर ले कि वह ग्रापरेशन करवायेगा या नहीं।

शामियाने में एकदम ख़ामोशी छाई हुई थी। विदेशी लेखक चौंधियाया हुग्रा कभी मोरोज़ोव, तो कभी कोर्श की तरफ़ देखता हुग्रा उनकी मुद्रा

से इस बात का अंदाज़ा लगाने की कोशिश कर रहा था कि इतालवी ने जो प्रस्ताव रखा है, वह अच्छा है या ख़राब। लेकिन मोरोज़ोव और कोर्श के चेहरे कुछ भी नहीं प्रकट कर रहे थे।

"आपकी क्या राय है, मिस्टर मर्री?" मोरोज़ोव ने अमरीकी से पूछा।

"मिस्टर मर्री कह रहे हैं," पोलोज़ोवा ने अनुवाद किया, "कि वह अपने इतालवी सहयोगी की राय से सहमत नहीं हो सकते। मिस्टर मर्री का विचार है कि यह आशा करना एक भ्रम होगा कि कंक्रीट की ढाल पहाड़ को धंसने से रोक लेगी। यहां हमें क़दम-क़दम पर मिट्टी की जो अविराम घसकनें मिलती हैं, उनसे कंक्रीट की वाहिका अनिवार्यतः तड़क जायेगी और पानी रिसकर पहाड़ के तल में जा पहुंचेगा। पहाड़ निरंतर नीचे बैठने लगेगा और तब उसके धंसने को रोकना और भी कठिन होगा, क्योंकि कंक्रीट की वाहिका के होने के कारण उसे साफ़ करने के लिए एक्स्केवेटर का उपयोग करना असंभव हो जायेगा। मिट्टी के धंसने की सूरत में वाहिका हद से हद शीतकालीन वर्षा तक ही चल पायेगी।"

"तो मिस्टर मर्री क्या सुझाव देते हैं?"

"मिस्टर मर्री का मत है कि एकमात्र व्यावहारिक हल यह है कि पहाड़ को न छेड़ा जाये और नहर को लोह-कंक्रीट जलसेतु के ऊपर से पूरे उतार के पार ले जाया जाये। पहाड़ की खिसकती मिट्टी से बचना संभव बनाने के साथ-साथ यह बांधों के बह जाने और पानी के मैदान पर फैल जाने के ख़तरे को भी ख़त्म कर देगा, जब कि सामान्य नहर के साथ इस तरह की दुर्घटना कमोबेश मात्रा में सदा अनिवार्य बनी रहेगी।"

"कोई ग्यारह महीने का काम और बीस लाख रूबल का ख़र्च," मोरोज़ोव ने अपने दिमाग़ में सरसरा हिसाब लगाया।

विदेशी लेखक की आंखें फटी रह गईं। प्राविधिक ज्ञान का अभाव होने पर भी वह समझ गया कि चमत्कारों के इस देश में भी लोह-कंक्रीट का जलसेतु एक महीने के भीतर नहीं बनाया जा सकता है। ऐसे लगा कि विपत्ति सर पर ही मंडरा रही है।

"समझा... और कोई साथी बोलना चाहते हैं?" मोरोज़ोव ने निर्विकार स्वर में पूछा।

"मैं बोलूं?" उर्ताबायेव ने कहा।

"ज़रूर।"

"मैं कंक्रीट-वाहिका की परियोजना के बारे में मिस्टर मर्री की राय से पूरी तरह से सहमत हूं। हमारी मिट्टी की जिस किसीको भी ज़रा भी जानकारी है, वह इस बात को समझ जायेगा कि अगले वसंत तक इस तरह की वाहिका का निशान भी बाक़ी न रहेगा। यह अकारण ही नहीं है कि हम यहां कितने ही अस्थायी ढांचे बना रहे हैं,—लकड़ी की जल-वाहिकाएं, आदि-आदि—ताकि बाद में, जब मिट्टी पानी को सोख चुकी होगी और बड़े पैमाने पर धसकनों का ख़तरा ख़त्म हो चुका होगा, तब इन अस्थायी ढांचों की जगह कंक्रीट के ढांचे बनाये जा सकेंगे। लेकिन मुझे हैरानी है कि हमारी मिट्टी की इन विशेषताओं को जानते हुए भी जलसेतु की अपनी परियोजना का विचार सामने रखते समय मिस्टर मर्री ने उन्हें ध्यान में नहीं रखा। आख़िर मिट्टी में धसकनें तो किसी भी सूरत में आयेंगी ही। हमें शीतकालीन वर्षा के प्रभाव को भी ध्यान में रखना होगा। जलसेतु कोई अधर तो लटका नहीं रहता—वह भी ज़मीन पर ही टिका होता है। अगर मिट्टी धंसेगी, तो वह लोहे के जिन खंभों पर टिका हुआ है, असर उन पर भी पड़ेगा ही। और इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है कि मिट्टी की भारी धसकन होने पर ख़ुद जलसेतु ही टूट सकता है और उस सूरत में पानी सारे मैदान पर फैल जायेगा और विनाशक परिस्थिति पैदा हो जायेगी। इसलिए मुझे लगता है कि मिस्टर मर्री की परियोजना, जो बहुत ही ख़र्चीली होगी और बहुत अधिक समय की अपेक्षा करेगी, बदले में हमें सुरक्षा की प्रत्याभूति नहीं दे पायेगी। बल्कि, मैं तो कहूंगा कि इसके विपरीत, हमारी मिट्टी को देखते हुए यह सबसे ख़तरनाक रास्ता साबित होगा।"

"तो आप क्या सुझाव देते हैं, साथी ऊर्ताबायेव?"

"मुझे लगता है कि अपनी धूसर मिट्टी के ख़तरों को हम बहुत अतिरंजित कर रहे हैं। बेशक, इसमें से पानी रिसेगा, लेकिन क्षति इतनी विनाशक नहीं होगी, जितनी हम में से कुछ लोग अभी समझ रहे हैं। मैं हमारी इस धूसर मिट्टी के उद्गम के बारे में कुछ कहना चाहूंगा। मैंने इस प्रश्न का विशेष अध्ययन किया है और यहां आसपास मिट्टी में कुछ खुदाई भी की है। मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि यह धारणा ग़लत है कि यह धूसर मिट्टी कत्ता-ताग़ पहाड़ की ही एक विशेषता है। पूरे मैदान पर धूसर मिट्टी

की एक पट्टी फैली हुई है। यह पट्टी काफ़ी पतली है और इसी लिए हमें यह और जगहों पर नहीं मिली। हमें यह ठीक इसी जगह पर इसलिए मिली कि यही वह स्थान है, जहां हमारी नहर की वाहिका प्राचीनकालीन सिंचाई नहर की वाहिका के साथ-साथ आ जाती है, जिसके निशान कई जगहों पर बिलकुल साफ़-साफ़ देखे जा सकते हैं। अगर हम इस पुरानी नहर के रास्ते का अनुगमन करें, तो यह बात बड़ी आसानी के साथ देखी जा सकती है कि थोड़े-बहुत विचलन के अलावा यह हमारी वर्तमान नहर की दिशा में ही जाती है। हां, अपने उपकरणों की यथार्थता के मामले में हमने निस्संदेह अपने पूर्वजों को बहुत पीछे छोड़ दिया है। कत्ता-ताग़ पहाड़ पर दोनों वाहिकाएं एकसाथ आ जाती हैं—और इसमें अचरज की कोई बात नहीं है, क्योंकि नहर के लिए यही एकमात्र संभव रास्ता है—दाईं तरफ़ घाटी है और बाईं तरफ़—पहाड़। ख़ैर, इस पुरानी वाहिका में आप चाहे जहां भी खोदकर देख लें, आपको यह धूसर मिट्टी मिल जायेगी। अगर आप चाहें, तो हम कई जगहों पर जा सकते हैं, जहां मैं और साथी रियूमिन पिछले दिनों से जिज्ञासावश मिट्टी को खोदकर देखते रहे हैं। आपको विभिन्न गहराइयों पर, लगभग वहीं, जहां किसी समय इस पुरानी नहर का तल हुआ करता था, धूसर मिट्टी का एक मोटा स्तर मिलेगा। इससे क्या साबित होता है? मुझे लगता है कि इससे सिर्फ़ एक ही बात साबित होती है—धूसर मिट्टी पुराने ज़माने के कीचड़ के निक्षेपों के अलावा और कुछ नहीं है, जो प्राचीन नहर के पेंदे पर बिछा हुआ था और उसके किनारों को मज़बूती देता था। यह अनुमान करने के बाद मैंने स्वाभाविक रूप से यही निष्कर्ष निकाला कि और सभी जगहों की तरह इस जगह—कत्ता-ताग़ पहाड़ से भी धूसर मिट्टी की एक पतली पट्टी गुज़रती है। मैंने और साथी रियूमिन ने नहर के तल से दूर कई जगहों पर खुदाई की और हमें कहीं धूसर मिट्टी नहीं मिली। मेरा ख़याल है कि निष्कर्ष हर किसीके लिए स्पष्ट होगा। अगर धूसर मिट्टी बहुत आसानी से बह जानेवाली भी सिद्ध होती है, तो भी इसका विस्तार बहुत ही सीमित है। हम यह हिसाब लगा सकते हैं कि पहाड़ के पार्श्व की धसकनें दो-तीन मीटर से ज़्यादा नहीं होंगी। निस्संदेह नहर को अवरुद्ध करने के लिए यह काफ़ी होगा, लेकिन इसका एक एक्स्केवेटर से आसानी से उपचार किया जा सकता है। मुझे बस, इतना ही कहना है।"

"कोई और कुछ कहना चाहते हैं?"

"मैं कुछ कह सकता हूं?"

"बोलिये, साथी रियूमिन।"

"साथी ऊर्ताबायेव ने जो कुछ कहा है, उसके साथ मैं सिर्फ़ बांधों के बारे में एक-दो बातें कहना चाहता हूं। निस्संदेह, बांध अकेली धूसर मिट्टी के ही नहीं बनाये जा सकते। लेकिन हम बांधों पर चिकनी मिट्टी की तह क्यों न चढ़ा दें, पास ही—निर्माणस्थली पर ही जिस तरह की अधिक विश्वसनीय मिट्टी पर्याप्त मात्रा में मिलती है, उससे उन्हें हर तरह से और पुख़्ता क्यों न कर दें? यहां जो और परियोजनाएं पेश की गई हैं, उनमें सन्निहित ख़र्च के मुक़ाबले इस मिट्टी का परिवहन कोई ख़ास कठिनाइयां प्रस्तुत नहीं करेगा। धूसर मिट्टी और कत्ता-ताग पहाड़ के बारे में हर चीज़ के मामले में मैं साथी ऊर्ताबायेव से पूरी तरह से सहमत हूं।"

"साथी कीर्श?"

"मेरे लिए तो अपने पूर्ववर्ती वक्ताओं की रायों का सार प्रस्तुत करने का काम ही बाक़ी रह जाता है। मुझे साथी ऊर्ताबायेव का निष्कर्ष बिलकुल विश्वसनीय प्रतीत होता है। इंजीनियर कावालकांती और इंजीनियर मर्री के प्रस्तावों में तीन बुनियादी दोष हैं। वे बहुत अधिक श्रम की अपेक्षा करते हैं और हमें वस्तुतः इस साल खेतों के लिए मुख्य नहर को पानी देने से रोकते हैं। वे बहुत ख़र्चीले हैं। और इतने व्यय और श्रम के बावजूद वे पानी के घाटी में बह आने के ख़तरे को दूर नहीं करते—और दूसरे मामले में तो शायद इस ख़तरे को बढ़ा ही देते हैं। साथी ऊर्ताबायेव और रियूमिन के प्रस्ताव की एक बहुत बड़ी अच्छाई यह है कि यह निर्माण-कार्य की समय पर पूर्ति करने में बाधा नहीं डालता, यद्यपि काम की मात्रा को बढ़ाकर यह प्रत्यक्षतः हमारे प्रयासों में काफ़ी तेज़ी लाने की अपेक्षा करता है। दूसरी तरफ़, लागत में वृद्धि अपेक्षाकृत कम होगी। व्यक्तिगत रूप से मैं पूरी तरह से इस प्रस्ताव के पक्ष में हूं। संभव दुर्घटनाओं से पूर्ण सुरक्षा प्राप्त करने के लिए शुरू में ही, पानी के नहर में छोड़े जाने के बाद, इस सैक्शन में शायद एक नहीं, बल्कि दो एक्स्केवेटरों को तैयार रखना आवश्यक होगा। जहां तक बांधों के बह जाने की संभावना का सवाल है, मैं आवश्यक सामग्री—सरकंडे, तार, खूंटे, आदि-आदि—को पहले से तैयार रखने और नहर के साथ-साथ नियमित फ़ासलों पर—कहिये कि हर सौ मीटर पर—

जमा करने की राय दूंगा। इससे हम किसी भी आकस्मिकता का तत्काल सामना कर सकेंगे।"

"तो बैठक की कार्रवाई ख़त्म की जाये?"

"क्या मैं कुछ और कह सकता हूं?" मर्री ने पूछा।

"इंजीनियर मर्री कह रहे हैं," पोलोज़ोवा ने अनुवाद किया, "कि साथी उर्तावायेव और रियूमिन का प्रस्ताव दर असल यथास्थिति को बरक़रार रखने का प्रस्ताव है। इंजीनियर मर्री मैनेजमेंट को इस तरह के निर्णय के विरुद्ध सचेत करते हैं और आसपास के खेतों के आंशिक रूप से भी जलमग्न होने से जनित विनाशकारी परिणामों की ओर इंगित करते हैं। नई ज़मीन पर काफ़ी तादाद में आबादकारों को बसाने में जिन आम मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, उनको देखते हुए संभव है कि इससे दहक़ानों में दहशत फैल जाये और इन ज़मीनों के आगे आबाद करने में बाधा पड़े। इस तरह निर्माण-कार्य को पूरा करने में जल्दबाज़ी, जो साथी ऊर्तावायेव और रियूमिन के प्रस्ताव के पक्ष में एकमात्र और निर्णायक तर्क है, बेकार साबित होगी। ज़मीन इस साल सिंच जायेगी, लेकिन वह परती पड़ी रहेगी और आबादकारों के न होने के कारण उस पर काश्त नहीं की जा सकेगी। इंजीनियर मर्री मैनेजमेंट से इस बात को ध्यान में रखने के लिए और आज की बैठक के कार्य-विवरण में अपनी राय दर्ज किये जाने के लिए कह रहे हैं।"

"जानते हैं," कार में फिर बैठने के बाद विदेशी लेखक ने मोरोज़ोव से कहा, "मैंने इन सभी साथियों की रायों को बड़े ध्यान के साथ सुना है। मैं कह नहीं सकता कि उनमें से किसकी बात सही है और किसकी ग़लत – सभी का कहना अपने-अपने ढंग से ठीक ही लगता है। मैं सिर्फ़ एक बात निश्चय के साथ कह सकता हूं।"

"वह क्या?"

"मैं आपकी जगह होना नहीं चाहूंगा।"

"क्यों?"

"इस तरह की बहस के आधार पर कोई एक निर्णय लेना... कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है!"

मोरोज़ोव के जवाब को लेखक न सुन पाया – कार ने एक ज़ोरदार झटका खाया और उसका सिर एक बार फिर ज़ोर से छत से जा टकराया।

मिस्टर क्लार्क की प्रगति

... दूसरे सैक्शन की बस्ती पहुंचकर पोलोज़ोवा लपकी-लपकी कोम्सोमोल के ज़रूरी मामलों को निपटाने के बाद खाना खाने के लिए चली गई। भोजनालय में मोरोज़ोव और विदेशी लेखक के अलावा और कोई न था। बातचीत करने की कोई ख़ास इच्छा न होने के कारण वह कोने में एक छोटी-सी मेज़ पर जाकर बैठ गई और सूप ख़त्म करने लगी।

"मरीया पावलोव्ना," मोरोज़ोव ने उसे दूसरे कोने से आवाज़ दी, "जानती हैं, आपके क्लार्क से आज मेरा बाक़ायदा झगड़ा हो गया। उन्होंने मुझे अवसरवादी कहा—जी हां! मानना होगा कि हमारी शब्दावली तो आपने उन्हें काफ़ी तेज़ी के साथ सिखा दी है। आइये, हमारे साथ बैठिये, मैं आपको सारा क़िस्सा सुनाता हूं। वह तो दिन दूने रात चौगुने बोल्शेविक बनते जा रहे हैं—हां, अभी ज़रा बेताल हैं।"

"आपके क्लार्क से" शब्दों को सुनकर पोलोज़ोवा को बड़ा संकोच हुआ। वह लाल होकर सोचने लगी कि उसे मोरोज़ोव को यह बता देना चाहिए कि वह अब क्लार्क के साथ नहीं रह रही है। लेकिन किसी कारण मोरोज़ोव से यह बात कहना उसे अटपटा लग रहा था। उसने आज्ञाकारितापूर्वक अपनी प्लेट उठाई और उनकी मेज़ पर जा बैठी।

"यह रहीं साथी क्लार्क की पत्नी—हमारे कोम्सोमोल संगठन की सचिव," विदेशी लेखक को उसका परिचय देते हुए मोरोज़ोव ने कहा।

पोलोज़ोवा को अपने असमंजस को व्यक्त करने के लिए अब भी उपयुक्त शब्द नहीं मिल पा रहे थे। मोरोज़ोव और विदेशी लेखक कुछ देर बाद उठ खड़े हुए और बाहर चले गये, वह अभी तक अपने दिमाग़ में उपयुक्त शब्दों को ही ढूंढ रही थी और आख़िर जब उसने बताने के लिए एक बेढंगा-सा वाक्य दिमाग़ में जोड़ा, तो उसे यह देखकर ख़ुशी हुई कि उसे सुनने के लिए अब वहां कोई नहीं है।

"मरीया पावलोव्ना," मोरोज़ोव ने अधबीच से लौटकर कहा, "चट्टानी स्तर के बारे में विचार-विमर्श करने के लिए मैं अपने यहां अभी एक बैठक कर रहा हूं और मर्री को उसके बारे में कहना मैं भूल गया। अगर वह भी उसमें आ सकें, तो बड़ा अच्छा रहेगा। ज़रा मेहरबानी करके उन्हें ख़बर कर दीजिये और आप भी उनके साथ आ जाइये।"

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह बाहर चला गया।

पोलोज़ोवा ने सोचा कि बैठक में क्लार्क अवश्य आयेगा और वह उसके सामने आने से बच नहीं पायेगी। क्लार्क को उसने अपने झगड़े के बाद से नहीं देखा था। तब से लगभग चार हफ़्ते गुज़र चुके थे। क्लार्क से विच्छेद से उसे बहुत क्लेश हुआ था। उसने सोचा था कि अगले ही दिन या हद से हद तीसरे दिन पश्चात्ताप-संतृप्त क्लार्क आकर अपनी ग़लती मान लेगा। हर बार दरवाज़ा बजने के साथ वह उछल पड़ती और धड़कते दिल के साथ उसे खोलने के लिए लपकती और हर बार निराश होकर लौट आती – आनेवाला उसके कोम्सोमोल संगठन का ही कोई लड़का होता।

रात को अकेली रह जाने पर वह कपड़े पहने-पहने ही अपनी चारपाई पर पड़ जाती ("बड़ा अभिमानी है वह, हर किसीके सामने मिलना चाहता नहीं, शायद रात को ही आयेगा")। सुबह वह आंसुओं से तर, थकी हुई और निढाल होती। देर तक वह अपने मुंह को कूएं के बर्फ़ीले पानी से धोती, आंखों के नीचे आई कालिमा पर पाउडर थोपती और काम पर चली जाती।

क्लार्क की ख़ामोशी उसे चांटे की तरह लग रही थी। चौथी रात को उसने कपड़े उतारे और पहली बार मुरदों जैसी गहरी नींद में ग़ाफ़िल हो गई। सुबह वह निरुद्वेग मन से उठी। उसने संकल्प कर लिया कि अब वह क्लार्क के बारे में नहीं सोचेगी और काम के जमा हुए ढेर ने इस निश्चय की क्रियान्विति को संभव बना दिया।

दसवें दिन अपनी दराज़ में काग़ज़ों को देखते समय उसके हाथ में वह काग़ज़ आ गया, जिस पर क्लार्क ने अपना "मनपसंद विषय पर निबंध" – पहला प्रणय निवेदन – लिखा था। उसने पढ़े बिना ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। बाहर प्रचंड अफ़ग़ानी हवा चल रही थी। वह दहलीज़ पर गई और उन्हें हवा में उड़ा दिया। हवा काग़ज़ के टुकड़ों को समेट ले गई और उन्हें स्तेपी पर छितरा दिया। पोलोज़ोवा कमरे में वापस आई, चारपाई पर ढह गई और फूट-फूटकर रो पड़ी।

उसी शाम को उसे क्लार्क का एक पत्र मिला। क्लार्क ने लिखा था कि वह बड़े दर्द के साथ इस बात को अनुभव कर रहा है कि उसके लिए कोम्सोमोल का काम उनके संयुक्त जीवन से अधिक महत्व रखता है। स्त्री जितना प्यार दे सकती है, उससे अधिक पाने की अपेक्षा करना हास्यास्पद

होगा। वह उसका दूसरे सैक्शन पर काम करना स्वीकार करने के लिए तैयार है और उसका विरोध नहीं करेगा, मगर एक शर्त पर—उसे मर्री की अनुवादिका का काम छोड़ना होगा।

पोलोज़ोवा ने पत्र को पढ़ने के बाद कुचलकर कोने में फेंक दिया। अब, दस दिन की अपमानजनक चुप्पी के बाद, उसे क्लार्क की हर शर्त एक धूर्ततापूर्ण सौदे की तरह लग रही थी, जो उसके ओछेपन और संकीर्णता को प्रकट करती थी।

क्लार्क को अपने पत्र का कोई उत्तर नहीं मिला।

और आज सभी मानो किसी पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार एक बार भी इस बात को अनुभव किये बिना उसे मिनट-मिनट पर क्लार्क की याद दिलाने लगे कि उसके लिए यह कितना अप्रीतिकर है।

आज शाम के इस अवश्यंभावी साक्षात्कार की बात से पोलोज़ोवा अचकचा गई थी। सबसे पहले उसके और क्लार्क के आचरण से मोरोज़ोव तुरंत अंदाज़ा लगा लेगा कि उनमें विच्छेद हो गया है। सबसे अप्रिय बात यह थी कि उसने स्वयं इस बात की चर्चा नहीं की थी और अजनबी लोगों को इसी भ्रम में रखा कि वह क्लार्क की पत्नी है। अब सिर्फ़ एक ही आशा थी—सुबह की बैठक के बाद मर्री का मूड ठीक न हो और वह शाम की बैठक में जाना न चाहे।

पोलोज़ोवा की भूख मर गई। वह और चीज़ों के आने का इंतज़ार किये बिना उठ खड़ी हुई और मर्री के फ़्लैट की तरफ़ चल दी।

लेकिन मर्री ने शाम की बैठक में जाने से इनकार नहीं किया।

बैठक देर से शुरू हुई, जिसका आयोजन मोरोज़ोव ने मैनेजमेंट, पार्टी तथा ट्रेड-यूनियन संगठन की एक विस्तृत बैठक के रूप में किया था। सिनीत्सिन तीसरे सैक्शन से रात को नौ बजे पहुंचा, जहां वह सुबह नियंत्रण आयोग के एक सदस्य के साथ गया था। गालत्सेव आया ही नहीं। सारी कारंवाई बड़े उदास वातावरण में चल रही थी—बहस लगभग हुई ही नहीं। सभीने मान लिया कि आगे और दुर्घटनाओं की संभावना को रोकने के लिए उस सारे सैक्शन में नहर के किनारों का ढलवां किया जाना ज़रूरी है, जहां से पत्थर खोदकर निकाला जा रहा है। प्रारंभिक अनुमान के अनुसार इससे काम में कम से कम तीस हज़ार घन मीटर की वृद्धि हो जायेगी और नहर के पूरा होने में पूरे एक महीने का विलंब हो सकता है। मोरोज़ोव

को पार्टी की केंद्रीय समिति और ताजिकिस्तान की सरकार को इसकी सूचना देनी थी।

क्लार्क बैठक की तमाम कार्रवाई के दौरान विषादपूर्ण चुप्पी साधे रहा। जब उससे बोलने का अनुरोध किया गया, तो उसने एक संक्षिप्त वक्तव्य दे दिया कि वह निर्माण-प्रमुख को अपनी राय के बारे में बैठक के पहले ही बता चुका है, और उन्होंने उसकी राय को अस्वीकार कर दिया है। उसे और कुछ नहीं कहना है।

क्लार्क के वक्तव्य पर बहस नहीं हुई।

जब काम की अधिक विस्तृत योजना बनाना और मशीनों के वितरण की बात करना शुरू किया गया, तो मर्री उठा और यह कहकर अपने घर चला गया कि वह बहुत थका हुआ है और नहर-मुख पर होनेवाले काम के बारे में कुछ नहीं जानता। पोलोज़ोवा को अब यहां कोई काम न था, पर अनजाने ही वह मर्री के उदाहरण का अनुसरण करके वहां से चली नहीं गई। उसने मन ही मन यह कहकर अपनी उपस्थिति का औचित्य ठहराया कि अगर वह अब चली जाती है, तो वह चट्टान सम्बन्धी काम की अंतिम योजना के बारे में नहीं जान पायेगी और इसलिए निर्माण-कार्य की समूचे तौर पर स्पष्ट धारणा नहीं बना पायेगी।

बैठक ख़त्म होने के क़रीब ही थी कि दरवाज़ा धड़ाक से खुला और गालत्सेव ने प्रवेश किया।

"तुम्हें कुछ और देर बाद आना चाहिए था," मोरोज़ोव ने भौंहें चढ़ाकर उसकी अभ्यर्थना की।

गालत्सेव ने अपनी कुचली हुई टोपी को मेज़ पर पटकते हुए कहा:

"मैं सीधा एक सभा से आ रहा हूं।"

"कौनसी सभा से?"

"नहर-मुख के मज़दूरों की सभा से। सभा स्वयंसेवकों की थी— निर्माणस्थली के अवसरवादी नेतृत्व के ख़िलाफ़। यह सब इन्हींकी करनी है," गालत्सेव ने अमरीकी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

सभी की आंखें क्लार्क की तरफ़ मुड़ गईं।

"मैं आपकी बात समझा नहीं," क्लार्क ने शांत स्वर में कहा।

"बेकार की बातें मत करो— सीधे-सीधे बताओ कि क्या बात है," मोरोज़ोव ने झिड़का।

"लीजिये, यह तो समझते भी नहीं, और भुगतना मुझे पड़ रहा है," गालत्सेव हठधर्मी के साथ कहता चला गया। "साथी क्लार्क ने आज इन हुल्लड़बाजों से कहा कि व्यक्तिगत रूप से वह तो इसी हालत में पत्थर की खुदाई के काम को जारी रखने के हक़ में हैं, लेकिन अवसरवादी मैनेजमेंट इसके खिलाफ़ है। बस, फिर क्या था, तूफ़ान शुरू हो गया। स्वयंसेवक ट्रेड-यूनियन समिति के कार्यालय में मेरे पास आये और बोले, 'सभा करो!' मैंने उन्हें डपटकर भगा दिया। बस, वहां से जाकर उन्होंने अपने-आप सभा जुटा ली। उनका कहना है कि अवसरवादी मैनेजमेंट और ट्रेड-यूनियन समिति मिलकर निर्माण-कार्य की समाप्ति में एक महीने की देर करना चाहते हैं, पार्टी और सरकार ने काम को पूरा करने की जो मियाद निर्धारित की है, उसका उल्लंघन कर रहे हैं, मजदूरों की पेशक़दमी को ख़त्म कर रहे हैं, और इसी तरह की न जाने और क्या-क्या बातें। उनका कहना है कि मजदूरों को इस सड़े-गले मैनेजमेंट की परवाह नहीं करनी चाहिए और इंतजाम को अपने हाथ में लेकर काम को नियत समय पर पूरा कर देना चाहिए।"

"उन्हें भड़का कौन रहा है?" मोरोज़ोव ने पूछा।

"सरदार उनका तरेलकिन है और उसके साथ मुख्य सैक्शन के और सब हुल्लड़बाज शामिल हैं। जो लोग सबसे ज्यादा चिल्ला रहे हैं, वे ही ऐसे हैं, जो स्वयंसेवक बनने की बात कभी सपने में भी नहीं सोचते। वे चाहते हैं कि यह," उसने क्लार्क की तरफ़ इशारा किया, "मैनेजमेंट के प्रमुख बन जायें।"

"तो यह हुल्लड़ ख़त्म किस तरह हुआ?"

"अभी ख़त्म कहां हुआ है! किसी तरह से उनके दिमाग़ में अक़्ल की कुछ बातें बिठाकर आया हूं। इनको," गालत्सेव ने फिर क्लार्क की तरफ़ इशारा किया, "कल ख़ुद वहां जाकर उनसे बातें करनी होंगी। नहीं तो यही लगेगा कि हमारे सैक्शन मैनेजमेंट, पार्टी संगठन तथा ट्रेड-यूनियन में अनबन है और वे अपने झगड़ों का निपटारा मजदूरों के सामने कर रहे हैं। इस तरह से कैसे काम चलेगा!"

क्लार्क का चेहरा फक हो गया था और वह अधीरता से मेज को उंगलियों से ठकठका रहा था।

"साथी मोरोज़ोव," कमरे में एक अप्रिय ख़ामोशी छा जाने पर उसने कहा, "मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि मुझपर विश्वास कीजिये। मैंने

किसी भी मज़दूर को यह नहीं बताया कि हमारी बातचीत का विषय क्या था और मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही, जैसी हमारे यह साथी कह रहे हैं।"

"नहीं कही? मज़दूरों ने ट्रेड-यूनियन समिति के दफ़्तर में आकर ख़ुद मुझे बताया है।"

"वे आपसे ऐसा कुछ नहीं कह सकते थे! आप झूठ बोल रहे हैं!"

"क्या बात कही है! मतलब यह कि मैं अपने कानों पर ही विश्वास न करूं? इनका कहना है कि सारा मैनेजमेंट अवसरवादी है और उसमें भी निर्माण-प्रमुख सबसे ज्यादा अवसरवादी है। यह ख़ुद प्रमुख बनना चाहते हैं, और क्या!"

"साथी मोरोज़ोव, इन साथी से फ़ौरन यहां से निकल जाने के लिए कहिये, नहीं तो मैं ख़ुद यहां से चला जाऊंगा!"

"साथी गालत्सेव, मैं आपको मना कर रहा हूं – आप कुछ नहीं बोलेंगे। मेरी अनुमति के बिना अब कोई कुछ नहीं कहेगा। साथियो, शांत रहिये!"

क्लार्क उठा और मेज़ पर से अपनी टोपी उठाकर कमरे से निकल गया।

"लीजिये, एक नया क़िस्सा शुरू हो गया!" मोरोज़ोव नाराज़ी से बड़-बड़ाया। "साथी पोलोज़ोवा, मेहरबानी करके आप जाइये और उन्हें समझाइये।"

पोलोज़ोवा आज्ञाकारितापूर्वक उठी और क्लार्क के पीछे चली गई।

"और गालत्सेव, अमरीकी इंजीनियर का अपमान करने के लिए हम तुम्हारी भर्त्सना करेंगे, और इसके अलावा, तुम्हें जाकर उनसे माफ़ी मांगनी होगी।"

"साथी मोरोज़ोव, हे मेरे भगवान! वह मेरी आंखों के सामने झूठ बोल रहा था – 'मैंने नहीं कहा!' सारी गड़बड़ उसीके कारण है। मजदूरों के सामने भड़कानेवाली बातें वह करता है, और माफ़ी मुझे जाकर उससे मांगनी पड़ेगी!"

"जाना तो होगा ही। अगर साथी क्लार्क यह कहते हैं कि उन्होंने ऐसा नहीं कहा, तो नहीं ही कहा होगा।"

"तो मजदूरों को कहां से पता चला?"

"निर्माणस्थली पर सभी के लंबे कान और लंबी ज़बानें हैं। लेकिन विदेशी इंजीनियरों का अपमान करने का अधिकार तुम्हें किसीने न दिया है और न देगा। समझे?"

"तुम्हारी ज़बान काफ़ी बेक़ाबू हो गई लगती है, गालत्सेव," सिनीत्सिन ने सख़्ती से कहा, "कितनी बार तुम्हारी भर्त्सना की जा चुकी है? अगर तुम्हारा ख़याल है कि भर्त्सनाएं डाक-टिकटों की तरह इकट्ठा करने की चीज़ें हैं, तो यह मत भूल जाना कि तुम्हारा संकलन पूरा करने के लिए अब ज़्यादा भर्त्सनाओं की ज़रूरत नहीं है।"

गालत्सेव अपराधी भाव से अपना सिर खुजाने लगा और जवाब में कुछ नहीं बोला।

पोलोज़ोवा ने क्लार्क को सीढ़ियों के नीचे ही पकड़ लिया।

"क्लार्क!"

"कौन?"

"मैं हूं। आपसे मिनट भर बात कर सकती हूं?" पोलोज़ोवा ने अंग्रेज़ी में पूछा।

"बेशक।"

"चलिये, इसी रास्ते पर चलते हैं।"

"हां, बोलो, मेरी," क्लार्क ने ग़ौर से उसकी तरफ़ देखा – वह काफ़ी दुबली हो गई थी, बहुत बदल गई थी। अब वह पहले जैसी शुष्क और अहंकारी लड़की नहीं लगती थी। वह अब एक ऐसी नारी लगती थी, जो काफ़ी दुख भोग चुकी है। वह उद्विग्न नज़र आती थी और उसके पुराने आत्मविश्वास का आभास मात्र भी नहीं दृष्टिगोचर होता था।

अपना नाम सुनकर पोलोज़ोवा असमंजस में पड़ गई। वह क्लार्क की तरफ़ न देखते हुए जल्दी-जल्दी बोलने लगी:

"मैं सबसे पहले यह कहना चाहती थी कि आपने ठीक नहीं किया है..."

"जानता हूं। ऐसा अभी तक एक बार भी नहीं हुआ कि जब मैंने कुछ ठीक किया हो।"

"यह भी सही नहीं है। ख़ैर, पुरानी बातें मत छेड़िये। मैं आपसे यह कहना चाहती हूं कि न तो मैं, न मोरोज़ोव और न वहां मौजूद लोगों में से – शायद एक अकेले गालत्सेव को छोड़कर – कोई और ही निमिष मात्र के लिए भी यह सोचता है कि आपने मज़दूरों से सचमुच ऐसा कुछ कहा है।"

"तो फिर साथी मोरोज़ोव ने क्यों मुझे इस तरह से अपमानित होने दिया?"

"यह कहना ठीक नहीं है। उन्होंने गालत्सेव से बोलने को मना कर दिया था।"

"उन्हें उसे बाहर निकाल देना चाहिए था।"

"माफ़ कीजिये, लेकिन आपको निर्माण-प्रमुख को यह आदेश देने का कोई अधिकार नहीं है कि वह सभा का संचालन कैसे करें। और अपमान का अपमान से ही जवाब – यह अपनी पैरवी का कौनसा तरीक़ा है! अगर आपको मुआवजा ही चाहिए था, तो वह मिल गया। हो सकता है कि वह आपके रिवाज के मुताबिक़ न हो, लेकिन वह हमारे देश में प्रचलित रिवाज के मुताबिक़ जरूर है। मुझे विश्वास है कि आप यह तो नहीं चाहते होंगे कि आपके परितोष के लिए यहां पूंजीवादी आचार-संहिता लागू कर दी जाये?"

"एक निम्न-पूंजीवादी से पेश आते वक़्त पूंजीवादी आचार-संहिता का ही पालन करना चाहिए।"

"मजाक मत कीजिये। यहां आपको निम्न-पूंजीवादी कोई नहीं समझता।"

"कोई नहीं?"

पोलोज़ोवा ने ऐसा दिखाया, मानो प्रश्न उसने सुना ही न हो।

"आज ही आपके सुबह के विवाद के बारे में बातें करते हुए मोरोज़ोव ने मुझसे कहा था कि आप तो दिन दुने रात चौगुने बोल्शेविक बनते जा रहे हैं। अलबत्ता यह उन्होंने ठीक ही कहा था कि अभी आप जरा बेताल हैं। निर्माण-कार्य को शीघ्रातिशीघ्र ख़त्म करने के लिए अपने जीवन को संकट में डालना बहुत शानदार बात है, लेकिन फिर भी यह बोल्शेविकोचित बात नहीं है, क्योंकि इसकी कोई तात्कालिक आवश्यकता नहीं है। सामंती शौर्य-प्रदर्शन और बोल्शेविज्म एक ही चीज नहीं हैं। बोल्शेविज्म तो..."

"सुनो, मेरी, क़दम-क़दम पर लैक्चर सुनाने की यह रूसी झक तो उस आदमी भी अधपगला बना सकती है, जो ईमानदारी से आप लोगों से बहुत कुछ सीखने की कोशिश करता है? सच मानना, अपने पूरे बचपन में भी – जब मैं नीकर पहने ही घूमा करता था – मैंने कुल मिलाकर इतने लैक्चर नहीं सुने थे, जितने यहां एक साल के निवास के भीतर सुन चुका हूं।"

पोलोज़ोवा खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"अगर आपको हर ही वक़्त पढ़ाते रहना जरूरी हो, तो फिर हम क्या करें? असली मुसीबत यह है कि आपको अपनी हठधर्मी और अहंकार से

कोई मुक्ति नहीं दिला सकता। आप इस बात को ख़ूब अच्छी तरह से समझते हैं कि आपने ग़लत किया था, लेकिन आपका अहंकार आपको इस बात को लोगों के सामने स्वीकार नहीं करने देगा। हमारे यहां... लेकिन आप फिर कह देंगे कि यह लैक्चर है।"

"यह बात ज़रा भी ठीक नहीं है। अगर मुझे विश्वास हो जाये, तो मैं अपनी ग़लती मानने के लिए बिलकुल तैयार रहता हूं।"

"क्यों झूठ बोलते हैं? आप ही बताइये, आपने कभी एक बार भी यह माना है कि आप ग़लती पर थे?"

"माना है।"

"मिसाल के लिए?"

"मिसाल के लिए, मेरी, तुम्हारे मामले में मैंने ग़लती की थी।"

"जिम!"

"अगर इसे तुम सीधे-सीधे और लैक्चर के बिना माफ़ कर सकती हो, तो इस बारे में हम अब और बात नहीं करेंगे। यह रही मेरी कार। चलो, सीधे घर चलते हैं। सुबह मैं तुम्हें काम पर पहुंचा दूंगा।"

"और इस बारे में और बात नहीं करेंगे?"

"और इस बारे में और बात नहीं करेंगे।"

"तो, ठीक है। और आज की बात के लिए तुम मोरोज़ोव से माफ़ी मांगोगे?"

"मांग लूंगा। लेकिन कल। कल तक तो ठहरा जा सकता है, न?"

उसने पोलोज़ोवा के कंधे पर अपना हाथ रख दिया और उसे कार की तरफ़ ले गया।

...भूल से चलता छूट गया रेडियो क्लार्क के ख़ाली फ़्लैट में रोनी आवाज़ में मिमिया रहा था। क्लार्क ने रेडियो को बंद कर दिया और मेज को ठीक करने लगा। पोलोज़ोवा का ध्यान गया कि उसने किसी चीज को जल्दी से दराज़ में डाल दिया है और उसे अख़बार से ढंक दिया है।

"तुम कपड़े बदलो, मैं चाय बनाकर लाता हूं।"

वह बाहर चला गया। उसके अनभ्यस्त हाथों में स्टोव की शिक़ायतभरी कराहट सुनाई देती थी। पोलोज़ोवा क्षण भर को ठिठकी। फिर, शरमाते-शरमाते उसने दराज़ को आहिस्ता से खोला और अख़बार को अलग खिसका दिया। अख़बार के नीचे दो किताबें रखी हुई थीं – "लेनिनवाद

की समस्याएं" का अंग्रेजी अनुवाद और द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की एक प्रारंभिक रूसी पाठ्य-पुस्तक। उसने दराज़ को आहिस्ता से बंद कर दिया, और, दर्पण में अपने लाल हुए चेहरे को देख, खिलखिलाकर हंस पड़ी।

तूफ़ान के आसार

उस साल लंबी सरदी के कारण बुग्राई का मौसम देर से आया और यद्यपि लोग उसके लिए काफ़ी पहले से तैयारियां कर रहे थे, फिर भी,—हमेशा ही की तरह,—वह आया, तो एकदम अचानक और अप्रत्याशित रूप से।

वर्षा के ख़त्म होने के काफ़ी पहले से ही बर्फ़ से ढंके विस्तारहीन मैदानों के आरपार ठेठ स्तालिनग्राद* से लेकर स्तालिनाबाद तक रेलवे बंधों के पतले-पतले स्थल-संयोजकों पर तिरपाल से ढंके डिब्बों की लंबी-लंबी मालगाड़ियां रेंगती हुई दिखाई देने लगी थीं। मालगाड़ियां स्टेशनों पर लंबे-लंबे पड़ाव डालतीं, अपने बफ़रों को खड़खड़ाती हुई इधर-उधर शंटिंग करतीं और रात को स्तेपी की वीरानगी में ग़ायब हो जातीं। रास्ते में अगर संयोग से विदेशी संवाददाताओं को ये गाड़ियां मिल जातीं, तो डिब्बों की खड़खड़ाहट को सुनते ही उनके कान खड़े हो जाते और वे अपने सिरों को अपने शयनयानों की खिड़कियों से निकालकर उत्सुकतापूर्वक बाहर देखने लगते, मानो उन्हें रात के अंधेरे में अज्ञात गंतव्यों की ओर जाती फ़ौजी रेलगाड़ियों का चिरपरिचित शोर सुनाई दे रहा हो और पहियों की गड़गड़ाहट से वे यह अनुमान लगाने का यत्न करते कि वे किस सीमांत की तरफ़ जा रही हैं। विदेशी संवाददाता ग़लती नहीं कर रहे थे—गाड़ियां बेशक अपने धड़धड़ाते भार को लिये दक्षिण-पूर्वी मोर्चे, भारत और अफ़ग़ानिस्तान की सीमा की तरफ़ ही जा रही थीं। इन गाड़ियों में थे ट्रैक्टर, ट्रैक्टर और ट्रैक्टर—वे बर्फ़ानी स्तेपियों के स्तालिनग्राद से उपोष्णकटिबंधीय रेगिस्तान के स्तालिनग्राद (ताजिक भाषा में "आबाद" का वही मतलब है, जो रूसी में "ग्राद" या "गोरोद" का—शहर) को ट्रैक्टरों के पूरे के पूरे डिवीज़न लेकर जा रही थीं।

---

*अब वोल्गोग्राद।

जनतंत्र पर बुआई-अभियान वसंत के पहले बरसाती तूफ़ान की तरह से फूट पड़ा। उसने सरदियों में बने जालों को उड़ाकर काग़ज़ों के ढेर के ढेर बिखरा दिया, दफ़्तरों और संस्थाओं के दरवाज़ों और खिड़कियों को भड़भड़ाकर खोल दिया, और लोगों को अपने दफ़्तरों की कुरसियों से उठाकर सीधे खेतों में फेंक दिया कि वे वहां राजकीय योजना आयोग के कांचघरों में जनित आंकड़ों का ज़िंदा ज़मीन पर प्रतिरोपण करें।

ट्रैक्टरों के झुंडों के आगमन की घोषणा करते रेत के मटियाले बादल रेंगते हुए दानवों की तरह कर्णभेदी शोर करते हुए खेतों पर मंडराने लगे। टेलीग्राफ़ के तारों पर तारों ("बुआई-अभियान – अत्यावश्यक") की एक प्रचंड, अविराम और उलझी हुई धारा गूंजने लगी और अख़बारों के शीर्षकों के रूप में छापेख़ानों के टाइप के अक्षर (२० पाइंट, मोटा टाइप) ख़तरे की घंटियों की तरह घनघनाने लगे। दूसरे देशों में ऐसी आवाज़ें आम लामबंदी के मौक़ों पर ही सुनने में आती हैं।

स्तालिनाबाद एक ही दिन के भीतर खाली होकर अचानक एक ऐसे ख़ामोश क़सबे में परिणत हो गया कि जिसमें एक भी मोटर गाड़ी न रही। बुआई-अभियान के ववंडर में फुहार की तरह फंसकर सभी उपलब्ध कारें ज़िले-ज़िले भेज दी गईं। तारबर्क़ियों की खटखट डाक्टर की हथौड़ी की तरह जनतंत्र के उत्तेजनाग्रस्त शरीर को हज़ारों ही जगहों पर ठोक-ठोककर देख रही थी। इन दिनों लोग बस, आंकड़ों में ही बात करते थे, मानो आपस में भी किसी सांकेतिक भाषा में ही बातें कर रहे हों। अभूतपूर्व सट्टेबाज़ी के दौर में शेयर बाज़ार के सट्टेबाज़ों की तरह ज़िला समितियों के सचिव रात में टेलीफ़ोन पर इस तरह के आंकड़ों को चिल्लाते-चिल्लाते अपने गले बैठा लेते: शहरेनौ – ४२ प्रतिशत, जलील-कुल – ३८ प्रतिशत, कूरग़ान-तेपा – ५१ प्रतिशत, ख़ोजंद – ६४ प्रतिशत। और स्तालिनाबाद की निर्जन सड़कों पर बिजली के जीर्ण-शीर्ण खंबों पर तोतों की तरह बैठे लाउडस्पीकर इन आंकड़ों को अपनी फटी हुई आवाज़ों में दुहराया करते।

इस साल – योजना के अनुसार – जनतंत्र में मिस्री कपास की बुआई के क्षेत्रफल में एक लाख हैक्टर की वृद्धि की जानी थी। वख़्श और पंज नदियों के बीच का मैदान, जिसे अब पहली बार सींचा जा रहा था, इस रक़बे का अस्सी प्रतिशत था। जब यह ख़बर फैली कि इस अनादि काल से जलहीन मैदान में जुताई शुरू हो गई है, तो दूर-दूर के क़िशलाक़ों से

बांकी पगड़ियां बांधे फुरतीले घुड़सवार अपने घोड़ों को भगाते हुए उसे देखने के लिए आ गये। बुआई अब पूरे जोरों पर थी, तब इतने सारे ख़ाली लोगों को जाने का मौक़ा कैसे मिल गया, यह सोच पाना मुश्किल था। जानकारों ने बताया कि दूरस्थ सामूहिक फ़ार्मों में से प्रत्येक ने एक चश्मदीद गवाह से इस अभूतपूर्व नज्जारे का हाल सुनने के लिए अपने श्रेष्ठतम नौजवानों में से एक-एक को नियत कर दिया था और उसके इसमें लगे कार्य-दिवसों की पूर्ति करने का जिम्मा ले लिया था। मैदान की पूरी लंबाई में अपने दुबले-पतले घोड़ों पर पहरेदारों की तरह तैनात घुड़सवार अपनी गरदनों को उत्सुकतापूर्वक उठाकर देखते थे या बढ़ते हुए ट्रैक्टरों के आगे रहने और आते हुए रेले को सामने से देखने के लिए हुंकारते हुए घोड़ों को सरपट भगाये जाते थे।

जोर-जोर से गरजते ट्रैक्टर टिड्डी दल की तरह विशाल जलूस के रूप में दुर्दम्यतापूर्वक लगातार बढ़ते ही चले जाते थे। लगता था कि उनकी तादाद हजारों में है, क्योंकि उनके उठाये हुए धूल के बादल ठेठ क्षितिज तक फैले हुए थे। इस लौह गर्जन की तरंगें पंज नदी के पार चली जातीं और अपने घर बने लकड़ी के हल से खुरचे जमीन के अपने नन्हे से टुकड़े के साथ-साथ अंतहीन विस्तार में भटका अफ़ग़ान दहक़ान नदी के पार से उड़कर आती सोवियत धूलि को सूंघने और चौकन्ना होकर गरजती मशीनों के इस विचित्र संगीत को सुनने लगा।

ट्रैक्टर पहाड़ों और घाटियों को कुचलते, चढ़ाइयों पर चढ़ते और ढालों पर से फिसलते बिन रुके लगातार बढ़ते चले गये। पास आती इस गर्जना से भयाक्रांत जैरानों के झुंड अपनी जगहों को छोड़-छोड़ चिनगारियों की तरह स्तेपी में उड़ चले। पहला दिन ढलते-ढलते उनके बड़े-बड़े समूह ट्रैक्टरों की बढ़ती हुई क़तार के आगे-आगे भागे जा रहे थे। सामने से आते किसी भी आदमी को जो पहली चीज नजर आती, वह थी दहशत के मारे भागते जैरानों की लंबी क़तारें, फिर, उनके कई किलोमीटर पीछे, धूल का एक लहराता बादल घरघराता हुआ मैदान को पार करता चला आ रहा था। जैरानों ने कुछ ही समय पहले बच्चे दिये थे और अपनी सींकिया टांगों पर भागते उनके छौने दौड़ने में वयस्क पशुओं के बराबर न रह सके और लोगों ने उन्हें ख़ाली हाथ ही पकड़ लिया और दूसरी शिफ़्ट के ख़त्म होते-होते लगभग हर ट्रैक्टरचालक अपने-अपने घुटनों पर एक-एक लमटंगे

चितकबरे छौने को लिये हुए था, जिसकी मुलायम मख़मली आंखें दहशत के मारे उसके सिर से निकली जा रही थीं।

धातु के शोर को सुन आसपास के पहाड़ों से खरसैल गिद्धों के झुंड के झुंड उड़ते हुए चले आये – उनके तेज़ कानों ने युद्ध के परिचित स्वरों को पकड़ लिया था। देर तक वे ट्रैक्टरचालकों के कोसने की परवाह किये बिना ऊपर मंडराते रहे, आख़िर अपनी ग़लती का निश्चय कर लेने के बाद वे भारी-भारी पंख मारते वहां से चले गये।

मरुभूमि में पिछले कुछ हफ़्तों में जो बस्तियां अचानक फूट पड़ी थीं, उनमें से लोगों की भीड़ें भागती निकल आईं। हाथों की आड़ से आंखों को सूरज की चमक से बचाते हुए वे सामने से मंथर गति से गुज़रते ट्रैक्टरों की क़तारों को खड़े होकर देखने लगे। उनके उठे हुए हाथों को देखकर ऐसा प्रतीत होता था, मानो वे फ़ौजी परेड में सलामी ले रहे हों। ये लोग नवगठित सामूहिक फ़ार्मों के सदस्य थे, कुंआरी धरती की सिंचाई शुरू हो जाने के बाद उस पर काश्त करने के लिए आनेवाले आबादकार – सुदूर दरवाज़ क़िशलाक़ के रहनेवाले ताजिक, फ़रग़ाना की कपास की लहलहाती घाटियों के उज़्बेक, अल्ताई पर्वतमाला के उस पार रहनेवाले क़िर्गिज़ ख़ानाबदोश, जिन्होंने अपने डेरे को उखाड़ दिया था और जो अपनी ख़ानाबदोश ज़िंदगी के टेढ़े-मेढ़े सफ़र को इस कल तक के रेगिस्तान में हमेशा-हमेशा के लिए ख़त्म कर देने के लिए अपने नमदे के निवासों सहित यहां आ गये थे, जहां उन्होंने अपने ऊंटों को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ घूमने के लिए छोड़ दिया था, क्योंकि आसपास की अरीक़ों ने उन्हें मज़बूत रस्सियों की तरह ठांव से बांध दिया था।

ट्रैक्टर ललछौंह धूल के बादल में बढ़े आ रहे थे और उनके आगे-आगे फ़लांगों और भांति-भांति के रेंगनेवाले प्राणियों के झुंड के झुंड भागे जा रहे थे, जो अपनी मांदों से चमककर भाग खड़े हुए थे। वे चौड़ी थूथनवाले जंगली सूअरों के झुंड की तरह घरघराते और फटफटाते हुए बढ़े जा रहे थे। शाम होते-होते धूल फिर बैठ चुकी थी – बस, उलटी हुई मिट्टी ही उनके तूफ़ानी अभियान की अकेली गवाह रह गई थी।

ट्रैक्टर दिन-रात, दिन-रात अविराम चढ़ते चले गये। [ट्रैक्टरों के पीछे-पीछे घरघराते मैदानी लंगर चले आ रहे थे और उनके पीछे-पीछे था पैट्रोल के पीपों से लदे ऊंटों का एक अंतहीन काफ़िला। ख़ाली पीपों से लदे ऊंटों

की एक और क़तार वापस जा रही थी। कनवेयर के घूमते हुए पट्टे की तरह ऊंटों का यह आना-जाना एक बंधी हुई रफ़्तार से चल रहा था।

निर्माणस्थली पर छोटी सिंचाई प्रणाली को चरम गति से पूरा किया जा रहा था। ट्रैक्टरों और फ़्रेस्नो स्क्रेपरों से लेकर सूडान डिचर और ग्रेडर तक उपलब्ध हर छोटी मशीनरी को, जो अभी तक रियूमिन के सैक्शन की अहरणीय गर्व की चीज़ें थीं, जल्दी-जल्दी तीसरे सैक्शन को भेज दिया गया। छोटी सिंचाई प्रणाली के समय पर पूरा हो जाने के बारे में किसीको भी तनिक भी गंभीर संदेह नहीं था। जब खेतों को पानी दिये जाने की बात उठती, तो सभी की आंखें आशंका के साथ मुख्य सैक्शन की तरफ़ ही उठ जाती थीं, जहां से दिन-रात बमबारी की दबी हुई आवाज़ें आती रहती थीं। वहां हज़ारों घन मीटर और कांग्लोमेरेट को विस्फोट द्वारा उड़ाया जा रहा था।

बुआई अभियान निर्माणस्थली से उसके ट्रैक्टरों के एक बड़े भाग को ग्रसता हुआ निकल गया और ट्रैक्टरों की अविराम घरघराहट मज़दूरों को मानो उतावला बनाने, उत्तेजित करने और उभारने लगी। हर कोई जानता था कि पानी को अगर खेतों की सिंचाई करने के लिए मुख्य नहर में समय पर नहीं छोड़ा गया, तो अस्सी हज़ार हैक्टर ज़मीन की जुताई और उसमें कपास की बुआई अकारथ रह जायेगी।

निर्माणस्थली पर इन दिनों लोगों की दाढ़ियां बढ़ी हुईं और चेहरे सूखे हुए थे, अनिद्रा के कारण उनकी पलकें सूजी हुई थीं, वे बोलते बहुत कम थे और ज़रा-ज़रा सी बात पर चिढ़ जाते और चिल्लाने लगते थे। सभी जानते थे कि खेतों को पानी दिये जाने तक बचे हुए समय के एक-एक मिनट का हिसाब लगा लिया गया है और बड़ी मशीनों में से अगर कोई भी एक दिन के लिए भी ख़राब हो गई, तो इसका मतलब होगा कि शायद पानी समय पर न छोड़ा जा सके।

नौआबादकारी की समस्या बड़ी चिंता पैदा कर रही थी। जुताई पूरी होनेवाली थी, मगर सिंचाई के लिए निर्धारित पचास प्रतिशत ज़मीन पर आबादकार अभी तक नहीं बसाये गये थे। मोरोज़ोव ने स्तालिनाबाद टेलीफ़ोन किया, ज़िला और जनतंत्रीय अधिकारियों पर चिल्लाते-चिल्लाते अपने गले को बैठा लिया, मगर परिस्थिति में कोई ख़ास सुधार न ला पाया। आप्रवास केंद्र केवल एक ही उत्तर देता था – आबादकारों को भरती करने के काम

में इस आशय की ज़ोरदार अफ़वाहों के रूप में अप्रत्याशित कठिनाइयां आ खड़ी हुई हैं कि निर्माण-कार्य के पूरा होने में विलंब के कारण नई ज़मीन को इस साल पानी न दिया जा सकेगा। स्तालिनाबाद इस बात की गारंटी मांगता था कि पानी निश्चय ही समय पर प्रदान कर दिया जायेगा। मोरोज़ोव टेलीफ़ोन पर थूक देता और निर्माणस्थली का मुआयना करने चला जाता।

आप्रवास केंद्र पर निर्भर किये बिना ज़िला पार्टी संगठन की ओर से मुख़्तारोव नई ज़मीन के कम से कम एक भाग के लिए आबादकार प्राप्त करने के लिए जी-तोड़ प्रयास कर रहा था। मुख़्तारोव ख़ुद उन क़िर्गिज़ ऊंटवालों को नई ज़मीन पर बसने के लिए राज़ी करने में सफल हो गया, जो निर्माणस्थली पर अपने ऊंटों के साथ सामान के परिवहन के काम में लगे हुए थे और उसने उनसे दो सामूहिक फ़ार्म बना डाले। वह निर्माणस्थली पर बेलदारी करनेवाले अफ़ग़ान दहक़ानों से भी दो सामूहिक फ़ार्मों का गठन करने में कामयाब हो गया, लेकिन इससे समस्या हल हुई नहीं।

मुख़्तारोव के चेहरे की रौनक़ जाने लगी, उसके बदन का सांवला रंग ज़र्द पड़ने लगा। ज़िले में बुआई अभियान पर्याप्त तेज़ी के साथ नहीं चल रहा था। "ताजिकिस्तानी कम्युनिस्ट" समाचारपत्र इस ख़बर को हर दिन सारे जनतंत्र भर में ज़ोर-शोर के साथ गुंजा देता था। कहीं नाम काले तख़्ते पर ही न लिख दिया जाये! उसकी आंखों का तारा, वह मनहूस सामूहिक फ़ार्म लीक से नहीं निकल पा रहा था और सभी सूचक आंकड़ों को ख़राब कर रहा था। और इन सब के ऊपर यह आबादकारों की समस्या आ खड़ी हुई थी। ट्रैक्टर नई ज़मीन को जोत और बो देंगे, लेकिन फिर क्या होगा? गोड़ाई कैसे होगी?

अत्यंत उदासीभरे विचारों में डूबा मुख़्तारोव नये आबादकारों के सामूहिक फ़ार्मों का दौरा करके पैदल वापस आ रहा था। कत्ता-ताग़ सैक्शन की बस्ती की तरफ़ मुड़कर वह पानी पीने के लिए दफ़्तर में जा घुसा। कमरा ठंडा और लगभग ख़ाली था। इसी समय सिनीत्सिन ने कमरे में प्रवेश किया।

"रियूमिन तो नहीं है यहां?"

"नहीं, रियूमिन एक सौ तीसवीं चौकी पर है।"

"अरे, वाह, मुख़्तारोव! अच्छा हुआ कि तुम मिल गये। मैं कई दिन से तुम्हारी तरफ़ ही आने की सोच रहा था, पर आ नहीं पा रहा था। आप्रवास निर्माण ट्रस्ट के मामले को तुम्हारे ज़िले के अभियोक्ता के सुपुर्द किये मुझे दस दिन हो चुके हैं, लेकिन आज तक मुझे उसका एक शब्द भी सुनने को नहीं मिला है। आज उस नई बस्ती की आधी झोंपड़ियां ढह गईं, जिसमें दरवाज़ीवाले रह रहे हैं। लोग बेघरबार हो गये हैं।"

"क्या मतलब कि ढह गईं?" अपनी जगह पर से उठते हुए ऊर्ताबायेव ने कहा।

"ऐसे ही। बस, अपने आप ही ढह गईं। हरामज़ादों ने उन्हें बनाया भी कैसी चीज़ों से था! सड़े-गले सरकंडे! यह साफ़ तोड़-फोड़ का मामला है। इस तरह वे सामूहिक फ़ार्मों को नष्ट करना चाहते हैं। बेचारे पहाड़ी साये के बिना धूप में भुन रहे हैं! कमाल की बात है! ख़ैर, मैंने इस बारे में कोमारेंको से बात की है। उनके पास कुछ काफ़ी ज़ोरदार सबूत हैं। उनकी सूचना के अनुसार ट्रस्ट के मैनेजमेंट में काम करनेवाले छः लोगों में से चार भूतपूर्व श्वेतगार्डी हैं और एक ओस्सेतिन रजवाड़ा है। एक संस्था में इससे ज़्यादा भला क्या होंगे! ज़ाहिर है कि इन बदमाशों ने सामूहिक फ़ार्मों की सभी इमारतें इसी तरह की बनाई हैं कि महीने-दो महीने के भीतर वे अपने-आप ही ढह जायें। ज़रा उनकी शहतीरों को ही देखो! उन्होंने इसके लिए लकड़ी को ख़ास करके भिगाया होगा और फिर उसके गलने तक रुके रहे होंगे। तो, संक्षेप में यह कि इस सारे गिरोह को गिरफ़्तार करके अदालत के सामने लाना होगा।"

"ऐसा ही करेंगे," मुख़्तारोव ने उदासी भरी आवाज़ में सहमति जताई।

"लेकिन हमारे यहां ये हरामी आये कहां से?" ऊर्ताबायेव ने पूछा। "यह समझो कि सारे सोवियत संघ से यहीं आकर इकट्ठा हो गये हैं।"

"और होगा भी क्या? कपास के मामले में देश की आर्थिक स्वतंत्रता का सवाल है और फिर सीमांत भी पास ही है। वे सब एक ही योजना के अनुसार काम कर रहे हैं—थोड़ी तोड़-फोड़ करो, फिर पंज को पार करके ग़ायब हो जाओ। पहले यह चाल चल जाती थी, लेकिन अब कोई मज़ाक थोड़े ही है! ख़ैर, यह तो हुई एक बात..." सिनीत्सिन ने गिलास में पानी लिया और एक सांस में पी गया।

"क्या और भी कोई बात है?" मुख़्तारोव ने पूछा।

"हां, एक बात और है। आबादकारों में—ख़ासकर यहां, कत्ता-ताग़ ज़िले में—बड़ा ज़बरदस्त प्रचार किया जा रहा है। कहा जा रहा है कि पहाड़ ढह जायेगा और पानी सारे मैदान को डुबो देगा। क़िर्गिज़ लोग यहां से भागने की तैयारी कर रहे हैं।"

"जानते हो, इस सिद्धांत को यहां मास्को के किसी प्रोफ़ेसर ने प्रतिपादित किया था," मुख़्तारोव बोला।

"पिछले साल यहां न जाने कितने अहमक़ अपने-अपने सिद्धांत गढ़ने में लगे हुए थे और अब हमें उनके फल भुगतने पड़ रहे हैं। लड़ाई के बारे में जो बेसिर-पैर की बात फैलाई जा रही है, वह ख़ासकर ज़ोरदार है। कहा जा रहा है कि अंग्रेज़ हमारे ख़िलाफ़ अगर आज नहीं, तो कल लड़ाई का ऐलान करनेवाले हैं। बेशक, इन अफ़वाहों में कोई नई बात नहीं है। नई बात यह है कि हमने यह पता लगा लिया है कि ये आती कहां से हैं। और ये आती हैं मुख्य रूप में स्थानीय सामूहिक फ़ार्मों से भरती किये गये एक-दो मज़दूरों से—बिलकुल ठीक कहें, तो 'लाल अक्तूबर' और 'लाल हलवाहा' सामूहिक फ़ार्मों के मज़दूरों से। 'लाल हलवाहा' सामूहिक फ़ार्म की बात यह है कि निर्माणस्थली पर उरूनोव नाम का एक कोम्सोमोली काम कर रहा था, जिसका बाप इस सामूहिक फ़ार्म का सदस्य है। तो, बाप ने कई दिन हुए, उसके पास एक दूत भेजा। उसने बेटे को हुक्म भेजा कि वह निर्माणस्थली और कोम्सोमोल से फ़ौरन नाता तोड़ ले और एकदम घर लौट आये। उसने कहलवाया कि सिंचाई शुरू होने के पहले ही सभी कोम्सोमोलियों के गले काट दिये जायेंगे। बासमचियों वग़ैरह के बारे में अफ़वाहों के साथ-साथ यह अमीरों के उकसावे जैसा ही लगता है। हमने फ़ैसला किया कि उरूनोव इस सामूहिक फ़ार्म को वापस चला जाये। वह भटके हुए बेटे की तरह अपने बाप की गोद में लौट जाये और वहां पहुंचकर इस बात का सुराग़ लगाये कि सरग़ना कौन हैं और बिलकुल ठिकाने पर, क़िशलाक़ में ही, जागृति फैलाने का काम करे... यह, मुख़्तारोव, तुम्हारी जानकारी के लिए है। अगर तुम इस सामूहिक फ़ार्म में जांच-पड़ताल शुरू करो, तो इस बात को ध्यान में रखना कि उरूनोव कोई भगोड़ा कोम्सोमोली नहीं है, बल्कि हमारा ही आदमी है। कोमारेंको इस मामले के बारे में जानते हैं।"

"ख़ूब! और 'लाल अक्तूबर' के कौन लोग हैं?"

"'लाल अक्तूबर' के हमारे यहां चार आदमी हैं। उनमें से दो बहुत अच्छे मजदूर हैं—तूफ़ानी टोली के। बाक़ी दोनों—अज़ीज रहमानोव और महमूद कमरोव ज़ाहिरा तौर पर अमीरों के हाथ के मोहरे हैं, जिनका एकमात्र काम प्रचार करना ही है। प्रकट है कि वे यहां इसी इरादे से काम करने के लिए आये हैं। लेकिन अभी हम उनको हाथ नहीं लगा रहे हैं, ताकि सरग़ना लोग सावधान न हो जायें। पिछले साल हमारे पास ख़्वाजायारोव को 'लाल अक्तूबर' ने ही भेजा था। इस बात को मानकर चलना होगा कि हमें अमीरों के एक काफ़ी विस्तृत संगठन का सामना करना है, जो पूरी चालाकी से चालें चल रहा है, ख़्वाजायारोव के ज़रिये अफ़ग़ानिस्तान से संपर्क रख रहा है और प्रत्यक्ष रूप से इस साल बासमचियों के एक और हमले पर निर्भर कर रहा है।"

"यह सब मुझे मालूम है," मुख़्तारोव ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा, "बस, तुम्हारे इस उरूनोव के बारे में ही मैं नहीं जानता था। यही है असली ख़बर!"

"जानते हो, तो अच्छा ही है। ख़ैर, सावधान रहो! तुम्हारे सामूहिक फ़ार्मों की तरफ़ ध्यान देने का हमारे पास वक़्त नहीं है—हमारी अपनी परेशानियां ही काफ़ी हैं। उरूनोव को मैंने अपवादस्वरूप ही भेजा है। कोमारेंको के साथ बात करके सारे मामले को जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी ख़त्म करो, क्योंकि निर्माण-कार्य पर इसका बुरा असर पड़ता है। वे आबादकारों को डराकर भगा देंगे और हमारा सारा काम अकारथ हो जायेगा। ख़ैर, मैं चला! तुम्हें पहुंचा दूं?"

"नहीं, मैं अभी रुकूंगा। मैं दरवाज़ेवालों से जाकर मिलना चाहता हूं। देखना चाहिए कि उनकी ये इमारतें कैसे गिर रही हैं। कल हमें अभियोक्ता को बुलाना होगा।"

उदासीभरी सीटी बजाता हुआ मुख़्तारोव बाहर चला गया।

कुलाक की पहेली

पहाड़ी ढालों पर बुआई अभियान ट्रैक्टरों के गर्जन के बिना, कसकर तने जूओं की चरमराहट और गरम ख़ामोशी को भंग करते हलवाहों के एकरस गायन के साथ चलता था। हलों के चमकते फालों से काली भुरभुरी

मिट्टी हलकी सरसर करती तेज़ ढालों पर झड़ती चली जाती थी और ढीली मिट्टी में टखनों तक टांगें धुसाये बैल मुश्किल के साथ आगे बढ़ जाते थे।

'लाल अक्तूबर' सामूहिक फ़ार्म में जुताई ख़त्म होनेवाली थी। पहाड़ी ढाल की आख़िरी पट्टियों को जोता जा रहा था। शाम के वक़्त थके हुए बैल और आदमी पहाड़ों से धीरे-धीरे उतरकर आते। उनके उलटे हुए हल साथ-साथ खड़खड़ करते चलते। क़िशलाक़ की मिट्टी की छतों से सीधी रेखाओं में धूएं की लच्छियां उठतीं, जैसे आकाश को छूने जा रही हों। घर-घर में शोरबा पकता होता।

ऐसे ही समय रहीमशाह आलिमोव ने करी अब्दुस्सत्तारोव के घर में प्रवेश किया।

"सलाम अलैकुम!"

"वालैकुम अस्सलाम!" करी ने अपने मुंह को हाथ से पोंछ लिया।

सशंकित औरतें अपने चेहरों को ढंकते हुए जनान-ख़ाने में चली गईं। रहीमशाह निमंत्रण की प्रतीक्षा किये बिना कालीन पर बैठ गया और नान से एक टुकड़ा तोड़कर उसने शोरबे से भरी तश्तरी में डुबा दिया।

"कल बुआई शुरू होगी," शोरबे में भीगी नान को मुंह में ठूंसते हुए उसने इस तरह से कहा कि उसे हक़ीक़त का बयान भी समझा जा सकता था और करी से पूछा सवाल भी।

करी ने सिर हिलाकर मौन स्वीकृति जताई।

"ज़िला अधिकारी बहुत नाराज़ हैं। कहते हैं कि हमने बुआई में बहुत देर कर दी है," यह कहते हुए उसने शोरबे के कुछ घूंट पी लिये, "अब हमें जल्दी करनी होगी।"

रहीमशाह ने जैसे समझते हुए दूसरा निवाला निगल लिया।

"बहुत नाराज़ हैं!" उसने जानकारों की तरह कहा, "अख़बार नहीं देखे तुमने?"

करी ने इनकार में सिर हिला दिया। वह न लिख सकता था, न पढ़ और रहीमशाह इस बात को अच्छी तरह से जानता था।

"अख़बार क्या लिखते हैं?" करी ने घबराते हुए पूछा। "अख़बार" शब्द से ही वह हमेशा आशंकित हो जाया करता था।

रहीमशाह ने बाक़ी नान को भी शोरबे में डुबा दिया।

"लिखते हैं कि कुछ सामूहिक फ़ार्मों ने सबसे अच्छी ज़मीन पर अनाज बोया है और सबसे ख़राब पर कपास।"

"हूं?" करी के कान खड़े हो गये।

"बहुत नाराज़ हैं। लिखते हैं कि सिर्फ़ सोवियत सत्ता के दुश्मन ही ऐसा कर सकते हैं। वे कहते हैं कि वे सभी सामूहिक फ़ार्मों की जांच करेंगे और जहां उन्हें यह देखने के लिए मिला कि सबसे अच्छी ज़मीन पर अनाज बोया गया है, उन फ़ार्मों के नाम वे काले तख़्ते पर लिख देंगे। और सारे दहक़ानों को यह बताने के लिए कि कौन लोग अमीरों का साथ दे रहे हैं और सोवियत सरकार के आदेशों के ख़िलाफ़ जा रहे हैं, वे प्रबंध समिति के सभी सदस्यों के नाम अख़बार में छाप देंगे।"

"सचमुच यही लिखा है?"

"अख़बार तो मैं घर छोड़ आया। मेरा ख़याल था कि तुमने पढ़ ही लिया होगा। तुम चाहो, तो जाकर ले आता हूं।"

"तो, यह लिखा है कि वे प्रबंध समिति के सभी सदस्यों के नाम छाप देंगे?" करी ने लंबी चुप्पी के बाद पूछा।

"सभी के। काले तख़्ते पर। सबसे ऊपर सामूहिक फ़ार्म का नाम और उसके नीचे प्रबंध समिति के सभी सदस्यों के नाम – अपने पिताओं के नाम के साथ। इसके बाद इन लोगों को बाज़ार में मुंह दिखाते भी शरम आयेगी... कितनी अच्छी बात है कि इस साल हमारे सामूहिक फ़ार्म के नाम पर कोई कलंक नहीं लगा है। पिछले साल तो ख़्वाजायारोव के पीछे हम ज़िले भर में बदनाम थे।"

"हूं..." करी ने परेशानी के साथ अपनी दाढ़ी को खुजलाते हुए अस्पष्ट-सी सहमति जताई।

"हां, तो दौलत कब वापस आ रहा है?" रहीमशाह ने विषय को बदलते हुए पूछा, "बुआई क्या उसके बिना ही होगी?"

"क़ूरग़ान से किसी आदमी के ज़रिये उसने कहलवाया था कि वह परसों लौटेगा। वह ज़िला अधिकारियों से और अनाज लेना चाह रहा है, मगर वे दे नहीं रहे हैं।"

"अरे, हां! क़ासिम सैयदोव की दूसरी टुकड़ी ने एक तजवीज़ पेश की है। वे लोग ज़िला केंद्र से दरख़ास्त करना चाहते हैं कि हमें बीस हैक्टर नई ज़मीन दी जाये। इसे वे योजना के अलावा बोयेंगे। उनका कहना

है कि अभी आबादकारों की तादाद कम है और अगर हम उसकी काश्त का ज़िम्मा ले लें, तो ज़िला अधिकारी उसे हमें दे देंगे। ज़मीन कोई ज़्यादा दूर नहीं – पहाड़ की ढाल पर ही है। वह कपास के मतलब की नहीं है, लेकिन उस पर अनाज बोया जा सकता है। वे सभा बुलाने की सोच रहे हैं। अगर सभा इसके हक़ में हो, तो हम साथ ही बुआई की पुरानी योजना को भी बदल सकते हैं। हम जिस ज़मीन पर अनाज बोना चाहते थे, उस पर कपास बो सकेंगे और अनाज नई ज़मीन पर बो देंगे। बोलो, क्या कहते हो?"

"विचार तो बढ़िया है!" करी ने उत्साह दिखाते हुए कहा, "लेकिन दौलत के लौटने तक ठहरना होगा।"

"मेरा ख़याल है कि उसके लौटने के पहले ही फ़ैसला कर लेना बेहतर रहेगा, ताकि वह ज़िला केंद्र में इस मामले को भी साथ ही पेश कर सके। तब शायद वे उसे अनाज भी जल्दी दे दें। नहीं तो उसे इसी के लिए फिर ज़िला केंद्र का चक्कर लगाना पड़ेगा। और अगर कई दिन बाद उनके पास गये, तो वे कहेंगे – 'इतने दिन से क्या कर रहे थे? अब वक़्त नहीं रहा है – कुछ भी हो, बुआई नहीं हो पायेगी।'"

"लेकिन दौलत के बिना मैं अकेला सभा नहीं बुला सकता," कुछ सोचने के बाद करी ने निश्चय किया।

"क्यों नहीं? ख़ूब अच्छी तरह से बुला सकते हो! दौलत की ग़ैर-मौजूदगी में तुम उसकी जगह हो। और फिर प्रबंध समिति के सदस्यों का बहुमत भी पक्ष में है। तुम इसके हक़ में हो। बेवा ज़ुमुर्रुद हक़ में है। हकीम हक़ में है। नियाज़ और बूढ़ा इकराम ख़िलाफ़ भी हों, तो भी बहुमत हमारा ही है। फिर कोमारेंको भी है ही। बुआई के क्षेत्रफल को बढ़ाने के वह हमेशा ही हक़ में है, इसलिए उससे तो पूछने की भी ज़रूरत नहीं। उसके बिना भी हमारा ही बहुमत है।"

"लेकिन हम दौलत का इंतज़ार क्यों न करें?" करी ने आग्रहपूर्वक कहा।

"क्योंकि बहुत देर हो जायेगी। मैं तुमसे कह रहा हूं। लेकिन ठीक है – जैसी तुम्हारी मरज़ी, वैसा करो," रहीमशाह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। "तुम मेरी बात को याद करोगे।"

"देर हो जायेगी?" करी सोचने लगा। "रुको ज़रा, रहीमशाह! तुम्हें जाने की ऐसी क्या जल्दी पड़ी हुई है? शोरबा तुम खा ही चुके हो, इसलिए अब जल्दी क्यों कर रहे हो? जानते हो, मैं क्या सोच रहा हूं?"

"क्या सोच रहे हो?"

"मैं इस तरह सोचता हूं– रहीमशाह पहले इस सामूहिक फ़ार्म का प्रधान था। सोवियत सत्ता ने उसे अपने पद से हटा दिया। इसका मतलब है कि वह ख़राब प्रधान था। हो सकता है कि इस वक़्त वह मुझे भी ख़राब राय दे रहा हो।"

"जानते हो, मैं तुमसे क्या कहूंगा, करी?"

"क्या?"

"मैं यह कहूंगा–जब मैं सामूहिक फ़ार्म का प्रधान था, तब मैं अहमक़ था। मैं इस बात को नहीं मानता था कि अगर सोवियत सत्ता कुछ कहती है, तो वह सच ही कहती है, दहक़ानों के भले के लिए ही कहती है। मैं सोवियत सत्ता पर विश्वास नहीं करता था, मुझे बूढ़ों पर विश्वास था। मैं अपनी अक़ल का इस्तेमाल नहीं करता था। लेकिन सोवियत सत्ता ऐसे अहमक़ों को पसंद नहीं करती, जो अपने दिमाग़ का इस्तेमाल नहीं करते। इसलिए सोवियत सत्ता ने मुझे अपने ओहदे से अलग कर दिया। अब करी, तुम प्रबंध समिति के सदस्य और फ़ार्म के उपप्रधान हो, जबकि मैं बस, सीधा-सादा सामूहिक किसान ही हूं। मैं अपने दिमाग़ का इस्तेमाल करता हूं, जबकि तुम औरों के दिमाग़ का उपयोग करते हो। सोवियत सत्ता ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करती, जो अपने दिमाग़ का इस्तेमाल नहीं करते। करी, मैं तुमसे और कुछ नहीं कहूंगा। मैं और किसानों से बात करूंगा और तुम कल सुबह मुझे बताना कि तुम सभा बुलाओगे या नहीं।"

"अरे, रुको ज़रा, रहीमशाह! क्या महत्वपूर्ण सवालों का इसी तरह से फ़ैसला किया जाता है? तुम्हें ऐसी क्या जल्दी पड़ी है? अरे, रुको, खाना यहीं खाओ। लो, यह लो और एक नान..." करी ने छोटी-सी संदूकची में दस्तरख़ान में अच्छी तरह से लिपटी हुई नानों में से एक निकाली और बाक़ी को जल्दी से छिपा दिया।

कई दहक़ानों ने घर में प्रवेश किया और अभिवादन के तौर पर सीने से हाथ लगाकर कालीन पर बैठने लगे। ये लोग आठों टुकड़ियों के नायक थे, जो कल के काम के बारे में हिदायतें लेने के लिए आये थे–वे जानना चाहते थे कि बुआई कहां से शुरू की जाये। टुकड़ी-नायकों के पीछे-पीछे बेवा ज़ुमुर्रुद भी घुस आई। मिनट भर बाद ही नियाज़ हसनोव दरवाज़े में आ खड़ा हुआ। कमरा लोगों से भर गया।

दौलत के दायें हाथ, नियाज़ के आने से करी असमंजस में पड़ गया। वह मन ही मन इस बात पर अफ़सोस करने लगा था कि उसने रहीमशाह को जाने क्यों नहीं दिया, लेकिन पीछे हटने का वक़्त निकल चुका था और करी को बातचीत बंद करते और इस तरह रहीमशाह को यह दिखाते शरम आ रही थी कि वह – सामूहिक फ़ार्म का उपप्रधान – नियाज़ के आ जाने से डर गया है। इससे रहीमशाह की इस पैनी फबती की पुष्टि ही होती कि वह – करी – औरों के दिमाग़ों का इस्तेमाल करता है।

वह शांति के साथ अपनी दाढ़ी सहलाता रहा और बातचीत के टूटे सूत्र को फिर पकड़कर ऐसी ऊंची आवाज़ में बोला कि बहरा नियाज़ भी सुन सके :

"मान लो कि मैं बहुमत की बात मान लेता हूं और दौलत की वापसी तक ठहरे बिना सभा बुला लेता हूं। लेकिन इसके बाद? अब अशांति का समय है – तरह-तरह की अफ़वाहें फैल रही हैं... अशांति के समय में हर कोई यही चाहता है कि क़िशलाक़ में ज्यादा से ज्यादा अनाज रहे... कपास को तो खाया जा सकता नहीं। सोवियत सत्ता को कपास की जरूरत है, लेकिन दहक़ानों को तो अनाज ही चाहिए। अगर दहक़ान थोड़ी कपास पैदा करके न दे पायें, तो क्या इससे सोवियत सत्ता ग़रीब हो जायेगी?"

रहीमशाह ने सभी लोगों पर एक निगाह दौड़ाई और करी को जवाब देने के साथ ही साथ हर किसीको संबोधित करते हुए कहा :

"यह कह रहे हैं कि दहक़ानों को अनाज चाहिए और सोवियत सत्ता को कपास। लेकिन जब यह दूकान जाते हैं, तो इनका पहला सवाल क्या होता है? यह पूछते हैं – 'आपके पास कपड़ा है?' और अगर कपड़ा न हो, तो नाराज़ हो जाते हैं। और इनका नाराज़ होना वाजिब भी है, क्योंकि इन्हें चोग़ा चाहिए और इनके बेटे को भी चोग़ा चाहिए और इनके दूसरे बेटे को भी चोग़ा चाहिए और इनकी बीवी को भी चाहिए। करी, अगर तुम ज़रा सी कपास न बो पाओ, तो उससे सोवियत सत्ता ग़रीब नहीं हो जायेगी। लेकिन हां, अगर हर दहक़ान ही ज़रा-ज़रा सी कपास न पैदा कर पाया, तो हर किसीको अपने चोग़े के लिए कपड़े की ज़रा कमी हो जायेगी। और करी, अगर सोवियत सत्ता ने तुम्हें कपड़ा बेचते समय यह कहा, तो तुम क्या कहोगे कि 'यह रहा तुम्हारे चोग़े के लिए कपड़ा, मगर

करी, माफ़ करना, यह ज़रा कम है—एक ग्रास्तीन का है, इसलिए इस साल तुम एक ही ग्रास्तीनवाला चोग़ा पहन लेना।'"

सभी टुकड़ी-नायक ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे।

"एक ग्रास्तीनवाला चोग़ा नहीं पहना जाता," करी बोला। "तुम बड़ी चतुराई की बातें करते हो, रहीमशाह। ग्रगर तुम ऐसे ही चतुर हो, तो ज़रा एक पहेली बुझाग्रो। पहले हम लोग कपास नहीं उगाते थे, फिर भी बाज़ार में जितना चाहते, उतना कपड़ा ख़रीद सकते थे, जब कि ग्रब हम कपास भी पैदा करते हैं, लेकिन बाज़ार में कपड़ा कभी काफ़ी नहीं होता। ग्रब यह बताग्रो कि इसकी क्या वजह है? तुम तो सभी कुछ जानते हो।"

"करी, बदले में तुम मेरी एक पहेली बुझाग्रो," रहीमशाह ने कहा, "ग्रगर पहले जितना चाहो, उतना कपड़ा ख़रीदा जा सकता था, तो क्या वजह थी कि जब से मैं तुम्हें जानता हूं, तुम हमेशा वही एक फटा-पुराना चोग़ा पहने घूमते थे ग्रौर तुम्हारी बीवी भी वही फटी पोशाक पहने रहती थी ग्रौर तुम्हारे बच्चे चिथड़े पहने फिरा करते थे?"

"यह कोई पहेली नहीं है। मैं तो हमेशा से ही ग़रीब था ग्रौर ग्राज भी ग़रीब ही हूं।"

"फिर भी ग्रगर ग्रब तुम ग्रपना संदूक़ खोलकर देखो, तो तुम पाग्रोगे कि उसमें तुम्हारे तीन चोग़े हैं, तुम्हारे हर बेटे के दो-दो चोग़े हैं ग्रौर तुम्हारी बीवी के पास भी बहुत करके दो से ज्यादा ही पोशाकें हैं।"

"पहले यह देखो कि तुम्हारे संदूक़ में कितना माल है, ग्रौरों के संदूक़ों में बाद में ताका-झांकी करो," करी ने ग़ुस्से में भरकर कहा।

टुकड़ी-नायक ठहाका मारकर हंस पड़े। सभी जानते थे कि रहीमशाह ने कंजूस करी के मर्म पर बड़ी सफ़ाई से चोट कर दी है।

"तुम्हारी बातें सुनकर तो, करी, हैरानी होती है," बेवा ज़ुमुर्रुद ने बीच में पड़ते हुए कहा, "तुम प्रबंध समिति के सदस्य हो ग्रौर फ़ार्म के उपप्रधान भी हो, लेकिन तुम किसानों को समझ में न ग्रानेवाली बातें समझाने के बजाय उलटे ग्रौरों से बेवकूफ़ी भरी पहेलियां बुझवा रहे हो। ग्रगर तुम इतने ही परेशान हो, तो मैं तुम्हारी पहेली बुझा देती हूं। करी, जब तुम जवान थे, तो तुम भरपेट नहीं खाते थे, फटा-पुराना चोग़ा पहने घूमते थे ग्रौर दस साल तुमने बैल की तरह काम किया, क्योंकि तुम काबीन

जोड़ना चाहते थे, जिससे तुम घर में बीवी ला सको और लड़के पैदा कर सको, ताकि तुम्हारे मरने के बाद कोई तुम्हारे नाम पर सूरा पढ़नेवाला भी रहे। बाद में जब तुमने काबीन दे दिये और घर में बीवी भी ले आये और बाल-बच्चेदार आदमी हो गये, तब भी तुम्हें ग़रीबों की तरह ही रहना पड़ा, लेकिन तुम्हें शायद उन दस बरसों का अफ़सोस नहीं है, जो तुम्हें काबीन के पीछे ज़ाया करने पड़े, क्योंकि बिना बीवी-बच्चेवाला आदमी तो मर्द भी क्या कहलायेगा। अब सोवियत सत्ता ने काबीन की ज़रूरत ख़त्म कर दी है और तुम्हारे बेटे के लिए यह ज़रूरी नहीं रहा है कि घर में बीवी लाने के लिए उसे भी तुम्हारी तरह काम करना और भूखा रहना पड़े। लेकिन सोवियत सत्ता कहती है, 'पुराने वक़्त में हमारे दहक़ानों को जो ज़िंदगी जीनी पड़ती थी, क्या उसे असली ज़िंदगी कहा जा सकता है?' और सोवियत सत्ता दहक़ानों से कहती है, 'अभी कुछ बरस और आपको कुछ चीज़ों के बिना रहना पड़ेगा – बेशक, पहले आपको जितनी क़िल्लत का सामना करना पड़ता था, उसके मुक़ाबले बहुत कम। फिर भी, इस वक़्त आप जो तकलीफ़ उठायेंगे, वह बेकार नहीं जायेगी। वह समय आयेगा, जब उसके बदले आपको एक नई, अच्छी ज़िंदगी मिलेगी।' तो, करी, अब मेरे इस सवाल का जवाब दो – तुम्हारा एक बीवी की ख़ातिर काबीन देने के लिए दस साल तक हर चीज़ के बिना रह लेना तो वाजिब था, लेकिन अब एक नई, अच्छी ज़िंदगी की ख़ातिर काबीन देने के लिए तुम्हारा एक और चोग़े और कुछ और चीनी के बिना रह जाना वाजिब नहीं है? और जो दहक़ान तुम्हारी तरह करे, क्या उसे समझदार कहा जा सकता है? ख़ैर, करी, अब हम सबको यह बताओ – हम यही जानने के लिए आये हैं – कि तुम सभा बुलाओगे या नहीं। क्योंकि अगर तुम नहीं बुलाओगे, तो हम अपने-आप बुला लेंगे।"

"ओफ़्फ़ोह, कैसे जल्दबाज़ लोग हो तुम सब!" करी ने सिर हिलाते हुए कहा। "किसने कहा है कि मैं सभा बुलाना नहीं चाहता? रहीमशाह और मैं अभी इसी बात पर विचार कर रहे थे कि कब सभा बुलाना सबसे अच्छा रहेगा, जिससे लोगों को काम छोड़कर न आना पड़े और मैं उसके कल बुलाये जाने के ख़िलाफ़ था। मेरे ख़याल में सभा आज ही करना ज़्यादा ठीक रहेगा..."

आख़िरी बाज़ी

चट्टान के कटाव में घुटनों तक पानी में खड़े मजदूर चट्टानी स्तर के पीले टुकड़ों को डोलों में भर रहे थे। झटके के साथ घूमते हमाले की चाल की वे मुश्किल से ही बराबरी कर पा रहे थे। कमर तक नंगे उनके बदनों पर पसीने की धारें बह रही थीं। एक महीने पहले निर्माणस्थली पर कोई भी काम की इतनी प्रचंड गति की कल्पना भी नहीं कर सकता था। उन दिनों काम की रफ़्तार बहुत ही धीमी थी – इस बात को हर कोई अब समझ रहा था और इस महीने के मुक़ाबले पिछले महीने के काम के आंकड़े अब बेहद उपहासास्पद लगते थे। उन दिनों जिन लोगों को तूफ़ानी मजदूर होने के नाते बोनस दिया गया था – उन्हें तो अब इस बात को स्वीकारते भी जैसे शरम आती थी। तट के साथ-साथ थोड़ी दूरी पर तैनात तीस ट्रैक्टर पानी पंप कर रहे थे। ट्रैक्टरों के इंजनों की बंधी हुई धड़-धड़ जैसे ताल बांध रही थी और काम उसी की रफ़्तार के साथ चल रहा था – नीचे झुको! सीधे हो! डोल में डालो!

हर चार मिनट में एक बार स्किप हॉइस्ट तूफ़ानी गड़गड़ाहट के साथ नीचे आता और फिर पूरी तेजी के साथ ऊपर चला जाता। जल्दी-जल्दी में बने धनुषाकार मार्ग पर होकर ख़ाली डिब्बे तेज़ी से नीचे आते, लदते और गियरों की कच-कच के साथ फिर ऊपर चले जाते।

आंखें बंद किये मोरोज़ोव कान लगाकर काम की बंधी हुई आवाज़ को सुन रहा था। लगता था कि सभी कुछ ठीक-ठीक चल रहा है। अगर कोई अप्रत्याशित दुर्घटना ही न हो जाये, तो पार लग जायेंगे। तभी उसके कान खड़े हो गये। तटबंध पर अंद्रेई सावेल्येविच उसीकी तरफ़ भागा हुआ आ रहा था। मोरोज़ोव के पेट में एक हौल सी उठ गई।

"क्या हुआ?"

पीला पड़ा अंद्रेई सावेल्येविच अपनी नाक को अधीरतापूर्वक फड़का रहा था।

"हां, क्या बात है?"

"अभी-अभी कत्ता-ताश से टेलीफ़ोन आया है। साथी निर्माण-प्रमुख को बुला रहे हैं। मैक-६ खड़ा हो गया है।"

"क्या मतलब?"

"ऑाइल पंप का फ़िल्टर फट गया है, मेन क्रैंक शैफ़्ट जल गया है। और बेयरिंग साले न जाने कहां गये!"

मोरोज़ोव को लगा कि जैसे उसका ख़ून चेहरे पर आ गया है।

"आप यह तो समझते होंगे कि हमारे लिए इसका क्या मतलब है?"

अंद्रेई सावेल्येविच ने अपनी नाक को फिर फड़काया। मोरोज़ोव ने उसके विवर्ण होंठों की तरफ़ देखा।

"लेकिन मैं इस पर चिल्ला किसलिए रहा हूं?" उसने सोचा। "इसका उससे क्या वास्ता? दुर्घटना इसके सैक्शन पर तो हुई नहीं है..."

"फ़ौरन कीर्श को बुलाओ," अपने पर क़ाबू करते हुए उसने कहा। "और एक्स्केवेटर चालकों को गिरफ़्तार करवा दीजिये! फ़ोरमैन को टेलीफ़ोन कीजिये।"

"साथी कीर्श वहां पहुंच चुके हैं। वह डिज़ल इंजन का मुआयना कर रहे हैं। एक्स्केवेटर चालकों का कहना है कि ऑाइल पाइप में एक कील थी। उनका ख़याल है कि किसीने जान-बूझकर..."

"और उन्होंने किसे एक्स्केवेटर के पास आने दिया? आप इस बकवास को मेरे आगे किसलिए दुहरा रहे हैं?"

"हो सकता है कि मज़दूरों की टुकड़ी में से किसीने?"

"डिज़ल का ज़िम्मेदार कौन है–टुकड़ी या एक्स्केवेटर चालक?" मोरोज़ोव गुस्से में चिल्लाया। "दोनों चालकों को गिरफ़्तार करवा दो!"

"ठीक है।"

मोरोज़ोव कार में बैठ चुका था। पहाड़ की तलहटी में उसे तेल में सना कीर्श मिला।

"तो?"

"सारा इंजन तहस-नहस हो गया है," कीर्श ने धीरज के साथ अपने हाथों को रूमाल से पोंछा, लेकिन वे कांप रहे थे। "इंजन के बंद हो जाने तक वे उसे चलाते रहे। मरम्मत में कम से कम एक हफ़्ता लग जायेगा।"

"मार डालूंगा! साले तोड़-फोड़ करनेवालो! हरामज़ादो!" पीछे से फटी हुई आवाज़ में कोई गरजा। कीर्श और मोरोज़ोव ने अनायास ही घूमकर देखा। दुबला-पतला गालत्सेव दोनों चालकों को–जो बिलकुल भी

विरोध नहीं कर रहे थे,—कंधे पकड़कर झटक रहा था। "हरामज़ादो! एक्स्केवेटरों के साथ तुमने क्या किया है?"

उसने दोनों चालकों को छोड़ दिया और मोरोज़ोव की तरफ़ मुड़ा, मानो कुछ कहनेवाला हो। अचानक उसका जबड़ा कंपकंपाने लगा। वह पलटकर एक पत्थर पर ढह गया और चेहरे को हाथों में दाबकर रो पड़ा।

"कोई उपाय है?" कौर्श की तरफ़ न देखते हुए मोरोज़ोव ने निराश स्वर में पूछा।

"उपाय..." कौर्श ने सोच में डूबते हुए दुहराया, "काश कि हमारे पास इस जगह तटबंध को बहाने और ज़मीन को ख़ाली रखने के लिए दो हाइड्रोमानीटर होते, तो हम एक सौ तीसवीं चौकी से एक ब्यूसाइरस-१४ यहां ला सकते थे। इस ऊंचाई से वह काम नहीं कर सकता—उसका हमाला बहुत छोटा है। लेकिन यह मैं नहीं कह सकता कि हम वर्कशॉप में हाइड्रोमानीटर बना सकते हैं या नहीं—और सो भी इतनी जल्दी..."

वह बात ख़त्म नहीं कर पाया। उसके और मोरोज़ोव के बीच में अचानक गालत्सेव की लंबी आकृति आ खड़ी हुई।

"ज़रूर बनाया जा सकता है, साथी कौर्श! अगर नहीं बनाते, तो मैं हरामज़ादों के सिर तोड़कर रख दूंगा! आप उन्हें बस यह बता दीजिये कि यह—यह हाइड्रो...—बनाया कैसे जाता है। वे निश्चय ही बना देंगे! चलिये, अभी वर्कशॉप चलिये!"

"ज़रा रुकिये, साथी गालत्सेव," कौर्श मोरोज़ोव की तरफ़ मुड़ा। "कोशिश तो हमें करनी ही होगी, यह बात साफ़ है। कोई और हल हो भी नहीं सकता। आख़िर, हाइड्रोमानीटर कोई ऐसी जटिल चीज़ भी तो नहीं है। अगर वे तीन सिलिंडरवाला पंप नहीं बना सकते, तो सादा तो बना ही सकते हैं। चार ऐटमॉस्फ़ियर दाब भी काफ़ी रहेगा। चलिये, क़ुशोनी से मिलते हैं। कोशिश करने में तो कोई हर्ज नहीं है।"

वे तटबंध से उतरे और कार में जाकर बैठ गये।

"हाइड्रोमानीटर के पक्ष में एक और बात यह है," कौर्श ने बात जारी रखी, "कि वह बांध को पानी से तर करके मज़बूत बनायेगा। हाइड्रोमानीटर का बुनियादी सिद्धांत असल में बहुत ही सहज है—दस इंची सैक्शन और सात इंची डिसचार्ज का सेंट्रीफ़्यूगल पंप। यह चार ऐटमॉस्फ़ियर की धार दे सकता है, जो तटबंध को बहाने के लिए काफ़ी है। तीन

सिलिंडर के पंप से दस ऐटमॉस्फ़ियर या उससे भी ज़्यादा दाब हासिल किया जा सकता है। इतने दाब की धार हमारी इस चट्टान को चाकू की तरह से काट देगी। लेकिन बेशक, यह ज़्यादा पेचीदा धंधा है..."

कार इतनी तेज़ रफ़्तार से जा रही थी कि ड्राइवर के साथ बैठा गालत्सेव उनकी बातचीत के टुकड़ों को मुश्किल से ही सुन पा रहा था।

मैकेनिकल डिपार्टमेंट के प्रमुख, इंजीनियर क्रुशोनी के पहले शब्दों से ही ज़ाहिर हो गया कि हाइड्रोमानीटरों और उनके काम की उसे पूरी जानकारी है। मोरोज़ोव के दिल का वज़न उतर गया। उसने पूछा कि इस बात को ध्यान में रखते हुए कि बेकार जानेवाला शब्दशः हर घंटा कितना विनाशक है, वर्कशॉप से पहले दो हाइड्रोमानीटर तैयार होकर कब मिल सकते हैं? लेकिन इस पर इंजीनियर क्रुशोनी ने हताशा से कंधे मचका दिये और व्यथित होकर बोला कि फ़ाउंड्री जिस तरह का ढलवां कच्चा लोहा तैयार कर रही है, कामचलाऊ क़िस्म के भी कोक और अच्छे क़िस्म के इस्पात की तो बात ही क्या, अच्छे शेड तक का जैसा नितांत अभाव है, उसके दृष्टिगत वर्कशॉप के लिए हाइड्रोमानीटर तैयार करना सर्वथा असंभव है।

मोरोज़ोव खड़ा मिनट भर इंजीनियर के हताशाग्रस्त सुघड़ चेहरे की तरफ़ देखता रहा।

"मेरे ख़याल से आप बात को पूरी तरह से समझ नहीं रहे हैं, साथी," उसने फटी हुई आवाज़ में कहा। "हमारा सारा निर्माण-कार्य ख़तरे में है। हम खेतों की समय पर सिंचाई नहीं कर पायेंगे।"

"जी नहीं, मैं अच्छी तरह से समझ रहा हूं," विषण्ण मुसकान के साथ क्रुशोनी ने जवाब दिया। "लेकिन मैं आपको धोखे में तो नहीं रख सकता। हमारे पास जैसा सामान है, उससे बना हाइड्रोमानीटर पहले परीक्षण में ही फट जायेगा।"

"इवान मिख़ाइलोविच!" गालत्सेव बीच ही में बोल पड़ा, "आप इस हरामज़ादे को क्या समझा रहे हैं! क्या ऐसा प्रतिक्रांतिकारी कुछ समझ सकता है? भला इन हरामियों को चेका भेजे बिना कोई काम निकलवाया जा सकता है! चलिये, शॉप में चलते हैं! मैं फ़ोरमैन से बात करता हूं। वे बना देंगे! क़सम से बना देंगे!"

"हां, लगता यही है कि आपसे दूसरी तरह से बात की जानी चाहिये,"

मोरोज़ोव दांत भींचता हुआ बोला और घबराये हुए क्रुशोनी को अलग धकेलकर वर्कशॉप में चला गया।

वर्कशॉप में एक फ़ौरी सभा की गई। मोरोज़ोव ने संक्षेप में स्थिति पर प्रकाश डाला और कोर्श ने हाइड्रोमानीटर के सिद्धांत और बनावट के बारे में बताया। पता चला कि वर्कशॉप में अच्छी क़िस्म का इतना इस्पात मौजूद है कि कम से कम पांच हाइड्रोमानीटरों की टोंटियां बनाई जा सकें। स्वयं मज़दूरों के प्रस्ताव पर ख़ुद नली को लोहे से बनाने का निश्चय किया गया। श्रेष्ठतम तीन टुकड़ियों ने आपस में प्रतियोगिता करते हुए अगली सुबह तक एक-एक हाइड्रोमानीटर बनाकर देने का ज़िम्मा लिया। उन्हें कोर्श की देखरेख में काम करना था, जो काम का स्वयं निदेशन करने के लिए वहीं रहा।

सारी आवश्यक व्यवस्था कर लेने के बाद मोरोज़ोव कोर्श को क्षण भर के लिए अलग ले गया :

"क्रुशोनी को काम से निकाल दीजिये! जाये वह शैतान की ख़ाला के पास!"

"रहने भी दीजिये, इवान मिख़ाइलोविच, काम ख़त्म होने के तीन हफ़्ते पहले नया वर्कशॉप-प्रमुख नियुक्त करने का क्या लाभ? इतना समय तो उसे काम की जानकारी पाने में ही लग जायेगा... नतीजे के तौर पर वर्कशॉप को ही नुक़सान उठाना पड़ेगा।"

"ठीक है, जैसी आपकी मरज़ी। लेकिन इस सूरत में आपको मैकेनिकल डिपार्टमेंट को अपनी निजी निगरानी में लेना होगा।"

"यह तो कहने की ज़रूरत ही नहीं ..."

वर्कशॉप से निकलते समय मोरोज़ोव का एक बार फिर क्रुशोनी से सामना हुआ। इंजीनियर के सुंदर, चिंतामग्न चेहरे पर एक उदास मुसकान थिरक रही थी। मुसकान मानो कह रही थी, "बेशक, लोगों की भावनाओं को इस तरह से उभारकर मज़दूरों से कुछ भी करवाया जा सकता है, लेकिन उसका परिणाम शोचनीय ही रहेगा।" मोरोज़ोव उसके पास से इस तरह से निकल गया, मानो उसे देखा ही न हो।

मैकेनिकल डिपार्टमेंट के तूफ़ानी मज़दूरों ने अपने क़ौल को पूरा किया। रात के भीतर बने तीनों हाइड्रोमानीटरों का अगले दिन सुबह ठीक नौ बजे

परीक्षण किया गया। रात की पारी के सभी लोग वहां मौजूद थे – अपनी-अपनी बारकों में जाने के बजाय वे सामने के किनारे पर जमकर खड़े हो गये। यह भयप्रद समाचार सभीने सुन लिया था – मैकेनिकल डिपार्टमेंट के प्रमुख ने कह दिया है कि इन चीज़ों के बने हाइड्रोमानीटर दबाव को नहीं सह पायेंगे और परीक्षण के दौरान ही फट जायेंगे।

शांतचित्त, किंतु कुछ विवर्ण कोर्श ने और ज़र्द पड़े मोरोज़ोव ने हर चीज़ की बारीक़ी से जांच की। गालत्सेव, जो रात भर के दौरान और भी ज्यादा लंबा हो गया लगता था, मज़दूरों के बीच घूमता और होज़ पाइपों पर ठोकर खाता हठपूर्वक वहीं जमा रहा। मोरोज़ोव ने कई बार उसे वहां से चले जाने और बाधा न डालने को कहा। गालत्सेव कुछ अस्पष्ट सा जवाब बुदबुदाकर वहां से चला जाता और अगले होज़ पाइप के पास जाकर ठहर जाता। उसका ख़याल था कि एक ऐसे मामले में, जिसमें कुछ मज़दूरों की जान ख़तरे में पड़ सकती थी, ट्रेड-यूनियन समिति के सचिव के नाते यह उसका कर्तव्य है कि वह विदेशी उपन्यासों में डूबते जहाज़ के कप्तान की तरह ख़तरे की जगह पर ही जमा रहे।

आख़िर कोर्श ने हाथ उठाकर संकेत दिया, ट्रैक्टर इंजनों ने काम करना शुरू कर दिया और पानी की तीन ज़बरदस्त धारें मशीनगन की तड़तड़ाहट जैसी आवाज़ के साथ इस्पात की टोंटियों से तीन विशाल अजगरों की तरह से फूट पड़ीं। सभी चौंक पड़े। पानी की मोटी-मोटी धारें तटबंध की धनुषाकार पीठ पर जाकर गिरने लगीं और वहां से मिट्टी एक गहरी दरार छोड़ती हुई बहने लगी। गर्जन करता पानी दरार में हठपूर्वक घुसता चला गया। अचानक मिट्टी की यह चौड़ी पच्चर कांपने लगी और ढहकर धूसर मिट्टी के एक झरने के रूप में बहने लगी। निकल चढ़े भित्ति-पातक की तरह पानी ने और नीचे प्रहार करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे प्रहार-क्षेत्र के भीतर सारा ही तटबंध ध्वस्त होने लगा, खिसकने लगा और अंत में एक चिपचिपे द्रव्य के रूप में आगे की समतल जगह पर फैल गया।

मोरोज़ोव ने माथे को रूमाल से पोंछा और धीरे-धीरे कटाव में उतर गया।

अब्बाजान

"साथी उर्तावायेव! आपसे मिलने के लिए कोई आया है। कहता है कि बहुत दूर से आया है।"

"आता हूं अभी।"

उर्तावायेव ने लोहे की सीढ़ी पर पैर रखा और, ऊपर चढ़ने के पहले, नहर-मुख की निर्माणस्थली पर एक आख़िरी नज़र दौड़ाई। आख़िरी चादरें उतार दी गई थीं। अतिकाय मुखावरणों जैसे धनुषाकार स्लूस कपाट नियंत्रण चक्कों को घुमाने के साथ ज़रा भी चूं-चर्र किये बिना उठ-गिर रहे थे। पानी जब कंक्रीट स्तंभों के बीच की जगहों में होकर बहने लगेगा, तो गिलोटिन के टेढ़े फलों की तरह नीचे आते लौह कपाट नहर की विशाल गरदन को नदी से जुदा कर देंगे।

उर्तावायेव सीढ़ी पर चढ़कर किनारे पर आ गया। नहर के मुंह में ठुंसी और किनारों के बराबर कटी हुई छः मंज़िली इमारत जितनी ऊंची कंक्रीट की यह संरचना यहां से एक छोटे, एकदम यथार्थ मॉडल जैसी लग रही थी। दोनों किनारों को पुल के रूप में जोड़ती डामर-चढ़ी छत पर भांति-भांति के काठ-कबाड़ और लकड़ी से लदी गाड़ियों की एक लंबी क़तार नहर की दूसरी तरफ़ से आ रही थी। निर्माणस्थली अतिथियों की अगवानी की तैयारी में अपने रूप को संवार रही थी, अनावश्यक सामान को फेंक कर रही थी और कूड़े-कचरे को हटा रही थी। अगले दिन कॉफ़र बांध के उड़ाये जाने के साथ नहर का औपचारिक उद्घाटन होनेवाला था।

उर्तावायेव धीरे-धीरे किनारे से उतरा। पहली बार उसे अफ़सोस के साथ यह ख़याल आया कि यह निर्माण-कार्य पूरा होनेवाला है, जिसने उससे इतना श्रम करवाया है, इतनी तकलीफ़ें दी हैं और इतनी रातों की नींद छीनी है। आसन्न विछोह का सामीप्य उसे बहुत कटु लगने लगा।

"कौन बुला रहा था मुझे?"

"सफ़ेद इमामा बांधे वह बूढ़ा। कहता है कि ख़ासकर आपसे ही मिलने के लिए आया है।"

उर्तावायेव फीका पड़ा नीला चोग़ा पहने सफ़ेद दाढ़ीवाले बूढ़े की तरफ़ बढ़ा और अपनी आंखों पर अविश्वास करता हुआ ठिठक गया।

"अब्बाजान!"

गाल को गाल से सटाकर वे एक दूसरे से चिपट गये। ऊर्ताबायेव ने स्नेहपूर्वक बूढ़े की पीठ को थपथपाया।

"कहिये, अच्छे तो हैं? बहुत अच्छे! मुझे ढूंढ कैसे लिया? बुढ़ापे में मुझे देखने के लिए आ गये, है न? बहुत अच्छे वक़्त पर आये आप—उत्सव के मौक़े पर ही। चलिये, घर चलकर चाय पीजिये।"

उसने बूढ़े को, जो बिलकुल उसकी बग़ल तक आता था, बेटे की तरह अपने से चिपटा लिया और उसे लेकर बस्ती की तरफ़ चल दिया।

ऊर्ताबायेव के कमरे में एक मेज़, दो कुरसियां और एक पलंग था। बूढ़े ने दहलीज़ से ही उसके सामान पर असंतोष भरी नज़र दौड़ाई और दीवार के पास फ़र्श पर ही बैठ गया।

"क्यों, कुरसी पर बैठना नहीं पसंद है?" ऊर्ताबायेव मुसकराते हुए बोला। "आप जैसे थे, वैसे ही रहे। ख़ैर, कोई बात नहीं, चाय मैं आपको बिलकुल एशियाई तरीक़े से पिलाऊंगा।"

उसने दीवार से क़ालीन उतारकर फ़र्श पर बिछा दिया, चायदानी, दो नान और कुछ सूखी ख़ूबानियां लेकर आया और क़ालीन के दूसरे सिरे पर बैठकर उसने सामान को बूढ़े के सामने रख दिया।

"लीजिये, पीजिये! हरी चाय है यह। मैं भी आपके साथ ही पिऊंगा। खाने के लिए मेरे पास और कुछ नहीं है। शायद कहीं कुछ सॉसेज हों, पर वह तो सूअर का गोश्त है न, इसलिए आप खायेंगे नहीं। बाद में भोजनालय से आपके लिए खाना ले आऊंगा। ख़ैर, सुनाइये, क्या ख़बर है? यहां कैसे पहुंच गये?"

बूढ़े ने दाढ़ी को हाथों से सहलाया, चाय का घूंट लिया और नान का टुकड़ा लेकर उसे काफ़ी देर तक अपने बचे हुए दांतों से चबाता रहा।

"अब मैं ज़्यादा नहीं जिऊंगा," निवाले को आख़िर निगल लेने के बाद उसने कहा। "मरने के पहले मैं ज़ियारत करने गया था। वापसी पर सोचा कि अपने बेटे से भी मिलता चलूं। मैंने सुना था कि वह बहुत बड़ा आदमी है और आला हाकिमों के साथ रहता है। सोचा कि मुझे निकाल तो देगा नहीं।"

"तो यही ढोंग रचाते घूम रहे हैं? आपको अपनी ये ज़ियारतगाहें मिलीं कहां? क्या अब भी बाक़ी रह गई हैं? मेरा तो ख़याल था कि नई सड़कें बनाने के लिए आपकी सारी दरगाहों को साफ़ कर दिया गया है।"

"मैं पाक पहाड़ की ज़ियारत करने गया," बेटे के शब्दों को ख़ामोशी से सुनने के बाद बूढ़े ने अपनी बात जारी रखी। "दीनदारों ने मुझे वहां पहुंचा दिया, मैं ख़ुद तो वहां तक पहुंच नहीं सकता था। पहाड़ के नीचे चार-चार पैरोंवाली मशीनें चल रही हैं। वे पहाड़ को काट रही हैं, धूआं उगल रही हैं और कुत्तों की तरह भौंक रही हैं। मुझे रोना आ गया, मैंने चोग़े के दामन में मुंह छिपा लिया और वहां से भाग आया..."

"अच्छा, तो आपको कत्ता-ताग़ जाने का भी वक़्त मिल गया! आपको देखकर तो यही लगेगा कि एक किलोमीटर भी चले, तो मुंह के बल गिर पड़ेंगे–आप इतने बूढ़े और कमज़ोर हो गये हैं। लेकिन आप तो दुनिया भर में घूमते फिर रहे हैं!"

"मैंने कुछ दीनदारों से पूछा, 'पहाड़ के ऊपर यह दरगाह क्या बिगाड़ रही थी?' और उन्होंने जवाब दिया, 'चूबेक का रहनेवाला सैयद अर्तावायेव नाम का एक मुसलमान इन मशीनों को यहां लाया और उसने उन्हें पहाड़ को काटने का हुक्म दिया। दिन-रात वे उसे काटती रहती हैं और वह मुंह में सिगरेट दबाये कमर पर हाथ धरे खड़ा रहता है और उन्हें और भी गहरा काटने का हुक्म देता रहता है।' और लोगों ने मुझसे पूछा, 'तुम कहते हो कि तुम भी चूबेक के ही रहनेवाले हो। क्या तुम इस आदमी को जानते हो?' मैंने मुंह घुमा लिया और झूठ कह दिया–परवरदिगार इसके लिए मुझे माफ़ी दे! 'नहीं,' मैंने कहा, 'मैं चूबेक में ऐसे किसी मुसलमान को नहीं जानता, जिसे पाक जगहों को नापाक करते शरम न आये।'"

"तो क्या अव्वाजान, आप मुझे फिर मुसलमान बनाने के लिए आये हैं? छोड़िये भी! बेहतर हो कि आप चाय पी लें, नहीं तो यह ठंडी हो जायेगी।"

"हां... मैंने नहीं सोचा था कि मुझे ज़िंदगी में इतना शरमिंदा होना पड़ेगा। तुम्हें मदरसे में पढ़ने के लिए बुख़ारा भेजने के लिए सारे ख़ानदान को कितनी मुसीबतें उठानी पड़ी थीं! तुम्हारे चाचा ने तुम्हारे सफ़र के लिए कानी कौड़ी भी नहीं दी थी। वह बोला, 'पैदल पहुंच जायेगा। भले लोग खाना खिला देंगे।' घर पर जो कुछ भी था, वह हमने तुम्हारे हाथ पर रख दिया था। मैंने सोचा था कि वह दिन देखूंगा, जब तुम बुख़ारा से मज़हबपरस्त और दानिशमंद मुसलमान बनकर वापस आओगे, सोचा था कि तुम इशान बनकर लौटोगे और सारे ख़ानदान का नाम रोशन करोगे...

लेकिन तुझ शैतान ने बिगाड़ दिया। तूने मदरसे से भागकर बाप-दादा का नाम डुबाया। तू अधपढ़ा मुल्ला बनकर आया और ख़ानदान को और गांव को तूने कलंक लगाया। हमारे यहां मसल है न,—ख़ुदा दीनदारों पर जितनी भी मुसीबतें डालता है, उनमें चार और सभी से ख़राब हैं—चिल्लड़, पिस्सू, अफ़सर और अधपढ़ा मुल्ला।"

"आपकी ये मसलें पुरानी पड़ गई हैं, अब्बाजान। हमने सारे अफ़सरों का ख़ात्मा कर दिया है, अब हम लोगों को मुल्ला बनाते नहीं। हां, चिल्लड़ और पिस्सू अभी रह गये हैं। लेकिन अगर आपको मसलें इतनी पसंद हैं, तो एक मैं भी सुनाता हूं। याद है, बाबाजान मुल्लाओं के बारे में हमेशा क्या कहा करते थे—मुल्ला सब असल में एक ही आदमी होते हैं और यह एक आदमी भी नहीं—औरत होता है। आप दीनदार मुसलमान हैं, भला आप यह कैसे चाह सकते थे कि आपका बेटा औरत बने? छि:-छि:! यह तो मेरी ख़ुशक़िस्मती थी कि मैं वक़्त रहते मदरसे से भाग निकला और इसी लिए मैं कुछ करने लायक़ भी हूं।"

"तुम तो हमेशा से ही बदज़बान रहे हो। बचपन में जब तुम नंगे ही घूमते थे, तब भी अपनी मां से बदज़बानी करते थे... मुझे वह वक़्त याद है, जब तुम चूबेक में नई हुक़ूमत के प्रतिनिधि बनकर आये थे। हुक़ूमत सब ख़ुदा से ही मिलती है, चाहे वह कभी-कभी उसे हमारे गुनाहों की सज़ा के तौर पर भी भेज देता है। सारा क़िशलाक़ यही सोच रहा था—'बूढ़े ऊर्ताबायेव का बेटा यहां नई हुक़ूमत का नुमाइंदा है, इसलिए हमें अब कोई डर नहीं है। हमारी तरफ़ से बोलनेवाला भी कोई है और वह हम पर अन्याय नहीं होने देगा।' और तुमने क़िशलाक़ में आने के अगले दिन ही दीनदार मुसलमानों से उनकी ज़मीन-जायदाद छीन ली और उन्हें दूर-दराज़ इलाक़ों में भेज दिया और हमारे क़िशलाक़ को सारे ज़िले में बदनाम किया।"

"उफ़, अब्बाजान! सारी ज़िंदगी आप ग़रीब किसान रहे, लेकिन अब कुलाकों की तरह बात कर रहे हैं।"

"मैं यहां यह देखने के लिए आया था कि मेरा यह बेटा आला हाकिम बनकर कैसे घूमता है। और मुझे सुनने को क्या मिला? चारों तरफ़ से शिकायतें और दीनदारों का रोना-चिल्लाना। जो दहक़ान यहां तुम्हारे यहां काम करते थे और मुसलमान रूहों को बचाना चाहते थे, उन सबको

तुमने चेका के हवाले कर दिया है। ऐसी कोई जगह नहीं, जहां तुम्हारे नाम पर लानत न भेजी जाती हो।"

"अहा, अब्वाजान, देखता हूं कि मेरे पास आने के भी पहले आपकी हमारे यहां के सभी प्रतिक्रांतिकारियों से खुसुर-फुसुर हो चुकी है। आप तो बड़े तेज़ आदमी निकले! पर देखिये, हमारे क़ानून बहुत सख़्त हैं! अगर उन्होंने आपका गिरेबान पकड़ लिया, तो ध्यान रखिये, मैं आपको नहीं बचाऊंगा। लेकिन इस सबके बाद आप मेरे पास क्यों आये? साफ़-साफ़ बताइये।"

"कोई नहीं जानता कि उस पर कब आफ़त आनेवाली है। और तुम्हारी आफ़त सिर पर ही है।"

"अगर कोई नहीं जानता, तो आपको कैसे मालूम?"

"अल्लाह दीनदारों को ऐसी बहुत सी बातें जाहिर कर देता है, जिन्हें लामजहब लोग आख़िरी घड़ी में ही जान सकते हैं।"

"आप इस तरह मेरी मौत का राग क्यों अलापे जा रहे हैं? और आप तो अब्बा हैं मेरे!"

"इस जगह के ऊपर एक बड़ी भारी आफ़त मंडरा रही है। जब पहाड़ से पत्थर गिरता है, तो अल्लाह जिन लोगों के दिमाग़ों को ख़राब नहीं कर देता, वे वहां से भाग खड़े होते हैं। इसलिए मैं तुमसे यह कहने के लिए आया हूं – लोग काफ़िरों के राज से नाराज़ हैं। अरे, क्या तुम्हें भी उसने पिछले साल कम मुसीबतों में डाला था? दीनदार लोग तुमसे मुंह नहीं मोड़ेंगे।"

"ओफ़्फ़ोह! तो हमारी निर्माणस्थली पर कौनसी आफ़त मंडरा रही है? ज़रा साफ़-साफ़ कहिये न, अब्वाजान!"

"क़ुरान शरीफ़ में लिखा है – 'उसके पानी को ज़मीन अपने में समा लेगी और तू उसे कभी नहीं ढूंढ पायेगा।'"

"यह कहानी तो हम पहले भी सुन चुके हैं। पानी के धंधे के हम उस्ताद हैं, आप नहीं। आप उसके बारे में माथापच्ची मत कीजिये। लेकिन मुझे लगता है कि आप इस सिलसिले में तो मेरे पास आये नहीं थे। आपने मुझे राह पर लाने की ठान ही रखी है, तो साफ़-साफ़ कहिये। मुझे किस चीज़ का डर है?"

"जानकार लोगों का कहना है कि बहुत बड़ी तादाद में घुड़सवारों ने

पंज को पार किया है। उनके घोड़ों की टापों ने सामूहिक फ़ार्मों के खेतों पर नई हदबंदियों को रौंद दिया है। जिस क़िशलाक़ में एक घुड़सवार जाता है, उससे दो बाहर आते हैं। जिस क़िशलाक़ में दस घुड़सवार घुसते हैं, उसमें से बीस निकलकर आते हैं। कल यहां हज़ारों ही घुड़सवार हो जायेंगे। वे तुम्हारी सारी मशीनों को वख़्श में फेंक देंगे। और जहां तक लामज़हब लोगों का सवाल है – उनकी तो बस मौत ही है! उनका काम तमाम हो जायेगा।"

"हुंह... अब्बाजान, आपको सन इक्कीस की याद है, जब हम बासमचियों से लड़ रहे थे और उन्होंने हमें कुलाब में घेर लिया था? हमारे पास तब कोई तीस आदमी थे और बासमचियों के पास आठ सौ। तब आप क़िले में मुझसे हथियार रखवाने की कोशिश करने के लिए दूत बनकर आये थे। तब, अब्बाजान, मैंने आपको क्या जवाब दिया था? याद है? मैंने कहा था – 'बैठिये बुजुर्गवार, लीजिये, चाय पीजिये। हमारे पास यहां खाने के लिए तो कुछ नहीं है, मगर कुछ चाय अभी बाक़ी है। बासमचियों का दूत बनकर मेरे पास आपके आने में कोई तुक नहीं थी। मेरे वालिद के लिए यह बात नामुनासिब है। अब मैं आपको बासमचियों के पास वापस नहीं जाने दूंगा। हम लोग यहां साथ-साथ मरेंगे। मैं आपसे छोटा हूं और मुझे सोवियत सत्ता के लिए अपनी जान देते कोई हिचक नहीं, इसलिए आप मुझपर एक अहसान कीजिये – आप भी जान देते मत हिचकिये।' इसके बाद मैंने क्या किया था? मैंने आपको तालाबंद कर दिया था और आप दो हफ़्ते – जब तक हमारी लाल फ़ौज की टुकड़ियों ने आकर बासमचियों को भगा नहीं दिया – हमारे क़िले में ही बैठे रहे।"

बूढ़ा क़ालीन पर से उठ खड़ा हुआ और चुपके से दरवाज़े की तरफ़ खिसकने लगा।

"नहीं, अब्बाजान, ठहरिये! आप तो मेरे मेहमान बनकर आये हैं, है न? इतनी जल्दी जाना तो नहीं हो पायेगा।"

उर्ताबायेव ने जाकर दरवाज़े में ताला लगा दिया और चाबी को जेब में डाल लिया।

"मुझपर मेहरबानी कीजिये और उत्सव के ख़त्म होने तक मेरे यहां ही रहिये। आप खड़े क्यों हो गये? बैठिये, और चाय पीजिये... हां, तो अब बताइये – आपको यहां किसने भेजा है?"

"मुझे किसीने नहीं भेजा है। मैं अपनी मरज़ी से आया हूं। मैं तुम्हें रास्ते पर लाना चाहता था। लेकिन तुम तो जैसे पहले शैतान थे, वैसे ही अब भी हो।"

"छोड़िये भी इस बात को! आप बहुत कुछ जानते हैं। आपकी उम्र में इतना ज्यादा जानना नुक़सानदेह है। आपको मालूम है कि पिछले साल मुझे क्या मुसीबत उठानी पड़ी थी और आपको बासमचियों के बारे में भी मालूम है... अब आप चालाकी मत कीजिये, अब्बाजान। सारी बात बता दीजिये। अपने बेटे से ही नहीं, तो भला आप किससे सच कहेंगे?"

"मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं तो ज़ियारत करने गया था और वापसी पर तुमसे मिलने के लिए आ गया। बासमचियों की बात तो सभी लोग कह रहे हैं। न मैंने अपनी आंख से उन्हें देखा है, न उनके बारे में कुछ जानता हूं। घर पर तुम्हारी मां मेरा इंतज़ार कर रही हैं, मेरे जमाई मेरा इंतज़ार कर रहे हैं। मैं ज्यादा नहीं जिऊंगा। मरने के पहले घरबार का इंतज़ाम करना जरूरी है। तुम अपनी आत्मा पर बहुत बड़ा पाप चढ़ा रहे हो।"

"मेरे पाप तो न जाने कितने हैं, अब्बाजान! एक कम या ज्यादा से क्या फ़र्क़ पड़ेगा?"

"क्या तुम अपने बाप को चेका के हवाले कर दोगे?"

"चेका से इस तरह मत डरिये, अब्बाजान। वहां हमारे-आपके जैसे ही लोग हैं। फ़िलहाल आप मेरे मेहमान रहेंगे। अगर आप समझदारी से काम लेंगे और मेरी पूछी सभी बातों का जवाब दे देंगे, तो मैं आपको पुलाव खिलाऊंगा और चूबेक वापस भेज दूंगा। मैं आपको गधा ख़रीदने के लिए पैसे दे दूंगा, ताकि आपको पैदल न जाना पड़े – लीजिये, मिलाइये हाथ इसी बात पर! आप बहुत जल्दी में हैं, इसलिए वक़्त बरबाद मत कीजिये। मैं आपकी मदद करूंगा... हां, तो बासमचियों ने पंज को पार कर लिया है और हमला उसी वक़्त होगा, जब नहर में पानी छोड़ा जायेगा? ठीक है, न?"

"मैंने बासमची नहीं देखे और यह नहीं जानता कि वे क्या करने की सोच रहे हैं।"

"चालाकी मत कीजिये, अब्बाजान। देखिये न, चाय ठंडी हो गई... ख़ैर, कितने बासमचियों ने नदी पार कर ली है?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"सौ? या और ज़्यादा?"

"मुझे नहीं मालूम – मैंने गिने नहीं।"

"लेकिन वे कितने बताते हैं? बहुत?"

"वे अलग-अलग बात कहते हैं।"

"उन्होंने पंज को कहां पार किया?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"उफ़, अब्बाजान, बातचीत नहीं चल सकती। ठीक है, अगर आप नहीं जानते, तो नहीं ही जानते। लेकिन आपको यह सब बताया किसने?"

"लोगों ने कहा।"

"भला यह कैसा जवाब है – लोगों ने? हम सभी लोग हैं। इन लोगों के नाम क्या हैं?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"अगर उन्होंने आपसे बातें कीं, तो आपको कैसे नहीं मालूम?"

"सड़क पर क्या कम लोग मिलते हैं? क्या हर किसीसे यह पूछा जाता है कि उसका नाम क्या है और वह कहां पैदा हुआ है?"

"तो, यह बात है... आप बतायेंगे नहीं? क्या किया जाये, आपके पास वक़्त नहीं है और न मेरे पास ही है। अलबत्ता, अब्बाजान, आप अभी घर नहीं जाने पायेंगे। हमें आपको गिरफ़्तार करना होगा। और मैं तो आपको पुलाव खिलाना चाहता था और घर जाने के लिए बढ़िया गधा दिलवाना चाहता था। अच्छा गधा तो फ़ार्म पर हमेशा ही काम आ सकता है... ख़ैर, क्या किया जाये? आप बतायेंगे या नहीं?"

"जो कुछ मैं जानता था, मैं बतला चुका हूं। मैं और कुछ नहीं जानता।"

"आपको बुढ़ापे में चेका में जाने की क्या पड़ी है, अब्बाजान? इस बात को मैं सचमुच नहीं समझ पा रहा हूं। क्या आपको यह डर है कि अगर आपने मुझे बता दिया, तो बासमची आपको मार डालेंगे? अब्बाजान, आप बच्चे तो नहीं हैं, है न? अपनी ज़िंदगी में आप कितने हमले देख चुके हैं? क्या आपका यह ख़याल है कि सोवियत सत्ता एक और हमले से नहीं निपट सकती? उफ़, अब्बाजान, आप जिये तो बहुत, लेकिन आपकी अक़्ल नहीं बढ़ी। सोच लीजिये ज़रा जल्दी से, अब्बाजान! आप बतायेंगे या नहीं?"

"जो कुछ मैं जानता था, बतला चुका हूं। मैं और कुछ नहीं जानता।"

"आप ही जानें। अच्छा, मैं चला। खिड़की से भागने की कोशिश मत कीजियेगा, अब्बाजान। मैं अभी पहरे का इंतज़ाम कर रहा हूं। यहां आराम कीजिये और दिमाग़ पर ज़रा ज़ोर डालिये।"

ऊर्तावायेव कमरे से चला गया और बाहर से दरवाज़े पर सावधानी के साथ ताला लगा दिया।

बिनबुलाया मेहमान

...अपनी आंखों पर विश्वास न करते हुए शाहाबुद्दीन क़ासिमोव दरवाज़े में खड़े आदमी की तरफ़ टकटकी लगाकर देखे जा रहा था।

नहीं, उससे ग़लती नहीं हुई थी – यह हैदर ही था।

जिस दिन हैदर को मिलिशियावाले अपने साथ ले गये थे, उस दिन से उसकी कोई ख़बर नहीं मिली थी। कहा जाता था कि उस पर क़िशलाक़ में विशेष अदालत में मुक़दमा चलाया जायेगा। तीन हफ़्ते गुज़र गये, लेकिन इस अदालत के बारे में और कुछ सुनने को नहीं मिला। फिर कोई यह ख़बर लाया कि हैदर के मामले की क़ूर्ग़ान-तेपा में एक सामान्य अदालत में कई अमीरों के साथ सुनवाई हो चुकी है, जिन पर मज़दूर-किसान-निरीक्षणालय के एक अधिकारी की हत्या का अभियोग था और उसे गोली से मार देने की सज़ा दी गई है और एक सप्ताह पहले दंड को अमल में लाया भी जा चुका है।

शाहाबुद्दीन ने क्षण भर के लिए अपनी आंखें बंद कीं और मन ही मन एक सूरा के पहले लफ़्ज़ों का पाठ किया। जब उसने आंखें खोलीं, तो देखा कि दरवाज़े में खड़ा आदमी ग़ायब नहीं हो गया है।

"सलाम अलैकुम, शाहाबुद्दीन!" हैदर की आवाज़ में पारलौकिकता का आभास देनेवाला कुछ भी न था, "तुम मेरी तरफ़ टकटकी लगाकर क्यों देखे जा रहे हो? दुआ-सलाम तक नहीं! क्यों, क्या मुझे जीता-जागता देखने की तुम्हें उम्मीद न थी? ख़ैर, मैं ज़िंदा हूं। तुमसे मिलने के लिए आया हूं। अंदर तो आने दो!"

"वालैकुम अस्सलाम, हैदर!" संदूक की तरफ़ खिसकता हुआ शाहाबुद्दीन बुदबुदाया।

उसकी इस हरकत को देख हैदर तेज़ क़दमों से कमरे में घुस आया और जाकर संदूक़ पर बैठ गया।

"तो, कैसे हो शाहाबुद्दीन? तुम्हारे बेटे तो मजे में हैं? लगता है कि बहुत रात करके घर आते हैं। लेकिन खड़े क्यों हो? आओ, बैठो। या मेरे आने की तुम्हें उम्मीद नहीं थी? सुनाओ, क्या ख़बर है? तुम सबको देखे कितना अरसा गुज़र गया! घर आकर मैंने सोचा—सबसे पहले अपने पुराने मालिक से ही नहीं, तो किससे मिलने के लिए जाऊं? और तुम तो इस तरह पेश आ रहे हो, जैसे मुझे देखकर तुम्हें ख़ुशी नहीं हो रही।"

अधमुंदी पलकों के नीचे से शाहाबुद्दीन हैदर के फटे-पुराने चोगे को बारीक़ी से जांच रहा था। लगता था कि उसके मेहमान के पास कोई हथियार नहीं है। क्या वह हैदर को संदूक़ से धकेल दे और पिस्तौल निकाल ले? लेकिन कहीं उसकी आस्तीन में छुरा न छिपा हुआ हो? इंतज़ार करना बेहतर रहेगा। उसके बेटे जल्दी ही घर आ जायेंगे। तब इस बिजूखे को चटपट और बिना शोर के ख़त्म किया जा सकता है। उनके आने तक इसे बातचीत में लगाये रखना चाहिए।

"तुमने यह ठीक ही किया कि सबसे पहले मेरे पास ही आये," हैदर की हर हरकत को सतर्कतापूर्वक देखते हुए शाहाबुद्दीन ने कहा, "अगर तुम मुझसे नाराज़ हो, हैदर, तो तुम ग़लती पर हो। मैं बहुत दिनों से तुमसे इस बारे में बात करना चाह रहा था। अगर किसीको तुम्हारी बदक़िस्मती के लिए क़सूरवार ठहराया जा सकता है, तो वह मैं नहीं, मलिक ही है। मैंने उससे कहा था कि वह तुम्हारी बीबी शराफ़त को तुम्हें यह समझाने के लिए राज़ी करे कि अपने पुराने दोस्तों के साथ ग़द्दारी करना सबसे बड़ी नीचता है और कोई सच्चा मुसलमान ऐसा नहीं करता। उसमें यह हादसा हो गया, तो क्या उसके लिए मैं दोषी हूं? हम पुराने लोगों में एक मसल है—अहमक़ से पगड़ी लाकर देने को कहो, तो वह साथ में सिर भी ले आयेगा। हैदर, अगर तुम बदला लेना चाहो, तो मैं मना नहीं करूंगा। अगर तुम जाकर मलिक का सिर काट दो, तो इसका तुम्हें हक़ है।"

"मतलब यह कि तुम्हारा इससे कोई लेना-देना नहीं था?" तिरछी नज़र से शाहाबुद्दीन की तरफ़ देखते हुए हैदर ने पूछा।

"क़सम परवरदिगार की! मैंने तुम्हें वही बताया है, जो हुआ था। क्या तुम यह सोच सकते हो कि मैं तुम्हें इतनी बड़ी चोट पहुंचा सकता हूं? या तुम इस बात को भूल चुके हो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या-क्या किया है? तुम जानते हो कि मैंने हमेशा तुम्हें अपने तीसरे बेटे की तरह प्यार किया है।"

"मेरा भी यही ख़याल है।"

शाहाबुद्दीन ने हैदर पर एक उड़ती हुई नज़र फेंकी। कहीं हंसी तो नहीं उड़ा रहा? अचानक एक विचार उसके दिमाग़ में कौंध गया, जिससे उसे कंपकंपी आ गई। कहीं हैदर पागल तो नहीं हो गया? शायद इसी लिए उसे रिहा कर दिया गया है? शाहाबुद्दीन ने एक बार फिर अपने नैश अतिथि पर एक चौकन्नी नज़र डाली।

"ऐसी बात है," हैदर संदूक़ पर से उतर गया, "तो बुढ़ऊ, चलो, चलें। तुम्हें मेरे साथ मलिक के घर चलना होगा।"

"क्या कहा?" शाहाबुद्दीन ने घबराकर पूछा। "मलिक के घर? मैं क्यों चलूं?"

"तुम्हारे सामने वह इनकार नहीं कर सकेगा।"

"अरे, दम भर रुको, हैदर। यह सब क्या मुझ जैसे बूढ़े के देखने की बात है? तुम्हारा इरादा अच्छा नहीं है। मैं तुमसे कह चुका हूं कि यह तुम्हारा हक़ है। लेकिन मेरे वहां चलने की क्या ज़रूरत है? जाना है, तो अकेले जाओ।"

"न, मालिक, नहीं। हम साथ-साथ ही जायेंगे। शादी की बात करने के लिए हम दोनों मलिक के घर साथ-साथ गये थे, इसलिए अब जनाज़े की बात करने भी साथ ही चलेंगे।"

शाहाबुद्दीन की टांगों में सीसे जैसा भारीपन आ गया। उसने अपने और संदूक़ के बीच के फ़ासले का अंदाजा लगाया। क्या हैदर को उलटा गिराकर पिस्तौल को निकाल ले? तभी उसके कानों में दरवाज़े पर क़दमों की साफ़ आवाज़ आई। अंधेरे में किसीने ठोकर खाई, कोई हथियार झनझना उठा। "आ गये आख़िर!" राहत की सांस लेता शाहाबुद्दीन सीधा खड़ा हो गया।

"ठीक है, तुम चाहते हो, तो चलो," क्षण भर सोचने का दिखावा करते हुए उसने कहा। उसने हैदर के निकलने के लिए रास्ता छोड़ दिया।

"न, मालिक, बुरा मत मानना—पहले आप," हैदर ने अलग हटते हुए कहा।

"अरे, आओ भी," शाहाबुद्दीन ने उसकी कोहनी झटकी। "दोस्तों में इतना तक़ल्लुफ़ किसलिए?"

लेकिन हैदर रास्ता छोड़ने पर अड़ा रहा। शाहाबुद्दीन चारों तरफ़ शंकालु आंखों से देखता दरवाज़े से तिरछा होकर निकला। अभी वह कुछ ही क़दम चला था कि टॉर्च की तेज़ रोशनी से चकाचौंध होकर उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।

"बदमाश! रोशनी किसलिए?" बात पूरी किये बिना वह उस हथियारबंद दहक़ान के चेहरे को देख अचरज के मारे चुप हो गया, जिसके हाथ में टॉर्च थी।

वह और कोई नहीं, रहीमशाह आलिमोव था।

"मोमिन! अब्दुल्ला! अरे, मेरे बेटो, आओ!" शाहाबुद्दीन ने अंधेरे में आवाज़ दी।

हथियारबंद लोगों ने उसे एक मज़बूत घेरे में घेर लिया।

"और मैंने तो समझा था कि तुम लोग कभी आओगे ही नहीं," शाहाबुद्दीन के पीछे से हैदर की उपहासभरी आवाज़ सुनाई दी, "इससे अकेले बातें करते-करते मैं उकता गया था। सोचा कि यही बात है, तो इसे अकेला ही ले जाता हूं..."

"मोमिन! नियाज़!" शाहाबुद्दीन चिल्लाया। उसे अब भी आशा थी कि आसपास कोई उसकी पुकार को सुन लेगा।

"चीख़ो मत, शाहाबुद्दीन, मत चीख़ो!" हकीम-बदनसीब ने सुजनतापूर्वक उसे तसल्ली दी। "वे सब यहीं हैं – नियाज़, मोमिन और तुम्हारा दौलत भी। अभी सब मिल जायेंगे। हां, तो रस्सी किसके पास है? अपने हाथ ढीले छोड़ दो। अकड़ो मत, ख़्वाहमख़्वाह छाले पड़ जायेंगे।"

रुकावटों के साथ उद्घाटन

दिन निकल आया – उनींदा सा और उदास, – हथौड़ों की बेसुरी ठक-ठक से आदतन देर से उठनेवाली पहले सैक्शन की बस्ती की आंख खुल गई। लोग जल्दी-जल्दी लाल बंदनवारें लगा रहे थे, जल्दी-जल्दी में खड़े किये तोरणों की टेढ़ी ठठरियों पर कपड़ा चढ़ा रहे थे। बंदनवारों पर जो

नारे लगे थे, वे पांच भाषाओं में थे,—स्तालिनाबाद से ख़बर आई थी कि उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिए सोवियत संघ के कृषि के जन-कमिसार और राजकीय योजना आयोग के अध्यक्ष के साथ बहुत-से विदेशी मेहमान—इंजीनियर और पत्रकार—भी आ रहे हैं। सूचित किया गया था कि दिन की गरमी से बचने के लिए मेहमान स्तालिनाबाद से अलस सवेरे ही चल पड़ेंगे और लगभग सौ लोगों की व्यवस्था करके रखनी चाहिए।

उस रात मोरोज़ोव बिलकुल भी नहीं सोया था, बल्कि अपनी देखरेख में तैयारियां करवाने में लगा रहा था। चट्टान के ढहने और अप्रत्याशित रूप से बलुई दलदल के निकल आने के कारण काम के पूरा होने में तीन सप्ताह का विलंब हो गया था। इससे उन्हें नहर की तह को समय रहते पानी छोड़कर मज़बूत करने का समय नहीं मिल पाया था और मैनेजमेंट कॉफ़र बांध के उड़ाये जाने के समय से ही नहर को औपचारिक रूप से उद्घाटित मान लेने के लिए मजबूर हो गया था। इस समाचार ने मोरोज़ोव को बहुत चिंतित कर दिया कि बड़ी संख्या में विदेशी मेहमान आ रहे हैं। क्या ये लोग इस बात को ध्यान में रखेंगे कि नहर में पहली बार पानी छोड़ा जा रहा है और ऐसी हालत में तट का जहां-तहां बह जाना और किनारों का धंस जाना अनिवार्य है? उसने सोचा कि उनके लिए तो हर मामूली से मामूली दुर्घटना भी हमारे तूफ़ानी काम की ख़राब क़िस्म के बारे में फब्तियां कसने का एक और बहाना बन जायेगी। उसे लगातार उनके पीछे भागते और यह समझाते रहना होगा कि पानी छोड़े जाने का यह मतलब नहीं कि नहर चालू हो गई है और जब वह चालू होगी, तब तक तो वे सभी छोटी-मोटी ख़राबियों को सैकड़ों बार ठीक कर लेंगे। मोरोज़ोव ने यह सोचकर अपने को तसल्ली दी कि शायद सभी कुछ ठीक-ठाक ही रहेगा, लेकिन पिछले कुछ सप्ताहों में उन्हें जिस तरह के लगातार आश्चर्यों का सामना करना पड़ा था, उनके दृष्टिगत यह आशा बहुत ही धूमिल थी।

स्तालिनाबाद से आनेवाली पहली कार केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष को लेकर आई। फिर चार कारें और पहुंच गईं। ज़रा ही देर में सफ़ेद इमारत के सामनेवाली जगह चारख़ानेदार मोज़े पहने, तरह-तरह की टोपियां और टोप लगाये, कंधे पर कैमरे और दूरबीनें लटकाये लोगों से भर गई। विदेशी मेहमान देखते-देखते ही सारी बस्ती में फैल गये और सब कहीं ताका-झांकी करने लगे। वे आपस में बहुत ज़ोर-ज़ोर से बातें कर

रहे थे — उसी तरह, जैसे बहरे करते हैं, शायद इस डर से कि नदी का शोर उनकी ग्रावाज़ों को डुबा लेगा, या शायद इस विश्वास के कारण कि इस समय जो बातें कही जा रही हैं, उनमें उनके ये शब्द ही सबसे महत्वपूर्ण हैं। विदेशी लोगों का जमाव सबसे ज़्यादा नदी के ऊपरवाली खड़ी चट्टान पर ही था। नीचे देखकर वे सभी ख़ामोश हो गये — बेशक, कोई बहुत देर के लिए नहीं। ग्रपने-ग्रपने कैमरा से उन्होंने तूफ़ानी नदी के विविध कोणों से छायाचित्र लिये ग्रौर ग्रपनी सिगरेटों के टोंटों को उसमें फेंककर वे मज़दूरों के मकान देखने के लिए चले गये।

एक के बाद एक करके कारें ग्राती ही रहीं।

मोरोज़ोव, कीर्श, ऊर्ताबायेव ग्रौर क्लार्क ने मेहमानों की ग्रगवानी की। पास ही सिनीत्सिन को देख ऊर्ताबायेव चुपके से वहां से खिसक गया ग्रौर दफ़्तर के बाहर उसे पकड़कर उसे एक ख़ाली कमरे में ले गया।

"कुछ ख़बर मिली?"

"सुना है कि कोई दो हज़ार बासमचियों ने नदी को पार कर लिया है। कई तो नदी को पार करने की कोशिश में हमारे सीमांत प्रहरियों के हाथों मारे गये। तीन जगहों पर तीन गिरोह पार करने में कामयाब हो गये हैं। इस वक़्त उनकी ठीक संख्या निश्चित करना कठिन है। कोई सात सौ रहे होंगे।"

"ग्राबादी को लामबंद कर दिया गया है?"

"सारे सीमांत प्रदेश पर चोबेसुख़ियों के दलों की घेराबंदी है। स्तालिनाबाद से तीन हवाई जहाज़ सीमांत पर पहुंच गये हैं। कुल मिलाकर, नहर का शांतिपूर्ण उद्घाटन सुनिश्चित करने के लिए सभी कुछ किया जा चुका है।"

"इस वक़्त यही सबसे बड़ी चीज़ है। ज़रा कल्पना तो करो — कहीं हमारे मेहमान गोलीबारी के बीच ग्रा जायें ग्रौर किसीके पेट-वेट में गोली लग जाये, तो? कितना शानदार प्रचार होगा यह!"

"यही ग्राशा करनी चाहिए कि सब कुछ बिना किसी विघ्न के हो जायेगा। ख़ैर, तुम मेहमानों के पास जाग्रो, मैं चला।"

"रुको ज़रा! हमारी सिंचाई प्रणाली को तो कहीं कोई नुक़सान नहीं पहुंचा है?"

"तीसरे सैक्शन पर कोशिश की गई थी, पर उसकी बहुत करके अब तक मरम्मत हो चुकी होगी। सैक्शन के सभी मज़दूरों को आत्मरक्षा दलों में संगठित कर लिया गया था – गैंती, सब्बल – जो कुछ भी मिला, उसीसे लैस। कहते हैं कि बासमाचियों के एक दस्ते को तो वे ख़त्म भी कर चुके हैं।"

"भाड़ में जायें ये सब मेहमान! अगर ये लोग न होते, तो मैं भी स्वयंसेवक दलों के साथ वहां चला गया होता!"

"तुम्हारे बिना भी काम चल जायेगा। तुम यहां मेहमानों की देखभाल करो। अच्छा हो कि उन्हें आज तीसरे सैक्शन न जाने दो..."

नहर-मुख पर किनारे के रेलिंग पर कोहनियां टिकाये कुछ विदेशी पत्रकार कॉफ़र बांध के उड़ाये जाने की तैयारियों को देख रहे थे। विस्फोटनकर्ताओं का एक दल बांध के निचले हिस्से में पेंदे के समांतर बनाये छेदों में विस्फोटक रखने के लिए हाथ-पैरों के बल जा रहा था। काले बालों-वाला एक लंबा इंजीनियर हर छेद में रखे जानेवाले विस्फोटक की ख़ुद जांच कर रहा था। जब विस्फोटनकर्ता अपने काम को पूरा करके वापस आ गये, तो इंजीनियर छेदों को देखने के लिए ख़ुद रेंगकर गया। काफ़ी देर बाद वह चिमनी साफ़ करनेवालों की तरह से काला होकर लौट आया। उसका बांका काकेशियाई कुरता अब मटमैला लगने लगा था। इंजीनियर ने साफ़ रूमाल से उसे सावधानी से झाड़ा और काफ़ी अच्छी जर्मन में अतिथियों से अनुरोध किया कि वे विस्फोटन-क्षेत्र के आसपास की जगहों से हट जायें। उसे अपने अनुरोध को दुहराने की जरूरत नहीं पड़ी – हर कोई जल्दी-जल्दी छोटी-छोटी झंडियों से चिह्नित लाइन के कुछे पीछे चला गया।

इंजीनियर ताबूकाश्वीली ने अपने अंतिम आदेश जारी किये। एक सीटी बज उठी। ताबूकाश्वीली ने अपनी घड़ी निकाली। विस्फोट ठीक एक बजे होना था। चार मिनट और बाक़ी थे। ताबूकाश्वीली ने घड़ी को जेब में वापस रख लिया, निरभ्र आकाश की ओर एक नज़र डाली, सिगरेट-होल्डर निकाला और एक सिगरेट सुलगा लिया। उसकी हरकतों की निरायास धीरता और निरपेक्षता को देखते ही इस बात का अनुमान लगाया जा सकता था कि विस्फोटन-विशेषज्ञ उत्तेजित है...

नेमिरोव्स्की का उत्तराधिकारी

कोमारेंको के कमरे की हवा तंबाकू के धूएं से लदी हुई थी। कोमारेंको ने काग़ज़ों से भरी एक मोटी फ़ाइल खोली।

"तो, नागरिक क्रुशोनी, आप मेरे सवाल का जवाब देने से इनकार करते हैं?"

इंजीनियर क्रुशोनी के हलके ज़र्द पड़े चेहरे पर बेसब्री की एक छाया कौंध गई।

"मैं जवाब देने से इनकार नहीं करता। मेरा जवाब 'नहीं' है।"

"आप इस बात से इनकार करते हैं कि एक सप्ताह पहले, आपके फ़्लैट में ब्रांडी पीते हुए इंजीनियर ताबूकाश्वीली के साथ बातचीत के दौरान जब ताबूकाश्वीली ने कॉफ़र बांध के उड़ाये जाने के बारे में अपनी आशंकाएं व्यक्त कीं, तो आपने लगभग साफ़-साफ़ शब्दों में उससे यह कहा कि अगर विस्फोट ठीक न हो और वह नहर-मुख को क्षतिग्रस्त कर दे, तो कोई उसे बहुत बड़ी रक़म देगा?"

"मैं बिलकुल इनकार करता हूं।"

"आपने ताबूकाश्वीली से यह नहीं कहा कि दुर्घटना सांयोगिक भी हो सकती है और दुर्घटना चाहे सांयोगिक हो, चाहे जान-बूझकर की गई हो, उसे हर हालत में उसका समान रूप से उत्तरदायी ठहराया जायेगा – बस, एक मामले में उसका यह उत्तरदायित्व मुफ़्त का होगा, जबकि दूसरे मामले में वह अमीर बन जायेगा?"

"मैंने ताबूकाश्वीली से ऐसी कोई बात न कही, न कह सकता था।"

"आप इस बात से इनकार करते हैं कि तीन दिन हुए, जब ताबूकाश्वीली ने अपनी रज़ामंदी ज़ाहिर कर दी, तो आपने अपने घर में उसे किसी अज्ञात व्यक्ति से प्राप्त सौ-सौ रूबल के नोटों में तीस हज़ार रूबल दिये?" कोमारेंको ने अपनी दराज़ खोली और नोटों की एक गड्डी निकाली। "यही तीस हज़ार रूबल।"

"मैं इससे पूरी तरह से इनकार करता हूं।"

"तो इसके मानी हैं कि इस सौदे के बारे में हमारे सामने दिया इंजीनियर ताबूकाश्वीली का बयान बिलकुल मनगढ़ंत है?"

"शुरू से आख़िर तक।"

"इंजीनियर ताबूकाश्वीली आप पर बस, लांछन ही लगा रहा था?"

निस्संदेह।"

"किस उद्देश्य से? आप इसका क्या कारण दे सकते हैं?"

"प्रकटत: इसलिए कि कहीं उस पर संदेह न किया जाये।"

"किस बात का संदेह?"

"मान लीजिये कि कोई अज्ञात आदमी, जो किसी न किसी कारण दुर्घटना करवाना चाहता है, इंजीनियर ताबूकाश्वीली को विस्फोट ठीक न होने पर पचास हज़ार रूबल देने का प्रस्ताव रखता है। इंजीनियर ताबूकाश्वीली पैसा तो पाना चाहता है, लेकिन दुर्घटना के लिए पांच-छ: साल की सज़ा भुगतना नहीं चाहता। इसलिए वह समझदार आदमी की तरह कम पैसा कमाने का निश्चय करता है—मगर बिना किसी भी ख़तरे के। उसे जो पैसा मिला है, उसमें से वह तीस हज़ार रूबल निकालता है और उसे चेका के पास आकर बड़ी उदारता के साथ आपके हवाले कर देता है और आपको बड़ी नाराज़ी के साथ बताता है कि उसे—एक ईमानदार सोवियत इंजीनियर को—रिश्वत देने की और तोड़-फोड़ का काम करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की गई है। निस्संदेह, वह उस आदमी का नाम नहीं लेता, जिसने उसे सचमुच पैसा दिया है। उसके ध्यान में जिस पहले आदमी का नाम आता है, जिसे वह पसंद नहीं करता, वह उसीका नाम ले लेता है। वह जिसका चाहे, उसका नाम बिलकुल निर्भय होकर ले सकता है, क्योंकि आख़िर आप यह कैसे साबित कर सकते हैं कि पैसा आपने नहीं दिया है, जब चेका को वह पैसा पहुंचानेवाला आदमी ख़ुद आपका ही नाम ले रहा है, और किसीका नहीं? फिर चाहे इंजीनियर ताबूकाश्वीली द्वारा कॉफ़र बांध के उड़ाने में दुर्घटना हो भी जाये, तो भी उस पर से संदेह बिलकुल हट जाता है। दुर्घटना को या तो शुद्ध संयोग मान लिया जायेगा या किसी और की तोड़-फोड़। इंजीनियर ताबूकाश्वीली को एकसाथ बीस हज़ार रूबल मिल गये और साथ ही ऐसे सौ फ़ीसदी सोवियत इंजीनियर का प्रमाणपत्र भी प्राप्त हो गया, जिसे चेका का विश्वास प्राप्त है, जबकि जिस निर्दोष आदमी पर उसने लांछन लगाया है, उसे या तो गोली मार दी जाती है या बंदी शिविर में भेज दिया जाता है। हर सूरत में योजना एकदम निर्दोष है।"

"तो आपको विश्वास है कि दुर्घटना होकर ही रहेगी?"

"लगभग पूरी तरह से विश्वास है। अन्यथा इंजीनियर ताबूकाश्वीली जिन उद्देश्यों से ऐसा कर रहा है, वे बिलकुल अवोधगम्य होंगे।"

"ठीक है, हम अभी पता लगा लेते हैं। एक बजकर पांच मिनट हुए हैं। विस्फोट ठीक एक बजे होना था।"

कोमारेंको ने टेलीफ़ोन का रिसीवर उठाया।

"...ज़रा मोरोज़ोव को दीजिये। हां, मोरोज़ोव? कोमारेंको। कॉफ़र बांध के उड़ाये जाने का क्या हुआ? हो गया? सब ठीक-ठाक? नहर-मुख को तो नुक़सान नहीं हुआ? ठीक है। शुक्रिया। बस, यही पूछना था।"

कोमारेंको ने रिसीवर वापस रख दिया।

"किसी भी तरह की कोई दुर्घटना नहीं हुई, प्रिय नागरिक क़ुशोनी। विस्फोट पूरी तरह से सफल रहा। अब आप क्या कहते हैं?"

"मैं कहता हूं कि इससे अभी कुछ भी साबित नहीं होता। हो सकता है कि इंजीनियर ताबूकाश्वीली की हिम्मत आख़िरी वक़्त पर जवाब दे गई हो। वह नहर-मुख को नुक़सान पहुंचाते डरता था, जिसके लिए वह प्रत्यक्षतः ख़ुद उत्तरदायी है। निर्माण-कार्य को नहर-मुख पर दुर्घटना के अलावा और भी तरीक़ों से नुक़सान पहुंचाया जा सकता है। और भी कई जगहें ऐसी हैं, जहां दुर्घटना होने से यही परिणाम निकलेंगे। असल में यह योजना कहीं अधिक सुविधाजनक रहेगी, क्योंकि इंजीनियर ताबूकाश्वीली पर इन जगहों का प्रत्यक्ष उत्तरदायित्व नहीं है। जब तक नहर में पानी नहीं छोड़ दिया जाता और उसके फलस्वरूप कोई गंभीर दुर्घटना नहीं होती, तब तक मैं यह नहीं मानूंगा कि मेरा सोचना ग़लत था।"

"यह पहले से कहीं ज्यादा समझदारी का वक्तव्य है। लेकिन लांछन लगाने के लिए इंजीनियर ताबूकाश्वीली ने आपको ही क्यों चुना? क्या आपका उनसे कोई निजी झगड़ा हुआ है?"

"नहीं। मैं इंजीनियर ताबूकाश्वीली को कम ही जानता हूं। मैकेनिकल डिपार्टमेंट में अपने काम के सिलसिले में मुझे कदाचित ही उसके संपर्क में आने का अवसर मिला है। लेकिन इस तरह के मामलों में किसी ऐसे आदमी को अपना शिकार बनाने के लिए छांटना सबसे बड़ी बेवकूफ़ी होगी, जिसके साथ आपका निजी झगड़ा है। बाद में जांच के दौरान यह बात हमेशा सामने आ जाती है और अनावश्यक संदेह ही पैदा करती है। इंजीनियर ताबूकाश्वीली सामान्यतः स्वीकृत सिद्धांत के प्रति निष्ठावान रहा है – दोष

ऐसे लोगों पर लगा दो, जिनकी साख गिरी हुई है। यही सबसे निश्चित ग्रौर निरापद तरीक़ा है।"

"ग्राप ग्रपने को गिरी हुई साखवाला क्यों समझते हैं? प्रारंभिक पूछताछ में ग्रापने कहा था कि ग्राप पर न कभी मुक़दमा चला है ग्रौर न ग्रापकी कभी किसी भी तरह की भर्त्सना ही की गई है।"

"मैंने बिलकुल ठीक ही कहा था। सवाल मेरे ग्रतीत का नहीं है,– उसमें मेरे ख़िलाफ़ कुछ भी नहीं है ग्रौर इस बात की ग्रासानी से पुष्टि की जा सकती है,– बल्कि उस काम का है, जो मुझे इस निर्माणस्थली पर दिया गया था। ग्रापको मालूम है कि मैं मैकेनिकल डिपार्टमेंट का प्रमुख था, ग्रौर इस बात को ग्राप बेशक ग्रच्छी तरह से जानते हैं कि मेरी नियुक्ति के पहले इसी विभाग में काफ़ी संख्या में ग्रंतर्ध्वंस के मामलों का पता लगा था। मेरे पूर्ववर्ती, इंजीनियर नेमिरोव्स्की पर ग्रंतर्ध्वंस के लिए मुक़दमा चलाया गया था। मैकेनिकल डिपार्टमेंट के सारे ही काम पर ग्रविश्वास का जो वातावरण छाया हुग्रा था, स्वाभाविक रूप से वह मेरी नियुक्ति के साथ तिरोहित नहीं हो गया। विशेषकर पिछले कुछ दिनों से,– ठीक कहें, तो उसी क्षण से, जब मैंने ग्रविद्यमान सामग्री से एक रात के भीतर तीन हाइड्रोमानीटर बनाने से इनकार कर दिया था,– मेरे प्रति साथी मोरोज़ोव का जो रवैया है, वह बिलकुल ग्रसहनीय है। मैंने काम छोड़ने का सवाल सिर्फ़ इस कारण नहीं उठाया कि निर्माण-कार्य के समाप्त होने के कुछ ही सप्ताह पहले उसे छोड़ने की कोई तुक नहीं थी। कुछ समय से मोरोज़ोव ने इंजीनियर कीर्श को मेरे ऊपर थोप दिया है, जो मेरे हर काम को वस्तुतः पूरी तरह से नियंत्रित करते थे। यह बिलकुल समझ में ग्रानेवाली बात है कि मेरी स्थिति से ग्रवगत होने के कारण इंजीनियर ताबूकाश्वीली ने शिकार बनाने के लिए मुझे ही चुना। उसने यह ठीक ही सोचा कि तोड़-फोड़ का ग्रारोप ग्रौर किसीकी बनिस्बत मुझ पर ज्यादा ग्रासानी से लग सकता है ग्रौर मेरे इर्दगिर्द जो वातावरण पैदा कर दिया गया है, उसमें वह मुझे ग्रसहाय बना देगा।"

कोमारेंको ग्रधमिंची ग्रांखों से कुशोनी की तरफ़ ग़ौर से देखे जा रहा था।

"देखिये," सिगरेट जलाते हुए उसने कहा। "मैंने ग्रापकी बात को बहुत धीरज ग्रौर ध्यान से सुना है। ग्रापमें निश्चित रूप से साहित्यिक प्रतिभा है। ग्रापको तो, सचमुच, जासूसी कहानियां ही लिखनी चाहिए... ग्रच्छा,

अब मेरी बात ध्यान से सुनिये—बहुत ध्यान से। जरा अपना बटुआ निकालिये। खोलिये इसे। गिनिये, इसमें कितने पैसे हैं। गिन लिये आपने? कितने हैं?"

"तीन सौ सैंतालीस रूबल।"

"सौ-सौ रूबल के तीन नोट? है, न?"

"जी हां।"

"ज़रा इन नोटों को फैलाइये। अब ज़रा इनके सामने की तरफ़, बायें कोने में नीचे की तरफ़ देखिये। वहां आपको क्या नज़र आ रहा है?"

"पेंसिल का निशान सा है।"

"यह 'क' अक्षर है, है, न?"

"जी हां, 'क' अक्षर ही है," ज़र्द पड़ते हुए क्रुशोनी ने सहमति प्रकट की।

"अब दूसरे दोनों नोटों के भी उसी कोने को देखिये। उन पर भी 'क' बना हुआ है, न? हां? आप जवाब क्यों नहीं देते? मिला? और ये रहे वे नोट, जो आपने इंजीनियर ताबूकाश्वीली को दिये थे। आप देखेंगे कि उन सब के कोने में भी पेंसिल से 'क' लिखा हुआ है। मेरा नाम कोमारेंको है। इन नोटों पर मैंने ही निशान बनाये थे। आप इस क़दर ज़र्द क्यों पड़ गये हैं? तबीयत तो ठीक है, न? लीजिये, यह रहा पानी का गिलास। पी लीजिये इसे—इससे हमेशा तबीयत संभल जाती है। कुछ संभले? हां, तो ज़रा और पास आ जाइये और मुझे शुरू से आख़िर तक पूरा क़िस्सा सुनाइये। आप बेवकूफ़ नहीं हैं और इस बात को आप ख़ुद भी समझते हैं कि ऐसे मामलों में सब कुछ सच-सच बता देना ही समझदारी का अकेला रास्ता होता है। सीधे-सीधे और बिना किसी साहित्यिक चातुर्य के। हां, तो इंजीनियर ताबूकाश्वीली को देने के लिए आपको पैसा किसने दिया था?"

दुर्घटना

नहर-मुख के सात खुले जल-कपाटों में से फेनिल पानी सात गरजते प्रपातों के रूप में गिरने लगा। लगता था कि जैसे वक्ष की बाईं बग़ल को पांचे से छेद दिया गया है और सात छेदों में से गंदला ख़ून उसे ग्रहण करने के लिए रखी नांद में धार बांधकर गिरे जा रहा है। पानी की आपस

में गुंथी हुई मटियाली लहरें चट्टानी पेंदे पर एक दूसरे से टकराने लगीं। धीरे-धीरे नहर फूलने लगी।

उत्तेजना के मारे अतिथियों की ओर से बिलकुल बेख़बर हुए मोरोज़ोव, ऊर्ताबायेव, कीर्श और क्लार्क खड़े हुए नीचे की तरफ़ देखे जा रहे थे। असफलताओं के दिनों में उनमें से प्रत्येक ने अनेक बार इस जगह पर खड़े होकर इस क्षण की कल्पना की थी, जो तब इतनी दूर और अप्राप्य प्रतीत होता था। और अब, जब वह सामने आ खड़ा हुआ था, तब उनमें से प्रत्येक ज़बरदस्त उल्लास के साथ-साथ निराशा के एक स्वर का भी अनुभव कर रहा था। उनकी आंखों के सामने आज जो हो रहा था, वह निस्संदेह भव्य था, लेकिन साथ ही जैसे कुछ सामान्य भी था। पानी नहर में भागता चला जा रहा था, मानो उसके लिए मात्र यही करना ठीक था, मानो हमेशा से ऐसा ही होता आया था। इन लोगों तक को, जो इस नहर के निर्माता थे, अब यह बात अविश्वसनीय प्रतीत हो रही थी कि सिर्फ़ दो ही हफ़्ते पहले तक इस गंदियाली हलदिया धारा के लिए एक-एक घन मीटर जगह को इनसानी हाथों से, सैकड़ों लोगों के संगठित प्रयासों से छीना जा रहा था। वे शायद कोई बहुत ही असाधारण, कोई बहुत ही असंभव चीज़ होते देखना चाह रहे थे—शायद यह कि नवजात नदी के साथ पहला संसर्ग होते ही इस नंगी, धूप से जली ज़मीन पर आश्चर्यचकित दर्शकों की आंखों के सामने-सामने ही नरकुल की हरी पत्तियां, या पटेरे की पतली-पतली शाखें, या कम से कम मामूली घास की कल्लियां तो लहलहाने लगें ही। लेकिन मिट्टी तो बस दंभियों की तरह ख़ामोशी ताने तृषातों की तरह पानी ही पीती चली गई।

जी भरकर देख लेने के बाद अतिथियों ने आगे चलने की इच्छा प्रकट की। सभी लोग किनारे से उतरकर कारों में जाकर बैठ गये। छियालीसवीं चौकी के संधि-स्थान पर पहुंचकर मोरोज़ोव कार से उतर ही रहा था कि धूल से सने गालत्सेव ने आकर बिना कुछ कहे उसके हाथ में एक मुड़ा-तुड़ा काग़ज़ रख दिया। एक बूढ़े बेल्जियाई प्रोफ़ेसर को उतरने में सहारा देते-देते मोरोज़ोव ने रुक्क़े पर एक उड़ती हुई नज़र डाली। पहला वाक्य पढ़ते ही उसे लगा कि जैसे उसके सिर पर बाल खड़े हो रहे हैं। उसने प्रोफ़ेसर को आगे निकल जाने दिया और उसके पीछे-पीछे सीढ़ी पर चढ़ते हुए रुक्क़े को पूरी तरह से पढ़ा :

कत्ता-ताग़ पहाड़ पर भू-स्खलन हो गया है। नहर की सारी वाहिका अवरुद्ध हो गई है। पानी बांध पर से होकर वह निकला है और मैदान को जलमग्न कर रहा है। पानी फ़ौरन बंद कर दीजिये। आदमी और मशीनें भेजिये। दो एक्स्केवेटर और चाहिए।

रियूमिन

मोरोज़ोव ने रुक्क़े को जेब में डाल लिया।

"जी हां," शिष्टतापूर्ण मुसकान के साथ ऊपर प्रतीक्षा करते प्रोफ़ेसर से उसने कहा, "यही हमारी छियालीसवीं चौकी का संधि-स्थान है। जैसा कि आप देख रहे हैं, कुछ पानी दाईं शाखा में चला जाता है... साथी क्लार्क, आप यह बात इन सज्जनों को कहीं ज्यादा अच्छी तरह से समझा सकते हैं... यह हमारे पहले सैक्शन के प्रमुख हैं। मुझे कृपया क्षमा कीजिये – मुझे जाकर यह देखना है कि वापस पहुंचने पर हमें खाना तैयार मिले। हम लोग खाना दूसरे सैक्शन पर खायेंगे। वहां जगह ज्यादा है। साथी क्लार्क, संधि-स्थान और नहर की दाहिनी शाखा को देख लेने के बाद अतिथियों को दूसरे सैक्शन पर ले आइये। ये सज्जन शायद बेहद भूखे होंगे... साथी कोर्श! ज़रा एक मिनट!"

मोरोज़ोव बिना जल्दी किये फिर नीचे उतरा और अपनी कार की तरफ़ चल दिया। उसी समय पार्टी समिति की फ़ोर्ड आई और रुकने के भी पहले उसमें से सिनीत्सिन कूदकर उतर पड़ा।

"हां-हां, मुझे सब मालूम है," उसकी तरफ़ सिर हिलाते हुए मोरोज़ोव ने कहा। "मेहरबानी करके ज़ोर से मत बोलो। बिना ध्यान आकर्षित किये ऊर्ताबायेव को बुलवा लो। मैं कार में तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूं।"

एक मिनट बाद कार पर कोहनियां टिकाये कोर्श और ऊर्ताबायेव रियूमिन के रुक्क़े को पढ़ रहे थे। सिनीत्सिन ने शाखा नहर की तरफ़ इशारा करते हुए दबी हुई आवाज़ में कहा:

"मोरोज़ोव, तुम सीधे दूसरे सैक्शन चले जाओ, वहां भोज-समारोह की व्यवस्था करो और मेहमानों के आने तक वहीं रहो। न, कुछ मत बोलो! वहां से कहीं मत जाना! निर्माण-प्रमुख को लगातार अपने मेहमानों के साथ ही रहना चाहिए। उन्हें अपनी बस्ती-बस्ती और दूसरी चीज़ें दिखाओ। फिर उन्हें खाना खिलाने के लिए ले जाओ। शानदार से शानदार दावत दो – जितनी हो सकें, उतनी चीज़ें खिलाओ और जल्दी-जल्दी नहीं!

दावत शाम तक चलनी चाहिए। भाषण-वाषण – तुम तो ख़ुद सब जानते हो। ऐसा करो कि मेहमान उकताने न पायें और पता चले बिना अंधेरा हो जाये। साथी कीर्श तुम्हारे साथ ही रहेंगे। न-न, बहस बाद में कर लेंगे! आप विदेशी भाषाएं अच्छी तरह से जानते हैं और मेहमानों को उलझाये रख सकते हैं। कत्ता-ताग़ के काम पर ऊर्ताबायेव को लगा दीजिये। यह काग़ज़ पर इस योजना के लिए लड़े थे, अब इन्हें व्यवहार में लड़ने दीजिये। इन्हें मदद के लिए एक अमरीकी देना होगा। मैं क्लार्क का सुझाव देता हूं। मर्री तो ख़ुश होगा कि आपने उसकी बात नहीं सुनी और अपनी योजना से अब मुसीबत में पड़ गये हैं। लेकिन क्लार्क हमारा ही आदमी है। तो, अब समय नष्ट नहीं करना चाहिए। मोरोज़ोव, तुम ख़ुद फ़ौरन चले जाओ। दूसरे सैक्शन से आदेश भेज दो कि पानी तुरंत बंद कर दिया जाये। तब तक विदेशियों ने सभी कुछ देख लिया होगा और नहर में उनकी दिलचस्पी ख़त्म हो चुकी होगी। अब से दस मिनट बाद – पहले नहीं – ऊर्ताबायेव और क्लार्क चुपके से खिसक जायेंगे। वे मज़दूरों और मशीनों को जुटाकर कत्ता-ताग़ रवाना हो जायेंगे। साथी कीर्श और मर्री दस मिनट बाद अतिथियों को बस्ती ले जायेंगे... मैं चला। मैं तुम्हारा कत्ता-ताग़ पर इंतज़ार करूंगा।"

"साथी ऊर्ताबायेव!" मोरोज़ोव ने दूर से ऊर्ताबायेव को आवाज़ दी।

ऊर्ताबायेव वापस आ गया।

"दूसरे सैक्शन से दो एक्स्केवेटर ले लीजिये और उन्हें चलाकर कत्ता-ताग़ ले आइये।"

ऊर्ताबायेव ने ख़ामोशी से सिर झुका लिया।

शाम के लिए निर्धारित भोज-समारोह चार बजे ही शुरू हो गया। बावर्ची लोग पागलों की तरह काम में जुट गये। गरमी और नहर के तटों की चढ़ाई-उतराई से निढाल मेहमानों ने खाने के निमंत्रण का खुले उल्लास के साथ स्वागत किया। क्लब में उन्हें अविश्वसनीय रूप से लंबी-लंबी मेज़ों के इर्दगिर्द बैठा दिया गया और फिर विविध व्यंजनों के परोसे जाने का एक अविराम सिलसिला शुरू हो गया।

ऊर्ताबायेव ने कत्ता-ताग़ से टेलीफ़ोन करके कोई तीन सौ गैंतियों और फावड़ों की मांग की और वचन दिया कि रात भर के भीतर भू-स्खलन के

कुपरिणामों का ख़ात्मा कर दिया जायेगा, जिससे अगले दिन सुबह सात बजे नहर में पानी फिर छोड़ा जा सकेगा। नौ बजते-बजते अंधेरा हो जायेगा। भोज-समारोह को कम से कम पांच घंटे चलना था।

मोरोज़ोव की कनपटियों में जैसे घनघन हो रही थी। उद्‌घाटन-भाषण उसे ही देना था और भाषण का लंबा होना ज़रूरी था और आज ही उसे ऐसा लग रहा था कि तीन वाक्यों को भी ठीक से नहीं कह सकेगा। उसकी मानसिक शक्ति, जो पिछले कुछ महीनों के दौरान काफ़ी हद तक टिकी रही थी, कत्ता-ताग़ के नये अचरज की ख़बर मिलने के बाद से चकमा दे रही थी। मोरोज़ोव इधर-उधर घूम रहा था, आदेश जारी कर रहा था, मेहमानों की तरफ़ मुसकरा रहा था, उन्हें कुछ समझा रहा था, कहानियां सुना और मिसालें दे रहा था और हंस तक रहा था, मगर उसकी अपनी हंसी और आसपास के लोगों की आवाज़ें उसकी चेतना में एक नीरस घनघनाहट की आवाज़ में से रिसकर पहुंच रही थीं।

दावत बहुत पहले शुरू हो चुकी थी, लेकिन अभी तक मोरोज़ोव यह नहीं समझ पा रहा था कि भाषण कैसे शुरू करे। कोर्श ने मुसकराते हुए मेज़ के उस पार से एक रुक्क़ा उसकी तरफ़ बढ़ा दिया। उसमें सिर्फ़ दो वाक्य थे – "इवान मिख़ाइलोविच, बोलना शुरू कीजिये। अब और नहीं टाला जा सकता।" यही काफ़ी था। प्रबल आत्मनियंत्रणवाले वक्ता की तरह मोरोज़ोव धीरे से उठा और उसने अतिथियों से क्षण भर के लिए अपनी बात सुनने का अनुरोध किया।

"साथियो और सज्जनो!" उसने बहुत ज़ोर से कहा और उसकी कनपटियों में होनेवाली जिस एकरस घनघनाहट ने उसकी आवाज़ को डुबा रखा था, वह अचानक जाती रही। "जब मैं यहां पहले-पहल आया, तब फ़रहाद नाम के एक ताजिक ने, जो हमारे यहां गोदाम में काम करता था, मुझे उस प्राचीन सिंचाई प्रणाली के बारे में एक दंतकथा सुनाई, जिसके अवशेषों को आपने आज नहर-मुख के आसपास ही देखा था। यह दंतकथा मुझे कहानी सुनानेवाले के नामराशि – शहज़ादे फ़रहाद – के नाम के साथ जुड़ी हुई है।

"अगर इस दंतकथा पर विश्वास किया जाये, तो यह स्थान युवा शहज़ादी ज़मीन की रियासत में पड़ता था और उस समय यह ख़ूब घनी आबादीवाला उपजाऊ मैदान था। जैसा कि दंतकथाओं में होना चाहिए,

यह शहज़ादी न केवल अलौकिक सौंदर्य से ही संपन्न थी, बल्कि अपनी प्रजा के प्रति फ़रिश्तों जैसी नम्रता और ममता से भी परिपूर्ण थी। लेकिन इस दंतकथा की नायिका वह इन गुणों के कारण ही नहीं बनी। बल्कि वह एक दुर्घटना के कारण, एक ऐसी प्राकृतिक आपदा के कारण कथा की नायिका बनी, जैसी यहां अकसर होती ही रहती हैं। वसंत की एक तूफ़ानी रात को नदी ने, जो कभी इसी इलाक़े में होकर बहती थी, अचानक अपना रुख़ बदल दिया और शहज़ादी की रियासत को छोड़कर उसके एक कपटी पड़ोसी की जमीनों को सींचने के लिए उसकी रियासत में होकर बहने लगी। इस तरह आसपास के दहक़ानों के खेत पानी से वंचित हो गये और सूख गये। देश में अकाल पड़ने लगा। तब शहज़ादी ज़मीन ने ऐलान किया कि वह अपना तन और मन उसी आदमी को देगी, जो इस दुर्दांत नदी को उसके पुराने रास्ते पर फिर मोड़ देगा और भूख से ग्रस्त दहक़ानों के खेतों को पानी पहुंचा देगा।

"बहादुर शहज़ादे फ़रहाद ने, जो शहज़ादी को दिलोजान से प्यार करता था, उसकी इस प्रतिज्ञा के बारे में सुना। उसने अपनी रियाया के सभी मरदों को इकट्ठा किया और दिन-रात एक करके एक नई नहर को खोदना शुरू किया। वह बहुत समय तक खुदाई करता रहा और जो काम हमने किया है, लगभग उतना ही उसने भी किया। लेकिन चूंकि उसके पास एक्स्केवेटर, या कंप्रेसर, या विस्फोटक नहीं थे, परिवहन के उसके पास जो एकमात्र साधन थे, वे इनसानी हाथ या ऊंट ही थे, और चूंकि वह कोई समाजवादी समाज का निर्माण नहीं कर रहा था, बल्कि महज़ अपनी प्रियतमा को पाने का यत्न कर रहा था – और इस कारण तूफ़ानी टोलियों के काम या मज़दूरों में प्रतियोगिता पर निर्भर नहीं कर सकता था – इसलिए उसे नहर की खुदाई में बहुत साल लग गये।

"फ़रहाद के काम को उसका एक घोर प्रतिद्वंद्वी, अमीर व्यापारी उरुज़बाई अकसर देखा करता था। उरुज़बाई फ़रहाद की तरह स्वप्नदर्शी रोमानी आदमी नहीं था। वह मोटा और थलथला आदमी था। फ़रहाद के काम को देखकर उसने कुछ दिमाग़ी हिसाब लगाया – फ़रहाद को नहर खोदने में इतने साल लगेंगे कि आख़िर जब तक वह नदी का रुख़ बदल सकेगा और गुलाब-सी हसीन शहज़ादी ज़मीन को हासिल कर सकेगा, तब तक वह झुर्रीदार बुढ़िया हो चुकी होगी। उरुज़बाई बूढ़ा आदमी था।

वह सहनशक्ति में जवान फ़रहाद का मुक़ाबला नहीं कर सकता था। उसे तो ज़मीन तभी चाहिए थी, जब वह जवान और हसीन थी। इसलिए उसने चालाकी से कामयाबी पाने की ठानी।

"तीन दिन और तीन रात उरुज़बाई के नौकर उसके ऊंटों पर से सामान उतारते रहे, जो सुदूर बुख़ारा से बड़े-बड़े गट्ठर लेकर आये थे। गट्ठरों को उस पथरीली नहर से बहुत दूर, जहां फ़रहाद हठपूर्वक चट्टान को खोद रहा था, नदी से लेकर शहज़ादी के महल तक बिछा दिया गया।

"चौथी रात को सबसे आलिम और दानिशमंद मुल्लाओं और इशानों से घिरा उरुज़बाई ज़मीन के महल में पहुंचा। शहज़ादी की मौसी, जिसे उसने पहले से ही रिश्वत दे रखी थी, लपकती हुई अपनी भांजी के पास पहुंची और बोली, 'ऐ हसीन ज़मीन! तूने क़सम खाई थी कि उसी आदमी से शादी करेगी, जो हमारी दग़ाबाज नदी को क़ाबू में लाकर तेरी रियासत में वापस ले आयेगा। अमीर और अक़्लमंद उरुज़बाई ने तेरी मुहब्बत की ख़ातिर इस कमाल को कर दिखाया है। जा और जाकर झरोखे से देख ले। नदी उस पहाड़ के तले होकर बह रही है, जिस पर तेरा महल खड़ा है।

"जब ज़मीन झरोखे में आई, तो उसने देखा कि पहाड़ के तले सचमुच चांदनी में नदी का चौड़ा फ़ीता झिलमिला रहा है। उरुज़बाई के इसरार पर उसकी और ज़मीन की उसी रात को शादी हो गई। लेकिन जब सूरज निकला और अपने शौहर को सोता छोड़ बेचारी शहज़ादी झरोखे में आई, तो सदमे और हताशा के मारे वह ग़श खा गई। रात में उसने जिस चीज़ को नदी समझा था, वह चटाइयों की एक चौड़ी क़तार के अलावा और कुछ भी न था। क़रीने से बिछी चटाइयां चांदनी में चांदी की तरह चमक रही थीं, लेकिन अब, सूरज की रोशनी में, वे मैले हलदिया रंग की झलक ही मार रही थीं।

"लोकश्रुति है कि ठगी हुई शहज़ादी ने झरोखे से कूदकर आत्महत्या कर ली और जवान फ़रहाद को जब उसकी मौत की ख़बर मिली, तो उसने उसी नदी की चट्टानों पर अपना सिर फोड़कर जान दे दी, जिसे वह क़ाबू में नहीं ला पाया था।

"तो यह थी दंतकथा। हम, मार्क्सवादी, अत्यंत काव्यात्मक दंतकथाओं को भी अर्थशास्त्र की सीधी-सादी भाषा में रूपांतरित करने के आदी हैं। इससे दंतकथाओं की काव्यात्मकता जाती नहीं रहती, और इसके अलावा,

वे हमें अपनी रचना करनेवालों के जीवन, आकांक्षाओं और कष्टों को समझ पाने में सहायता देती हैं।

"इस देश में, जहां सदियों तक क्षुब्ध नदियां वनैले शंकुदंत गजों की भांति विचरण करती हुई वर्ष प्रति वर्ष अपने चरागाहों को मनमाने तरीक़े से बदलती रहती थीं; इस देश में, जहां पानी से वंचित होने पर उपोष्ण सूर्य एक ही गरमी में मिट्टी को पत्थर में परिणत कर देता है,–इस देश में जल और जीवन सदा से समानार्थक धारणाएं रही हैं। आपको यहां ऐसी एक भी दंतकथा नहीं मिल पायेगी, जिसमें पानी की बात न आती हो। और यह कोई अचरज की बात नहीं है कि यहां की सबसे सजीव दंतकथाओं के नायक नई सिंचाई प्रणालियों के साहसी निर्माता थे, जिनके जीवन का लक्ष्य सूरज से जले खेतों को पानी से सींचना ही था।

"उन लोगों के लिए, जो लगातार इस ख़तरे के नीचे रह रहे हैं कि जो नदी उनके खेतों को पानी देती आई है, वह एक दिन ऐसा भी कर सकती है कि दूर कहीं चली जाये और फिर कभी वापस न आये; उन लोगों के लिए, जो दहशत के साथ यह देखते हैं कि किस तरह उनकी अरीक़ों में पानी साल-दर-साल कम होता जा रहा है, जिन खेतों को वे इतने ध्यान से जोते-बोते आये हैं, साल-दर-साल किस तरह ज़िंदगी उनसे जाती जा रही है, किस तरह इन खेतों पर धीरे-धीरे मुरदा खाल की सूखी पपड़ी जमती जा रही है–उन लोगों के लिए ऐसी कोई क़ीमत नहीं थी, जिसे वे इस बात को स्थायी रूप से सुनिश्चित करने के लिए न अदा कर देते कि उनके खेतों के लिए नियत पानी सदा-सदा उनके पास ही रहेगा। स्थानीय सामंत इस बात से भली-भांति परिचित थे। ऐसा कोई ख़ान न था, जो अपनी प्रजा की हड्डी-हड्डी को चूस लेने के बाद भी महज़ यह वादा करके उसे और नहीं दूह सकता था कि वह नई नहरें बनवायेगा। और ऐसा एक भी ख़ान नहीं था, जिसने प्रजा के आख़िरी छदाम को भी इस तरह से ठग लेने के बाद अपना वादा पूरा किया हो। कमरतोड़ बोझ से ग्रस्त लोगों का ख़ान के वचन पर से विश्वास इस तरह से उठ गया था कि जब भी कोई नया ख़ान गद्दीनशीन होता, तो लोग उससे अधिकारों की मांग करने के बजाय एक ही क़सम खाने के लिए मजबूर करते–जब तक वह तख़्त पर रहेगा, वह सिंचाई की कोई योजना नहीं बनायेगा। यह कोई दंतकथा नहीं है–यह एक ऐतिहासिक तथ्य है। वास्तविक सहायता

की आशा को तजकर लोग किसी कल्पित शहज़ादे फ़रहाद के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे, जो उनकी प्यासी ज़मीन को पीने के लिए पानी देगा। लेकिन इन सपनों में भी लोगों की कटु व्याजोक्ति फ़रहाद के सुप्रयासों को सफल नहीं होने देती थी – क्योंकि उस ज़माने में, जब सत्ता उरुज़बाइयों के हाथ में थी, तब कोई भी शहज़ादा, चाहे वह कितना ही वीर क्यों न हो, दहक़ानों की मदद नहीं कर सकता था।

"बुख़ारा के अंतिम शासक, अमीर सैयद आलिम-ख़ां ने, जिसे क्रांति ने यहां से निकाल बाहर किया, कुछ समय पहले राष्ट्र संघ से बुख़ारा की हाथ से निकली गद्दी को फिर से दिलवाये जाने की मांग की थी। अपनी वफ़ादार रियाया के प्रति दर्शाई असीम व्याकुलता की एक मिसाल देने की इच्छा से अमीर ने अपने शासन के बीस वर्षों का विहंगावलोकन करते हुए पाया – और इस खोज से उसे अपार हर्ष हुआ और उसका उसने बड़ी गंभीरता के साथ उदाहरणस्वरूप उल्लेख किया है – कि उसने किसी नदी पर कोई पत्थर का पुल बनवाया था, जो प्रसंगवश बता दें, अब मौजूद नहीं है।

"फ़रहाद के बारे में लोगों की यह कटु दंतकथा बुख़ारा के अंतिम सामंत के साथ-साथ अपना समय पूरा कर चुकी है। क्रांति से मुक्त हुए लोगों ने उरुज़बाई तथा अन्य सारे अमीरों को खदेड़ने के बाद उस नदी को रेगिस्तान में मोड़ दिया है, जिसे दंतकथा का फ़रहाद नहीं मोड़ पाया था। अब यह कोई दंतकथा नहीं रह गई है। यह भी जनता की सृष्टि है, लेकिन एक ऐसी सृष्टि, जो अन्य साधनों से प्राप्त की गई है। जीवन की निराशा और कटुता के बारे में जो लोग कभी दंतकथाएं बनाया करते थे, वे आज अपने लिए एक नये और शानदार जीवन का निर्माण कर रहे हैं।

"मैं आज आपसे इतना ही कहना चाहता था। हमने अपनी यह नहर किस तरह खोदी और हमें जिन परिस्थितियों के अंतर्गत अपना यह काम करना पड़ा, इसके बारे में हमारे मुख्य इंजीनियर, साथी कोर्श आपको मेरी बनिस्बत कहीं अच्छी तरह से बता सकते हैं..."

अशांत रात

भोज-समारोह के सफलतापूर्वक ख़त्म हो जाने के बाद, काफ़ी रात गये मोरोज़ोव ने अपनी कार मंगवाई।

उपस्थित सभी लोगों की राय में भोज-समारोह बहुत ही सफल रहा था। कीर्श ने बड़ा ही मज़ेदार भाषण दिया। मर्री ने भी ख़ासा अच्छा सोवियत छाप भाषण दिया। नौ बजते-बजते थके हुए अतिथियों ने स्वयं ही यह प्रस्ताव किया कि दूसरे सैक्शनों का निरीक्षण अगले दिन के लिए स्थगित कर दिया जाये। कीर्श आख़िर तक नहीं रुक पाया और कत्ता-ताग़ चला गया। मेज़बान की भूमिका को निबाहते हुए मोरोज़ोव तब तक वहां से नहीं हिला कि जब तक उसने आख़िरी अतिथि को भी सोने के लिए नहीं पहुंचा दिया। आख़िर, अगली सुबह के लिए सभी आवश्यक आदेश दे देने के बाद वह प्रतीक्षारत कार में जा चढ़ा और ड्राइवर को पूरी रफ़्तार के साथ कत्ता-ताग़ चलने का आदेश दिया।

कत्ता-ताग़ पहुंचने के पहले ही कार ठप हो गई—सड़क जलमग्न जो थी। आगे पैदल जाना पड़ा। मोरोज़ोव ने जेबी टॉर्च निकाली और पानी में उतर गया। कोई डेढ़ किलोमीटर पानी में छपछप करते जाने के बाद आख़िर सूखी सड़क मिल गई और वह सीधा सर्चलाइटों की रोशनी की तरफ़ चल दिया। बिजली की रोशनी की पनीली चमक में उसे गैंतियां लिये लोग दिखाई दिये, जो फरसों जैसी लग रही थीं। लोग पानी के गड़गड़ाते प्रपातों में छलांगें लगाते, गीली पिलपिली मिट्टी में घुटने-घुटने तक धंसते, फिर निकलते हुए आगे लपकते चले जा रहे थे। मानव-प्रवाह में बहता हुआ मोरोज़ोव अटकल से भागने लगा। मुंह से मुंह को होते हुए उलझे हुए आदेश उसके कानों में पहुंच रहे थे :

"ख़बरदार! ख़बरदार!"

"क्यों?"

"एक्स्केवेटर आ रहे हैं!" चिपटे हुए पहियोंवाले कैटरपिलरों पर हास्यास्पद ढंग से लड़खड़ाते हुए एक के पीछे एक दो एक्स्केवेटर गरजते घनघनाते चले आ रहे थे।

"होशियार!"

"'अग्रणी' सामूहिक फ़ार्म की टुकड़ीवालो! एक सौ चौरानवेवीं चौकी पर! एक्स्केवेटरों के लिए रास्ता बनाओ!"

मशीनों को पीछे छोड़ती लोगों की एक बाढ़-सी नहर के अर्ध-ध्वस्त किनारे पर जा चढ़ी। उनकी गैंतियां बंधी हुई रफ़्तार से मिट्टी पर गिरने लगीं।

मोरोज़ोव एक टीले पर चढ़ा और सीधा ऊर्ताबायेव के सामने जा पहुंचा।

"क्या ख़बर है?"

"एक्स्केवेटर पहुंच गये हैं, साथी प्रमुख!" ऊर्ताबायेव ने आधिकारिक ढंग से रिपोर्ट दी।

ऊर्ताबायेव के पास हरकारे लगातार विभिन्न स्थानों की रिपोर्टें ला रहे थे और संक्षिप्त आदेश ले जा रहे थे।

"काम बढ़िया कर रहा है! क़ायदे से और बिना घबराये," मोरोज़ोव ने मन में कहा।

"संचालन संभाल रहे हैं? तो फिर मैं बांध पर जाकर देखता हूं कि उसे मज़बूत बनाने का काम किस तरह चल रहा है," ऊर्ताबायेव ने सुझाव दिया।

"नहीं, मैं क्यों हाथ में ले लूं? आपने काम को अच्छी तरह से संगठित कर लिया है, आप ही अंत तक संचालन कीजिये।"

"जैसा आप चाहें।"

"बांध पर कौन है?"

"रियूमिन।"

"ठीक है। यह और बताइये – नुक़सान कितना हुआ है?"

"सामूहिक फ़ार्म के एक गांव में पानी आ गया है।"

"और वहां के निवासी?"

"लोग भू-स्खलन के कुछ घंटे पहले ही वहां से चले गये थे। दोनों क़िर्गिज़ों के सामूहिक फ़ार्म हैं। बाक़ी सब मौक़े पर ही मौजूद हैं – कुदालें लेकर हमारी मदद करने के लिये आ गये हैं।"

"अच्छी बात है। बांध को मज़बूत करने का सामान तो नहीं बहा?"

"कुछ बह गया, मगर जो बाक़ी है, वह काफ़ी है।"

...एक सौ सत्तानवेवीं चौकी पर बढ़ई क्लीमेंती के निर्देशन में मज़दूरों का एक दल बांध के उघड़े हुए कंकाल पर मिट्टी लगा रहा था। मोरोज़ोव ने फावड़ा उठाया और उसे मिट्टी में घुसा दिया। उसकी टांग घुटने तक पिलपिली मिट्टी में धंस गई। उसने फावड़े को खींचा और हर चोट के साथ मिट्टी के बड़े-बड़े लोंदे निकाल-निकालकर उन्हें बांध की दरार पर लगे नरकुलों पर थोपने लगा। पानी के ज़ोर से छिटककर मिट्टी उसके मुंह पर आने लगी। वह उसे हाथों से दबाये रखने की कोशिश करता, गैंती से

उसे ठोकता और नीचे से लाये मिट्टी के नये-नये लोंदे उठाकर उस पर डालता जाता। उसके क्षत और लहूलुहान हाथ जैसे फावड़े के दस्ते से चिपक गये थे। पैरों के नीचे की ज़मीन दबी हुई नस की तरह फड़क रही थी। एक उन्माद में आकर वह उसे पैरों से दबाने लगा। किसीने उसे एक तरफ़ घसीटकर किनारे की ढाल के नीचे खींच लिया। मोरोज़ोव जिस ज़मीन को पैरों से कुचल रहा था, वह फूल गई और बोतल की डाट की तरह फड़ाक से फूट पड़ी। धड़धड़ाता हुआ पानी नीचे आने लगा।

"भागो! मदद बुलाओ! बांध बहा जा रहा है!" पानी की गर्जना के ऊपर क्लीमेंती दूसरी तरफ़ से चिल्लाया।

मोरोज़ोव ने अपना फावड़ा फेंक दिया और उस तरफ़ भागा, जिधर से लोगों की आवाज़ें आ रही थीं। दो सौ क़दम आगे पहुंचकर वह तरह-तरह की छायाओं के एक हजूम में आ घुसा। उनके बीच में एक घोड़ा-गाड़ी पर खड़ा ऊर्ताबायेव ताजिक में चिल्लाकर कुछ कह रहा था। मोरोज़ोव भीड़ को धकेलता हुआ आगे गया और उसने ऊर्ताबायेव का हाथ खींचा।

"आदमी चाहिए! आदमी चाहिए! बांध बहा जा रहा है!"

ऊर्ताबायेव ने उसके कंधे को थाम लिया, "कितने? सौ? दो सौ? ले जाओ! सामूहिक कृषक आ गये हैं! 'लाल अक्तूबर' और 'लाल हलवाहा' के किसान! शाबाश, मोरोज़ोव! और आ रहे हैं! सभी को ले जाओ!"

"सुनो, ऊर्ताबायेव! पानी फिर नहर में बहने लगा है। पानी बह रहा है! नहर-मुख टेलीफ़ोन करो!"

"टेलीफ़ोन ख़राब है।"

"तो किसीको वहां भेजना चाहिए।"

"क्लार्क गया हुआ है। उसे गये एक घंटा हो चुका है। वहां एक स्लूस कपाट में कोई मामूली सी ख़राबी आई हुई है। सब ठीक हो जायेगा..."

मोरोज़ोव के जाने के दो घंटे बाद, जब सभी मेहमान गहरी नींद में पड़े हुए थे, इंजीनियर मर्री ने गराज से एक कार मंगवाई और ड्राइवर के साथवाली सीट पर बैठकर उसे कत्ता-ताग़ चलने के लिए कहा।

लेकिन कत्ता-ताग़ पहुंचने के पहले ही उसने किसी कारण अपना इरादा बदल दिया और ड्राइवर को घाट की सड़क पर मुड़ने का आदेश दिया।

वे बड़ी तेज़ी से जा रहे थे। ज़रा ही देर में दाहिनी तरफ़ तीसरे सैक्शन की बत्तियां नज़र आने लगीं। चौराहे पर ड्राइवर दाईं तरफ़ मुड़ गया।

"बस्ती क्यों?" मर्री ने चक्के पर हाथ रखते हुए टूटी-फूटी रूसी में कहा। "मैंने घाट चलने के लिए कहा था।"

ड्राइवर ने स्पीडोमीटर की तरफ़ इशारा किया:

"पेट्रोल नहीं है, बस्ती में ले लेंगे।"

मर्री ने अपना हाथ हटा लिया। कार अपनी रफ़्तार बढ़ाती उड़ती चली गई। उन्होंने तेज़ी से बस्ती में प्रवेश किया, पेट्रोल स्टेशन के सामने से गुज़रे और बाईं ओर मुड़ गये।

"वह रहा पेट्रोल!" मर्री ने पीछे छूटे पंप की तरफ़ इशारा किया।

ड्राइवर ने अपना सिर हिला दिया। कार तेज़ी से दायें मुड़ गई।

"क्या कर रहे हो!" मर्री ने चक्के को पकड़ लिया।

वे तेज़ी से एक बाड़दार अहाते में जा घुसे। ड्राइवर ने मर्री के हाथ को अलग धकेल दिया और संकरे फाटक में पूरी चाल से प्रवेश करके अहाते के बीचोंबीच पहुंचकर अचानक ब्रेक लगा दिये।

हरी टोपियां पहने सैनिकों की भीड़ ने कार को घेर लिया।

"यह सब क्या है?" अपनी सीट पर से उछलते हुए मर्री ने पूछा...

हमला

घोड़े सरपट भागे चले जा रहे थे। उनके सामने की हवा कपड़े के चिरने की आवाज़ के साथ फटती चली जा रही थी। कोम्सोमोली गश्ती दस्ता मुख्य सैक्शन की बत्तियों के पास पहुंच रहा था। नासिरुद्दीनोव ने रास को झटका और घोड़े को दुलकी चाल पर छोड़ दिया। छायाओं को अपनी आगे की बत्तियों की लंबी-लंबी झाड़ुओं से बुहारती एक कार सड़क पर चली आ रही थी।

"रुको! कौन है?"

कार ने ब्रेक लगाये। कोम्सोमोलियों की तरफ़ पिस्तौलों की तीन नालें मुड़ गईं।

"कौन, साथी क्लार्क?"

पिस्तौलों की नालें शांति के साथ जेबों में डूब गईं।

"अरे, तुम हो, शैतान कहीं के! और हम तो समझे कि बासमची हैं!" ड्राइवर खिलखिलाकर हंस पड़ा। "अंधेरा इतना है कि हाथ को हाथ नहीं सुझाई देता। मैं तो यही सोच रहा था–रोकूं या नहीं?"

"तुम कहां जा रहे हो?"

"नहर-मुख।"

"साथी क्लार्क?"

"हां। यहां क्या कुछ गड़बड़ी है?"

"हां, पूरी तरह से शांति तो नहीं है," नासिरुद्दीनोव ने काठी पर से झुकते हुए कहा। "दूसरे सैक्शन से बीस किलोमीटर दूर कोई चालीस लोगों का एक गिरोह घुस आया है। अगर वे दायें नहीं मुड़ते, तो वे सीधे वख़्श की तरफ़ जायेंगे। क़ूरग़ान में आगाही करना और नहर-मुख पर गारद को मज़बूत करना ज़रूरी है... लेकिन आप नहर-मुख किसलिए जा रहे हैं?"

"गालत्सेव कहता है कि जब पानी को बंद किया गया था, तब पता नहीं कैसे, पांचवें स्लूस क़पाट को कुछ नुक़सान पहुंच गया। मुझे उसे देखना है। कत्ता-ताग़ में बांध के ठीक होते ही हमें पानी फिर खोलना होगा।"

कार चली गई। तीनों सवार उसके पीछे-पीछे तेज़ी से चल दिये।

बस्ती मुरदों के निवास जैसी लग रही थी। निर्जन चौक में एकाकी बत्ती जल रही थी। ख़ाली बारकों में रात बसेरा ले रही थी।

"सब लोग भला कहां चले गये?" नासिरुद्दीनोव ने चारों तरफ़ देखते हुए अचरज के साथ कहा।

उरूनोव ने घोड़े को कोड़ा लगाया।

"कुछ मज़दूर नहर के उद्घाटन के पहले ही चले गये थे। एक छोटी सी गारद के अलावा यहां कोई नहीं रहा था।"

वे फ़ोरमैन के दफ़्तर के सामने पहुंचे। नासिरुद्दीनोव घोड़े पर से उतरकर बोला:

"यारो, तुम आगे जाकर गारद को आगाह कर दो। संतरी खड़े कर दें और अपनी रायफ़लें तैयार रखें। मैं क़ूरग़ान टेलीफ़ोन करके ख़बर कर देता हूं।"

बत्ती जलाकर वह टेलीफ़ोन के पास गया। उसने हत्थे को कई बार घुमाया, मगर एक्सचेंज से कोई जवाब नहीं मिला।

"उफ़, ये टेलीफ़ोन–भाड़ में जायें सब! जब ज़रूरत हो, तब कभी काम नहीं करते!"

उसने हत्थे को फिर घुमाया। कोई जवाब नहीं मिला।

"काम नहीं कर रहा है। क्या बात है?"

खिड़की में होकर कहीं पास ही से गोली चलने की आवाज़ आई। एक, दो, फिर दो और। नासिरुद्दीनोव लपककर बाहर आया और उछलकर घोड़े पर सवार हो गया। उसने अपनी रायफ़ल निकाली, उसका बोल्ट चढ़ाया और घोड़े को एड़ लगा सरपट उसी तरफ़ चल दिया, जिधर से टीन की छत पर वर्षा की बूंदों की पटपट की तरह से लगातार गोलियों की आवाज़ आ रही थी।

गली में से ज़ुलैनोव का घोड़ा उसीकी तरफ़ सरपट दौड़ता हुआ आ रहा था। उसके पीछे-पीछे नंगे सिर एक अज्ञात सवार था, तलवार के सधे हुए हाथ से उसका चेहरा तरबूज़ की तरह से चिरा हुआ था। सवार के पीछे अपने सिरों के ऊपर नंगी तलवारों को नचाते, शोर मचाते घोड़ों पर सवार बासमचियों की एक भीड़ लपकी आ रही थी। एक के बाद एक करके दो गोलियां नासिरुद्दीनोव को छुए बिना बराबर से सनसनाती हुई निकल गईं। उसका घोड़ा अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो गया और एक तरफ़ अंधाधुंध भागने लगा। नासिरुद्दीनोव ने अपने ख़ाली हाथ से रास को झटका, मगर वह घोड़े को रोक न पाया। दहशत के मारे फुफकारता घोड़ा सिर को पीछे फेंक पूरी रफ़्तार से भागने लगा। पीछे से प्रतिध्वनि की तरह से टापों की आवाज़ें आ रही थीं। उसके बराबर से ज़ुलैनोव को अपनी काठी पर डाले उरूनोव उसके घुटने से रगड़ खाता हुआ सरपट निकल गया।

"क़ूरग़ान चलो! क़ूरग़ान चलो!" बराबर से निकलते हुए उरूनोव चिल्लाया। "तार कटे हुए हैं!"

धीरे-धीरे करीम ने अपने घोड़े पर क़ाबू पा लिया और उसे दुलकी पर भगाने लगा। बस्ती से शोर और घोड़ों की टापों की आवाज़ अब भी आ रही थी, मगर अब गोलियां नहीं चल रही थीं।

नासिरुद्दीनोव ने अपने अस्तव्यस्त विचारों को इकट्ठा करने की कोशिश की:

"ग़ारद का निश्चय ही तलवारों से सफ़ाया कर दिया गया होगा, नहीं तो हमें गोलियों की आवाज़ सुनाई दे जाती। फिर वहां आदमी ही कितने रहे होंगे? यहां हमले की किसीको भी आशा नहीं थी। उफ़-उफ़! काश कि हम दस मिनट पहले पहुंच गये होते! उनके घोड़े हमारे घोड़ों से अच्छे

साबित हुए। फ़ौरन क़ूरग़ान पहुंचकर फ़ौजी दस्ता भिजवाना चाहिए। लेकिन वहां – नहर-मुख पर – कौन रह गया? उफ़, क्लार्क! आय-हाय-हाय!"

नासिरुद्दीनोव ने यंत्रवत घोड़े को रोक लिया।

"लेकिन मेरा इससे क्या? मैं क्या उसकी आया हूं? वह भला यहां आया ही क्यों? वहां मेहमानों के साथ रहता... फिर भी, बात अच्छी नहीं है – मार डालेंगे वे उसे..."

"वापस जाना चाहिए," उसने ज़ोर से कुछ अपने से, कुछ घोड़े से कहा। "न जाना नीचता होगी।"

उसने घोड़े को मोड़ा और धीमी चाल से बस्ती की तरफ़ चल दिया। घोड़ा अनिच्छापूर्वक चल रहा था। उसने उसे कसकर एड़ लगाई। उसके मन में कोई अज्ञात आवाज़ विरोध कर रही थी और चीख़-चीख़कर कह रही थी कि उसे नहीं जाना चाहिए, लेकिन करीम जानता था कि जाने के अलावा और कोई चारा नहीं है।

मैकेनिकल वर्कशॉप पहुंचकर वह उतरा, घोड़े को बाड़ से बांध दिया और दीवार के साथ-साथ पैदल ही चल दिया। अचानक उसे एक कार के इंजन की घरघराहट और गोलियों के फिर चलने की आवाज़ सुन पड़ी। कार की बत्तियों की चमक ने उसे चौंधियाकर अंधेरे के बाहर धकेल दिया। क्लार्क की कार उसे छूती हुई बराबर से तेज़ी से निकल गई, कोने पर पहुंचकर एकदम मुड़ी और हवा की चाल से स्तेपी में ग़ायब हो गई। करीम दीवार से चिपका खड़ा रह गया। रायफ़ल के कुंदे की एक अचानक चोट से वह लड़खड़ा गया और मुंह के बल धूल में जा गिरा। उसे दबोचकर पैरों पर खड़ा कर दिया गया। अपनी बांहों के मरोड़े जाने पर वह दर्द से तड़प उठा, होंठों पर उसने पिस्तौल की ठंडी नाल के स्पर्श का अनुभव किया और अपनी आंखें भींच कर लीं। लेकिन गोली नहीं चली।

"मुसलमान है," किसीने उसके कान के पास ताजिक में कहा। "रुको, मत हाथ लगाओ इसे! यह हमें दिखा देगा कि पानी कैसे छोड़ा जाये।"

पीछे से रायफ़ल के कुंदे से कोंचते हुए वे उसे बारकों के बराबरवाली सड़क पर घसीटते हुए ले जाने लगे। वह समझ गया कि उसे नहर-मुख की तरफ़ ले जाया जा रहा है।

नहर-मुख पर अफ़ग़ान पगड़ियां बांधे कोई बीसेक हथियारबंद दढ़ियल आदमी खड़े थे। इशानी भूरा चोग़ा पहने एक काना आदमी पास आया।

"ताजिक हो या उज़्बेक?"

"ताजिक," नासिरुद्दीनोव ने कहा। देखते ही वह पहचान गया कि यह काना आदमी ख़्वाजायारोव है।

"पानी छोड़ने की चाबियां कहां हैं?" इशान ने ताजिक में पूछा।

नासिरुद्दीनोव ख़ामोशी के साथ काने की तरफ़ देखता रहा।

"पूछते हैं, तो जवाब दे, सूअर! मैं अभी तेरी खाल उधेड़ दूंगा! फ़ौरन जवाब दे! चाबियां कहां हैं?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"हां!" इशान ने अपने आसपास नज़र डाली।

दसेक हाथ नासिरुद्दीनोव की तरफ़ बढ़े और उन्होंने उसकी कमीज़ को फाड़ दिया।

"इशानसाहब!" एक जवान बासमची ने काने के पास आकर कहा। "हमें चाबियों की ज़रूरत ही क्या है? हम तालों को अपनी रायफ़लों के कुंदों से तोड़ डालेंगे।"

नासिरुद्दीनोव घबराकर घूम गया। नियंत्रण पुल पर कई बासमची नियंत्रण चक्कों से भिड़े हुए तालों को अपनी तलवारों की मूठों से तोड़ने की कोशिश कर रहे थे।

"अगर ताले टूट गये, तो कोई गधा भी स्लूस कपाटों को उठा सकता है। तब वे आधे घंटे के भीतर नहर में पानी छोड़ देंगे और सारे कत्ता-ताग़ को जलमग्न कर देंगे," सोचकर नासिरुद्दीनोव सिहर उठा।

"ताले इस्पात के हैं–उन्हें तोड़ना कोई बायें हाथ का खेल नहीं," इशान नाराज़ी से बड़बड़ाया। "अरे, ऐ, सुनो! ज़रा इसकी पीठ तो चीर दो!"

नासिरुद्दीनोव के मुंह से एक छोटी सी चीख़ निकल गई। छुरे की नोक उसकी गरदन में चुभी और डंक-सा मारती हुई पूरी कमर पर दौड़ गई।

"चाबियां कहां हैं?"

"सरदार!" बड़ी मुश्किल से अपने दांत खोलकर नासिरुद्दीनोव ने कहा। "बेकार वक़्त बरबाद मत करो। ताले तोड़ना बेफ़ायदा है। इन चक्कों से

फाटक नहीं उठाये जा सकते। ये मशीनें तो पानी को बस, बंद ही करती हैं। पानी छोड़ने के लिए और मशीनें हैं—दूसरी तरफ़, नीचे जाकर।"

"नीचे कहां?" काने ने उसकी तरफ़ अविश्वासपूर्वक देखा।

"पुल पार करके नीचे की तरफ़। मेरे हाथ खोल दो, मैं रास्ता दिखा सकता हूं।"

"चलो!"

नासिरुद्दीनोव ने पुल को पार करना शुरू किया। वह लंगड़ाने का दिखावा करते हुए अपनी टांग को बड़ी तकलीफ़ के साथ घसीटता-घसीटता धीरे-धीरे चल रहा था। वह अच्छी तरह से जानता था कि नीचे कोई मशीन नहीं है। हद से हद वह पांच, बहुत हुआ, तो दस मिनट का समय बचा पायेगा। वह मन ही मन आशा कर रहा था कि रास्ते में शायद बच पाने का कोई अप्रत्याशित बहाना सूझ जाये, लेकिन उसके दिमाग़ में कोई तरकीब नहीं आ पा रही थी। वहां पहुंचते-पहुंचते और तलाश करते-करते दस मिनट और गुज़र जायेंगे। फिर वे ताले तोड़ना शुरू करेंगे—इसमें भी दस मिनट लग ही जायेंगे—कम नहीं। अगर ताले टूट गये, तो स्लूस कपाटों को उठाने में बीस से पचीस मिनट तक लग जायेंगे। तब तक शायद क़ूरग़ान से मदद आ पहुंचे।

उसके बायें हाथ पर, नीचे, वख़्श गरजती हुई बहे जा रही थी।

"अगर मैं इस दढ़ियल को अलग धकेल दूं और नीचे कूद जाऊं, तो उथले पानी में जाकर निकल सकता हूं। मैं अच्छा तैराक हूं। आरपार तैर जाया करता था। गोली तो ये ज़रूर चलायेंगे, लेकिन अंधेरा है, मुझ पर निशाना न लगा पायेंगे... लेकिन तब वे सीधे ताले तोड़ने के लिए चले जायेंगे। न, यह नहीं होने दिया जा सकता। ताले तोड़ने से उन्हें किसी भी क़ीमत पर रोकना चाहिए। इन्हें जिधर भी ले जा सकूं, ले जाना चाहिए... मैं और भी धीरे चलने की कोशिश करता हूं..."

"सो तो नहीं गया? मैं तुझे अच्छी तरह से चलना सिखा दूंगा!"

छुरे की नोक एक बार फिर उसकी पीठ पर दौड़ गई।

"इससे ज्यादा तेज़ मैं नहीं चल सकता। मेरे पैर में चोट लगी हुई है। छुरा चलाओगे, तो मैं बिलकुल ही ढेर हो जाऊंगा—फिर कहीं भी नहीं जा पाऊंगा।"

"उठाकर ले चलो इसे!"

उसके सिर के ऊपर तारे झिलमिला रहे थे। पास ही, वख़्श के दूसरे तट से कार के हॉर्न की आवाज़ आई। कार एक महाकाय गुबरैले की तरह अपनी आगे की रोशनियों की दो दमकती मूंछों को फड़काती हुई ढाल पर चल रही थी।

"और यहां मैं, बहुत करके, आख़िरी बार चल रहा हूं... उस कार में बैठे लोग एक घंटे के भीतर क़ूरग़ान पहुंच जायेंगे। वे इस लालटेन को देख सकते होंगे। और इस बात को वे नहीं जानते कि इसी लालटेन के नीचे इस वक़्त एक आदमी को मारा जा रहा है। चिल्लाऊं? मेरी आवाज़ कभी वख़्श के पार नहीं पहुंच पायेगी। वे नहीं सुन पायेंगे... हम पुल के छोर पर पहुंच गये हैं। अब नीचे..."

"इधर से। मुझे आगे जाने दो।"

"लेकिन मशीनें कहां हैं?"

"और नीचे।"

"अरे, यह हमारी हंसी उड़ा रहा है और हम बेवकूफ़ों की तरह इसके पीछे-पीछे चले जा रहे हैं!"

"कहां हैं मशीनें?!"

वह नीचे पहुंच चुका था और स्लूस कपाटों के बिलकुल सामने खड़ा हुआ था। अब वह उन्हें और आगे नहीं ले जा सकता था। नासिरुद्दीनोव ने कपाटों की तरफ़ इशारा किया:

"यहीं। उठाना होगा इन्हें।"

"कैसे उठाना होगा?"

"हाथों से।"

"क्या कर रहा है तू? मज़ाक़?"

शिकंजे जैसी उंगलियों ने नासिरुद्दीनोव के कान को जकड़ लिया। एक असहनीय पीड़ा की लहर उसके सिर तक दौड़ गई। उसके गाल पर कोई गरम-गरम और चिपचिपी सी चीज़ आ गिरी।

"हां! इसके साथ इसका दूसरा कान भी काट दो!"

उन्होंने पकड़कर उसे उठा लिया और घसीटते हुए पुल पर वापस ले आये। वह कुछ भी नहीं देख पा रहा था। उसकी आंखों के सामने बड़े-बड़े लाल-लाल घेरे घूम रहे थे।

"इशानसाहब! इशानसाहब! यह रहा एक और! इसे मालूम है!"

नासिरुद्दीनोव ने आंखें खोलीं। सामने ही, अपने बहुत पास उसने दो आदमियों के सहारे पर टिके एक आदमी को देखा। उसकी नाक नहीं थी, उसके कुचले हुए मुंह से बच रहा अकेला दांत निकला हुआ था। रूई के रोयें जैसा कुछ उसके सिर पर हास्यास्पद ढंग से हिल रहा था।

"चाबियां दफ़्तर में हैं। मुझे ले चलो, मैं दिखा दूंगा," अपने दंतहीन, लहूलुहान मुंह से सफ़ेद बालोंवाला बुदबुदाया।

"गालत्सेव! गालत्सेव!" नासिरुद्दीनोव फटी हुई आवाज़ में चिल्लाया। "मत दिखाना!"

गालत्सेव ने सफ़ेद बरौनियों से घिरी अपनी सताई हुई लाल-लाल आंखें करीम की तरफ़ उठा दीं।

"नहीं... सहा जाता... नहीं सहा जाता..."

वे उसे घसीटकर ले जाने लगे।

"चलो, बताओ!"

"गालत्सेव! गालत्सेव!" नासिरुद्दीनोव उसके पीछे चिल्लाया। कोई भारी-सी और अघानेवाली चीज़ उसके गले में अटकी जा रही थी। भयंकर पीड़ा से तड़पता वह मुंह के बल ठंडे कंक्रीट पर गिर पड़ा और वहीं पड़ा रह गया।

अपने दोनों हाथों को कोहनियों पर टिकाये इशान पुल पर खड़ा इंतज़ार कर रहा था। जवानों की पूरी कोशिशों के बावजूद ताले न छुरों से टूट रहे थे, न रायफ़लों के कुंदों से।

दस मिनट बाद दो जवान गालत्सेव को घसीटते हुए वापस आ गये। एक जवान के हाथ में चाबियों का गुच्छा छनक रहा था। पहले ही नियंत्रण चक्के पर जवानों ने गालत्सेव को छोड़ दिया और ताला खोलने में लग गये।

ज़मीन पर पड़ा गालत्सेव पागल-सी आंखों से उनकी तरफ़ देखे जा रहा था। उसने अपने आपको कोहनी के बल उठाया और किसी सख़्त और गोल सी चीज़ से टकरा गया। नासिरुद्दीनोव का सिर था वह—वीभत्स, एकदम गोल, नाक-कान कटे हुए। गालत्सेव ने सिहरकर हाथ पीछे खींच लिया। जवान अभी तक सही चाबी नहीं पा सका था और ताले से ही उलझा हुआ था।

गालत्सेव किसी तरह अपने घुटनों पर खड़ा हो गया।

"लाओ, तुम्हारे वस की बात नहीं है। मैं खोले देता हूं," चाबी के लिए हाथ बढ़ाते हुए उसने फटी हुई आवाज़ में कहा।

कोमारेंको पहेली सुलझाता है

...कोमारेंको के कमरे में एक टाइपराइटर खटखटा रहा था। सीमांत-प्रहरियों की वरदी पहने मुंहासेदार चेहरेवाला एक नौजवान अनभ्यस्त उंगलियों से अधमिटे अक्षरों की छापों को बड़ी मेहनत के साथ काग़ज़ पर उतार रहा था। खिड़की के बाहर दिन निकलनेवाला था।

कोमारेंको ने एक फ़ाइल से घनी लिखावट से भरे कई काग़ज़ निकाले और कमरे में अपने अवरुद्ध भ्रमण को फिर शुरू कर दिया।

"हो गया? कुछ काग़ज़ तैयार रखिये, जिससे बाद में न रुकना पड़े। सुबह सात बजे तक इस रिपोर्ट को टाइप करके भेज देना है। कहां तक पहुंचे थे हम? हां-हां, फ़लांगों के क़िस्से तक। ज़रा आख़िरी वाक्य एक बार फिर पढ़कर सुना दीजिये।"

"सबसे पहले तो स्वयं इसी तथ्य ने कि अमरीकियों के ख़िलाफ़ धमकियों को पूरा करने के लिए मई दिवस को हत्या का कोई प्रयास नहीं किया गया और उसके बजाय उनके कमरों में फ़लांगाभरी माचिसें रख दी गईं, मुझे इस बात का क़ायल कर दिया कि इन गुमनाम पत्रों का लेखक किसी भी आतंकवादी लक्ष्य पर नहीं चल रहा है, बल्कि मात्र विदेशियों को डरा देना चाहता है, जिससे वे निर्माणस्थली को छोड़कर चले जायें..."

"ठीक है। अब लिखिये :

"दूसरे, इस घटना ने मुझे इस बात का पूरी तरह से क़ायल कर दिया कि गुमनाम पत्रों का लेखक कोई ताजिक नहीं, बल्कि असंदिग्ध रूप से यूरोपीय है। अपने किसी शत्रु से छुटकारा पाने की इच्छा रखनेवाला कोई भी ताजिक इस तरह के अद्भुत-अनूठे और नीम-'स्वदेशी' तरीक़ों का अवलंबन नहीं करेगा। स्थानीय आबादी में फ़लांगों को ख़तरनाक कीड़ा नहीं माना जाता है। ताजिक लोग मामूली बिच्छू से कहीं अधिक डरते हैं, जिसका डंक कई गुना ज़्यादा पीड़ादायी होता है। यह क़िस्सा ख़ुद यूरोपीयों का ही गढ़ा हुआ है कि फ़लांगों का डंक सांघातिक होता है। इसका स्रोत

बहुत करके galeodes araneoides की अस्पष्ट परिभाषा है, जो हमें रूसी ही नहीं, बल्कि विदेशी ज्ञानकोशों में भी देखने को मिलती है, जिनमें इस प्रश्न को खुला छोड़ दिया गया है कि फ़लांगा विषैली है या नहीं। तथ्य तथ्य ही है कि यहां आनेवाले सभी यूरोपीय – रूसी और ग़ैर-रूसी समान रूप से – फ़लांगों को तुर्कमानिस्तान के क़ाराकुर्त की ही तरह विषैला कीट समझते हैं और मध्य एशिया की उनकी सीमित कल्पना में बाघ के साथ-साथ फ़लांगा ताजिकिस्तान की अवियोज्य विशेषताओं में एक है। इसलिए जिस आदमी ने अमरीकियों के यहां माचिसों में रखकर फ़लांगें छोड़ीं, वह निस्संदेह यूरोपीय ही था और इसके अलावा वह ख़ासा सुशिक्षित और अच्छा मनोविज्ञानी था, जो इस बात को अच्छी तरह से समझ सकता था कि भोले-भाले नवागंतुक को डराकर भगाने के लिए कौनसे साधन सबसे कारगर साबित होंगे।

"दोनों नमूनों का आतशी कांच से परीक्षण करते समय मैंने एक बड़ी असामान्य चीज़ देखी – दोनों फ़लांगों में से एक प्रकटतः अभी हाल ही में कुचली गई थी, जबकि दूसरी को कुछ कुम्हला जाने का भी समय मिल चुका था। अमरीकियों के कथनानुसार, दोनों ही कीट उनके द्वारा केवल एक घंटा पहले ही कुचल गये थे। इससे यह कुछ विचित्र-सा अनुमान करना पड़ा कि एक अमरीकी ने जिस फ़लांगा को कुचला था, वह पहले से ही मरी हुई थी। प्राणिविज्ञान का विशेषज्ञ न होने के कारण और इस डर से कि कहीं मैं ग़लती न कर रहा होऊं, मैंने एक निकटवर्ती राजकीय फ़ार्म से विशेषज्ञ के नाते एक प्रकृतिविज्ञानी को बुलवाया, जिसने मेरे प्रेक्षणों की पूरी तरह से पुष्टि की। चूंकि इंजीनियर क्लार्क के कमरेवाली फ़लांगा उसकी अनुवादिका, कोम्सोमोली पोलोज़ोवा द्वारा मारी गयी थी, जबकि मर्री के कमरेवाली फ़लांगा को पोलोज़ोवा ने मरा हुआ ही पाया, इसलिए मैं यही अनुमान कर सकता था कि इंजीनियर मर्री ने ऐसी फ़लांगा को कुचला है, जो पहले से ही मरी हुई थी। प्रकटतः उसे निश्चय नहीं था कि उसका दंश पूरी तरह से हानिरहित है या नहीं और उसने ख़तरा न उठाना ही श्रेयस्कर समझा था।

"इसके आधार पर मेरे दिमाग़ में यह शक पैदा हो गया कि इस सारी चालाकी का प्रणेता स्वयं इंजीनियर मर्री ही है, उसीने अपने सहयोगी क्लार्क के यहां ज़िंदा फ़लांगा रखी थी और अपने घर में यह स्वांग उसने

इसी लिए रचा था कि उस पर बिलकुल भी संदेह न किया जा सके। अनुसंधान के दौरान मुझे पता चला कि मर्री वस्तुत: उस सुबह क्लार्क के कमरे में गया था और उसने उसकी मेज़ पर चुपके से एक माचिस रख दी होगी। तथ्यों की पूरी श्रृंखला की जांच के बाद मैं इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि पहले सभी धमकीभरे पत्र भी क्लार्क और बार्कर के कमरों में ठीक इसी तरीक़े से पहुंचे होंगे – और किसी तरीक़े से नहीं।

"इससे केवल एक ही निष्कर्ष निकल सकता था – इंजीनियर मर्री किसी अज्ञात कारण से निर्माणस्थली पर अपने अमरीकी सहयोगियों की उपस्थिति से किसी भी क़ीमत पर पिंड छुड़ाना चाहता है। बार्कर के मामले में वह बिना किसी ख़ास परेशानी के सफल हो गया, लेकिन क्लार्क के मामले में उसे प्रत्यक्षत: नाकामी का सामना करना पड़ा।

"मैंने इंजीनियर मर्री को सख़्त निगरानी में रखवा दिया, लेकिन घोड़े पर अकसर शिकार के लिए जाने के अलावा, जिससे वह आम तौर पर काफ़ी रात गये लौटा करता था, कोई संदेहास्पद बात देखने में नहीं आई। दूसरी घटना, जिसके कारण मैंने इंजीनियर मर्री के कार्यकलाप पर और भी ज्यादा सावधानी के साथ नज़र रखना शुरू किया, बहुचर्चित ऊर्तावायेव कांड था। जैसा कि ज्ञात है, ऊर्तावायेव के ऊपर जो पहला आरोप लगाया गया था, वह ब्यूसाइरस फ़र्म के प्रतिनिधि, इंजीनियर बार्कर, के विरोध के बावजूद मनमानी करके दसेक एक्स्केवेटरों को घाट से मुख्य सैक्शन तक उन्हें चलाकर ले जाने का था। चूंकि ऊर्तावायेव का दावा था कि उसने यह बार्कर की सहमति से किया है और बार्कर ख़ुद इस बीच अमरीका चला गया था, इसलिए ऊर्तावायेव के विरुद्ध एकमात्र गवाह इंजीनियर मर्री ही था। यही वह तथ्य था, जिसके कारण मैंने ऊर्तावायेव के पूरे मामले के प्रति बहुत ही सतर्कतापूर्वक दृष्टिकोण अपनाया था।

"बाद में, इस आरोप के झूठे स्वरूप का पता चलने और ख़्वाजायारोव का परदाफ़ाश हो जाने के बाद मेरे सामने यह बात अकाट्य रूप से स्पष्ट हो गई कि ऊर्तावायेव पर लगाये गये एक्स्केवेटरों को अवैध रूप से चलाकर ले जाने के आरोप तथा अन्य आरोपों में प्रकट संबंध है। पहली बात तो यही है कि काम की प्रगति के साथ-साथ व्यवहार में देखा गया कि मैनेजमेंट को डराने के लिए बार्कर के नाम का उपयोग करते हुए इंजीनियर मर्री ने जैसा कहा था, एक्स्केवेटरों को काफ़ी दूर चलाकर ले जाने के नतीजे

वैसे विनाशकारी नहीं साबित हुए। दूसरे, एक्स्केवेटरों को चलाकर ले जाने के बजाय ट्रैक्टरों द्वारा ले जाने के बड़े ही खेदजनक परिणाम निकले। ट्रैक्टर-यात्रा के दौरान अधिकांश एक्स्केवेटर टूट गये और उनके कई आवश्यक पुरज़े खो गये। फिर भी इंजीनियर मर्री पर ऊर्तावायेव के ख़िलाफ़ झूठे आरोप लगाने के लिए मुक़दमा चलाना असंभव सिद्ध हुआ। जो अकेला आदमी—इंजीनियर वार्कर—इस काम को कर सकता था, वह अमरीका में था और उसने निर्माणस्थली से पूछे गये किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। मेरा अनुमान है कि मर्री ने उसे पत्र लिखकर ख़बरदार कर दिया था। संभव है कि उसने वार्कर को यह लिखकर डरा दिया हो कि ऊर्तावायेव के प्रयोग का नतीजा बड़ा भयानक निकला है और फ़र्म के साथ पेचीदगियों और दुष्परिणामों से घबराकर वार्कर ने चुप्पी लगा जाना ही उचित समझा।

"हाथ में कोई प्रत्यक्ष प्रमाण के न होने पर भी मेरा संदेह था कि इंजीनियर मर्री यहां हमारे निर्माण-कार्य के काम को भंग करने के निश्चित लक्ष्य के साथ आया है। इस लक्ष्य से :

"क) इंजीनियर मर्री ने वार्कर को एक्स्केवेटरों के संयोजन के काम को ख़त्म करने के पहले ही निर्माणस्थली से भगा देने की कोशिश की। मर्री ने प्रकटतः सोचा था कि निर्माणस्थली पर किसी भी एक्स्केवेटर विशेषज्ञ की अनुपस्थिति में जटिल अमरीकी मशीनों के संयोजन का काम या तो तब तक के लिए स्थगित कर दिया जायेगा, जब तक फ़र्म का नया प्रतिनिधि न आ जाये (जिसके कारण निर्माण-कार्य कई महीने तक रुका पड़ा रहता), या स्थानीय इंजीनियरों द्वारा किया जायेगा और बहुत करके सफल नहीं होगा (जिसके कारण काम में विलंब होने के अलावा ब्यूसाइरस फ़र्म के साथ झगड़ा भी होता)।

"ख) इंजीनियर मर्री ने इंजीनियर क्लार्क को निर्माण-कार्य से भगाने की कोशिश की। एक ओर तो इससे इंजीनियरी स्टाफ़ कमजोर हो जाता और अन्य विदेशी विशेषज्ञों को बुलाना अधिक कठिन हो जाता, और, दूसरी ओर, मर्री को निर्माणस्थली पर एकमात्र विदेशी विशेषज्ञ होने के नाते काम की निर्बाध स्वतंत्रता मिल जाती।

"ग) इंजीनियर मर्री ने (प्रत्यक्षतः ख़्वाजायारोव के साथ मिलकर) श्रेष्ठतम स्थानीय कम्युनिस्ट इंजीनियरों में से एक, ऊर्तावायेव को लांछित

करने और निर्माण-कार्य से निकलवाने की (जिसमें वह केवल संयोगवश ही सफल नहीं हो पाया) और साथ ही सभी उपलब्ध ट्रैक्टरों तथा कई अन्य शक्तिशाली मशीनों में टूट-फूट करवाने की कोशिश की (जिसमें वह, अभाग्यवश, पूरी तरह से सफल हुआ)।

"इस तथ्य ने कि ऊर्तावायेव के मामले में मर्री और ख़्वाजायारोव निस्संदेह मिलकर काम कर रहे थे, इंजीनियर मर्री को अफ़ग़ानिस्तान के साथ जोड़नेवाले अज्ञात सूत्रों की ओर इंगित किया और मुझे यह अनुमान लगाने के लिए प्रेरित किया कि मर्री ब्रिटिश जासूसी सेवा से संबद्ध है।

"लंबी हिचकिचाहट के बाद, मामले की गंभीरता को पूरी तरह से अनुभव करते हुए, मैंने इंजीनियर मर्री की अनुपस्थिति में उसके मकान की तलाशी लेने का निश्चय किया। तलाशी के फलस्वरूप मैंने पाया कि मर्री के ट्रंक में एक गुप्त तला है, जिसमें काफ़ी रक़म है – ठीक कहें, तो सौ-सौ रूबल के नोटों में ७०,००० रूबल। एक सामान्य अमरीकी इंजीनियर के कब्ज़े में इतने अधिक धन का होना यद्यपि ख़ुद काफ़ी सबूत नहीं था, मगर इस बात का प्रमाण अवश्य था कि मेरा संदेह निराधार नहीं है।

"इंजीनियर मर्री के सामान में मेरा ध्यान ताशक़ंद नगर के एक पुराने नक़शे ने आकर्षित किया, जो १९१६ में प्रकाशित हुआ था। नक़शे का यह संस्करण हमारे देश में बहुत लंबे समय से नहीं बेचा जा रहा है। दस्तावेज़ी काग़ज़ों के अनुसार इंजीनियर मर्री ने भूतपूर्व रूस की सरहद के भीतर कभी कहीं पैर नहीं रखा था। लेकिन यह माना जा सकता था कि अगर वह हमारी क्रांति के समय स्वयं सचमुच ताशक़ंद नहीं गया था, तो उसे यह नक़शा किसी ऐसे व्यक्ति ने दे दिया होगा, जो उस समय वहां आया था।

"नक़शे की जांच करते समय मुझे उस पर मोस्कोव्स्काया मार्ग और समरक़ंद्स्काया मार्ग पर पेंसिल से दो अधमिटे काट के निशानों के अलावा और कोई निशान नज़र नहीं आये। इन निशानों को कोई ख़ास महत्व न देते हुए भी मैंने अपनी नोटबुक में एक रेखाचित्र बना लिया, जिसमें दोनों सड़कों की स्थिति दिखाई गई थी और उनके नाम लिख लिये।

"कुछ सप्ताह बाद, सरकारी काम पर ताशक़ंद जाने पर, मैंने चेका के अभिलेख-कार्यालय से उन सभी ब्रिटिश या अमरीकी नागरिकों की सूची

तैयार करके देने के लिए कहा, जो १६१६ से १६२० तक कभी भी ताशक़ंद में रहे थे। मेरा ख़याल था कि इस तरह से मैं मर्री की परिचित-मंडली का पता लगा लूंगा। इस सूची का—जिसमें अगर मैं ग़लती नहीं करता, तो अठारह लोगों के नाम थे—अध्ययन करते समय मैं कर्नल बेली के नाम पर आकर ठहर गया, जो १६१८ में अगस्त से लेकर नवंबर के महीने तक ताशक़ंद में तथाकथित ब्रिटिश मिशन के सदस्य की हैसियत से रहा था। कारण यह था कि परिस्थितियों के एक विचित्र संयोग से उपरोक्त कर्नल बेली के बारे में दी जानकारी में बताया गया था कि वह ताशक़ंद में पहले समरक़ंद्स्काया मार्ग पर होटल रेगीना में, और बाद में ४४, मोस्कोव्स्काया मार्ग पर रहता था। मैंने अपनी नोटबुक को देखकर इस बात की बड़ी आसानी से पुष्टि कर ली कि ये दोनों पते इंजीनियर मर्री के पास ताशक़ंद का जो नक़शा है, उसमें निशान लगे स्थानों से मेल खाते हैं।

"इससे दो निष्कर्ष निकाले जा सकते थे—या तो यह शुद्ध संयोग की बात है, या मर्री के ट्रंक में ताशक़ंद का जो नक़शा मिला था, वह पहले कर्नल बेली का था, जिसने अपने रहने की जगहों को याद रखने के लिए उस पर निशान लगा दिये थे। दूसरी हालत में यह नक़शा दो तरीक़ों से मर्री के क़ब्ज़े में आ सकता था—उसने उसे पुरानी किताबों की किसी दूकान में ख़रीदा हो या स्वयं कर्नल बेली ने उसे भेंट किया हो। किसी भी सूरत में इस बात की ज्यादा संभावना नहीं थी कि नक़शा उसे अमरीका में मिला हो। यही अधिक संभव था कि इंजीनियर मर्री उसे अपने साथ इंगलैंड से लाया हो।

"स्वाभाविक रूप से मैं कर्नल बेली की शिनाख़्त में दिलचस्पी लेने लगा और मैंने उसके ताशक़ंद प्रवास से संबंधित सारी सामग्री की जांच की। यह सामग्री अधिकांशतः तीन जगहों पर संग्रहीत है—चेका के १६१८ के अभिलेखों में, विदेशी मामलों की जन-कमिसारियत के ताशक़ंद कार्यालय में और क्रांति के इतिहास के मध्य एशियाई वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान में। इसके अलावा कर्नल बेली के बारे में कुछ मुद्रित साहित्य भी उपलब्ध है। काशग़र में भूतपूर्व ब्रिटिश कांसुल, एसर्टन ने अपनी पुस्तक 'मध्य एशिया में' (अंग्रेज़ी में प्रकाशित) में बेली मिशन का कुछ विस्तार के साथ वर्णन किया है। इस मिशन के एक सदस्य, कप्तान एल० बी० सी० ब्लैकर ने शाही भौगोलिक समाज की एक सभा में इसके बारे में रिपोर्ट पेश की थी।

स्वयं कर्नल बेली ने इसके बारे में 'जिग्रोग्राफ़िकल जरनल' में लिखा था। तथापि इस मिशन के सदस्यों के 'वैज्ञानिक' अनुसंधान कोई विशेष दिलचस्पी के नहीं हैं—ख़ासकर इसलिए कि स्वयं मिशन का चरित्र किसी भी प्रकार से वैज्ञानिक नहीं था। काशग़र स्थित कांसुल, एसर्टन ने इसके बारे में अपनी किताब में साफ़ लिखा है:

"यद्यपि मित्रराष्ट्रों के प्रति अनुकूल भाव रखनेवाले तत्वों को वास्तविक सैनिक सहायता देने का कोई इरादा नहीं था, फिर भी सूचना प्राप्त करने और सभी अनुकूल परिस्थितियों का लाभ उठाने के लिए आवश्यक सूत्र फैलाने के लिए एक छोटे से ब्रिटिश सैन्य संगठन की ज़रूरत थी। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने रूसी तुर्किस्तान में एक विशेष मिशन भेजने का निश्चय किया... मिशन का कार्यभार ब्रिटिश सरकार और सोवियत सत्ता में संपर्क स्थापित करना, अन्य प्रश्नों के साथ-साथ कपास के प्रश्न की जांच करना और सरकार को वर्तमान परिस्थिति के बारे में अवगत रखना ही था। हमें ताशक़ंद पहुंच जाना था।

"मिशन १० अगस्त, १९१८ को ताशक़ंद पहुंचा। इसमें कर्नल एफ़० एम० बेली तथा कप्तान एल० वी० सी० ब्लैकर थे। लेकिन न बेली और न ब्लैकर के पास अपने मिशन के आधिकारिक चरित्र की पुष्टि करनेवाला कोई परिचय-पत्र था। कुछ दिन बाद काशग़र में भूतपूर्व ब्रिटिश कांसुल, सर जॉर्ज मैकआर्टनी, जिसकी जगह एसर्टन ने ले ली थी, ताशक़ंद आया और उसने तुर्किस्तानी जनतंत्र की विदेशी मामलों की जन-कमिसारियत से कर्नल बेली और कप्तान ब्लैकर को आंग्ल-भारतीय सरकार के राजनयिक प्रतिनिधियों के रूप में परिचित करवाया।

"यह सब उस समय की बात है, जब ब्रिटिश फ़ौजें अर्ख़ांगेल्स्क और मूर्मान्स्क पर क़ब्ज़ा कर चुकी थीं और लाल सेना से ट्रांस-कास्पियाई मोर्चे पर लड़ रही थीं। ताशक़ंद में ब्रिटिश अभिकर्ताओं ने बड़े भोलेपन से कहा कि यह सब कोरी ग़लतफ़हमी है और तुर्किस्तान की सोवियत सरकार को ब्रिटिश साम्राज्य की मैत्रीपूर्ण भावनाओं का विश्वास दिलाया। इस बेली-कांड के दौरान वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की जो भूमिका रही,

वह असंदिग्ध रूप से दिखा देती है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अभिकर्ताओं के साथ सहयोग के बारे में उनके ख़ास विचार थे।

"ख़ीवा में अस्थायी सरकार की सेना के भूतपूर्व कमांडर और बाद में तुर्किस्तान के प्रतिक्रांतिकारी सैन्य संगठन के स्टाफ़ाध्यक्ष, बाद में जनरल दूतोव की सेना के स्टाफ़ाध्यक्ष मेजर-जनरल ज़ाइत्सेव ने, जो उसके साथ चीन भाग गया था, लेकिन १६२४ में अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति से क्षमा-याचना करके सोवियत संघ लौट आया था, इस मिशन के वास्तविक लक्ष्यों के बारे में और भी स्पष्ट बातें कही हैं। कर्नल बेली के मिशन के बारे में जनरल ज़ाइत्सेव ने लिखा है:

> "मिशन का वास्तविक लक्ष्य और उद्देश्य था – तुर्किस्तान में सोवियत सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह की तैयारी और संगठन करना, विद्रोही दस्तों को तुर्किस्तान के निकटतम ब्रिटिश अड्डों (मशहद, काशग़र, अफ़ग़ानिस्तान) से धन और हथियारों का प्रदाय करना। मिशन को इन कार्यभारों को पूरा करने के लिए व्यापक अधिकार और शक्तियां प्रदान की गई थीं... तुर्किस्तानी सैन्य संगठन तथा मुसलमान उलमा सहित सोवियत विरोधी संगठनों ने ब्रिटिश मिशन से संपर्क स्थापित करने में निस्संदेह कोई चूक नहीं की...

"इस मिशन की गतिविधियों के बारे में ब्रिटिश जासूसी सेवा के एजेंट, प्रतिक्रांतिकारी सैन्य संगठन में सक्रिय भाग लेनेवाले और ताशक़ंद में फ़्रेंच के भूतपूर्व अध्यापक, आई० कस्तान्ये ने पेरिस से फ़्रेंच में एर्नस्त लेरू द्वारा प्रकाशित अपनी पुस्तक 'बासमची' में ब्योरेवार जानकारी देते हुए लिखा है:

> "इस समर्थन से उत्साहित होकर ताशक़ंद में बोल्शेविक विरोधी संगठन ने ताशक़ंद के कई प्रभावशाली निवासियों से बातचीत शुरू की और, उनके ज़रिये, बासमची सरदारों से संपर्क स्थापित किया। इस वार्ता में, जो सितंबर, १९१८ में हुई थी, ब्रिटिश प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। यह बातचीत इन वचनों पर आधारित थी – १) बासमची दस्तों ने ताशक़ंद में बोल्शेविक

विरोधी संगठन के मातहत काम करने का वादा किया; २) संगठन ने वासमचियों को रसद का प्रदाय करने का ज़िम्मा लिया; ३) ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधियों ने बोल्शेविक विरोधी संगठन को धन, हथियार और गोला-बारूद प्रदान करने का ज़िम्मा लिया। एक संश्रय स्थापित हो गया। वासमची संगठनों तथा काशग़र में ब्रिटिश कांसुल, मि० एसर्टन, दोनों के साथ संपर्क स्थापित किये गये। इसी तरह से एजेंटों के माध्यम से साइबेरिया तथा ओरेनबुर्ग में श्वेत सेना के साथ भी इसी प्रकार के संपर्क स्थापित किये गये, जहां से एक पूर्वी राज्य-संघ स्थापित करने का प्रस्ताव प्राप्त हुआ, जिसमें तुर्किस्तान को भी शामिल होना था।

"ब्रिटिश मिशन किन-किन शर्तों पर ज़िम्मेदारियां लेने के लिए तैयार हुआ था, यह न्यायिक पूछताछ के दौरान पावेल स्तेपानोविच नज़ारोव ने बताया है, जो तुर्किस्तान में सोवियत सत्ता का तख़्ता पलटने के बाद प्रधान मंत्री के पद का उम्मीदवार था, और जो चेका द्वारा तुर्किस्तानी सैन्य संगठन का भंडाफोड़ किये जाने के साथ गिरफ़्तार कर लिया गया था:

"यह नवगठित राज्य – तुर्किस्तानी लोकतांत्रिक गणराज्य – वैसे ही पारस्परिक संबंधों के साथ इंगलैंड के अनन्य प्रभाव में रहनेवाला था – जैसे उसके अपने अफ़्रीकी अधिराज्यों, दक्षिण अफ़्रीकी गणराज्यों (ट्रांसवाल तथा ऑरेंज फ़्री स्टेट) के साथ हैं। इसमें हुए सारे ख़र्च की क्षतिपूर्ति के लिए तुर्किस्तानी लोकतांत्रिक गणराज्य ब्रिटिश सरकार को इलाक़े की खनिज संपदा के उपयोग के लिए अनेक रियायतें प्रदान करनेवाला था।

"नज़ारोव के कथनों की कस्तान्ये पूरी तरह से पुष्टि करता है:

"...सोवियत सत्ता का तख़्ता पलटने के बाद इंगलैंड के प्रत्यक्ष प्रभाव के अंतर्गत एक स्वायत्त गणराज्य स्थापित किया जाना था। इसके अलावा, सोवियत विरोधी संगठनों के नेताओं ने तुर्किस्तान को पचपन वर्ष के लिए ब्रिटिश संरक्षित प्रदेश बना देने का वचन दिया था।

"२८ सितंबर, १९१८ को मिशन के दो सदस्य, मैकग्रार्टनी ग्रौर ब्लैकर, काशग़ार वापस चले गये। ताशक़ंद में ग्रकेला बेली रह गया। बेली ताशक़ंद में १ नवंबर तक ग्रधसरकारी हैसियत से रहने में कामयाब हो गया। तुर्किस्तानी सैन्य संगठन का भंडाफोड़ होने के बाद चेका ने उसे षड्यंत्र भड़काने का दोषी ठहराया ग्रौर घर में नज़रबंद कर दिया। मास्को से यह ग्रादेश मंगवाने का निश्चय किया गया कि उसे क़ैद किया जाये या नहीं। मास्को से ग्रादेश ग्राया कि उसे तुरंत गिरफ़्तार कर लेना चाहिए, लेकिन तब तक कर्नल बेली ग़ायब हो चुका था। बेली फ़रग़ाना ग्रौर बाद में बुख़ारा, ग्रमीर-सैयद ग्रालिमखां के पास पहुंच गया, वहां से वह ग्रपने एजेंटों–श्वेत ग्रफ़सरों के ज़रिये तुर्किस्तान में प्रतिक्रांतिकारी ग्रांदोलन, विशेषकर ग्रोसिपोव विद्रोह, का निदेशन करता रहा।

"मैंने इन लंबे उद्धरणों को मात्र ऐतिहासिक जिज्ञासा के कारण ही नहीं उद्धृत किया है। सामग्री का ग्रध्ययन करते समय पहली पंक्तियों में ही मैंने ग्रनुभव कर लिया कि कर्नल बेली ग्रौर इंजीनियर मर्री में संबंध सिद्ध करना मर्री ग्रौर ब्रिटिश जासूसी सेवा में संबंध सिद्ध करने के बराबर है। इसके ग्रलावा, बेली की गतिविधियों का पैमाना यह दिखाता था कि मौजूदा मामले में हमारा साबका किसी मामूली ख़ुफ़िया एजेंट से नहीं, बल्कि बड़ी क्षमता के जांबाज़ से पड़ा है।

"ग्रभिलेखागार की बिखरी हुई सामग्री में मुझे बेली का एक फ़ोटो भी मिला। मैं यह दावा तो नहीं करता कि इस फ़ोटो में जो फ़ौजी ग्रफ़सर है, उसमें ग्रौर इंजीनियर मर्री में ग्रद्भुत सादृश्य है। बेली का यह फ़ोटो ग्रच्छा नहीं है, वह शौक़िया खींचा गया फ़ोटो है ग्रौर इसके ग्रलावा वह पंद्रह साल से भी ज्यादा पहले का है। तथापि, कर्नल बेली ग्रौर इंजीनियर मर्री की सूरतों में कुछ सादृश्यता संदेह से परे है। इस खोज से चकित होकर मैंने पूछताछ शुरू की कि ताशक़ंद के पुराने चेका ग्रधिकारियों में कोई ऐसा तो नहीं है, जो वहां १९१८ में भी काम कर रहा था। कर्नल बेली की गिरफ़्तारी के समय मौजूद लोगों में से दो–साथी ग्र० स० ग्रौर साथी म० व० का पता लगाने में मैं सफल हो गया। मेरे इस प्रश्न के उत्तर में कि कर्नल बेली को पहचानने के कोई विशिष्ट पहचान-चिह्न तो नहीं हैं, साथी ग्र० स० को याद ग्राया कि कर्नल बेली खब्बा था ग्रौर इस तथ्य को वह बड़ी सावधानी के साथ छिपाता था। इसे तब ही देखा जा सकता

था, जब वह शेव करता होता था और तब वह उस्तुरे को हमेशा अपने बायें हाथ में ही पकड़ता था। साथी म० व० को, जिन्होंने सड़कों पर बेली को अकसर अपनी निगरानी में रखा था, याद आया कि किसी स्त्री के साथ चलते समय, अन्य आदमियों के विपरीत, बेली उसके बायें नहीं रहता था, बल्कि हमेशा सड़क की तरफ़वाले हाथ पर ही रहता था। लेकिन म० व० ने कहा कि यह अंग्रेज़ों की एक आम आदत है। न अ० स० और न म० व० मुझे किसी और पहचान-चिह्न के बारे में बता सके।

"निर्माणस्थली लौटकर आने और मर्री की निगरानी तेज़ करने पर जल्दी ही मैंने पाया कि ताशक़ंद के साथियों ने जिन दोनों आदतों को बेली की विशिष्टता बताया था, वे इंजीनियर मर्री की भी विशिष्टताएं हैं।

"मैंने सोचा कि आख़िर मेरे अनुमान में कोई ऐसी असाधारण बात तो नहीं है। मध्य एशिया में अपना एजेंट भेजते समय ब्रिटिश जासूसी सेवा इस काम के लिए स्वाभाविक रूप से किसी ऐसे आदमी को चुनेगी, जो स्थानीय भाषा और परिस्थितियों को जानता हो और जो पहले अपने को सौंपे गये काम का दक्षतापूर्वक निष्पादन कर चुका हो। पहली और दूसरी यात्रा के बीच जो पंद्रह वर्ष का अंतराल है, वह कर्नल बेली को पुराने परिचितों के आगे पड़ने की संभावना के विरुद्ध सुरक्षा की ख़ासी अच्छी गारंटी प्रदान कर देता था।

"मैंने मौक़ा निकालकर इंजीनियर क्लार्क से पूछा कि कहीं वह मर्री को अमरीका से ही तो नहीं जानता और क्या इंजीनियर बार्कर भी उससे पहले से परिचित था। पता चला कि न क्लार्क और न बार्कर मर्री को पहले से जानते थे – वे पहली बार सोवियत संघ में ही मिले थे। लेकिन अपनी खोज के सही होने के बारे में पूरी तरह से क़ायल न होने के कारण मैंने तय किया कि जब तक कुछ ठोस सबूत नहीं मिल जाते, मैं इसके बारे में किसी को भी नहीं बताऊंगा।

"पहली तलाशी के एक महीने बाद इंजीनियर मर्री के फ़्लैट की दुबारा तलाशी लेते समय मैंने पाया कि मर्री के ट्रंक में सिर्फ़ ६०,००० रूबल बाक़ी हैं। चार हफ़्ते के भीतर मर्री ने दस हज़ार रूबल ख़र्च कर दिये थे, और सो भी निर्माणस्थली से कहीं गये बिना, क्योंकि इस बीच उसने न डाक से और न तार से कहीं कोई पैसा भेजा था। यह जानने की इच्छा से कि यह

पैसा किसके हाथों में पहुंच रहा है, मैंने हर नोट पर निशान लगा दिया। यह सिद्ध हुआ कि मेरे द्वारा चिह्नित सौ-सौ रूबल के नोटों में से कई मैकेनिकल डिपार्टमेंट के प्रमुख, इंजीनियर क्रुशोनी ने भुनवाये हैं। (इंजीनियर क्रुशोनी और उससे संबद्ध लोगों के ध्वंसात्मक कार्यों के बारे में देखिये फ़ाइल नं० २७६)

"कॉफ़र बांध के उड़ाये जाने के कुछ दिन पहले विस्फोटन-विशेषज्ञ, इंजीनियर ताबूकाश्वीली ने मेरे पास आकर मुझे मेरे निशान लगाये नोटों में तीस हज़ार रूबल दिये और बताया कि यह पैसा उसे किसी अज्ञात व्यक्ति की तरफ़ से इंजीनियर क्रुशोनी ने विस्फोट को जान-बूझकर ख़राब कर देने के लिए रिश्वत के तौर पर दिया है।

"मेरे द्वारा गिरफ़्तार कर लिये जाने पर इंजीनियर क्रुशोनी ने अकाट्य प्रमाण रखे जाने और बचने का रास्ता न रह जाने पर क़बूल किया (साक्ष्य का विवरण संलग्न है) कि इंजीनियर मर्री से उसकी आठ महीने पहले मित्रता हुई थी। निजी बातचीत के दौरान क्रुशोनी ने अपनी सोवियत विरोधी भावनाओं को नहीं छिपाया, बल्कि जैसा कि क्रुशोनी ख़ुद कहता है, मर्री ने ज़ाहिरा तौर पर उसे इस तरह के उद्गार प्रकट करने के लिए उकसाया। मर्री ने क्रुशोनी को यह विश्वास दिलाते हुए कि निर्माण-कार्य को किसी भी सूरत में समय पर पूरा नहीं किया जा सकता, यह सुझाव दिया कि एक निश्चित रक़म के बदले में उसे 'काम को कुछ रोक देना चाहिए'। उसने क्रुशोनी से कहा कि एक ऐसा संगठन है, जो यह सुनिश्चित करने के लिए काफ़ी बड़ी मात्रा में धन ख़र्च करने को तैयार है कि निर्माण-कार्य आगामी कई वर्षों के भीतर पूरा न होने पाये। क्रुशोनी ने नहीं पूछा कि यह संगठन है कौनसा। यह जानते हुए कि वह एक अमरीकी से बात कर रहा है, उसने यह मान लिया कि यह संगठन प्रत्यक्षतः कोई अमरीकी कपास कंपनी है, जो यह नहीं चाहती कि सोवियत संघ अमरीकी कपास का आयात करने की आवश्यकता से मुक्त हो जाये। क्रुशोनी ने चौबीस घंटे सोचने के लिए मांगे और अगले दिन सहमति प्रकट कर दी। यह तय हुआ कि क्रुशोनी को अपनी सेवाओं के बदले अलग-अलग हर काम में सन्निहित जोखिम के अनुसार – यह कहिये कि काम के हिसाब से पुरस्कृत किया जायेगा। इंजीनियर मर्री ने क्रुशोनी को निर्माण-कार्य के विभिन्न विभागों में विश्वसनीय और पर्याप्त रूप से सोवियत विरोधी विचार रखनेवाले

व्यक्तियों का एक छोटा सा दल चुनने के लिए कहा, ताकि उनके ज़रिये निर्माण के सभी क्षेत्रों में काम की रफ़्तार को समान रूप से कम किया जा सके। नये 'सहकर्मियों' की भरती के सिलसिले में होनेवाले प्रारंभिक ख़र्चों के लिए क्रुशोनी को मर्री से पचास हज़ार रूबल प्राप्त हुए। अपनी अंतरंग बातचीत में मर्री नेमिरोव्स्की के पुरातन तरीक़ों की तीखी आलोचना करते हुए अकसर क्रुशोनी को 'काम' के तरीक़ों के बारे में हिदायतें देता था।

"इंजीनियर क्रुशोनी द्वारा किये गये निर्माण-कार्य को क्रमिक रूप से विशृंखलित करने की ओर लक्षित विध्वंसात्मक कामों के सिलसिले के बारे में फ़ाइल नं० २७६ में ब्योरेवार विवरण दिया गया है और इसलिए यहां उनकी चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रसंग में क्रुशोनी के केवल एक सहापराधी, विस्फोटनकर्ता मिख़ाईल ग्रिगोर्येविच पर्फ़ेनोव का उल्लेख करना ही काफ़ी होगा। पर्फ़ेनोव एक ख़ानदानी पियक्कड़ है, फ़रवरी के महीने में उसे ग़ैरहाज़िरी और श्रम अनुशासन के उल्लंघन के लिए दूसरे सैक्शन से बरख़ास्त कर दिया गया था। बरख़ास्तगी के पहले इसी पर्फ़ेनोव का इंजीनियर क्रुशोनी ने अपने कामों के लिए फ़ोरमैन पोनोमारिक के माध्यम से उपयोग किया था। हर चार्ज में विस्फोटक पदार्थ की मात्रा को बक़ायदा बढ़ाकर और इस प्रकार विस्फोट के बल को बढ़ाकर पर्फ़ेनोव ने नहर के किनारों पर जान-बूझकर भू-स्खलन किये। यह बिलकुल संभव है कि उसकी इस करतूत से ही चट्टानी स्तर ढह गया था, जिसके फलस्वरूप जन-हानि हुई और निर्माण-कार्य के पूरा होने में भी लगभग एक महीने का विलंब हुआ। विस्फोटन टुकड़ी से बरख़ास्त किये जाने के बाद पर्फ़ेनोव पांचवें सैक्शन (कत्ता-ताग़) में बेलदार की हैसियत से भरती हो गया, और वहां भी इंजीनियर क्रुशोनी और मर्री ने उसका अंतिम विध्वंसात्मक कार्रवाई में उपयोग किया, जिसके बारे में आगे चलकर विस्तार से बताया जायेगा।

"यह देखकर कि क्रुशोनी और उसके सहचरों की सारी तदबीरों के बावजूद निर्माण-कार्य समय पर पूरा होकर रहेगा, इंजीनियर मर्री (उर्फ़ कर्नल बेली) ने अंतिम उपाय का अवलंबन किया। उसने क्रुशोनी को विस्फोटन-विशेषज्ञ, इंजीनियर ताबूकाश्वीली को रिश्वत देने और उसे कॉफ़र बांध को उड़ाते समय नहर-मुख को क्षति पहुंचाने के लिए राज़ी करवाने की कोशिश करने का आदेश दिया। विध्वंसकर्ता के रूप में ताबूकाश्वीली की निष्ठा पर विश्वास न होने के कारण और इस डर से कि पकड़े जाने पर

ताबूकाश्वीली कहीं अपने सहापराधी का भेद न खोल दे, मर्री ने कुशोनी को इस बारे में विस्तृत निदेश दिये कि पूछताछ के दौरान क्या कहना चाहिए। इसीके साथ ही साथ अपने को बचाने और साथ ही किसी न किसी प्रकार संपूरित निर्माण-कार्य को क्षति पहुंचाने के उद्देश्य से मर्री ने कुशोनी की मारफ़त पर्फ़ेनोव को कत्ता-ताग़ पहाड़ की ढाल को उड़ाने के लिए पांच हज़ार रूबल दिये। यह विस्फोट कुछ छोटे-छोटे चार्जों से नहर में पानी छोड़े जाने के समय ही इस तरह से किया जाना था कि उससे हुए भू-स्खलन को अस्थिर मिट्टी पर पानी की क्रिया से जनित मान लिया जाये।

"पर्फ़ेनोव ने अपने को सौंपे काम को बिना किसी कठिनाई के पूरा कर दिया। कत्ता-ताग़ सैक्शन में बेलदारी करते समय उसने बिना ध्यान आकृष्ट किये रात के समय विस्फोटक रखने के लिए छोटे-छोटे छेद खोद लिये और कुशोनी द्वारा निर्दिष्ट समय पर उपरोक्त खंड में पहाड़ की ढाल को उड़ा दिया। (विवरण के लिए देखिये फ़ाइल नं० २७७)

"कुशोनी के शब्दों में उसे और मर्री – दोनों – को यह डर था कि कहीं ताबूकाश्वीली की हिम्मत आख़िरी घड़ी में जवाब न दे जाये और कहीं उसमें नहर-मुख को क्षति पहुंचाने के संकल्प का अभाव न हो। ऐसी आकस्मिकता को ध्यान में रखते हुए ही मर्री ने कत्ता-ताग़ पर विस्फोट की योजना बनाई थी। मर्री के हिसाब के अनुसार – जिसे उसने कुशोनी से नहीं छिपाया था, – कत्ता-ताग़ पर भू-स्खलन और नीचे मैदान में सामूहिक फ़ार्मों के जलमग्न हो जाने के कारण नोआबादकारों में दहशत फैल जाती और पंज के उस पार से अपेक्षित बासमची हमले के लिए रास्ता खुल जाता।

"हमारे द्वारा कुचले बासमची हमले के नेता, इशान-ख़ालिक़ (ईसा ख़्वाजायारोव) ने, जिसे हमारे स्वयंसेवक दस्तों ने घेरकर एक छोटी-सी मुठभेड़ के बाद कल क़ैदी बना लिया था, पूछताछ के दौरान क़बूल किया है कि वह कर्नल बेली को १९१९ से जानता है, जब वह उससे बुख़ारा में मिला था। इशान-ख़ालिक़ (ख़्वाजायारोव) को कर्नल बेली के निर्माणस्थली पर पहुंचने की अफ़ग़ानिस्तान से समय पर सूचना मिल गई थी और उसे आगामी सारी कार्रवाई के बारे में सीधे कर्नल बेली के साथ परामर्श करने की राय दी गई थी। उसके साथ प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करने के लिए ही ख़्वाजायारोव ने निर्माणस्थली पर काम करना शुरू किया था।

मेरे इस सवाल के जवाब में कि जब वह अंग्रेज़ी नहीं जानता, तो बेली के साथ किस तरह बातचीत करता था, इशान ने बताया कि मर्री-बेली रूसी और फ़ारसी दोनों भाषाएं अच्छी तरह से बोलता है।

"ऊर्ताबायेव पर झूठा आरोप थोपने के अपने प्रयास की असफलता के बाद अफ़ग़ानिस्तान भाग जाने पर इशान-ख़ालिक़ (ख़्वाजायारोव) ने अपने दूतों के माध्यम से मर्री के साथ घनिष्ठतम संपर्क बनाये रखा। हमले की तारीख़ और सामरिक योजना मर्री की सहमति से ही निर्धारित की गई थी और हमले की सारी तैयारियां मर्री के प्रत्यक्ष निर्देशानुसार ही की गई थीं।

"कल रात बारह बजे क़ुशोनी की गिरफ़्तारी और ख़ालिक़ के गिरोहों के सफ़ाये की ख़बर पाकर मर्री ने अफ़ग़ान सीमांत भागकर बचने की कोशिश की। तीसरे सैक्शन पर गिरफ़्तार कर लिये जाने और पूछताछ किये जाने पर मर्री-बेली ने किसी भी बात को नहीं क़बूला और यह दावा किया कि वह अंग्रेज़ी के अलावा और कोई भाषा नहीं जानता है और किसी भी तरह का साक्ष्य देने से इनकार कर दिया। क़ुशोनी और इशान-ख़ालिक़ से सामना करवाये जाने पर मर्री ने कहा कि वह उनकी बातों को नहीं समझता, इंजीनियर क़ुशोनी को वह सिर्फ़ निर्माण-कार्य के मैकेनिकल डिपार्टमेंट के प्रमुख की हैसियत से जानता है और इशान-ख़ालिक़ को उसने पहले कभी नहीं देखा है। जब मर्री-बेली को उसका ट्रंक और उसमें रखी शेष चिह्नित रक़म दिखाई गई, तो उसने अनुवादक से कहा कि ट्रंक में उसके पास बिलकुल भी धन नहीं था और उसे नहीं मालूम कि यह रक़म उसमें किसने रखी है और क्योंकि ट्रंक उसकी अनुपस्थिति में खोला गया था, इसलिए उसके भीतर क्या है, इसके बारे में जवाब देने के लिए वह बाध्य नहीं है।

"मैं निम्न लोगों से पूछताछ का विस्तृत विवरण संलग्न कर रहा हूं:

"१. इंजीनियर आर० मर्री (उर्फ़ कर्नल एफ़० एम० बेली)।

"२. इंजीनियर यू० द० क़ुशोनी।

"३. इशान-ख़ालिक़ वलीद-ए-उमर (उर्फ़ ईसा ख़्वाजायारोव)।

"४. विस्फोटनकर्ता मि० ग्रि० पर्फ़ेनोव।

"५. फ़ोरमैन अ० त० पोनोमार्निक।"

सच्चा वीर

...सुबह, जब कत्ता-ताग़ के नवनिर्मित बांध पर से सर्चलाइटें हटा दी जा चुकी थीं और फावड़ों और गैंतियों से लदी आख़िरी घोड़ागाड़ियां भी रवाना हो चुकी थीं, मोरोज़ोव ने, जो नहर में पानी के छोड़े जाने की वृथा प्रतीक्षा कर रहा था, आती हुई पहली कार को देखा।

"वे पानी क्यों नहीं छोड़ रहे हैं?" सिनीत्सिन के कार से कूदते ही वह उस पर बरस पड़ा। "नौ बज चुके हैं! देखते-देखते ही मेहमान आ पहुंचेंगे! हम पूरे दो घंटे से तैयार खड़े इंतज़ार कर रहे हैं। उन्हें हुआ क्या है–सो रहे हैं क्या?"

"क्यों, तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं?" सिनीत्सिन ने उसकी तरफ़ अजीब तरह से देखा।

पहली बार मोरोज़ोव का ध्यान इस बात की तरफ़ गया कि रात भर के भीतर सिनीत्सिन सिकुड़ और बूढ़ा गया सा लग रहा है।

"नहीं। क्यों, क्या फिर कुछ हो गया?"

"रात नहर-मुख पर हमला हुआ था। कोई चालीस बासमचियों का गिरोह भीतर घुस आया था। हमले की उम्मीद किसे थी–सरहद से पूरे एक सौ बीस किलोमीटर दूर! और वहीं वे हम पर टूट पड़े।"

"कुछ नुक़सान तो नहीं हुआ?"

"नहीं। उसका वक़्त ही नहीं मिल पाया। वे सिर्फ़ घंटे भर के क़रीब ही वहां रहे। क़ूरग़ान से एक दस्ता दौड़ाया गया और उसने उन सभी को क़ैद कर लिया।"

"हमारी तरफ़ जानें तो नहीं गईं?"

"हां। हमारी गारद के कोई आठ आदमियों को उन्होंने काटकर रख दिया। और दो को उन्होंने सता-सताकर मार डाला–नासिरुद्दीनोव और गालत्सेव को।"

"क्या कहते हो! मार डाला?"

"हां। बड़ी बेरहमी के साथ..." सिनीत्सिन की आवाज़ कांप गई।

"यह सब हुआ कैसे?" मोरोज़ोव ने ज़र्द पड़ते हुए अटकती आवाज़ में पूछा।

"वासमची यहां सारे मैदान को जलमग्न कर देने के लिए स्लूस कपाटों को खोलकर पानी छोड़ देना चाहते थे। नियंत्रण चक्कों पर ताले लगे हुए थे। कमांडेंट भाग गया था। पहले वासमचियों ने तालों को तोड़ने की कोशिश की, लेकिन तोड़ नहीं पाये। फिर उन्होंने नासिरुद्दीनोव और गालत्सेव को पकड़ लिया और यह उगलवाने के लिए सताने लगे कि चाबियां कहां हैं। सता-सताकर उन्हें मार डाला।"

"तो वे पानी नहीं छोड़ पाये?"

"बिलकुल आख़िर में जाकर वे तीन ताले तोड़ने में सफल हो गये थे। लेकिन तभी क़ूरग़ान के स्वयंसेवक दस्ते ने अचानक पहुंचकर उन्हें घेर लिया। जानते हो कौन लाया था उसे? क्लार्क। वासमचियों की ऐन नाक के नीचे से कार में निकल गया और जाकर कोमारेंको को चेता दिया। दस्ता वहां बिलकुल वक़्त पर पहुंच गया और सबको ज़िंदा पकड़ लिया। उन्हें पहले कपाट को ही उठाने का समय मिल पाया था और दूसरे को उठाना अभी शुरू ही किया था।"

"हूं! तो इस तरह पानी रात नहर में आ गया था! और फिर वह अचानक ही रुक भी गया। मैं समझ ही नहीं पा रहा था कि ऐसा हुआ कैसे।"

"हां। अगर उन्हें चाबियां मिल ही जातीं और उन्होंने सातों कपाट उठा दिये होते, तो बांध का निशान भी बाक़ी न रहता।"

"लेकिन चाबियां थी कहां?"

"कमांडेंट के कार्यालय में।"

"तो वे उन्हें मिलीं नहीं?"

"नहीं, मिल तो गईं।"

"फिर कपाट क्यों नहीं खोले?"

"कोमारेंको भी यह जानना चाहता था। उसने पूछताछ के दौरान ख़्वाजायारोव से इसके बारे में पूछा था। ख़्वाजायारोव कहता है कि सफ़ेद बालवाले ने–ज़ाहिर है कि उसका आशय गालत्सेव से है–आख़िरी क्षण पर एक वासमची के हाथ से चाबियों का गुच्छा छीन लिया और उसे वख़्श में फेंक दिया। इसी लिए उन्होंने उसका काम तमाम कर दिया।"

मोरोज़ोव ने माथे पर हाथ फेरा।

सिनीत्सिन दूर कहीं देख रहा था।

"ख़ैर, तो पानी अभी छोड़ा जा रहा है... और लगता है कि मेहमान भी आ ही गये," उसने आती हुई कारों की क़तार की तरफ़ इशारा किया, "अच्छा, अपने मेहमानों की अगवानी करो, और क्या! उन्हें बताने की कोई तुक नहीं। बेकार दहशत फैलाने का क्या फ़ायदा? वे समझेंगे कि यह सचमुच बर्बर एशिया ही है।"

"लेकिन तुम नहीं रुकोगे?"

"नहीं। जानते हो न, मेरे लिए यह बहुत भारी बोझ है। मैं नासिरुद्दीनोव को बहुत चाहता था। कह सकते हो कि मेरे लिए वह बेटे जैसा ही था। और अब वह भी चला गया... मैं घर जा रहा हूं..."

वह कार के पास चला गया और उसमें पैर रखकर एक बार फिर मुड़कर बोला:

"लेकिन गालत्सेव? इस निर्माण-कार्य के दौरान उसकी कितनी बार भर्त्सना की गई थी! और अब—देखो, न! सच्चा वीर निकला है। और अगर आज वह मरा न होता, तो किसीको इस बात का पता तक न चलता... मेहमानों से मत कहना। वैसे भी वे समझेंगे नहीं।"

सिनीत्सिन की कार चली गई, लेकिन मोरोज़ोव खड़ा सड़क पर बने पेट्रोल के छोटे-से दाग़ की तरफ़ टकटकी लगाकर देखता रहा। उसकी तंद्रा किसीके मृदु स्पर्श से ही भंग हुई:

"नमस्कार, मिस्टर मोरोज़ोव!" ताज़ा हजामत बना चेहरा लिये बेल्जियाई प्रोफ़ेसर उसके सामने खड़ा था और उलाहना के साथ मुसकरा रहा था। "आप तो हमें बिलकुल ही भूल गये।"

"क्या कहते हैं, आप!" मोरोज़ोव ने छूटते ही कहा। उसने मुसकराने की कोशिश की, लेकिन ठीक से मुसकरा न सका। "असल में हम यहां एक चक्कर में पड़ गये थे," उसने असमंजस में हाथ हिलाये, "हुआ यह कि रात को नियंत्रण चक्कों की चाबियां कहीं गुम हो गईं और इसलिए सुबह पानी नहीं छोड़ा जा सका। लेकिन अब सब ठीक है—देखिये न, वह आ रहा है पानी!"

कर्नल एफ़० एम० बेली, सी० आई० ई०, के नाम
लेखक ब्रूनो यासेन्स्की का

खुला पत्र

मान्यवर,

एक अमरीकी प्रकाशक से इस उपन्यास का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने का प्रस्ताव प्राप्त होने के बाद मुझे विश्वास हो गया है कि देर-सबेर यह उपन्यास आपके हाथ में आकर ही रहेगा। अगर आप हमारे सोवियत साहित्य को नहीं भी पढ़ते हैं, तो भी मध्य एशिया की स्थिति में आपकी दिलचस्पी शायद पहले की तरह ही बनी होगी और, बहुत संभव है कि बुख़ारा-ए-शर्क में निर्माण-कार्य के बारे में लिखी एक पुस्तक आपके ध्यान को अवश्य आकर्षित करेगी।

पुस्तक को अंत तक पढ़ने के बाद आप निस्संदेह शरीफ़ाना गुस्से से बौखला उठेंगे और, हो सकता है कि अपने नेक नाम का इस तरह दुरुपयोग किये जाने के ख़िलाफ़ नाराज़ीभरे विरोधपत्र के रूप में आप उसे अख़बारों में अभिव्यक्ति देना चाहेंगे। संभव है कि आप अनेक विश्वस्त और उच्चपदस्थ साक्षी भी जुटा लें, जो तसदीक़ करेंगे कि १९१८ के तुर्किस्तानी मिशन के बाद आपने वर्तमान सोवियत संघ की धरती पर कभी क़दम नहीं रखा, चेका ने आपको ताजिकिस्तान में कभी गिरफ़्तार नहीं किया और आपका ही अमरीकी इंजीनियर मर्री होना सरासर झूठ है। लेकिन चूंकि मैं आपको बेकार परेशानियों में नहीं पड़ने देना चाहता, इसलिए उपन्यास के साथ इस पत्र को भी जोड़ रहा हूं।

सबूतों की आपको तो ज़रूरत नहीं होगी। मध्य एशिया में आपके दुबारा आने की कहानी काल्पनिक है। प्रस्तुत उपन्यास का लेखक आपकी

जीवनयात्रा में विशेष दिलचस्पी लेता रहा है, यद्यपि उसके सभी चरणों की वह जानकारी नहीं पा सका है (ब्रिटिश जासूसी सेवा के कर्मचारियों का पूरा अता-पता भला किसको चल पाता है!)। लेखक जानता है कि इस उपन्यास में घटी घटनाओं के काल में आप सिक्किम में बड़ी ईमानदारी के साथ ब्रिटिश राजनीतिक अभिकर्ता का कार्यभार निभा रहे थे।

आप पूछेंगे कि यह सब जानते हुए भी लेखक ने किस आधार पर अपने काल्पनिक नायक को आपका—एक असली आदमी का—एक विशिष्ट व्यक्ति का नाम दिया है?

पहली बात तो यही है कि अगर आप अब भी अपने को एक अलग व्यक्ति ही मानते हैं, तो आप अपनी पूरी महत्ता नहीं समझते। आपके विशिष्ट, असाधारण गुणों के कारण तथा उन घटनाओं के कारण, जिनमें आपको कोई कम महत्वपूर्ण भूमिका नहीं दी गई है, आप एक अलग व्यक्ति न रहकर एक ऐतिहासिक व्यक्ति बन गये हैं। दस्तावेज़ों और चश्मदीद गवाहों की कहानियों के आधार पर तुर्किस्तान में आपकी बहुमुखी गतिविधियों का अध्ययन करके मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वर्तमान समय ने आपके साथ पूरा न्याय नहीं किया है। आपकी बहुमुखी योग्यताओं के स्तर को देखते हुए आपकी ख्याति का प्रतिगुप्तचर-विशेषज्ञों और तुर्किस्तान के गृहयुद्ध के इतिहासकारों तक ही सीमित रहना अपर्याप्त है। मैं जानता हूं कि जिस संगठन के सौंपे काम को आपने इतने शानदार ढंग से पूरा किया और आज भी कर रहे हैं, वह सांसारिक प्रसिद्धि के पीछे नहीं भागता—बल्कि ठीक कहा जाये, तो उससे दूर ही रहने की चेष्टा करता है। पर साथ ही यह बात भी कुछ असामान्य ही लगती है कि लॉरेंस जैसा आदमी तो ऐसी विश्वप्रसिद्धि पा जाये, जिसके वह योग्य ही नहीं है, जब कि कर्नल बेली के बारे में तथाकथित व्यापक जनमत अभी तक लगभग कुछ भी न जाने।

इस तरह, वह पहली बात, जिसने इन पंक्तियों के लेखक को आपको प्रस्तुत उपन्यास का पात्र बनाने पर मजबूर किया, थी आपके कारनामों से व्यापक जनमत को अवगत कराना।

इतिहास गृहयुद्ध के वर्षों में बाकू और सुदूर उत्तर में आपके देशवासियों के कारनामों को तो अवश्य जानता है, पर मध्य एशिया में उनकी फलप्रद गतिविधियों के बारे में बहुत ही कम जानता है। और अगर इस फलप्रद गतिविधि ने वर्तमान सारे ताजिकिस्तान में सबसे अच्छी पैदावार नहीं

दिखाई,—जहां अन्य संघीय जनतंत्रों की अपेक्षा छः साल बाद ही जाकर शांतिमय निर्माण शुरू हो पाया था,—तो और कहां दिखाई!

मुंह से राष्ट्र संघ की दुहाई देते हुए बंदी कोम्सोमोलियों के नाक-कान काटनेवाले इब्राहीम-बेग के आखिरी हमले और गिरफ़्तारी के समय—१९३१ में—मैं वहीं मौजूद था। मुझे उसके जवानों से छीनी गई नई ब्रिटिश रायफ़लें देखने को मिली थीं। रायफ़लें नवीनतम मॉडल की थीं—बल्कि सच कहूं, तो—बहुत ही बढ़िया थीं! आज भी हवाई बेड़े तथा रसायन सहयोग सोसाइटी की मंडलियों में ताजिक कोम्सोमोली उन्हींसे चांदमारी की तालीम पाते हैं।

इब्राहीम-बेग एक अकुशल राजनीतिज्ञ था। अपने घोषणापत्रों में वह बिना किसी लाग-लपेट के कहा करता था कि वह अमीर-ए-बुख़ारा की सत्ता को पुनर्स्थापित करने जा रहा है। इस कुसंभावना से डरकर आम जनता इब्राहीम-बेग के पीछे उसी तरह से लट्ठ लेकर पड़ गई, जैसे आज भी ताजिकिस्तान में जंगली सूअरों का शिकार किया जाता है। इब्राहीम के पास आप जैसी कूटनीतिक बुद्धि नहीं थी, वह एक सीधा-सादा एशियाई आदमी था और पंज पार दिमाग़दार लोगों से बातचीत ने भी उसे कुछ भी नहीं सिखाया था।

उसके यशहीन अंत की ख़बर पढ़कर शायद आपने अपने साथियों की प्रतिभा पर अफ़सोस किया हो, जिन्होंने ऐसे मंदबुद्धि चेले को तैयार करने पर इतना धन और समय नष्ट किया था। शायद आपने सोचा हो कि अगर यह काम आपके सुपुर्द किया जाता, तो अंत निश्चय ही कुछ और ही होता। नक़शे में अपने सुपरिचित स्थानों पर निगाह दौड़ाते हुए आपको कुछ उच्चपदस्थ अधिकारियों की अदूरदर्शिता पर दुख हुआ होगा, जिन्होंने एक के बाद एक ग़लती की थी और उपयुक्त आदमी को उपयुक्त स्थान पर इस्तेमाल नहीं कर सके थे।

असल में घटनाओं ने ऐसा रुख नहीं लिया, जैसा आपने उस समय—१९१८ में, होटल रेगीना की खिड़कियों से ताशक़ंद की भूरी धूल को देखते हुए—जिसे तेरह साल बाद ठीक उसी जगह से मैंने भी देखा था—सोचा था। जीवन ने आपको अपनी इतनी समृद्ध योजनाओं को पूरा करने का मौक़ा नहीं दिया।

मैंने इस चूक को सुधारने और आपकी इच्छा को पूरा करने का निश्चय किया। मैंने आपके लिए जाली पासपोर्ट का इंतज़ाम किया, उस पर वीज़ा

की मोहर लगाई, आपको हवाई जहाज़ पर सवार किया और सारे सोवियत संघ के ऊपर उड़ाते हुए आज के ताजिकिस्तान में जा उतारा। मैंने आपको पैसे की कमी नहीं रहने दी, आपके एकाध पुराने परिचितों से मिलाया और फिर अकेला छोड़कर अपनी मेज़ पर लिखने के लिए आ बैठा। मैंने आपको कुछ भी करने, कुछ भी कहने के लिए नहीं उकसाया, आप पर अपनी राय और दृष्टिकोण को नहीं थोपा। मैंने तो बस इतना किया कि आपको वास्तविक घटनाओं के प्रवाह में छोड़ दिया और आपकी हर गतिविधि को काग़ज़ पर दर्ज करता हुआ आपका निरीक्षण करने लगा, ठीक उसी तरह, जैसे और भी दसियों पात्रों का। तुर्किस्तान की पहली यात्रा के समय आपकी जो योग्यताएं उजागर होकर सबके सामने आई थीं, उन्हें मैंने ध्यान में रखा और हमारे सोवियत वर्तमान के वातावरण और सीमाओं में विकसित होने दिया। अगर इस बार भी उनका परिणाम आपके आशानुकूल नहीं रहा, तो उसके लिए न आप दोषी हैं, न मैं,— दोषी है हमारी समाजवादी वास्तविकता का निर्मम तर्क, जिससे आप किसी भी तरह बच नहीं सकते।

कुछ भी हो, आपको मुझ पर नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं। मैंने आपको शान्ति से पूरे एक साल हमारे देश में रहने दिया, जहां आज संसार के सभी कोनों से लोग आना चाहते हैं और जहां आप और किसी तरीक़े से नहीं आ सकते हैं। मैंने आपको सोवियत एशिया की वास्तविक स्थिति से अवगत होने का मौक़ा दिया,— वहां, सिक्किम में, आपके मन में यहां का चित्र शायद कुछ और ही था। आपके दूसरे मिशन की असफलता आपकी सर्विस बुक में दर्ज नहीं की जायेगी, और इसलिए इसका आपके कैरियर पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा। इस देश के,— जिसे आपने मध्ययुगीन हालत में पाया था, पर जो आपके बालों के पकने के पहले ही वैसा बन चुका है, जैसा इस उपन्यास में चित्रित है,— लोगों और जीवंत वास्तविकता से व्यावहारिक सामना शिक्षाप्रद और लाभदायी भी है। सोवियत मध्य एशियाई सूरज में बहुत तासीर है। मिसाल के लिए, वह पुरानी पड़ चुकी भ्रांतियों का, ख़ासकर ख़तरनाक राजनीतिक दुस्साहसिकता की तरफ़ हानिकर झुकाव का, इलाज करता है।

सादर,

ब्रूनो यासेन्स्की

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

प्रगति प्रकाशन,
२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ